ल्हासा का डॉक्टर
(Doctor from Lhasa)

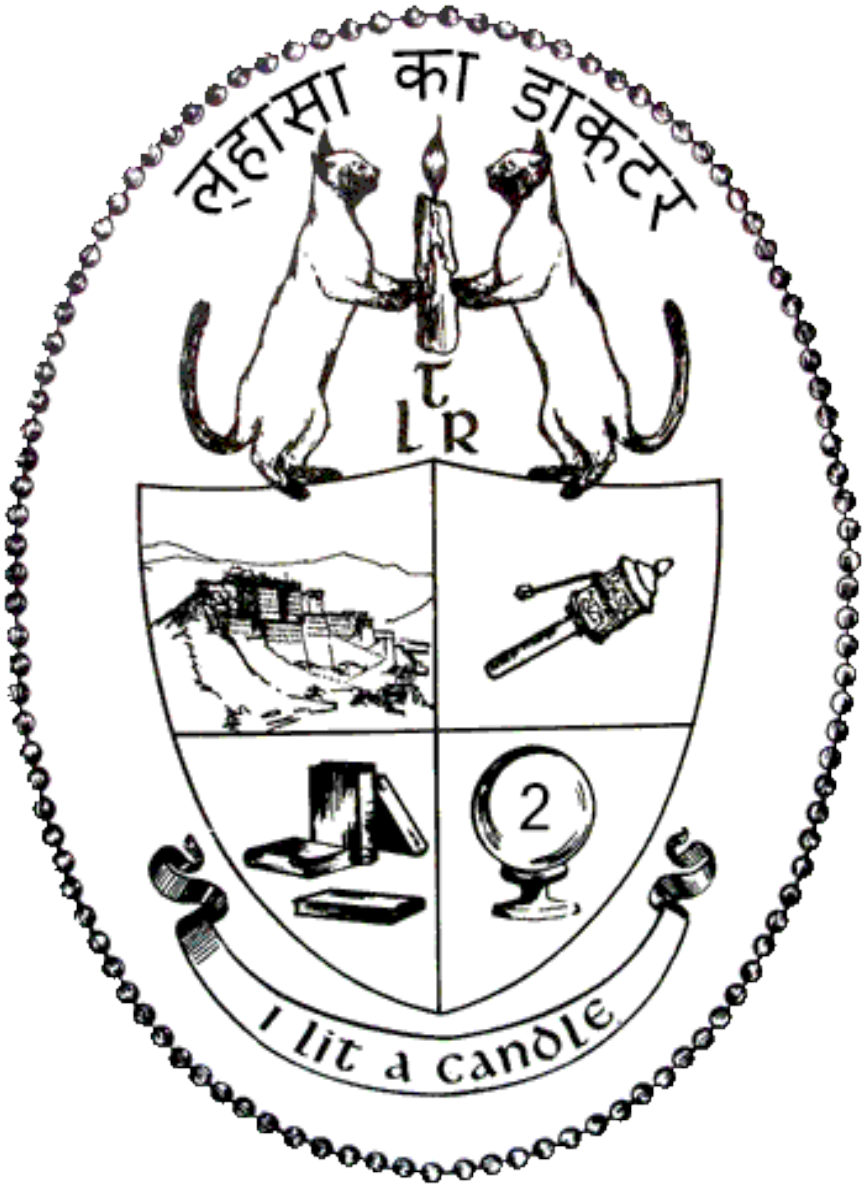

मैं दीप जलाता हूँ
(I Lit a candle)

ल्हासा का डॉक्टर
(Doctor from Lhasa)

मूल लेखक
टी. लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरण कर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

All rights reserved
Ist. e-edition 1.00 2015

प्राप्ति स्थल :
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com
lobsangrampa.org

विषय सूची

लेखक का प्राक्कथन

अनुवादक का निवेदन

अध्याय एक	: अज्ञात की और	1
अध्याय दो	: चुंगकिंग	13
अध्याय तीन	: चिकित्सा अध्ययन के दिन	26
अध्याय चार	: उड़ान	38
अध्याय पॉच	: मृत्यु के उस पार	55
अध्याय छैः	: अतीन्द्रिय ज्ञान	70
अध्याय सात	: दयामय उड़ान	80
अध्याय आठ	: जब दुनियाँ जवान थी	93
अध्याय नौ	: जापानियों का युद्धबन्दी	107
अध्याय दस	: श्वाँस कैसे लें	118
अध्याय ग्यारह	: परमाणु बम्ब	132

लेखक का प्राक्कथन

जब मैं इंग्लेंड में था, मैंने एक पुस्तक 'The Third Eye, तीसरी आँख' लिखी थी, जो सत्य है, परन्तु इस पर अत्यधिक टीका–टिप्पणी हुई। पूरे विश्व से पत्र आये और उन प्रार्थनाओं के जबाब में, मैंने यह पुस्तक 'Doctor from Lhasa, ल्हासा का डॉक्टर' लिखी।

मेरे अनुभव, जो तीसरी पुस्तक में बताये जायेंगे, उस सीमा से अत्यंत परे रहे हैं, जो अधिकांश व्यक्ति झेल सकते हैं। अनुभव, जिनकी मिसाल इतिहास में मिलना, केवल कुछ प्रकरणों में ही संभव है। यद्यपि ये, इस पुस्तक, जो मेरी आत्मकथा के संबंध में, निरंतरता (continuation) में लिखी जा रही है, का विषय नहीं है।

मैं एक तिब्बती लामा हूँ, जो अपने भाग्य के अनुपालनस्वरूप, जैसी कि भविष्यवाणी की गई थी, पश्चिमी विश्व में आया और मैंने उन सभी परेशानियों को, जो पूर्व में बता दी गई थीं, झेला। दुर्भाग्यवश, पश्चिमी लोगों ने मुझे कलाकृति (curio) के रूप में देखा, अज्ञात से आये हुए एक ऐसे नमूने के रूप में, जिसको कटघरे में बंद कर दिया जाना चाहिए और अनूठे ढंग से रंग–बिरंगा, विकृत करके दिखाया जाना चाहिए। मुझे यह सोच कर आश्चर्य होता है कि, मेरे पुराने यति मित्रों का क्या होगा, यदि पश्चिमी लोग उनको पकड़ सकें, जैसा कि वे प्रयत्न कर रहे हैं।

निःसंदेह, यति को गोली मार दी जाएगी, उसमें भूसा भरकर (stuffed) किसी अजायबघर में रख दिया जायेगा। तब भी, लोग तर्क करेंगे और कहेंगे कि, यति जैसी कोई चीज नहीं होती। मेरे लिए ये विश्वास से भी अधिक, अजीब है कि, पश्चिमीलोग दूरदर्शन (television) में, आकाशीय प्रक्षेपास्त्रों (rockets) में, जो चन्द्रमा की परिक्रमा कर वापस लौट सकते हैं, विश्वास कर सकते हैं परंतु यति को, अज्ञात उड़नतश्तरियों (flying saucers) को, या वास्तव में, कोई भी अन्यवस्तु, जो उनके हाथों में पकड़ी न जा सके और जिसको वे ये देखने के लिए कि, ये कैसे काम करती हैं, खींच–तान कर टुकड़ों में तोड़ न दें, श्रेय नहीं दे सकते।

परंतु, अभी मेरे सामने, अपने प्रारंभिक बचपन के विस्तार को, जो कि इससे पहले पूरी पुस्तक के रूप में आ चुका है, केवल कुछ पृष्ठों में समेटने का कठिन कार्य है। मैं तिब्बत की राजधानी ल्हासा के राजनेताओं के उच्चपरिवारों में से एक में, पैदा हुआ हूँ। मेरे माता–पिता, का देश की नियंत्रण व्यवस्था में अच्छा हाथ रहा है और चूँकि मैं, उच्चवर्ग से आता था, मुझे कठोर प्रशिक्षण दिया गया ताकि, ये समझा जाता था कि, मैं अपना स्थान लेने के लिए उपयुक्त बन सकूँ। तब, जब मैं सात साल का होता, उससे पहले, अपने स्थापित रीति–रिवाजों के अनुसार, तिब्बत के राजज्योतिषी से, ये जानने के लिए कि मेरा भविष्य, और भविष्य का रोजगार, मेरे लिए क्या लाता है, परामर्श किया गया। कुछ दिन पहले शुरू की गयी इन तैयारियों में, काफी दिन गुजर गये, तब एक भोज का आयोजन किया गया, जिसमें अग्रणी नागरिक, ल्हासा के सभी भद्रपुरुष, मेरे भाग्य को सुनने के लिए बुलाए गए। अंत में, भविष्यकथन का वह दिन आया। हमारा परिसर लोगों की भीड़ से भर गया। ज्योतिषी, अपने कागजी साजोसामान, चार्टों तथा उन सब आवश्यक साधनों से, जो उनके व्यवसाय से संबंधित हो सकते थे, सुसज्जित होकर आए। तब उचित समय पर, जब हर आदमी उच्चस्तरीय उत्तेजना के लिए तैयार हो चुका था, मुख्य भविष्यवक्ता ने अपने निष्कर्षों को सुनाया। दृढ़तापूर्वक ये घोषणा की गयी कि, मैं सात साल की आयु में लामामठ (lamasery) में प्रवेश करूँगा और मुझे पुजारी (priest) तथा चिकित्सकीय पुजारी (medical priest) के रूप में प्रशिक्षण दिया जाएगा। मेरे जीवन के संबंध में अनेक भविष्यकथन किए गए; वास्तव में, मेरे पूरे जीवन की रूपरेखा ही बता दी गई। गंभीर दुख या बड़े अफसोस के साथ, मुझे कहना पड़ता है कि, उसमें जो कुछ भी कहा गया था, वह सभी सत्य हुआ। मैं इसे दुख कहता हूँ क्योंकि, इसमें से अधिकांश, दुर्भाग्य, परेशानियाँ और कष्ट रहा है और इसे कुछ सरल नहीं बनाया जा

सका जबकि, ये ज्ञात था कि, मुझे ये सब झेलना है।

जब मैं सात वर्ष की आयु में था, उस रास्ते पर अकेला ही चलते हुए, मैंने चाकपोरी लामामठ में प्रवेश लिया। ये परखने के लिए कि, मैं काफी कठोर हूँ, काफी मजबूत, उतना, जितना कि प्रशिक्षण के लिए आवश्यक है, मुझे प्रवेशद्वार पर रखा गया।

मैं इसमें सफल हुआ और तब मुझे प्रवेश के लिए स्वीकार किया गया। निपट अनाड़ी नौसिखिये से शुरूआत करते हुए, मैं सभी चरणों से होकर गुजरा और अन्त में लामा और उसके बाद एक मठाधीश (abbot) बन गया। दवाऐं (medicine) और शल्यचिकित्सा (surgery) मेरे विशेष पक्के विषय थे। मैंने इन्हें उत्साह के साथ पढ़ा। मुझे मृतशरीरों का अध्ययन करने के लिए हर सुविधा दी गई। पश्चिम में, ये माना जाता है कि, तिब्बत के लामा, शरीरों के साथ, यदि इसका आशय शरीरों को खोलने से हो तो, कभी कुछ नहीं करते। स्पष्टरूप से, ये विश्वास है, कि तिब्बत का चिकित्सा विज्ञान अभी आरंभिक, अल्पविकसित अवस्था में है क्योंकि, चिकित्सीय लामा केवल बाहरी शरीर का इलाज करते हैं, उसके अंदर वाले भागों का नहीं। यह सही नहीं है। सामान्य लामा, मैं मानता हूँ कि, शरीर को कभी नहीं खोलते। ये उनका अपना विश्वास है। परंतु, विशेष लामाओं का एक केन्द्रक (nuecleus) भी है, मैं उनमें से एक था, जिनको ऑपरेशन (operations) करने और शल्यचिकित्सा (surgery) करने का प्रशिक्षण दिया गया था। ऐसे ऑपरेशन, जो संभवतः, पश्चिमी विज्ञान के लोगों के बूते के बाहर हों।

चलते–चलते, पश्चिम में ये भी विश्वास है कि, तिब्बतीचिकित्सा ये सिखाती है कि, आदमियों का हृदय एक तरफ होता है और औरतों का दूसरी तरफ। इससे अधिक हास्यास्पद दूसरा कुछ नहीं हो सकता। पश्चिमी देशों के लोगों को, ये सूचना उन लोगों के द्वारा दी गई है, जो ये नहीं जानते कि, वे क्या लिख रहे हैं, किसके संबंध में लिख रहे हैं, क्योंकि कुछ चार्ट, जिनका वे संदर्भ देते हैं, वे सूक्ष्म शरीरों से संबंधित हैं, जो अलग मामला है, तथापि, इस पुस्तक से उसका कोई संबंध नहीं है।

मेरा प्रशिक्षण वास्तव में बहुत ही गहन था क्योंकि, मुझे केवल अपने विशिष्ट विषयों का, दवा और शल्यचिकित्सा मात्र का ही नहीं वल्कि, सभी प्राचीन धर्मग्रन्थों (scriptures) का भी अध्ययन करना था क्योंकि, चिकित्सीय लामा होने के साथ–साथ, पूरी तरह प्रशिक्षित पुजारी के रूप में स्थापित होने के लिए, मुझे धार्मिक आधार पर भी सफल होना था। अतः एक साथ दो शाखाओं का अध्ययन करना आवश्यक था। इसका अर्थ ये था कि, मुझे औसत विद्यार्थी की अपेक्षा दो गुना पढ़ना पड़ा। इस संबंध में मेरे प्रति किसी ने पक्षपात नहीं किया।

परंतु वास्तव में, ये कोई कठोरता नहीं थी। मैंने तिब्बत के ऊँचे स्थानों (highlands) के लिए –ल्हासा समुद्रतल से बारह हजार फुट ऊपर है,–जड़ीबूटियों को इकट्ठा करने के लिए कई यात्रायें कीं, क्योंकि, हमारा चिकित्सीय प्रशिक्षण जड़ीबूटियों के इलाज पर आधारित है और चाकपोरी में हम, कम से कम छैः हजार प्रकार की विभिन्न जड़ीबूटियॉ, सदैव भंडारित (stocked) रखते थे। हम तिब्बती विश्वास करते हैं कि, हम जड़ीबूटियों के इलाज में, दुनियाँ के किसी भी भाग के लोगों की अपेक्षा, अधिक जानते हैं। अब चूंकि, मैं पूरे विश्व में कई बार घूम–फिर चुका हूँ, मेरा ये विश्वास और पक्का हो गया है। तिब्बत के ऊॅचे भागों वाले स्थानों में अनेक यात्रायें करने के बाद, जिनमें मैं, आदमियों को उठाने वाली पतंगों (manlifting kites) में उड़ा, जो ऊँची–ऊँची पर्वतश्रेणियों में, पहाड़ों की चोटियों के ऊपर होकर उड़ती थीं और जिनमें से मैं मीलोंमील दूर तक फैले देहात को देख सकता था। मैंने तिब्बत के उन स्थानों के लिए, जो अधिकांश लोगों को अनुपलब्ध हैं, चांगतांग के उच्चतम स्थानों के स्मरणीय अभियान में भी भाग लिया। यहाँ, हम अभियान में जाने वाले लोगों ने, पूरी तरह से प्रथक्कृत (secluded) एक एकांत घाटी देखी, जो पहाड़ियों की दरारों के बीच में थी और गर्म थी, जो पृथ्वी की शाश्वत अग्नि

से गर्म थी, जिसमें पानी बुलबुलेदार और गर्म था और नदी के रूप में बह रहा था। वहीं, हमें एक बहुत बड़ा शहर भी मिला, जो छिपी हुई घाटी में, गर्म हवा से आधा गर्म, और दूसरा आधा, जो हिमनदों (glaciers) की साफ बर्फ के बीच जमा हुआ, ठंडा था। इतनी साफ बर्फ, जिसमें से उस शहर के दूसरे आधे हिस्से को स्पष्टतः देखा जा सकता था, मानो कि, वह स्वच्छतम जल में होकर दिख रहे हों। शहर का वह भाग, जहाँ की पूरी बर्फ पिघल चुकी थी, लगभग ठीकठाक था। वास्तव में, वर्षों (समय) ने उसके भवनों के साथ नर्म व्यवहार किया था। हवा शांत थी, बहती हवा का नामोनिशान भी नहीं, जिससे उसके अंदर के भवन, किसी भी प्रकार के नुकसान अथवा क्षरण (attrition) से बचे हुए थे। हम, जो हजारों–हजारों साल में गुजरने वाले, पहले इंसान थे, उसकी गलियों में होकर गुजरे। हम अपनी इच्छानुसार उन घरों में, जो ऐसा लगता था कि, अपने स्वामियों के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं, तब तक घूमे, जब तक कि, थोड़ा और अधिक नजदीक जाकर देखने पर, अजनबी कंकालों को देखकर जड़वत् नहीं हो गए। हमने ये अनुभव किया कि, ये एक मृतनगर (dead city) था। यहाँ तमाम तरह की अकल्पनीय युक्तियाँ एवं उपकरण थे, जो ये इंगित करते थे कि, ये छिपी हुई घाटी, किसी जमाने में एक अच्छी सभ्यता, जो आज की अपक्षा अधिक विकसित थी, का निवास रही होगी। अंत में, हमें ये सिद्ध हुआ कि, हम उन लोगों की तुलना में, लगभग, असभ्य या जंगली ही हैं, परंतु मैं इस दूसरी पुस्तक में, इस नगर के बारे में लिखूँगा।

जब मैं पूरी तरह जवान था, मेरा एक विशिष्ट ऑपरेशन किया गया, जिसे तीसरे नेत्र का खोलना कहा गया। इसमें, लकड़ी की एक कड़ी पच्चड़ (sliver), जिसे जड़ीबूटियों के एक विशिष्ट घोल में डुबाकर रखा गया था, मेरे माथे के केन्द्र में होकर अंदर घुसाई गई ताकि, एक ग्रन्थि (gland) को उत्तेजित किया जा सके, जो मुझे अतीन्द्रियज्ञान (clairvoyance) की विशिष्टरूप से बढ़ाई हुई शक्ति प्रदान करती थी। मैं विशेष रूप से अतीन्द्रियज्ञान को लेकर पैदा हुआ था, परंतु तब, ऑपरेशन के बाद, मैं असामान्य रूप से अतीन्द्रियज्ञान रखनेवाला हो गया। मैं लोगों को, उनके प्रभामंडल के साथ देख सकता था, मानो कि वे, काँपते हुए रंगों का गजरा (wreathe), जिसमें ज्वालायें उठ रही हों, पहने हों। मैं उनके प्रभामंडलों से, उनके विचारों को भाँप लेता था। उनको क्या बीमारी है, उनकी क्या अपेक्षायें और डर हैं, मैं उन सब को भाँप जाता था। अब चूंकि, मैंने तिब्बत को छोड़ दिया है, मैं पश्चिमी डॉक्टरों में एक यंत्र के विषय में रुचि जाग्रत करना चाहता हूँ, जो डॉक्टरों और शल्यचिकित्सकों को आदमियों के प्रभामंडलों को वास्तविकरूप से, उनके रंगों के साथ, दिखा सके। मैं जानता हूँ कि, यदि डॉक्टर और शल्यचिकित्सक प्रभामंडल को देख सकें, ये देख सकें कि, किसी व्यक्ति को वास्तव में, क्या प्रभावित करता है, ताकि रंगों को देखते हुए, और चलित पट्टियों की रूपरेखा को देखते हुए, कोई विशेषज्ञ ठीक–ठीक ये बता सके कि, वास्तव में व्यक्ति किस बीमारी से पीड़ित है। इसके अतिरिक्त, ये भौतिकशरीर में, पहले से दिख जाने वाला लक्षण है क्योंकि, आभामंडल (aura) से, वास्तव में, कर्करोग (cancer) का, क्षयरोग (tuberclosis) और दूसरी शिकायतों का, जब ये भौतिक शरीर पर आक्रमण करती हैं, उससे कई महीनों पहले पता चल जाता है। इस प्रकार, डॉक्टर को इन बीमारियों के आक्रमण की पूर्वचेतावनी मिल जाती है, जिससे कि डॉक्टर इन शिकायतों का, और अधिक अचूक तरीके से, इलाज कर सकता है। मेरे आश्चर्य और गहरे दुख के लिए, पश्चिमी डॉक्टर, इन सब में बिलकुल रूचि नहीं रखते। उन्हें ऐसा लगता है कि, ये सामान्यज्ञान होने की बजाए, जादू जैसा कुछ है। कोई भी इंजीनियर ये जानता है कि, उच्चदाब (high tension) वाले तारों में, उनके चारों और एक प्रभामंडल (corona) होता है। ठीक इसी प्रकार, मनुष्य शरीर का भी होता है, और ये एक सामान्य भौतिक घटना है, जो मैं विशेषज्ञों को दिखाना चाहता हूँ, और वे इसे रद्द (reject) कर देते हैं। ये एक दुःख भरी बात है, परंतु ये समय आने पर दिख जाएगी। दुःखांत बात ये है कि, तबतक, जबतक कि, ये

सामने नहीं आता, अनेक लोग पीड़ित होंगे और अनावश्यक रूप से मरेंगे।

दलाईलामा, तेरहवें दलाईलामा, मेरे संरक्षक थे। उन्होंने आदेश दिया था कि, मुझे प्रशिक्षण और अनुभव में हर संभव सहायता दी जाए। उन्होंने निर्देशित किया था कि, मुझे हर चीज पढ़ाई जाए, और सामान्य जुबानी शिक्षा के अतिरिक्त, दूसरे अन्य तरीकों से भी, जिनको यहाँ बताने की आवश्यकता नहीं है, हर चीज, मुझमें पूरी भर दी जाए। मुझे सम्मोहित (hypnotçed) अवस्था में भी सुझाव दिए गए। इनमें से कुछ, इस पुस्तक में बताये गए हैं, कुछ 'तीसरी ऑख' पुस्तक में बताये जा चुके हैं। दूसरे इतने अच्छे और इतने अविश्वसनीय हैं कि, उनको बताने के लिए, अभी समय पूरी तरह पका नहीं है।

अपनी अतीन्द्रियज्ञान की शक्तियों के कारण, मैं गहनतम (inmost) के लिए अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ। विभिन्न अवसरों पर, मैं लोगों के बीच, कमरे में छिपा रहा ताकि, मैं किसी व्यक्ति के वास्तविक विचारों को बता सकूँ और उसके प्रभामंडल से उसकी नीयत को जान सकूँ। ये, यह देखने के लिए किया गया था कि, क्या उस व्यक्ति की वाणी और विचारों में मेल है। विशेषरूप से तब, जब कि वे विदेशी राजकीय व्यक्ति थे, जो दलाईलामा से मिलने के लिए आए थे। जब चीन के शिष्टमंडल का, महान तेरहवें दलाईलामा द्वारा स्वागत किया गया, तब मैं, एक छिपा हुआ प्रेक्षक था। जब अँग्रेज लोग दलाईलामा से मिलने के लिए गए, तब भी मैं छिपा हुआ प्रेक्षक ही बना रहा। बाद के किसी दूसरे अवसर पर, उस विशिष्ट पोशाक के कारण, जो वह आदमी पहने हुए था, मैं अपने कर्त्तव्य से गिर गया, क्योंकि तब, मैंने पहली–पहली बार ही, यूरोपीय पोशाक को देखा था।

प्रशिक्षण लंबा और दुष्कर था। साथ–साथ, पूरी रात और पूरे दिन, मंदिर में होने वाली प्रार्थनाओं में भी उपस्थित होना पड़ता था। हमारे लिए, बिस्तरों की कोमलता नहीं थी। हम अकेले ही अपने कमरों में, फर्श पर लुढ़ककर सो जाते थे। शिक्षक, वास्तव में बहुत कठोर थे। हमें अध्ययन करना पड़ता था, सीखना पड़ता था और हर चीज को कंठस्थ करना पड़ता था। हमें कापियों पर लिखने की छूट नहीं थी। हम हर चीज को कंठस्थ करते थे। मैंने अमूर्तभोतिकी (metaphysics)[1] संबंधी विषयों को भी ठीक से पढ़ा। मैंने उनमें गहराई तक प्रवेश किया। अतीन्द्रियज्ञान (clairvoyance), सूक्ष्मशरीर से यात्रा (astral travel), दूरानुभूति (telepathy) और ऐसी तमाम चीजों में होकर मैं गुजरा। अपनी दीक्षा के चरणों में से एक में, मैं रहस्यमयी गुफाओं और सुरंगों में, जो पोटाला के नीचे थीं, जिनके बारे में सामान्य व्यक्ति बिलकुल नहीं जानता, अंदर गया। ये पुराने जमाने की सभ्यता के खंडहर हैं, जो लोकस्मृतियों से लगभग पूरी तरह बाहर हो चुके हैं। गुफा की दीवारों पर कुछ अभिलेख (records) थे; उन चीजों के चित्रित अभिलेख, जो हवा में बहती थीं, चीजें, जो जमीन के अंदर चलती थीं। दीक्षा के दूसरे चरण में, मैंने सावधानीपूर्वक संरक्षित किये गये मृत दैत्याकार शरीरों को देखा, जो दस फुट और पंद्रह फुट लंबे थे। मुझे, मृत्यु के दूसरी ओर, ये जानने के लिए कि, वास्तव में मृत्यु नहीं होती, भी भेजा गया, और जब मैं वापस लौटा तो मैं, मठाधीश की श्रेणी के साथ, एक मान्यता प्राप्त अवतार बन चुका था परंतु, मैं मठाधीश नहीं बनना चाहता था। किसी लामामठ के साथ बंधा नहीं रहना चाहता था। मैं, घूमने फिरने के लिए, और दूसरों को मदद करने के लिए स्वतंत्र, जैसा कि मेरे लिए भविष्यकथनों में कहा गया था, लामा होना चाहता था। इसलिए मुझे स्वयं दलाईलामा द्वारा, लामा की श्रेणी में स्थाई कर दिया गया और उनके द्वारा मुझे ल्हासा में, पोटाला से संबद्ध कर दिया गया। फिर भी मेरा प्रशिक्षण चलता रहा। मुझे पश्चिमी विज्ञान की अनेक विधाओं को सिखाया गया। प्रकाशकी (optics) और दूसरे संबंधित विषय। लेकिन अंत में वह समय आया, जब मुझे दलाईलामा द्वारा एकबार फिर बुलाया गया और निर्देश दिए गए।

उन्होंने मुझे कहा कि, मैं तिब्बत में जितना सीख सकता था, उतना मैंने सीख लिया था और अब यहॉ से जाने का, उस सब को छोड़ने का, जिसे मैं प्यार करता था, उस सब को छोड़ने का,

1 अनुवादक की टिप्पिणीः चेतना और ज्ञान से सम्बंधित मनोवैज्ञानिक अध्ययन को अमूर्तभौतिकी (metaphysics), कहते हैं।

जिसकी मैं देखभाल करता था, चिंता करता था, समय आ गया था। उन्होंने मुझे बताया कि, मुझे चिकित्सा और शल्यविज्ञान में, चीन के शहर में नामांकित करने के लिए, चुंगकिंग के लिए, विशेष संदेशवाहक भेजे गए थे।

जब मैंने गहनतम की शरण को छोड़ा, मैं दिल से दुखी था। मैं अपने गुरु, लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ चला और मेरे सम्बंध में जो निर्णय लिया जा चुका है, उन्हें बताया। तब मैं अपने माता–पिता के घर, उन्हें यह बताने के लिए, कि क्या हो चुका था और यह भी कि, मुझे ल्हासा छोड़ना था, गया। दिन उड़ गए, और अंतिम दिन आया, जब मैंने चाकपोरी छोड़ दिया। जब मैंने, लामा मिंग्यार डोंडुप को हाड़मांस के शरीर में अंतिमबार देखा और मैंने ल्हासा शहर, जो ऊँचे पर्वतीयदर्रो में स्थित एक पवित्र शहर है, के बाहर की तरफ अपना रास्ता पकड़ा। जब मैंने पीछे को देखा, तो मैंने अंतिम संकेत देखा; पोटाला की सुनहरी छतों के नीचे, एक अकेली पतंग उड़ रही थी।

अनुवादक का निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक माननीय लोबसांग रम्पा की द्वितीय कृति "Doctor from Lhasa" का हिन्दी रूपांतरण है। पहली पुस्तक, ''तीसरी आँख'' उनके बचपन की दास्तान (लगभग चार से सोलह वर्ष की आयु तक) है, जबकि यह पुस्तक उनकी किशोर एवं योवन अवस्था (लगभग सोलह से पेंतीस वर्ष की आयु तक) की गाथा है। पुस्तक का अधिकांश भाग द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में है। अतः पुस्तक को आज के बजाय, लगभग सौ वर्ष पूर्व की परिस्थितियों एवं पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिये। आज का तिब्बत लगभग पूरी तरह बदल चुका है। चीन ने वहाँ सड़कों का जाल बिछा दिया है, जिनपर हर समय सभी तरह के वाहन द्रुतगति से दौड़ते हैं। व्यापारिक गतिविधियों एवं पर्यटन सुविधाओं का पर्याप्त विकास हुआ है। तथापि, स्वतंत्र तिब्बत की माँग के समर्थन में आन्दोलन अभी थमे नहीं हैं, यदाकदा स्थानीय लोगों के विरोध और आत्मदाह के मामले भी सामने आते रहते हैं।

तिब्बत में प्रारंभिक बसाहट लगभग इक्कीस हजार वर्ष पूर्व हुई थी। तिब्बत प्रारंभ में राजतंत्रीय व्यवस्था के अधीन था, बाद में बौद्धधर्म के प्रमुख दलाईलामा और पंचेनलामाओं की परंपरा एवं उनका प्रभुत्व स्थापित हुआ और ये धर्माचार्य ही, राजप्रमुख बन गये। भारत में अंग्रेजी राज्य के समय में, तिब्बत का स्वतंत्र अस्तित्व था। संपूर्ण विश्व से अलग–थलग तिब्बत, सदियों तक धार्मिक आस्थाओं एवं आध्यात्मिक गतिविधियों का गढ़ बना रहा। यहाँ हिन्दुओं और बौद्धों के अनेक प्रसिद्ध तीर्थ हैं। कुछ समय पहले तक, तिब्बत के संबंध में, विश्व में जानकारी लगभग नगण्य थी। तिब्बत एक शांत पर्वतीय क्षेत्र है, जिसमें अनगिनित गुफाऐं एवं कंदराऐं हैं, जो इसे आध्यात्मिक साधनाओं के लिये एकदम उचित वातावरण प्रदान करतीं हैं। हिमालय का क्षेत्र, सभी प्रकार की एकांत आध्यात्मिक एवं तांत्रिक साधनाओं के लिये प्रसिद्ध रहा है। आज भी अनेक वैदिक संत, तिब्बत में साधना करते हैं अथवा करने की इच्छा रखते हैं। संपूर्ण विश्व तिब्बत के गूढ़ रहस्यों को जानने, समझने के लिये लालायित है।

आज पूरे विश्व में साक्षरता और जागरूकता बढ़ी है। अंतरजाल (Internet) ने पूरे विश्व को विश्वगॉव बना दिया है। अंतरजाल पर प्रतिदिन, लगभग बीस हजार से अधिक पृष्ठों की नई जानकारी विभिन्न विधाओं और क्षेत्रों में आ जाती है। इसमें से अधिकांश ज्ञान, अँग्रजी अथवा अन्य विदेशी भाषाओं में प्रदान किया जाता है। भारत, विशेषकर उत्तरी एवं मध्य भारत के सामान्यलोग, अँग्रेजी में अधिक दक्षता प्राप्त न होने के कारण, इस ज्ञान से वंचित रह जाते हैं। तथाकथित अँग्रेजी जानने वाले, मुझ जैसे लोगों को भी, अँग्रेजी की पुस्तक को, धाराप्रवाह पढ़ने में, असुविधा ही होती है। अतः जैसे ही दो चार शब्दों के शब्दार्थ अटके अथवा वाक्य का सही अर्थ नहीं समझ सके, पढ़ने का मजा किरकिरा हो जाता है और पुस्तक उठाकर रख देनी पड़ती है। हिन्दीभाषी वैसे भी अधिक पुस्तकप्रेमी नहीं होते, उस पर पुस्तकें भी काफी मंहगी होती हैं एवं सर्वत्र सहजरूप से सुलभ नहीं हो पातीं। अतः मेरा ऐसा मानना है कि, हिन्दीभाषी लोग ज्ञान की दौड़ में पिछड़ते जा रहे हैं। अतः इसकी क्षतिपूर्ति के लिये दो ही विकल्प सम्भव हैं, या तो प्रत्येक व्यक्ति अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषओं पर पूर्ण अधिकार अर्जित करे, जो लगभग असंभव है, अथवा उसे मातृभाषा में पुस्तकें उपलब्ध करायीं जायें। मातृभाषा के अतिरिक्त किसी अन्यभाषा पर अधिकार प्राप्त कर पाना, अपने आप में व्ययसाध्य और श्रमसाध्य कार्य है। कहावत है कि, किसी व्यक्ति के धर्म को प्रलोभन अथवा प्राणभय से बदलवाया जा सकता है परन्तु उसकी भाषा को किसी भी प्रकार नहीं बदला जा सकता। अतः मात्र दूसरा विकल्प ही शेष रहता है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि, हम भारत के लोग, विदेशी भाषाओं की बात तो छोड़ दें, अपने ही देश की अन्य भाषाओं को जानने में भी कोई रुचि नहीं लेते, जबकि यूरोपीय देशों में, प्रत्येक व्यक्ति मातृभाषा के अलावा, कम से कम चार छैः अन्य भाषाऐं अवश्य जानता है।

अतः मैंने इस विचार से प्रेरित हो कर, कुछ पुस्तकों को अँग्रेजी से हिंदी में अनुवादित करने का

संकल्प किया है। मेरे द्वारा अनुवादित सभी पुस्तकें, अंतरजाल पर निशुल्क उपलब्ध रहेंगीं। मुझे प्रसन्नता एवं संतुष्टि होगी यदि पाठकगण इनसे लाभान्वित हो सकें।

इस रूपांतरण में मुझे अपने मित्रों विशेषकर, श्री राम प्रकाश गुप्ता, श्री देवेन्द्र भार्गव, राकेश गोयल, एवं अपनी शिष्याओं कुमारी सोनाली यादव, एवं कुमारी रागिनी मिश्रा, कुमारी अफीफा का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। विशेषरूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, जिनके सहयोग के बिना, इस पुस्तक का प्रस्तुतिकरण संभव नहीं था, का मैं ऋणी हूँ। मैं पुनः उन सभी का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, इस पावन कार्य में सहयोग किया।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में निश्चितरूप से कुछ त्रुटियाँ रह गयी होंगी, मैं उनके लिये पाठकों से क्षमायाचना करता हूँ तथा अपेक्षा करता हूँ कि विद्वत पाठकगण उन्हें मेरे संज्ञान में लाने का कष्ट अवश्य करेंगे, ताकि उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शनिवार, 15 अगस्त 2015
इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र., भारत
फोन 07512433425
मोबाइल : 9893167361 email : drguptavp@gmail.com
: tuesday@lobsangrampa.org

अध्याय एक
अज्ञात की ओर

मैंने, इससे पहले कभी, इतनी निराशाजनक और इतनी दुष्कर सर्दी, अनुभव नहीं की थी; समुद्र तल से बीस हजार फुट अथवा उससे भी अधिक ऊपर, चाँगताँग के ऊसर, उच्चस्थान (high land) में भी, जहाँ कंकड़, गिट्टियों की बौछारें, जो शून्य से भी कम ताप वाली हवाऐं, कोड़ों की तरह मारती थीं और खाल को चीरकर, खून के धब्बों जैसी धज्जियाँ उड़ा देती थीं, मैं अबकी तुलना में अधिक गर्म रहता था। वह उस भयानक ठंड, जिसे मैं हृदय में अनुभव करता हूँ, जितनी कटु नहीं थी। मैं अपने प्रिय ल्हासा को छोड़ रहा था। जैसे ही मैं मुड़ा, और मैंने अपने पीछे पोटाला की सुनहरी छतों पर छोटी आकृतियों को देखा और उनके ऊपर मंद–मंद सी बयार में, एक अकेली पतंग लहराती, डूबती; कहने के लिये लहराती, डूबती, जा रही थी, डूबी और हिली, मानो कह रही हो, ''विदा हो, आपके पतंग उड़ाने के दिन अब समाप्त हो चुके हैं, अब और अधिक गंभीर विषयों की ओर सोचो।'' मेरे लिए, बृहद नीले आकाश में ऊपर, एक पतली डोरी से अपने गृह में ठहरी हुई ये पतंग, एक संकेत थी। अपने ल्हासा प्रेम की पतली सी डोरी के सहारे बँधा हुआ मैं, तिब्बत के बाहर, दूसरी विस्तृत दुनियाँ में जा रहा था। मैं अपने शांतिप्रिय देश के बाहर, एक अनजान, भयानक दुनियाँ में, अजनबी होने जा रहा था। जब मैंने पीछे मुड़ कर अपने घर की ओर देखा, मैं दिल से बहुत दुःखी था, और मेरे साथी घोड़ों पर सवार होकर बृहत् अज्ञात में चल दिए। वे भी अप्रसन्न थे, लेकिन उन्हें ये जानकर साँत्वना मिली हुई थी कि, मुझे एक हजार मील दूर, चुँगकिंग (chungking) में छोड़कर आने के बाद, वे फिर घर वापस आ सकते हैं। वे अपनी वापसी यात्रा पर, सांत्वना के प्रत्येक चरण, जो उन्हें घर के समीप लाता जायेगा, को ध्यान में रखते हुए, वापस लौटेंगे। मुझे हमेशा के लिए, अनजान देशों की ओर, अनजान लोगों की ओर, और अनजान अनभुवों की ओर, चलते रहना था।

जब मैं सात वर्ष का था, तब मेरे भविष्य के बारे में की गई भविष्यवाणी में कहा गया था कि, मैं एक लामामठ में प्रविष्ट होऊँगा और पहले चेले के रूप में प्रशिक्षित होऊँगा, उसके बाद ट्रापा (trapa) के पद पर पहुँचूँगा और उसके बाद, जबतक कि समय पूरा होते–होते, मैं लामा की परीक्षा पास न कर लूँ, आगे इसीप्रकार। उस स्थिति से आगे, जैसा ज्योतिषियों ने कहा, मुझे तिब्बत छोड़ना था; अपना घर छोड़ना था; वह सब, जिसे मैं प्यार करता था, छोड़ना था; और जिसे हम बर्बर चीन कहते हैं, उसमें अंदर जाना था। मुझे चुंगकिंग की यात्रा करनी थी और डॉक्टर और शल्यचिकित्सक बनने के लिये अध्ययन करना था। ज्योतिषी पुजारियों के अनुसार, मुझे युद्ध में उलझना था, अनजान लोगों का बंदी बनना था और उन लोगों की, जो आवश्यकता में हैं, सभी कष्टों में मदद करने के लिए, सभी प्रकार के लालचों से, लालसाओं से, ऊपर उठना था। उन्होंने मुझे बताया था कि; मेरा जीवन कठोर होगा, कि; दुःख दर्द और अकृतज्ञता मेरे हमेशा के साथी होंगे। वे कितने सही थे!

इसलिए, अपने दिमाग में इन विचारों के साथ, जो किसी भी प्रकार से प्रसन्न विचार नहीं कहे जा सकते थे –मैंने (अपने साथियों को) आगे बढ़ने का आदेश दिया। सावधानी बतौर, जब हम ल्हासा के परिदृश्यक्षेत्र से बाहर थे, हम अपने घोड़ों से उतरे और ये सुनिश्चित किया कि वे भी आराम में हों, और ये भी कि, उनकी काठी न तो अधिक तंग हो और न ही अधिक ढीली हो। हमारे घोड़े, इस यात्रा में, निरंतर हमारे मित्र होने वाले थे, और हमें उनकी, कम से कम वैसी, जैसीकि हम अपनी करते, देखभाल करनी थी। ये तय हो जाने के बाद, और इस सांत्वना को जानते हुए कि, हमारे घोड़े आराम में हैं, हम दृढ़ संकल्पित होकर, फिर से घोड़ों पर सवार हुए, और अपनी निगाह आगे की और रखते हुए, आगे चल दिए।

ये 1927 का प्रारंभ था, जब हमने ल्हासा छोड़ा, और चोतांग (Chotang), जो ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पर है, की ओर धीमे–धीमे रास्ता तय किया। हमने सबसे सुविधाजनक रास्ते के लिए, कई–कई बार विस्तार से चर्चा की, और नदी और कांतिंग (Kanting) के साथ–साथ होकर जाने वाला रास्ता, हमको सबसे अधिक उपयुक्त लगा। ब्रह्मपुत्र वह नदी है, जिसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इसके स्रोत के ऊपर, जो हिमालय की पर्वतश्रेणियों में है, मैं तैरा हूँ, और आदमियों को उड़ाने वाली पतंगों (manlifting kites) में बैठकर, इसे देखने के लिए, मैं काफी सौभाग्यशाली रहा हूँ। तिब्बत में, हम नदियों को आदर की दृष्टि से देखते हैं, लेकिन दूसरी किसी भी जगह, ये उतनी आदर से नहीं देखी जातीं। सैकड़ों मील दूर, जहाँ ये बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं, तबतक पवित्र मानी जाती हैं; उतनी ही पवित्र, जैसाकि बनारस में। ये ब्रह्मपुत्र ही थी, जैसा हमें बताया गया, जिसने बंगाल की खाड़ी को बनाया। इतिहास के प्रारंभकाल में ये नदी तेज थी, और गहरी भी थी, और पहाड़ों से निकल कर, ये गहरा निशान बनाती हुयी, लगभग सीधी रेखा में तेजी से दौड़ती थी। इसने आश्चर्यजनक, महिमामय, खाड़ी बनाई। हम, पर्वत के दर्रो में से, सिकांग (Sikang) के बीच होते हुए, नदी के साथ चले। पुराने दिनों में; खुशी के दिनों में, जब मैं बहुत छोटा था, सिकांग, तिब्बत का ही एक हिस्सा था, एक प्रांत था। तब इंग्लैंड के लोगों ने, ल्हासा में घुसपैठ की। उसके बाद, घुसपैठ करने के लिए, चीनी लोगों का साहस बढ़ गया, जिससे उन्होंने सिकांग को अपने कब्जे में ले लिया। वे घातक बदनीयती के साथ, मारते हुए, बलात्कार करते हुए, लूटमार करते हुए, हमारे देश के उस हिस्से में घुसे, और उन्होंने सिकांग को अपने कब्जे में ले लिया। उन्होंने, अपने चीनी अधिकारियों की, जो अपने उच्चाधिकारियों का अनुमोदन न पाने के कारण, दंडस्वरूप सिकांग भेजे गए थे, यहाँ नियुक्तियॉ कीं। दुर्भाग्यवश, उन्हें चीनी सरकार ने कोई समर्थन नहीं दिया। उन्हें स्वतः ही, अपने ढंग से, अपनी व्यवस्था करनी पड़ती थी। हमने देखा कि, ये चीनी अधिकारी, केवल कठपुतलियॉ मात्र थे; असहायव्यक्ति; शक्तिहीन; जिनके ऊपर तिब्बतीलोग हँसते थे। वास्तव में, हम उससमय चीनी अधिकारियों का हुक्म मानने का नाटक करते थे, परंतु उसमें कोई नम्रता नहीं थी। जैसे ही उनकी पीठ फिरती, हम अपने ढर्रे पर चल पड़ते।

दिन–प्रतिदिन, हमारी यात्रा जारी रही। हमने अपने रुकने के स्थानों को, लामामठ में जाने को, जहाँ हम रात को रुक सकते थे, अपनी सुविधानुसार चुना। लामा के रूप में, वास्तव में, मैं एक एबट, और एक स्वीकृत अवतार था। हमारा बहुत अच्छा स्वागत किया गया, जितनी कि भिक्षुक व्यवस्था कर सकते थे। इसके अतिरिक्त, मैं दलाईलामा के व्यक्तिगत संरक्षण में यात्रा कर रहा था और ये, वास्तव में, बहुत महत्व रखता था।

हमने कांतिंग की तरफ रुख किया। ये अत्यंत प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है, याक की बिक्री के लिए सुप्रसिद्ध, और विशेषरूप से चाय, जो हमें तिब्बत में इतनी मजेदार, रूचिकर लगती थी, की ईंटों के निर्यातकेन्द्र के रूप में मशहूर। ये चाय चीन से लाई जाती थी, ये सामान्य चायपत्ती नहीं थी, परंतु कमोवेश, एक रासायनिक काढ़ा जैसा था। इसमें, थोड़ी सी चायपत्ती, कलमीशोरा, सोडा, नमक और कुछ दूसरी अन्य चीजें होती थीं, क्योंकि चीन में खाना बहुतायत में नहीं था, जैसाकि विश्व के दूसरे भागों में है, और इसलिए हमारी चाय को एक सूप के रूप में और एक पेय के रूप में होना होता था। कांतिंग में चाय को मिश्रित किया जाता है और जैसा कि सामान्यतः कहा जाता है, खंडों और ईंटों के रूप में, बनाया जाता है। ये ईंटें आकार और वजन में ऐसी होती थीं, जिससे कि, उन्हें घोड़ों के ऊपर, और बाद में याक के ऊपर, जो कि उन्हें ऊँची पर्वत श्रेणियों में होकर ल्हासा में पहुँचायेंगे, आसानी से लादा जा सके। उनको बाजार में बेचा जाता था और पूरे तिब्बत में भेजा जाता था।

चाय की ईंटें, एक विशिष्ट आकार, और शक्ल की होती थीं, और उन्हें एक विशेष प्रकार से पैक किया जाता था, ताकि, यदि कोई घोड़ा, ठोकर खाकर, या लड़खड़ाकर, पहाड़ के मोड़ में फंस जाए और चाय नदी में गिर जाए, तो भी कोई हानि न हो। ये ईंटें, हरे आवरण में कसकर बंद की जाती थीं,

जिसे कई बार कच्चाआवरण कहते थे, और तब उन्हें जल्दी से पानी में डुबा दिया जाता था। उसके बाद, ये चट्टानों पर धूप में सूखने के लिए रख दी जाती थीं, जब ये सूखतीं तो सिकुड़तीं, ये आश्चर्यजनक रूप से सिकुड़ जातीं, और इनका माल बहुत अधिक दबा दिया जाता था। सुखाने में, इनका रंग भूरा हो जाता था और ये बैकेलाईट की तरह कठोर हो जाती थीं। इस प्रकार से तैयार किया गया कोई भी खोल, सूख जाने के बाद, पहाड़ से लुढ़का दिया जाने पर भी, बिना नुकसान पहुँचाये, सुरक्षित ढंग से, जमीन पर गिर सकता था। इनको नदी में भी बहाया जा सकता था, और शायद ये कई दिनों तक, नदी में रह सकता था। जब इनको बाहर निकाला जाता, और सुखाया जाता, तो हर चीज पूरी तरह से सही सलामत होती। पानी अंदर नहीं घुस सकता था, और कोई भी चीज खराब नहीं हो सकती थी। हमारी ईंटें, चाय की ईंटें, सुखाये हुए अपने बंडलों में, दुनियाँ में सबसे अधिक स्वास्थ्यकर स्थिति में होती थीं। चाय, बहरहाल, मुद्रा के रूप में भी उपयोग में लाई जाती थी। कोई व्यापारी, जिसके पास धन नहीं हो, वह चाय के टुकड़ों को तोड़कर, उनसे अदला–बदली कर सकता था। जबतक, किसी के पास चाय की ईंटे हैं, नगद रखने की परेशानी और झंझट मोल लेने की आवश्यकता नहीं थी।

कांतिंग ने, हमको, व्यापारियों की भॉति व्यवहार से, बैचेन करते हुए प्रभावित किया। हम केवल अपने ल्हासा के ही अभ्यस्त थे, परंतु यहाँ कांतिंग में, तमाम देशों के लोग थे। बहुत दूर, जैसे जापान, भारत, बर्मा और ताकला पर्वत श्रेणियों के आगे के, असभ्य जंगली, देहाती लोग भी। हम बाजार में घूमे, व्यापारियों के साथ मिले, और विभिन्न भाषाओं की अनजान आवाजों को सुना। हमने, ज़ेन[2] (zen) वर्ग के, और दूसरे अन्य विभिन्न धर्मों के भिक्षुओं के साथ, कंधे रगड़े। तब हमने इन सबके भलेपन के ऊपर आश्चर्य किया। हमने, कांतिंग के आगे, सड़क पर एक छोटे लामामठ की ओर, को अपना रास्ता बनाया। यहाँ हमारे आने की प्रतीक्षा की जा रही थी। वास्तव में, हमारे मेजबान, इस बारे में ज्यादा चिंतित थे कि, हम अभी तक पहुॅचे क्यों नहीं। हमने जल्दी ही उन्हें बताया कि, हम बाजार में घूमते रह गए थे, और बाजार की गपशप को सुन रहे थे। प्रभारी मठाधीश ने हमारा स्वागत किया और उत्सुकता के साथ हमारी तिब्बत की कहानियों को सुना। उन सारी खबरों को सुना, जो हमने उन्हें दीं, क्योंकि, हम विद्वानों की नगरी, पोटाला से थे। हम उन लोगों में से थे, जो चाँगताँग जैसे उच्चस्थानों में जा चुके थे, और जिन्होंने अच्छी–अच्छी चीजों को देखा था। हमारी प्रसिद्धि, वास्तव में, हमसे पहले पहुॅच गई थी।

जल्दी सुबह, मंदिर में अपनी प्रार्थनासभा में शामिल होने के बाद, हम फिर अपने घोड़ों पर सवार होकर, थोड़ा सा खाना, त्सम्पा अपने साथ लेते हुए, सड़क पर चले। सड़क, वास्तव में, एक पहाड़ी में उठी हुई तंगघाटी की तरह, संकरी, एक निशान भर थी। उसमें नीचे की और, उससे कहीं ज्यादा, जो हमने इससे पहले शायद ही कभी देखे हों, पेड़ थे। उनमें से कुछ झरने की उड़ती हुई छोटी–छोटी बूंदों से आंशिक रूप से ढके हुए, दैत्याकार सदाबहार (rhododendrons), उस घाटी को ढके हुए थे, जबकि उसके जमीनी भाग पर, विभिन्न रंगों के फूल, छोटे–छोटे पहाड़ी फूल, खुशबूदार गलीचे के रूप में बिछे हुए थे। हम, यद्यपि उत्पीड़ित, अपने घर को छोड़ने के ख्याल के कारण उदास, और हवा के घनत्व के कारण दबे और थके हुए थे,। हरबार हम नीचे, और नीचे, चलते चले जा रहे थे, और हम इसमें साँस लेना, कठिन से कठिनतर, पा रहे थे। एक और कठिनाई थी, जिससे हम परेशान हुए। तिब्बत में, जहाँ हवा विरल होती है, पानी कमताप पर उबल जाता है, और ऊँचे स्थानों पर, हम चाय को, जब वह वास्तव में उबल रही होती थी, पी सकते थे। हम चाय और पानी को तबतक आग पर रखते थे, जबतक कि, सारे बुलबुले ये चेतावनी न दे दें कि, चाय, पीने के लिए तैयार है। पहली बार, इस निचले देश में, जब हमने पानी के ताप को नापने की कोशिश की, हम जले हुए होंठ महसूस

2 अनुवादक की टिप्पिणीः ज़ेन (zen), बौद्ध धर्म की महायान शाखा है, जो जापान में मिलती है। ये तिब्बती लामामत (lamaism) से काफी भिन्न है।

कर रहे थे। चाय को सीधे आग से उतार कर पी लेना, हमारी आदत थी। हमें तिब्बत में ऐसा करना पड़ता था, अन्यथा कटुशीत, हमारी चाय में से सारी ऊष्मा लूट लेता। उससमय, हमें ये जानकारी नहीं थी कि, घनी हवा उबलने के तापक्रम को प्रभावित करेगी, और न हीं हमें ऐसा पताचला कि, हम उबलते हुए पानी को ठंडा होने के लिए, इंतजार करें, क्योंकि, यहाँ उसके जमने का कोई खतरा नहीं है।

हमारी छाती और फेफड़ों के ऊपर, हवा का अधिक भार होने के कारण, दबाव से, सांस लेने में कठिनाई के कारण, हम गंभीररूप से अव्यवस्थित थे। पहले हमने सोचा कि, ये हमारे प्रिय तिब्बत को छोड़ देने के कारण, हमारी भावनायें हैं, परंतु बाद में हमने पाया कि, हवा में डूब जाने के कारण, हमारी दम घुट रही थी। हममें से कोई भी, ल्हासा से, जो खुद समुदतल से बारह हजार फुट ऊपर है, एक हजार फुट नीचे नहीं गया था। अक्सर हमको और अधिक ऊँचाइयों पर रहना पड़ता था। जब हम चाँगताँग ऊँचाइयों पर गए, वहाँ की ऊँचाई, बीस हजार फुट से ज्यादा थी। हमने, भूतकाल में, तिब्बतियों के बारे में, जिन्होंने, निचले स्थानों पर जाकर अपनी किस्मत को आजमाने के लिए, ल्हासा को छोड़ दिया था, तमाम कहानियाँ सुनी थी। अफवाहें कहती थीं कि, वे महीनों की परेशानी के बाद, मर गए। उनके फेफड़ों के हालात खराब हो गए। पवित्रनगर की बूढ़ी औरतों की कहानियॉ, और ये कथन कि, जिन्होंने निचले स्थानों पर जाने के लिए ल्हासा छोड़ा, वे अत्यंत दुःखभरी मौत मरे, निश्चतरूप से, काफी बखेड़ा खड़ा करती थीं। मैं जानता था कि, इन सब में कोई सत्यता नहीं है क्योंकि, मेरे माता पिता शंघाई (Shanghai) में रह चुके थे, जहाँ उनकी काफी संपत्ति थी। वे वहाँ रहे और सुरक्षित वापस आए। मैं अपने माता–पिता के साथ बहुत कम रह पाया क्योंकि, वे इतने व्यस्त व्यक्ति थे, और इतने अधिक ऊँचेपद पर थे कि, उनके पास बच्चों के लिए कोई समय नहीं था। मेरी जानकारी नौकरों से बटोरी गई थी, परंतु मैं, उस भावना के लिए, जो हम अब अनुभव कर रहे थे, गंभीररूप से विक्षिप्त था, परेशान था। हमारे फेंफड़े, ठुसे हुए से लगते थे। हमें ऐसा लगता था कि, लोहे की पट्टियाँ हमारी छाती पर बाँध दी गई हैं, जो हमें सांस लेने से रोक रही हैं। हर सांस रोंगटे खड़े करनेवाला एक प्रयास था, और यदि हम बहुत तेजी से चलते, तो दर्द, जैसे कि आग से जलने का दर्द, हमारे अंदर गोली जैसा चुभता। हम जैसे–जैसे यात्रा करते हुए, नीचे, और नीचे, आते गए। हवा सघन होती गयी और ताप गर्म होता गया। हमारे लिए ये दुखदाई जलवायु थी। ल्हासा में, तिब्बत में, वास्तव में मौसम बहुत ठंडा रहता था परंतु एक शुष्क–ठंडा होता था; एक स्वस्थ ठंडा होता था; और ताप जैसी कोई अवस्था हमारे लिए महत्व नहीं रखती थी, परंतु अब, इस सघन वायु में, जिसमें काफी नमी है, हम, लगभग, अपने प्रयत्नों को जारी रखने की, अंतिम सीमा में आ गए थे।

एक समय, दूसरे लोगों ने, मुझे पीछे लौटने के लिए, ये कहते हुए कि, यदि हम अपनी उतावली और जोखिमभरी यात्रा में चलते रहे, तो हमसब मर जायेंगे, वापस ल्हासा आने के लिए, दबाव देना शुरू किया; परंतु मैं अपने भविष्यकथन के प्रति पूरा निष्ठावान था कि, ऐसा कुछ नहीं होगा। इसलिए हम यात्रा करते रहे। जैसे–जैसे तापक्रम गर्म हुआ, हमें चक्कर आने लगे। हम लगभग नशे में धुत हो गए, और हमें अपनी ऑखों में तकलीफ होने लगी। हम सामान्यअवस्था में जितना देख सकते थे, उतना नहीं देख पा रहे थे, और न ही, उतना स्पष्ट देख पा रहे थे, और दूरी के संबंध में हमारे अनुमान गलत हो रहे थे। बहुत बाद में, मैंने इसके स्पष्टीकरण को देखा। तिब्बत में, जहाँ दुनियाँ की शुद्धतम और साफ हवा है, कोई भी पचास मील या उससे अधिक दूरीतक, ऐसी स्पष्टता के साथ, जैसेकि, हम यहॉ दस मील दूर देख रहे हों, देख सकता है। यहाँ निचले स्थानों में, सघन हवा में, हम इतनी दूरतक नहीं देख सकते थे, और जो कुछ भी हम देखते थे, वह हवा की सघनता और उसकी अशुद्धता के कारण विकृत हो जाता था।

हमने, कई दिनों तक, नीचे और नीचे, घने पेड़ों से भरे जंगल में होकर, जैसाकि कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता होगा, लगातार यात्रा की। तिब्बत में जंगल अधिक नहीं हैं, पेड़ भी अधिक नहीं हैं,

और कुछ समय के लिए, हम स्वयं को घोड़ों से उतारने से, और अन्य प्रकार के पेड़ों को देखने, उनको छूने, और उनको सूँघने से, स्वयं को रोक नहीं सके। हमारे लिए, ये सभी इतने अजनबी और इतनी अधिक बहुतायत में थे। सदाबहार बुरुंश (rhododendrons), वास्तव में, हमारा सुपरिचित था क्योंकि, तिब्बत में हमारे पास, अनेक सदाबहार थे। बुरुंश का फूल, यदि ठीक से पकाया गया हो तो, वास्तव में, खाने से संबंधित, विलासिता की एक वस्तु थी। हम, सवार हुए चलते गए, और जो कुछ हमने देखा, उसपर आश्चर्यचकित होते गए, और अपने घर और यहाँ के बीच, अंतर को देखकर आश्चर्यचकित हुए। मैं कह नहीं सकता कि, हमें कितना समय लगा, कितने दिन अथवा कितने घण्टे, क्योंकि, ये सारी चीजें हमें बिलकुल भी लुभा नहीं सकीं। हमारे पास काफी समय था, हमें कोई जल्दी नहीं थी, सभ्यता की कोई हड़बड़ाहट नहीं थी, अथवा ऐसी कोई चीज नहीं थी, जिसकी चिंता की जाए।

हम रोजाना आठ या दस घण्टे सवारी करते थे, और रात को अपने सुविधाजनक लामामठों में रुकते थे। ये हमारे प्रकार के बौद्धमठ बिलकुल नहीं थे, परंतु कोई बात नहीं, हमारा सदैव स्वागत किया गया। हम से, पूर्व के सच्चे बौद्धों से, यहाँ कोई प्रतिद्विन्दिता, कोई मतभेद, अथवा विद्वेष नहीं है और किसी भी यात्री का, यहाँ सदैव स्वागत किया जाता है। जबतक हम यहॉ थे, तो जैसी हमारी परंपरा थी, उसके अनुसार, हमने सभी प्रार्थनासभाओं में भाग लिया। हमने भिक्षुओं के साथ, जो हमारा स्वागत करने के लिए पूरी तरह तत्पर थे, संवाद करने का कोई अवसर नहीं गँवाया। उन्होंने हमें चीन की बदलती हुई परिस्थितियों के बारे में, विभिन्न आश्चर्यजनक कहानियाँ सुनाई, बताया कि पुराना शांति का माहौल किसप्रकार बदल रहा था। ''भालू के देश के लोग (the man of the bear),'' रूसी लोग, अपने राजनैतिक आदर्शों के साथ, जो हमारे अनुसार, पूरी तरह से गलत दिखता था, कैसे हम चीनी लोगों को समझाने और शिक्षा देने (बरगलाने) का प्रयत्न कर रहे थे। हमें ऐसा लगता था कि, जो रूसी लोग हमको सिखा रहे हैं, वह है, ''जो तुम्हारा है, सो मेरा है; और जो मेरा है, सो तो मेरा है ही''। जापानी, ठीक इसी तरह से हमको बताया गया कि, चीन के विभिन्न भागों में कष्ट पैदा कर रहे थे। ये वास्तव में, जनसंख्या के बाहुल्य का प्रश्न प्रतीत होता था। जापानी बहुतायत में बच्चे, और कम से कम मात्रा में खाना, पैदा कर रहे थे। इसलिए वे शांतिप्रिय लोगों को अतिक्रमित करने की कोशिश कर रहे थे; उनसे कुछ चुराने की कोशिश कर रहे थे, मानोकि, केवल जापानी ही इस मैदान में हैं।

अंत में, हमने सिकांग (Sikang) छोड़ दिया और श्वेजवान (Szechwan) में सीमा पार की, और कुछ दिन बाद, हम यांगस्ते (Yangtze) नदी के किनारे पर आए। यहॉ हम देर शाम, एक छोटे से गाँव में रुके। यहाँ हमने खरीददारी की, इसलिए नहीं कि, हमें अपने निर्दिष्ट स्थान पर रात में पहुँचना था, बल्कि इसलिए, क्योंकि सामने से कुचल देने वाली भीड़ चली आ रही थी, जैसेकि किसी सभा में से लौटी हो। हमने भीड़ से आगे की ओर किनारा किया, और हममें से ज्यादातर चूंकि, थोड़े भारी बदन के थे, इसलिए हमें अपने समूह में, अपने से आगे जाने वालों को धक्का देकर आगे निकलने में दिक्कत नहीं हुई। वहाँ एक लम्बा सफेद आदमी था, जो बैलगाड़ी पर खड़ा हुआ, हाथ फैंक–फैंक कर इशारा करते हुए, किसानों को भाषण देते हुए, प्रोत्साहित करते हुए, ताकि वे खड़े हों, और भूस्वामियों को मार डालें, साम्यवाद (communism) के चमत्कारों को, आश्चर्यों को, बता रहा था। वह कुछ कागजों को, और कुछ चित्रों को, हवा में हिला रहा था। वह एक तीखे नाकनक्श वाले, दाढ़ीवाले आदमी को, दुनियाँ का तारक, उद्धारक, कहता था परंतु हम न तो लेनिन (Lenin) के इस चित्र से, और न ही उस मनुष्य की बातों से प्रभावित हुए। हम उकताकर दूसरी ओर घूम गए, और कुछ मील दूर लामामठ की ओर, जहाँ हम रात को रुकने वाले थे, चल दिए।

चीन के विभिन्न भागों में, विभिन्न प्रकार के लामामठों के साथ–साथ, बौद्धमठ, बिहार और मंदिर भी थे। चूँकि कुछलोग, विशेषकर, शिकांग (Sikang), शेजवान (Szechwan) अथवा शंघाई

(Chingai) में, तिब्बती बौद्धमत को प्राथमिकता देते थे, इसलिए हमारे लामामठ, जो हमारी सहायता की आवश्यकता महसूस करते थे, उनको सिखाने के लिए वहाँ विद्यमान थे। हमने कभी धर्मांतरण नहीं कराना चाहा, हमने कभी जनता को अपने धर्म में आने के लिए नहीं कहा, क्योंकि हमारा विश्वास था कि, मनुष्य अपना चुनाव करने के लिए स्वतंत्र है। हमें उन मिशनरियों से कोई प्रेम नहीं है, जो शेखी बघारती हुयी कहतीं हैं कि, किसी को बचाने के लिए अमुक धर्म को अपनाना चाहिये। हम जानते थे कि, यदि कोई व्यक्ति लामाबौद्ध होना चाहता है तो हमारे द्वारा पीछा न किए जाने के बावजूद भी वह ऐसा करेगा। हम जानते थे कि तिब्बत में, उन मिशनरियों के ऊपर, जो चीन में आती थीं, हम किस प्रकार हँसते थे। ये एक सुस्थापित मजाक था कि, लोग केवल कुछ उपहार और तथाकथित लाभ प्राप्त करने के लिए, जो कि ये मिशनरियाँ बाँट रही थीं, कोई आदमी धर्मांतरण का बहाना कैसे करता है। और दूसरी बात, तिब्बती और चीनियों के पुराने ढर्रे के लोग, कुछ नम्र प्रवृत्ति के थे, वे मिशनरियों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करते थे, उनको ये विश्वास दिलाने का प्रयत्न करते थे कि, उनको कुछ सफलता मिल रही है परंतु उन्होंने एक क्षणभर के लिए भी उनपर विश्वास नहीं किया, जोकि, वे उन्हें कह रहे थे। हम जानते थे कि, उनका अपना विश्वास है परंतु, हम अपने ही विश्वास को बनाए रखना पसंद करते थे।

हम यात्रा करते गए और यांगस्ते नदी, (वह) नदी, जिसे मैं बाद में इतनी अच्छी तरह जान सका, क्योंकि ये बहुत मजेदार रास्ता थी, के रास्ते का अनुसरण किया। हम नदी के ऊपर चलते नौवाहनों को देखकर मोहित होते थे। हमने इससे पहले (इस प्रकार की) नावें नहीं देखी थीं, यद्यपि, उनके चित्र अवश्य देखे थे, और अतीन्द्रियदर्शन के एक विशिष्टसत्र में, जिसे मेंने अपने गुरु लामा मोंग्यार डोंडुप के साथ किया था, मैंने एकबार भाप के जहाज को देखा था। परंतु ये इस पुस्तक में बाद में, विस्तार से वर्णन किया गया है। तिब्बत में हमारे नाविक, बाँस से बनी हुई एक विशेषप्रकार की नावें (coracles), जो चमड़े से ढकी हों, उपयोग में लाते थे। इनके ढाँचे बहुत हल्के होते थे, जो याक की खाल से ढके जाते थे, और इनमें शायद, नाविक के अलावा चार या पाँच यात्री ही जा सकते थे। बहुधा भाड़ा न देने वाला यात्री, एक भेड़ होती थी, जो नाविक की पालतू होती थी, परंतु वह भी अपना अंशदान, देश–देहात में दे देती थी, क्योंकि जब वह नाविक, नदी के तेज उतार को टाल (avoid) देने के लिए, जो अन्यथा उसकी नाव को तोड़ देता, नाव (coracle) को अपने कंधे पर डालकर, चट्टान पर चल रहा होता, अपने निजी सामानों, बंडलों, अथवा कम्बलों को उसकी पीठ के ऊपर लाद देता था। कई बार, कोई किसान, जो नदी को पार करना चाहता था, भेड़ अथवा याक की खाल, जिसमें टांगों और दूसरे खुले सिरों को बंद कर दिया गया हो, का उपयोग करता। वह अपनी इस युक्ति का उपयोग करता, ठीक वैसे ही, जैसे कि, पश्चिमी देशों के लोग जलपंखों (water-wings) का उपयोग करते हैं। परंतु अभी हम, वास्तविक नावों को पाल, तिकोने आकार (lanteen) के, हवा में फड़फड़ाते हुए पाल सहित, देखने में रूचि रखते थे।

एकदिन हम कुछ उथलेस्थानों पर रुके। हमारे साथ छल किया गया था; दो आदमी, नदी में अपने बीच एक लम्बाजाल, साथ में लेकर चल रहे थे। उनके आगे दो अन्य व्यक्ति, भयानकरूप से चिल्लाते हुए, पानी को छड़ियों से पीट रहे थे। पहले हमने ये सोचा कि ये लोग पागल हैं, और जो जाल लेकर चल रहे हैं, वे उन्हें अपने कब्जे में लेने की कोशिश कर रहे हैं। हमने ध्यान से उन्हें देखा, और तब एक आदमी ने संकेत के रूप में, शोर मचाना बंद कर दिया और जाल पकड़े हुए दोनों आदमी एक साथ चलने लगे, ताकि उनका रास्ता रोक लिया जाए। उन्होंने अपने बीच में जाल के सिरों को तान दिया और उसे किनारे की और खींचा। नदी के रेतीले किनारों पर, सुरक्षितरूप से, उन्होंने जाल को झटका दिया और उन्होंने चमकती हुई, संघर्ष करती हुई, कई पाउंड मछलियों को, जमीन पर पटक

दिया। हमें इससे धक्का लगा, क्योंकि, हम कभी हत्या नहीं करते। हम विश्वास करते थे कि, किसी भी जीवित प्राणी को मारना अनुचित है। तिब्बत में, हमारे यहाँ की नदियों में, मछलियॉ आतीं और पानी में फैलाए हुए हाथ को, जो उनकी तरफ होता, छूतीं, वे हाथ में से खाना ले लेतीं। उन्हें आदमी से किसी प्रकार का कोई डर नहीं था, और वे, बहुधा, पालतू होती थीं, परंतु यहाँ चीन में, वे खानामात्र थीं। हमें आश्चर्य होता था कि, चीनीलोग, किसप्रकार बौद्ध होने का दावा कर सकते हैं, जबकि, वे इतनी बेरहमी से, केवल अपने फायदे के लिए, उन्हें मारते हैं।

हम काफी देर तक मन बहलाते रहे; समय गॅवाते रहे, हम नदी के किनारे एक घण्टे, शायद दो घण्टे तक बैठे; और हम उस रात, लामामठ तक पहुँचने में असफल रहे। हमने ईश्वरेच्छाधीनता (resignation) में अपने कंधों को झकझोरा और रास्ते में, किनारे से कहीं पड़ाव करने के लिए तैयार हुए। थोड़ा बांई तरफ, तथापि, पेड़ों का अलग–थलग एक छोटा झुरमुट था, जिसमें से नदी बह रही थी। हमने उसतरफ को अपना रास्ता लिया और घोड़ों से उतर लिए। घोड़ों को पगहे से बाँध दिया, ताकि वे घास–चारा चर सकें, हमारे ख्याल से, उनके चरने के लिए वहाँ प्रचुर, अच्छी हरियाली थी। लकड़ियों को इकट्ठा करना और आग जलाना, आसान काम था। तब हमने चाय को उबाला और अपना त्सम्पा खाया। हम घेरा बनाकर, तिब्बत के संबंध में बातें करते हुए; और रास्ते में, यात्रा में हमने जो कुछ देखा है, उसके संबंध में बात करते हुए; और भविष्य के संबंध में अपने विचारों पर चर्चा करते हुए, थोड़े समय के लिए, आग के पास बैठे। एक–एक कर के, मेरे साथियों को जम्हाई आने लगी, वे दूर होते गए और लुढ़कते–लुढ़कते, अपने–अपने कंबलों में घुसकर, नींद में घिर गए। अंत में, जब जलते हुए अंगारे, कालीराख में बदल गए, मैं भी अपने कंबल में घुस गया, और लेट गया, लेकिन सो नहीं सका, मैंने उस सभी परेशानियों के संबंध में सोचा, जिनसे मैं गुजर चुका था। मैंने सात साल की आयु में अपने घर को छोड़ने के संबंध में, लामामठ में प्रवेश करने के संबंध में, और गम्भीर प्रशिक्षण की तमाम कठिनाइयों के संबंध में, सोचा। मैंने ऊँचे स्थानों के लिए अपने अभियान के संबंध में सोचा और जो महान चॉगताँग के ऊँचेस्थानों से और अधिक उत्तर की तरफ थे, उनके संबंध में सोचा। मैंने गहनतम, जिसे हम दलाईलामा कहते हैं के संबंध में भी सोचा और तब अपरिहार्यरूप से, अपने शिक्षक, निर्देशक, लामा मिंग्यार डोंडुप के संबंध में सोचा। मैं डर के मारे घबरा गया, मेरा दिल टूट गया, और ऐसा लगा मानोकि, दोपहर की इस धूप में, गाँव–देश–देहात, सब जल उठे। मैं आश्चर्य से देखने लगा, और अपने शिक्षक को अपने सामने खड़े हुए पाया, ''लोबसांग! लोबसांग!'' वे चिल्लाये, ''तुम इतना उदास क्यों हो ? क्या तुम भूल रहे हो ? लोह–अयस्क (iron ore) अपने बारे में, बेकार में ही, ये सोच सकता है कि, मुझे भट्टी में तकलीफ दी जा रही है, प्रताड़ित किया जा रहा है, परंतु पानीदार (tempered) स्टील की तलवार, जब मुड़कर अपने पीछे देखती है, तो वह इस सब को अच्छा मानती है। तुम्हारा समय बहुत मुश्किल गुजरा है, लोबसांग, परंतु ये सब एक अच्छे उद्देश्य के लिए है। ये, जैसा कि, हम अक्सर चर्चा करते रहते हैं, ये मात्र माया का संसार है, सपनों का विश्व। तुम्हें अनेक परेशानियाँ होंगी, जिन्हें अभी झेलना है, अनेक कठिन परीक्षायें होंगीं, परंतु इन सब में तुम फलोगे–फूलोगे, और आगे बढ़ोगे, तुम उन सबके ऊपर विजय प्राप्त करोगे, और अंत में, तुम उस कार्य को पूरा करोगे, जिसे स्वयं तुमने, खुद करने का बीड़ा उठाया है।'' मैंने अपनी ऑखें मलीं और तब मुझे ऐसा लगा कि, वास्तव में, लामा मिंग्यार डोंडुप, सूक्ष्मशरीर से यात्रा करते हुए, मेरे पास आए थे। मैं इस प्रकार की चीजें स्वयं भी कर चुका था, परंतु ये सब इतना अनपेक्षित था, और मुझे इतना साधारण लगा कि, मैं हर समय उनके विचारों से सहायता प्राप्त करता हुआ अनुभव करने लगा।

कुछ समय के लिए, हमने भूतकाल पर, अपनी कमजोरियों पर, भावनाओं पर और खुशियों की क्षणिक मुस्कान के ऊपर, चर्चा की। अनेक आनंददायक क्षण, जब हम पिता–पुत्र की तरह से साथ–साथ थे। उन्होंने मुझे मानस–चित्रों (mental pictures) की सहायता से, आगे जो कुछ कठिनाइयॉ आने

वाली हैं, और कुछ अधिक आनंद के साथ, अंतिम सफलता को, जो उसको रोकने के तमाम प्रयासों के बावजूद, मुझे मिलेगी, दिखाया। एक अनिश्चित समय पश्चात्, जब मेरे शिक्षक ने अपने अंतिम शब्दों को, आशा और प्रेरणा भरे शब्दों को, दोहराया, स्वर्णिम आभा मंद हुई और मैं अपने उन प्रधान विचारों के साथ, बर्फ जैसी जमी हुई रात में, आकाश के तारों की छाँव में, लुढ़क गया। अंतिमरूप से नींद में सो गया।

अगली सुबह, हम जल्दी उठे और नाश्ते के लिए तैयार हुए। जैसे हमारे रिवाज थे, हमने सुबह की प्रार्थनासभा की, जिसको, वरिष्ठ सदस्य होने के नाते, मैंने संचालित किया और तब हमने अपनी यात्रा को, नदी के साथ–साथ चलते हुए रास्ते पर, प्रारंभ किया।

दोपहर के लगभग, नदी दांए हाथ की और चलने लगी और रास्ता सीधा आगे की ओर चला; हमने इसका अनुसरण किया। ये, हमें जैसा लगा, काफी चौड़ी सड़क से जा मिला। वास्तव में, जैसा मैं अब समझता हूँ, तथ्यात्मक रूप में, ये द्वितीयश्रेणी की सड़क थी, लेकिन इससे पहले हमने मनुष्यों द्वारा बनाई हुई, इसप्रकार की किसी सड़क को नहीं देखा था। हम इसकी रचना पर आश्चर्यचकित होते हुए, अपने आरामों को, अपनी सुविधाओं को, अपनी जड़ों से वंचित न होते हुए, और सड़क पर किसी प्रकार के गड्ढे न देखते हुए, घुड़सवारी करते हुए, इस पर होकर चले। हम ये सोचते हुए, उत्साह में उछलते हुए चले कि, हम दो–तीन दिन में, आगे चुंगकिंग पहुँच जायेंगे। तब वातावरण के बारे में किसी चीज ने, पहले से न बतायी गयी किसी चीज ने, हमें परेशानी के साथ, एक दूसरे की और देखने को बाध्य किया। हम में से एक, बहुत दूर क्षितिज की ओर, देख रहा था। तब वह, खतरे को भाँपता हुआ, भौंचक्की सी, फटी हुई आँखे और हावभाव दिखाते हुए, अपनी रकाब में सीधा खड़ा हुआ। ''देखो!'' उसने कहा। ''एक धूलभरा तूफान आ रहा है।'' उसने सामने की ओर इशारा किया, जहाँ सुनिश्चितरूप से, एक भूरा–काला बादल, काफी तेजी से आगे बढ़ रहा था। तिब्बत में, शायद, अस्सी मील प्रतिघण्टा या इससे अधिक गति से चलने वाले, इसप्रकार के धूल भरे तूफान आते हैं; कंकड़, गिट्टी से भरी वायु के बादल, जिनसे, केवल याकों को छोड़कर, सभी लोगों को, कहीं न कहीं शरण लेनी पड़ती है। याक की मोटी ऊन, उसे सभीप्रकार की हानियों से बचाती है, परंतु अन्य सभी प्राणी, विशेषकर मनुष्य, लुंजपुंज हो जाते हैं और चुभती हुई गिट्टियों के कारण, जो चेहरे और हाथों को खरोंच देती हैं, खून बहने लगता है। हम निश्चितरूप से, व्याकुल थे क्योंकि, ये यह पहला धूल भरा तूफान था, जिसको हमने तिब्बत छोड़ने के बाद, पहलीबार देखा था, तब हमने अपने संबंध में, ये देखने के लिए कि, हम कहाँ शरण ले सकते हैं, विचार किया। परंतु, हमें वहाँ कोई सुविधाजनक स्थान नहीं मिला। अपनी घबराहट के साथ हम सावधान हुए कि, सामने से आने वाला तूफान भयंकर गर्जन के साथ आ रहा था; एक ऐसी अनोखी आवाज, जो हम में से किसी ने भी, इससे पहले नहीं सुनी थी; कुछ–कुछ मंदिर की तुरहियों (Trumphet) जैसी आवाज, जिसे मानो कोई धुन न समझने वाला, बहरा, नौसिखिया बजा रहा हो, अथवा हमने मुश्किल से सोचा, जैसे दैत्यों की बहुत बड़ी सेना हमारे ऊपर चढ़कर चली आ रही हो। थ्रम, थ्रम, थ्रम चलती गयी। तेजी से, ये दहाड़ उभरी और अजनबी से अजनबीतर होती गई। बक–बक करना, तथा जल्दी बोलना, और घबराना, इसके साथ–साथ चलता रहा। कुछ भी करने के लिए, हम लगभग बहुत अधिक घबरा गए थे, न सोच पाने के लिए भी, बहुत अधिक घबरा गए थे। धूल भरे बादल, तेजी से, और अधिक तेजी से, हमारी और बढ़ते आ रहे थे। हम डरे हुए थे और लगभग, डर के मारे हमें लकवा जैसा मार गया था। हमने फिर से, तिब्बत में उठने वाले धूल के बादलों के संबंध में सोचा, परंतु उनमें से कोई भी, वास्तव में, निश्चितरूप से, इतना गर्जन करता हुआ, कभी नहीं आया था। घबराहट में हमने, कुछ शरणस्थान पाने के लिए, कुछ स्थान, जहाँ हम इस भयानक तूफान से, जो हमारी तरफ आ रहा था, बचे रह सकें, फिर देखा। हमारे घोड़े, हमसे ज्यादा तेज थे, और वे अपना दिमाग, ये सोचने में लगा रहे थे कि, उन्हें कहाँ जाना है; उन्होंने अपनी

पंक्तियाँ तोड़ दीं, वे आगे–पीछे हो गये और तेजी से हिनहिनाने और कूदने लगे। मुझे उनकी उड़ती टापों की आवाज सुनाई दी और मेरे घोड़े ने बहुत जोर की हिनहिनाहट दी और बीच में से मुड़ता हुआ जैसा लगा। एक अजीब सा खिंचाव, और इस प्रकार का ऐहसास हुआ कि, कुछ चीज टूट गई है। ''ओह मेरी टॉग टूट गई!'' मैंने सोचा। तब मैंने और मेरे घोड़े ने साथ छोड़ दिया। मैं हवा में चाप (arc) के रूप में उछाल दिया गया और सड़क के एक किनारे पर भौंचक्का हुआ, पीठ के बल जाकर गिरा। शीघ्रता के साथ, धूल के बादल और समीप आ गए, और मैंने स्वयं, इनके अंदर, दहाड़ते हुए, काँपते हुए और रोंगटे खड़े करते हुए दैत्य, एक काले प्राणी को देखा। यह आया और गुजर गया। पीठ के बल चित्त पड़े हुए, सिर चकराते हुए, मैंने पहलीबार एक सुधारी हुई, पुरानी अमरीकन बैलगाड़ी की तरह, जिसको एक मुस्कुराता हुआ चीनी चला रहा था, और जो अपनी काफी शोर भरी, अधिकतम चाल पर चल रहा था, मोटरयान को देखा। इसमें से, दैत्य की सॉस, जैसा हमने इसे बाद में कहा, पेट्रोल, तेल और खाद के एक मिश्रण की तरह, दुर्गंध आ रही थी; खाद का भाग, जो धीमे–धीमे ले जा रहा था, उछाल कर फैंक दिया गया। इसमें से कुछ, जमीन पर एक किनारे की तरफ, बिखर गया। इसका थोड़ा सा हिस्सा, गोली जैसी आवाज के साथ, मेरी तरफ को भी फैला। लॉरी, कालेधुँए में से, पर लगा कर उड़ते हुए, दम घोंटने वाले धूल भरे बादलों को छोड़ते हुए, और निकलते हुए शोर शराबे के साथ भिनभिनाने लगी। शीघ्र ही, ये काफी दूर जाकर, बुनाई, जो सड़क के अगल–बगल से बुनी जा रही थी, जैसा धब्बा दिखाई दिया। शोर घटा और अंत में कोई आवाज नहीं रही।

मैंने शांत होकर अपने आस–पास देखा। मेरे किसी साथी का कोई नामोनिशान नहीं था; शायद सभी इससे बुरी हालत में थे। घोड़े का कहीं अतापता नहीं था। मैं अभी भी इस रहस्य को अपने आप सुलझाने की कोशिश कर रहा था, क्योंकि, गिट्टियों के पेंचदार घुमाव ने मेरी टाँग के एक हिस्से को तोड़ दिया था। और तब, एक–एक करके, लज्जित चेहरे सहित, इस सम्बंध में बुरी तरह से हताश, मानोकि, इन उत्पाती दैत्यों में से कोई एक, अगलीबार फिर दिख जायेगा, दूसरे प्रकट हुये। हम अभी तक ये नहीं समझ सके कि, हमने क्या देखा था। ये इतनी अधिक तेजी से हुआ और धूल के बादलों ने इतना धुंधला कर दिया कि, कुछ भी समझ पाना मुश्किल था। दूसरेलोग संकोचपूर्वक घोड़ों पर से उतरे और सड़क से हटकर, मेरे कपड़ों पर से धूल झाड़ने में मदद करने लगे। मैं, अंत में, फिर से, कुछ ठीक–ठाक हो गया, परंतु मेरा घोड़ा कहाँ था ? मेरे साथी लोग, सभी दिशाओं में, घूम फिर कर देख आए परंतु, मेरी सवारी किसी को नहीं दिखाई दी। हमने आसपास देखा, पुकारा, धूल में खुरों के निशानों को तलाशा, लेकिन हमें किसी भी प्रकार का कोई निशान नहीं मिला। हमें ऐसा लगा कि, अभागाप्राणी, लॉरी में कूदा होगा और लॉरी के साथ लदकर चला गया। नहीं, हम किसीप्रकार का कोई सुराग नहीं लगा सके, और अब क्या करना चाहिए, इसके ऊपर विचार करते हुए, सड़क के किनारे बैठ गए। हमारे साथियों में से एक ने, समीप की झोंपड़ी में रुकने का प्रस्ताव किया, ताकि, मैं उसके घोड़े को ले सकूँ और मुझे चुंगकिंग छोड़ आने के बाद, वापसी में, वह अपने साथियों के साथ, अपने घोड़े को ले सके। लेकिन मुझे इनमें से कुछ भी समझ में नहीं आया। मैं जानता था कि, इसके अतिरिक्त वह थोड़ा आराम करना चाहता है और इससे घोड़े के गुम होने के रहस्य नहीं खुला।

मेरे साथियों के घोड़े हिनहिनाए, जवाब में, एक चीनी किसान की समीप की झोपड़ी में से मेरा घोड़ा भी हिनहिनाया। इसे जल्दी ही दबा दिया गया, मानो, उसके नथुने के ऊपर कोई हाथ रख दिया गया हो। हममें प्रकाश कोंधा। हमने एक दूसरे की और देखा और तुरंत कार्यवाही करने के लिए तैयार हो गए। अब उस गरीबी से त्रस्त हुई झोपड़ी में, कोई घोड़ा कहाँ से आ गया ? ये नष्टप्रायः भवन, किसी ऐसे आदमी का घर नहीं हो सकता था, जो किसी घोड़े को पाल सके। स्पष्टतः, घोड़ा हमसे छिपाया गया था। हम उछलकर अपने पैरों पर खड़े हो गए, और अपने चारों तरफ डंडे, लाठी पाने के लिये देखा। उपयुक्त हथियार न मिलने के कारण, हमने समीप के पेड़ों से टहनियों को तोड़ लिया और

तब एक दृढ़संकल्पित दल के रूप में, इस आशंका के साथ, कि क्या हो रहा है, झोंपड़ी की ओर आगे बढ़े। दरवाजा जर्जर अवस्था में, कब्जों की जगह फीते से बांधा हुआ था। हमारी हलकी सी थपथपाहट का कोई उत्तर नहीं मिला। वहाँ एकदम शांति छाई रही, कोई ध्वनि नहीं। हमारी प्रवेश के लिए की गई ये मांग, किसीप्रकार का प्रत्युत्तर नहीं पा सकी। फिर भी, पहले एक घोड़ा हिनहिनाया था और उसकी हिनहिनाहट को दबा दिया गया था, इसलिए, हमने दरवाजे के ऊपर तीखा आक्रमण किया। थोड़े समय तक उसने हमारे इस प्रयास का विरोध किया और तब उसके फीते वाले कब्जे टूटने लगे। दरवाजा मुड़ गया और लगभग टूटने की कगार पर दिखने लगा। ये शीघ्र ही पूरा खुल गया। इसके अंदर एक झुर्रीदार, सूखा हुआ, मरियल चीनी आदमी था। उसके चेहरे पर भय छाया हुआ था। ये एक बहुत ही खराब झोंपड़ी थी और इसका मालिक फटे हुए कपड़ों में एक आदमी था। लेकिन इस सब में हमें कोई रूचि नहीं थी। मेरा घोड़ा इसके अंदर था, जिसके नथुने के ऊपर, उसे शांत रखने के लिए, एक थैला बाँध दिया गया था। हम इस चीनी किसान से बिलकुल प्रसन्न नहीं हुए और कुछ निश्चित तरीके से अपनी नापसंदगी का संकेत दिया। हमारी पूछताछ के दबाव में उसने स्वीकार किया कि, उसने हमसे घोड़ा चुराने का प्रयास किया था। उसने कहा कि, हम धनाढ्य भिक्षु हैं और एक या दो घोड़े का नुकसान सह सकते हैं। वह, मात्र, एक गरीब किसान था। उसने सोचा कि, हम उसे मार डालने वाले हैं, हम उसे तीखे दिखाई पड़े। हम लगभग आठ सौ मील चल चुके थे और थके हुए थे और उजड्ड, झगड़ालू दिखाई दे रहे थे, तथापि हमारा, उसके ऊपर नाराजगी प्रदर्शित करने का कोई इरादा नहीं था। हमारा चीनीभाषा का मिलाजुला ज्ञान, उसके कार्य के बारे में अपनी राय बताने के लिए, उसको समझाने के लिए, उसके जीवन को शायद समाप्त करने और निसंदेह, अगले पड़ाव पर पहुँचाने के लिए, काफी था। विशेषरूप से उसके बारे में, हमारे मस्तिष्कों में इस सबकी समाप्ति पर, इस बात के ऊपर विशेष ध्यान रखते हुए कि, उनको बाँधने वाली कमर की पेटियाँ ठीक कसी हों, हमने घोड़े पर दुबारा से काठी कसी, और हम उसके ऊपर फिर से सवार हो कर, चुंगकिंग की और चल दिए।

उस रात को हम, एक छोटे लामामठ में रुके। बहुत छोटा। इसमें छैः भिक्षु थे, परंतु हमें सभी प्रकार का आतिथ्य–सत्कार दिया गया। इसके बाद की रात, हमारी लंबीयात्रा की आखिरी रात थी। हम एक लामामठ में आए, जहाँ गहनतम (inmost) का एक प्रतिनिधि (उपस्थित) था। सौहाद्रता के साथ हमारा अभिनंदन किया गया, जो हम समझते हैं कि हमारे लिये उचित था। फिर हमें खाना और रहने के लिए स्थान दिया गया। हमने उनके मंदिर की प्रार्थनाओं में भाग लिया और रात में बहुत देरतक तिब्बत की घटनाओं के बारे में, ऊँचे उत्तरी स्थानों के लिए अपनी यात्रा के संबंध में, और दलाईलामा के संबंध में, वार्तालाप करते रहे। ये जानकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ कि, यहाँ भी मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, बहुत अच्छी तरह विख्यात थे। मैं एक जापानीभिक्षु से मिलने के लिए भी उत्सुक था, जो ल्हासा गया था और जिसने हमारे बौद्धधर्म की शाखा, जो उनकी शाखा, ज़ेन[3] (zen) से एकदम अलग है, का अध्ययन किया था।

आनेवाले परिवर्तनों के संबंध में, एक नए प्रकार की क्रांति की, एक नई व्यवस्था की, जिसमें भूस्वामियों को उखाड़ कर फैंक दिया जाएगा और अशिक्षित किसान उनके स्थान को ले लेंगे, चीन में काफी चर्चा चल रही थी। आश्चर्यपूर्ण वायदा करते, परंतु कुछ भी प्राप्ति न कराते हुए, कुछ भी संरचनात्मक प्राप्ति नहीं; रूसीएजेन्ट हरजगह थे। ये रूसी, हमारे ख्याल से, उस राक्षस के, जो भ्रष्ट था, तोड़ रहा था, जैसे कि प्लेग किसी शरीर को तोड़ती है, प्रतिनिधि थे। सुगंधित अगरदान, धीमे–धीमे जलने लगे, उन्हें फिर से भर दिया गया। फिर से ये धीमे–धीमे जलने लगे और फिर से उन्हें भर दिया गया। हम बातें करते रहे, हमारी बातें, पूरीतरह, कठोर परिवर्तनों, जो होते जा रहे थे, के पूर्वाभास की थीं। मानवीयमूल्यों को विकृत कर दिया गया था। आजकल, आत्मा के सम्बंध में कोई विचार, केवल

3 .अनुवादक की टिप्पिणीः ये बौद्धधर्म की महायान शाखा है, जिसमें ध्यान का विशेष महत्व है।

क्षणिकशक्ति की तुलना में मूल्यवान नहीं समझे जाते थे। विश्व बहुत खराब स्थिति में था। तारे आकाश में ऊँचे लुढ़क रहे थे। हम बातें करते रहे और अंत में एक–एक करके, जहाँ हमें सोना था, लेटते गए। हम अपनी यात्रा के बारे में जानते थे कि, वह सुबह समाप्त हो जाएगी। मेरी यात्रा, थोड़े समय के लिए, परंतु मेरे साथियों की तिब्बत वापस जाने वाली यात्रा, मुझे इस अनजान, निर्दयी विश्व में, जहॉ 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' है, अकेला छोड़ देगी। उस पिछलीरात को मुझे आसानी से नींद नहीं आई। सुबह मंदिर की सामान्य प्रार्थनासभा के बाद और अच्छी तरह भरपेट खाना खाने के बाद, हम फिर से चुंगकिंग की सड़क पर चल दिए। हमारे घोड़े भी काफी तरोताजा थे। अब यातायात भी काफी हो गया था। लॉरी और विभिन्न प्रकार के पहियों वाले वाहन, पर्याप्त मात्रा में थे। हमारे घोड़े डरे हुए, तनावग्रस्त और थोड़ी थकान में थे। वे इन वाहनों के शोर और जले हुए पेट्रोल की बदबू के लिए, जो उनको लगातार जलन पैदा कर रहा था, अभ्यस्त नहीं थे। वास्तव में, हमें अपने रकाबों में बने रहने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगाना पड़ रहा था।

हमारी रुचि, लोगों को खेतों में, उनके सीढ़ीदार खेतों में, जिनमें आदमियों के मलमूत्र की खाद दी गई थी, काम करते हुए देखने में थी। लोग नीले रंग में लिपटे हुए थे, चीन का नीला रंग। वे सभी बूढ़े लग रहे थे और बहुत थके हुए थे। वे निरुत्साहित ढंग से चल रहे थे, मानोकि, जीवन उनके लिए बहुत भारी बोझ है, या मानोकि, उनकी आत्मा कुचल दी गई है और उनके पास जिन्दा रहने लायक, प्रयास करने लायक, कुछ भी बचा हुआ नहीं है। आदमी, औरतें और बच्चे, साथ–साथ काम कर रहे थे। हम अभी भी, नदी, जिसे हम कुछ मील पहले छोड़ आए थे, की दिशा का अनुगमन करते हुए, सवार होकर चलते गए। आखिर में, हमें ऊँची पहाड़ी चोटियाँ दिखाई दीं, जिनपर चुंगकिंग का पुराना शहर बसा हुआ था। हम पर, तिब्बत के बाहर, देखने लायक किसी शहर की, ये पहली नजर पड़ी। हम रुके और मोहित होकर, टकटकी लगाकर, देखने लगे परंतु मेरी टकटकी में, नए जीवन, जो मेरे सामने खड़ा था, के संबंध में कोई भयानक शंका, नहीं दिखाई दी।

तिब्बत में, मेरे हाथ में, मेरे पद और मेरी उपलब्धियों के अनुरूप तथा दलाईलामा के साथ मेरे निकटसंबंधों के कारण, शक्तियाँ थीं। अब मैं एक विद्यार्थी के रूप में विदेशी शहर में आ गया था, इसलिए मेरे, इस एकदम अलग रूप ने मुझे, अपने पुराने दिनों की कठिनाइयों की, जीवतं याद दिलाई। इसलिए प्रसन्नता ये नहीं थी कि, मैं अगले दृश्यों को टकटकी लगाकर देख रहा था। ये मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि, यह एक लंबे रास्ते पर, एक ऐसा रास्ता, जो मुझे परेशानियों, अजनबी देशों, अजनबी, चीन से भी अधिक अजनबी लोगों के बीच, पश्चिम की ओर, जहाँ लोग, केवल स्वर्ण की ही पूजा करते हैं, ले जाएगा।

हमारे सामने, चढ़ाई वाली जमीन पर, सीढ़ियों की तरह खतरनाक, चिपके हुए सीढ़ीदार खेत, सब तरफ फैले हुए थे। चढ़ाई की चोटी पर कुछ पेड़ उगे हुए थे, जो हमारे अनुसार, जिसने अभीतक इतने कम पेड़ देखे थे कि, इससमय ये एक जंगल दिखाई दे रहे थे। यहॉ भी, नीले लिबास में लिपटी हुई आकृतियॉ, दूर बिखरे हुए खेतों में, पैर घसीटकर चलते हुए, मानोकि, उनसे पहले, उनके दूरस्थ पूर्वज भी, पैर घसीटकर चलते रहे हों, काम कर रहे थे। एक पहिये वाली गाड़ी, जो छोटे खच्चरों (ponies) के द्वारा, जो लड़खड़ाते हुए, लड़ते हुए, साथ–साथ चल रहे थे, खींची जा रही थी, जिसपर बागों की उपज लादकर, चुंगकिंग के बाजार में ले जाई जा रही थी। ये बहुत अजीब, विचित्र वाहन थे। इनमें, पहिया गाड़ी के बीच में होता था, उसके दोनों तरफ, बगल–बगल में, माल के लिए, खाली स्थान होता था। ऐसे वाहनों में से एक में, जो हमने देखे, वाहन को संतुलित करने के लिए, एक बूढ़ी औरत, पहिये के एक और बैठी हुई थी और दो छोटे बच्चे, उसके दूसरी तरफ बैठे हुए थे।

चुंगकिंग! मेरे सहयात्रियों के लिए यात्रा का अंत। मेरे लिए यात्रा का प्रारंभ, दूसरे जीवन का प्रारंभ। जैसाकि मैंने गहरे दर्रे, जो कि घूमती हुई नदी के पास था, में देखा, मुझे इससे कोई मित्रता

नहीं है। नगर ऊँची पर्वतचोटियों पर बना हुआ था, जिसमें काफी घने मकान थे, जहाँ से खड़े होकर हमें लग रहा था कि, एक छोटा प्रायद्वीप हो, लेकिन हम अच्छी तरह जानते थे, हम जानते थे कि, ये ऐसा नहीं है, बल्कि ये तीन तरफ से यंगस्ते (Yangste) और च्यालिंग (Chialing) नदियों के पानी से घिरा हुआ था। पहाड़ी चोटियों के नीचे, पानी इसके पैरों को धो रहा था। इसका किनारा चौड़ा और बालू का था, और जहाँ नदियॉ मिलती थीं, उस तरफ को, उस स्थान पर ढालू था। बाद के महीनों में, यह वह स्थान था, जिसको मैं अच्छीतरह जान गया था। धीमे से, हमने अपने घोड़ों को बाँध दिया और आगे चले। ज्यों ही हम समीप पहुँचे, हमने देखा कि, हरजगह सीढ़ियाँ थीं और हमें घर की याद का काफी संताप झेलना पड़ा। जब हमने सीढ़ियों वाली सड़कपर, सात सौ अस्सी सीढ़ियों को चढ़ा, इसने हमें पोटाला की याद दिला दी और इसप्रकार हम चुंगकिंग आ गए।

अध्याय दो
चुंगकिंग

हम सुप्रकाशित खिड़कियों वाली दुकानों के आगे गए। उनकी खिड़कियों में सामान रखे थे; एक विशेषप्रकार के सामान, जो हमने इससे पहले नहीं देखे थे। इनमें से कुछ, हमने पत्रिकाओं में, जो हिमालय के पार भारत से, ल्हासा को लाई गई थीं, और भारत पहुँचने से पहले, प्रसिद्ध देश अमेरिका, से लाई गई थीं, चित्रों में देखे थे। एक नौजवान चीनी, एक विलक्षण चीज, जो मैंने इससे पहले कभी नहीं देखी थी, एक लोहे के ढाँचे पर, जिसमें दो पहिए थे, एक सामने और एक पीछे, हमसे टकराता हुआ आया। उसने हमारी तरफ देखा और वह अपनी आँखों को हटा नहीं सका। इसके कारण, वह ढाँचे पर से अपना नियंत्रण खो बैठा, और सामनेवाला पहिया, एक पत्थर से जा टकराया। वह चीज बगल से लुढ़क गई और उसपर सवार व्यक्ति, सामने के पहिये पर होता हुआ, पीठ के बल जमीन पर जाकर गिरा। इस हादसे से, कोई बूढ़ी सी चीनीऔरत, उसके द्वारा पैरों से घसीट दी गई। वह झपटकर पलटी और उस गरीब को, जो पहले से ही काफीकुछ झेल चुका था, डाँटने, धमकाने लगी। वह, विशेषरूप से मूर्ख जैसा दिखता हुआ, उठा। उसने अपने लोहे के ढाँचे को उठाया, और सामने के पहिये को एक फीते से बाँध दिया। उसने उसे अपने कंधों पर रखा और दुःखीमन से, सीढ़ियों वाली गली पर, नीचे पहाड़ी की तरफ चला गया। हमने सोचा कि, हम एक पागलखाने में आ गए हैं, क्योंकि यहाँ, हर कोई एक विशिष्टतरीके से व्यवहार कर रहा था। हम उन दुकानों में रखे हुए माल के ऊपर आश्चर्य करते हुए, इसबात का अनुमान लगाते हुए कि, उनकी क्या कीमत होगी, और वे किसलिए थे, धीमे–धीमे, साथ–साथ चले, क्योंकि, यद्यपि हमने अमेरिका की पत्रिकाओं को देखा था, हममें से कोई भी, उनके एक भी शब्द को नहीं समझ सका था, परंतु केवल चित्रों से ही हमने काफी मनोरंजन किया था।

उसके आगे, हम उस महाविद्यालय में आए, जिसमें मुझे प्रवेश लेना था। हम रुके, हम उसमें अंदर गए, ताकि मैं उसमें अपनी पहुँच को दर्ज करा सकूँ। साम्यवादियों के इस देश में, हमारे मित्र अभी भी थे, और मैं उन्हें ये सूचना नहीं देना चाहता था, ताकि वे पहचाने न जा सकें, क्योंकि मैं, 'नौजवान तिब्बती प्रतिरोध आन्दोलन,' से काफी नजदीकी से जुड़ा हुआ था। हमने काफी सक्रियता के साथ, तिब्बत में साम्यवादियों को रोका था। मैंने प्रवेश किया। वहाँ तीन सीढ़ियाँ थीं। मैं ऊपर चढ़कर एक कमरे में गया। यहाँ एक मेज थी, जिसपर चार टाँगों से समर्थित, एक विशिष्टप्रकार के लकड़ी के छोटे प्लेटफार्मों में से एक के ऊपर, जिसमें उसकी पीठ को सहारा देने के लिए, दो खम्बे और एक आड़ीपट्टी (crossbar) लगायी गयी थी, एक चीनी नौजवान बैठा हुआ था। बैठने का क्या आलसी तरीका है, मैंने सोचा, मैं कभी इसतरह से व्यवस्थित नहीं हो सकूँगा। वह काफी खुशगवार नौजवान दिखाई देता था। वह नीले रंग के लाइनन (linen) को, जैसा लगभग सभी चीनी पहनते थे, पहने हुए था। उसके पल्ले पर एक बैज लगा हुआ था, जो ये सूचित करता था कि, वह महाविद्यालय का कर्मचारी है। मुझे देख कर उसकी आँखें काफी चौड़ी खुलीं, उसका मुँह भी खुलने लगा। तब वह खड़ा हुआ, और जब वह झुका तो उसके हाथ आपस में जुड़े हुए थे। ''मैं यहाँ के नए छात्रों में से एक हूँ'' मैंने कहा। ''पोटाला लामामठ के मठाध्यक्ष के एक पत्र के साथ में, मैं तिब्बत में (स्थित) ल्हासा से आया हूँ,'' और मैंने वह लंबा लिफाफा आगे बढ़ाते हुए उसे दे दिया, जिसे मैंने यात्रा की अवधि में बहुत सावधानीपूर्वक संभाल कर रखा था और जिसको मैंने यात्रा के सभी झंझटों से बचाकर रखा था। उसने यह मुझसे ले लिया और तीनबार झुककर कहा ''आदरणीय मठाध्यक्ष,'' उसने कहा, ''क्या आप यहाँ बैठेंगे, जबतक कि मैं यहाँ वापस लौटूँ ?'' ''हाँ, मेरे पास काफी समय है,'' मैंने कहा, और मैं पद्मासन की मुद्रा में बैठ गया।

वह स्तंभित रह गया और उसकी उँगलियों में कुछ बैचेनी, व्यग्रता दिखाई दी। वह पैर से पैर पर उठा और उसने थूक गटका। ''आदरणीय मठाध्यक्ष,'' उसने कहा, ''पूरी विनम्रता के साथ और अत्यंत गहन आदर के साथ, क्या मैं आपको सुझाव दे सकता हूँ कि, आप इन कुर्सियों के अभ्यस्त हो जायें क्योंकि, हम महाविद्यालय में इन्हीं का उपयोग करते हैं।'' मैंने अपने पैर सिकोड़े और अत्यधिक डरते–डरते, उन भद्दी वाली युक्तियों में से, एक पर बैठा। मैंने सोचा, जैसाकि मैं अभी भी सोच रहा हूँ, मैं किसी भी चीज का एक बार प्रयास अवश्य करूँगा। ये चीज मुझे यातना का एक उपकरण दिखाई दी। नौजवान चला गया और मुझे बैठा छोड़ गया। मैं व्यग्र होता रहा, और व्यग्र होता रहा। शीघ्र ही मेरी पीठ में दर्द होना शुरू हुआ, तब मेरी गर्दन अकड़ गई और मैं अपने आपे से बाहर हो गया। क्यों, मैंने सोचा, इस कमवख्त देश में कोई आदमी ठीक से बैठ भी नहीं सकता, जैसे कि, हम तिब्बत में बैठते थे, परंतु यहाँ हम जमीन पर बैठने से रोक दिए गए थे। मैंने बगल में खिसकने की कोशिश की और कुर्सी चटकी, तड़पी, और हिली और उसके बाद, मैंने उससे इस डर से कि, कहीं वह पूरी चीज (कुर्सी) गिर न जाए, हिलने की कोशिश नहीं की।

नौजवान वापस लौटा, मुझे दुबारा झुककर अभिवादन किया, और कहा, ''प्रिंसिपल आपको मिलेंगे, आदरणीय मठाध्यक्ष। क्या आप इसतरफ से आयेंगे।'' उसने अपने हाथों का इशारा किया और अपने आगे चलने के लिए कहा : ''नहीं,'' मैंने कहा, ''तुम मुझे रास्ता बताओ। मैं नही जानता कि, किस तरफ जाना है।'' वह फिर झुका और मेरे आगे हो लिया। मुझे ये सब इतना मूर्खतापूर्ण लगा, इन विदेशियों में से कुछ, कहते हैं कि, वे आपको रास्ता दिखायेंगे और फिर ये उम्मीद करते हैं कि, आप ही उनका नेतृत्व करें। आप उनका नेतृत्व कैसे कर सकते हैं जबकि, आपको ठीक से यह पता ही न हो कि, किस तरफ जाना है ? ये मेरा दृष्टिकोण था, और अभी भी है। नीले रंग (की पोशाक) में नौजवान, एक गलियारे में होकर, मुझे ले गया और तब उसने लगभग आखिर के एक कमरे का दरवाजा खटखटाया। दूसरीबार झुकने के बाद, उसने मेरे लिए दरवाजा खोला और कहा, ''आदरणीय मठाध्यक्ष (abbot), लोबसांग रम्पा।'' इसके साथ ही मेरे पीछे उसने दरवाजा बंद करदिया और मैं कमरे में अकेला रह गया। वहाँ एक बूढ़ा आदमी, खिड़की के पास खड़ा था, एक बहुत खुशगवार बूढ़ा आदमी, गंजा और छोटी दाढ़ी वाला, एक चीनी। वह भयंकररूप से भद्दी, एक पोशाक पहने हुए था, जिसको मैं पहले देख चुका था, जिसको वे पश्चिमी ढँग (style) कहते हैं। उसने नीले रंग की एक जैकिट पहन रखी थी और उसके ऊपर नीले रंग का पेंट जिस पर सफेद रंग की पतली पट्टियाँ चढ़ रही थीं। उसमें एक कॉलर था और रंगीन टाई थी और मैंने सोचा कि, कितनी खराब बात है कि, इतने प्रभावशाली, बूढ़े, सभ्यमनुष्य को, इतना सब फेरबदल करके, इस तरह होना पड़ा है। ''अच्छा, तो तुम लोबसांग रम्पा हो,'' उसने कहा। ''मैंने तुम्हारे बारे में बहुत कुछ सुन रखा है, और मुझे, तुम्हें यहाँ स्वीकार करते हुए, सम्मान महसूस हो रहा है कि, तुम यहाँ, हमारे विद्यार्थी हो। तुम जो पत्र लाए हो उसके अलावा, तुम्हारे बारे में एक पत्र मुझे पहले भी मिल चुका है, और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि, तुम्हारा पूर्व का प्रशिक्षण, जो तुम प्राप्त कर चुके हो, अपने स्थान पर बना रहेगा। तुम्हारे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझे लिखा है। कुछ साल पहले शंघाई में, मेरे अमेरिका जाने से पहले से, मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। मेरा नाम ली (Lee) है और मैं यहॉ प्रिंसिपल हूँ।

मुझे बैठना पड़ा, और शरीर संरचना (anatomy) से संबंधित मेरे ज्ञान को, तथा शेक्षणिक विषयों के मेरे ज्ञान को परखने के लिए पूछे गए, सभी प्रकार के प्रश्नों का, उत्तर देना पड़ा। वे सारी चीजें, जो मायने रखती थीं या धर्मग्रन्थों में मुझे दिखती थीं, उनके बारे में, उन्होंने कोई जाँच पड़ताल नहीं की।

''मैं तुम्हारे स्तर से अत्यधिक प्रसन्न हूँ,'' उन्होंने कहा, ''परंतु तुम्हें यहाँ बहुत कड़ी मेहनत के साथ पढ़ाई करनी पड़ेगी क्योंकि, चीनी–पद्धति के साथ–साथ, हम तुम्हें अमरीकी चिकित्सा विधियाँ और

शल्यचिकित्सा भी सिखायेंगे और तुम्हें अनेक दूसरे विषय भी पढ़ने होंगे, जो तुम्हारे पाठ्यक्रम में इससे पहले शामिल नहीं थे। मैं संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) में पढ़ा हूँ और मुझे ट्रस्टियों के मंडल (board of trusties) द्वारा नोजवानों, काफी संख्या में नोजवान लोगों को, अमरीकी विधियों और उन तमाम तरीकों, जो चीन के हालातों में चल सकें, का प्रशिक्षण देने के लिए यहाँ नियुक्त किया गया है।'' हम, बीमारियों का पता लगाने (diagnosis) की विधियों के ऊपर, और अमरीकी चिकित्सा और शल्यचिकित्सा के आश्चर्यों के ऊपर, विचार करते हुए, काफी लंबे समय तक बातें करते रहे। वह कहते गए, ''अपनी गहन संस्कृति के साथ–साथ, जो तुम्हारे शिक्षक ने तुम्हें दी है, विद्युत, चुम्बकत्व, ऊष्मा, प्रकाश, ध्वनि, ये सभी विषयों पर, तुम्हें आधिपत्य (mastery) करना होगा।'' मैंने भयभीत होकर उनकी तरफ देखा। पहले तो, विद्युत और चुम्बकत्व मेरे लिए कोई मायने नहीं रखते। मुझे इस बात का धुंधला सा भी ख्याल नहीं था कि, वे किस संबंध में बात कर रहे थे। लेकिन ऊष्मा, प्रकाश और ध्वनि, ठीक, मैंने सोचा, कोई मूर्ख भी इनके संबंध में जानता होगा; आप ऊष्मा का प्रयोग अपनी चाय को गर्म करने में करते हैं, प्रकाश का प्रयोग देखने में करते हैं, और ध्वनि, जब आप बोलते हैं। तो, अब इनमें पढ़ने को है क्या ? उन्होंने जोड़ा, ''मैं तुम्हें ये सुझाव दे रहा हूँ कि, चूंकि तुम कड़ी मेहनत करने के अभ्यस्त हो, अतः किसी भी दूसरे की तुलना में, तुम दुगनी मेहनत के साथ पढ़ो, और दो पाठ्यक्रमों को एक साथ लो, जिन्हें हम प्री मेडीकल कोर्स और मेडीकल ट्रेनिंग कोर्स कहते हैं, उन्हें एक साथ पढ़ो। अपने वर्षों के अध्ययन के अनुभवों के साथ, तुम इसे अच्छी तरह करने में सक्षम होगे। दो दिन के समय में हम एक नई चिकित्सीय कक्षा शुरू करने जा रहे हैं।'' वह पीछे मुड़े और अपने कागजपत्रों के साथ सरसराहट करने लगे। तब उन्होंने कुछ उठाया, जिसको मैं चित्रों के माध्यम से समझ पाया कि वह, पहला, जो मैंने कभी देखा हो, एक फाउंटेन पेन था। वह अपने आप से बड़बड़ाए, ''लोबसांग रम्पा, विद्युत और चुम्बकत्व में विशेष प्रशिक्षण। मिस्टर वू (Mr. Wu) देखें। एक बात का ध्यान रखें कि इनका विशेष ध्यान रखा जाए।'' उन्होंने अपना पेन रख दिया और जो लिखा था उसको सावधानी से सुखाया, और खड़े हुए। मैं इस बात को देखने में अधिक अभिरूचि रखता था कि, उन्होंने स्याही सुखाने के लिए कागज का उपयोग किया। हम सावधानी से सूखी रेत का उपयोग करते हैं, परंतु वह मेरी तरफ देखते हुए खड़े रहे। ''आप अध्ययन के मामलों में से कुछ में, हमसे काफी आगे हैं'', उन्होंने कहा। ''मैं अपने वार्तालाप के आधार पर, कह सकता हूँ कि, तुम कई मामलों में, हमारे खुद के डॉक्टरों से आगे हो, परंतु फिर भी तुम्हें, ये दो विषय, जिनके संबंध में वर्तमान में तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है, पढ़ने पड़ेंगे।'' उन्होंने एक घंटी को छुआ और कहा, ''मैं सब तरफ तुम्हें दिखवा दूँगा और तुम्हें विभिन्न विभागों की और ले जाया जायेगा, ताकि तुम अपने साथ, आज के दिन की कुछ छाप (impression) ले जा सको। यदि तुम अनिश्चित हो या तुम्हें किसी प्रकार का संदेह हो, तो मेरे पास आना क्योंकि, मैंने लामा मिंग्यार डोंडुप को, अपनी पूरी शक्तियों और सीमाओं के अनुसार, तुम्हें मदद करने का वचन दिया है।'' उन्होंने झुक कर मेरा अभिवादन किया, और जैसे ही मैं झुक कर पीछे लोटा, मैंने उनके प्रति अपने दिल को छुआ। नीली पोशाक वाला नोजवान कमरे में प्रविष्ट हुआ। प्रिंसिपल ने उसको दफ्तरी (Mandrain) भाषा में कुछ कहा। तब वे मेरी तरफ मुड़े और बोले, ''यदि आप आह फू (Ah Fu) के साथ चलें, तो वे आपको पूरे महाविद्यालय को दिखा देंगे और यदि, कोई प्रश्न आपके पास हो, तो आपको उसका उत्तर दे देंगे।'' इस बार वह नोजवान मुड़ा, और मेरा नेतृत्व करता हुआ, सावधानी से प्रिंसिपल के दरवाजे को जो उसके पीछे था, बंद करते हुए, बाहर के रास्ते पर चला। गलियारे में उसने कहा, ''पहले हमें रजिस्ट्रार के पास जाना चाहिए। आपको अपना नाम, एक किताब में लिखकर हस्ताक्षर करना होगा।'' हम गलियारे सें नीचे गए, और चिकने फर्श वाले एक बड़े हॉल को पार किया। इसके काफी दूर, दूसरी तरफ, दूसरा गलियारा था। हम इसमें कुछ कदम चलकर एक कमरे में गए, जहाँ काफी हलचल थी। लिपिक लोग, स्पष्टतः नामों की सूची को तैयार करने में, काफी व्यस्त थे, जबकि दूसरे नोजवान, अपने

नामों को बड़ी किताबों में लिखते हुए, एक छोटी मेज के सामने खड़े हुए थे। लिपिक, जो मेरा पथप्रदर्शन कर रहा था, उसने किसी दूसरे आदमी, जो समीप के एक दूसरे बड़े दफ्तर में जाकर गायब हो गया, को कुछ कहा। कुछ देर बाद, एक ठिगना, भद्दा, चीनी आदमी, नजर गढ़ाते हुए, बाहर निकला। वह अत्यधिक मोटे कॉचों का चश्मा पहने हुए था और वह भी पश्चिमी ढंग की पोशाक में था। ''आह,'' उसने कहा, ''लोबसांग रम्पा। मैंने आपके बारे में काफी कुछ सुना है।'' उसने अपना हाथ मुझे पकड़ाया, मैंने उसे देखा, मैं नहीं जानता था कि, मुझे क्या देना चाहिए। मैंने सोचा शायद वह पैसे की चाह में था। मेरे साथ के मार्गदर्शक (guid) ने मुझे फुसफुसाकर कहा, ''आपको पश्चिमी ढंग से, अपना हाथ, उसके हाथ के साथ मिलाना चाहिए।'' ''हाँ, आपको मेरा हाथ पश्चिमीढंग से हिलाना चाहिए।'' उस मोटे, बोने आदमी ने कहा, ''हम इसी व्यवस्था को यहाँ प्रयोग में लाने वाले हैं।'' इसलिए मैंने उसका हाथ लिया और उसे दबा दिया। ''ओह!'' उसने कहा, ''आप मेरी हड्डियों को तोड़ रहे हैं।'' मैंने कहा ''ठीक है; मैं नहीं जानता कि, क्या करना चाहिए। तिब्बत में, हम अपने दिलों को, इस तरह से छूते हैं।'' और मैंने उसे करके दिखाया। उसने कहा, ''ओह हॉ, परंतु अभी समय बदल रहा है। हम इस पद्धति को उपयोग में लाते हैं। अब ठीक से मेरे हाथ को हिलाओ, मैं तुम्हें दिखाऊँगा, कैसे? और उसने कर के दिखाया। इसप्रकार मैंने उससे हाथ मिलाया, और मैंने सोचा कि, ये कितना मूर्खतापूर्ण है। उसने कहा, ''ये बताने के लिए कि, आप इस कॉलेज में हमारे विद्यार्थी हैं, अब आपको अपने नाम को हस्ताक्षरित करना चाहिए।'' उसने बगल में खड़े नोजवानों में से कुछ को, जो उन किताबों की और देख रहे थे, बेरुखी के साथ झाड़ा, और अपनी उँगलियों और अँगूठे को गीला किया, तब वह एक बड़े लेजर के ऊपर झुका। ''वहॉ,'' उसने कहा, ''क्या आप अपना पूरा नाम, और पद, वहाँ लिखेंगे?'' मैंने एक चीनी पेन को उठाया, और अपना नाम उस पेज के शीर्ष पर लिख दिया। ''मंगलवार लोबसांग रम्पा,'' मैंने लिखा, ''तिब्बत का लामा।'' चाकपोरी का शल्यचिकित्सक पुजारी। पहचाना हुआ अवतार (Recognçed Incarnation), मठाध्यक्ष पद प्राप्त। लामा मिंग्यार डोंडुप का शिष्य।'' ''ठीक!'' उस छोटे, मोटे, चीनी आदमी ने, जब उसने मेरी लिखावट के ऊपर झाँका, कहा। ''अच्छा! अब हम चलें। अब मैं, आपको अपनी जगह दिखाना चाहता हूँ। मैं आपको, पश्चिमीविज्ञान के उन सब आश्चर्यों का प्रभाव देना चाहता हूँ, जो यहाँ हैं। हम फिर मिलेंगे।'' इसके साथ ही उसने मेरे नोजवान पथप्रदर्शक को कहा, ''क्या आप मेरे साथ आयेंगे, हम पहले विज्ञानकक्ष की और जायेंगे।'' हम बाहर गए, और उस अहाते (compound) के पार, और उस लंबे भवन के अंदर में होकर, तेजी से चले। यहाँ हर जगह पर कॉच का सामान रखा था; बोतल, नलियाँ, फ्लास्क और दूसरे सारे उपकरण, जो हमने इससे पहले केवल चित्रों में देखे थे। नोजवान एक कोने में खिसक गया, ''अब!'' उसने आश्चर्य व्यक्त किया। ''यहाँ पर कुछ है,'' और वह एक पीतल की नली के साथ खेलने लगा और उसने काँच का एक टुकड़ा, इसके नीचे की तरफ रखा। तब उसने काँच की नली में झॉकते हुए, एक मूठ (knob) को घुमाया। ''इसे देखो!'' उसने आश्चर्य के साथ कहा। मैंने देखा। मैंने एक जीवाणु के समूह (culture) को देखा। नोजवान मेरी तरफ को भय और उत्सुकता के साथ देख रहा था। ''क्या! क्या तुम्हें आश्चर्य नहीं लगा ?'' उसने कहा, ''बिल्कुल नहीं,'' मैंने जवाब दिया। ''हमारे पास काफी अच्छा एक (सूक्ष्मदर्शी), पोटाला लामामठ में हैं, जो भारत सरकार द्वारा दलाईलामा को भेंट किया गया था। मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, इसका उपयोग करने के लिए स्वतंत्र थे और मैं उसे अक्सर उपयोग में लाता था।'' ''ओह!'' नोजवान ने जवाब दिया, और वह काफी निराश भी दिखाई दिया ''तब मैं तुम्हें कोई दूसरी चीज दिखाऊँगा'' और उसने मुझे इमारत के बाहर से होकर, दूसरी इमारत में जाने का रास्ता दिखाया। ''आप रहने के लिए, पहाड़ी लामामठ में जाने वाले हो,'' उसने कहा, ''लेकिन मैंने सोचा कि आप नवीनतम सुविधाओं को देखना चाहेंगे, जो यहॉ रहने वाले विद्यार्थियों को प्राप्त हैं।'' उसने एक कमरे का दरवाजा खोला और तब मैंने पहली बार सफेदी पुती हुई दीवारों को देखा, और तब मेरी मोहित

टकटकी, एक लोहे के काले ढाँचे पर, जिसमें अगल बगल से, तमाम मरोड़े हुए तार, खींच कर बाँधे हुए थे, पर लग गयी। ''ये क्या है ?'' मैंने पूछा। मैंने ऐसी कोई चीज अभी तक नहीं देखी है।'' ''वह,'' उसने भारी गर्व के साथ कहा, ''वह एक पलंग है। हमारे पास इस इमारत में छैः हैं, जो सबसे अधिक आधुनिक चीज हैं।'' मैंने देखा। मैंने इस तरह की कोई चीज नहीं देखी। ''पलंग,'' मैंने कहा। ''इस चीज से वे क्या करते हैं ?'' ''इस पर सोओ,'' उसने जवाब दिया। ''ये वास्तव में, बहुत आरामदेह चीज है। इस पर लेटो और खुद देखो। ''मैंने उसकी और देखा, मैंने पलंग को देखा, और मैंने दुबारा से उसको देखा। ठीक है, मैंने सोचा, ऐसे किसी भी चीनी लिपिक के सामने मुझे कायरता नहीं दिखानी चाहिए और इसलिए, मैं उस पलंग पर बैठ गया। उसने तेज आवाज, मेरे नीचे सुस्त सी चीरने जैसी आवाज निकाली, वह झुका, और मैंने अनुभव किया कि, मैं जमीन पर गिरने वाला हूँ। मैं जल्दी से उछला, ''ओह, मैं इसके हिसाब से बहुत अधिक भारी हूँ,'' मैंने कहा। नोजवान अपनी हँसी को छिपाने की कोशिश कर रहा था। ''ओह, ये है जिसके कहने का मेरा मतलब था'', उसने जवाब दिया। ''ये एक पलंग है, एक स्प्रिंग वाला पलंग।'' और वह लात मारता हुआ इसकी पूरी लंबाई में लेट गया और उछल गया। नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा, ये एक भयानक दिखने वाली चीज थी। मैं हमेशा जमीन पर ही सोता था, और जमीन हमेशा मेरे लिए अच्छी, काफी अच्छी थी। नोजवान फिर से उछला और फिर से उछल कर एक झटके के साथ जमीन पर गिरा। उसने उसकी अच्छी खिदमत की, जब मैंने उसको अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद की, मैंने सोचा। ''यही सब कुछ नहीं है, जो मुझे आपको दिखाना है,'' उसने कहा, ''इसे देखिए।'' वह मुझे एक दीवार की तरफ ले गया, जहाँ एक छोटा बर्तन (basin) लगा था, जो शायद, लगभग आधे दर्जन साधुओं के लिए भी, त्सम्पा बनाने के लिए उपयोग में नहीं लाया जा सकता था। ''इसको देखिए,'' उसने कहा, ''आश्चर्यजनक, क्या ऐसा नहीं है ?'' मैंने उसे देखा। मुझे ऐसा कुछ नहीं लगा, मैं इसका कोई उपयोग नहीं समझ सका। इसके तले में एक छेद था। ''ये किसी भी तरह से अच्छा नहीं है,'' मैंने कहा। इसमें एक छेद है। इसमें चाय नहीं बनाई जा सकती।'' वह हँसा, वह वास्तव में, इस पर आश्चर्य कर रहा था। ''वह,'' उसने कहा, ''इस पलंग से भी कुछ नयी चीज है। देखिए!'' उसने अपना हाथ निकाला और धातु के एक टुकड़े को छुआ, जो उस सफेद बर्तन में, एक किनारे से लगा हुआ था। मेरे पूरे स्तब्धीकरण के साथ, उस धातु में से पानी बाहर आया। पानी! ''ये ठंडा है,'' उसने कहा, ''काफी ठंडा। देखो'' और उसने अपना हाथ, उसके नीचे लगा दिया। ''इसे महसूस करो,'' उसने कहा, मैंने ऐसा किया। ये पानी था, ठीक नदी के पानी की तरह। शायद थोड़ा पुराना, ये नदी के पानी की तुलना में, पेशाब की तरह बदबूदार था लेकिन–एक धातु के टुकड़े में से पानी। किसने इसके बारे में सुना होगा! उसने अपना हाथ बाहर निकाल लिया, और एक काली चीज को उठाया और बेसिन के तले में, छेद में घुसाया। पानी दनदनाता हुआ आया, जल्दी ही इसने बर्तन को भर दिया, परंतु बाहर नहीं बहा, क्योंकि, ये कहीं किसी दूसरे छेद में होकर, कहीं दूसरी जगह जा रहा था, परंतु ये फर्श पर नहीं गिर रहा था। नोजवान ने धातु के टुकड़े को दुबारा फिर छुआ, जिससे पानी का बहना रुक गया। उसने अपने दोनों हाथ, पानी से भरे हुए बर्तन में डाले और उसे चक्कर में घुमाया। ''देखो,'' उसने कहा। ''सुंदर पानी। तुम्हें इसे कुंए में से खोदने के लिए, अब और अधिक बाहर नहीं जाना पड़ेगा।'' मैंने अपने हाथ पानी में डाले और उन्हें उसी तरह धोया। ये काफी अच्छा अनुभव था; किसी नदी में कहीं झुकने और अपने हाथों और घुटनों को मोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं। तब उस नोजवान ने एक जंजीर खींची और तब, पानी मोत की कगार पर बैठे हुए, किसी बूढ़े आदमी के गरारे करने की तरह से, बाहर निकल गया। वह घूम गया और उसने, जिसको मैं अभी तक, किसी आदमी की छोटी पोशाक समझ रहा था, उठा लिया। ''यहाँ,'' उसने कहा, ''ये, इसका उपयोग करो।'' मैंने उसको देखा और उसने जिस कपड़े के टुकड़े को मेरे हाथ में दिया था, उसे देखा। ''ये किस लिए है ?'' मैंने कहा, ''मैं पूरी तरह कपड़े पहने हूँ।'' वह फिर से हँसा। ''ओह नहीं, आप इसके ऊपर अपने

हाथ पोंछिये,'' उसने कहा, ''इस तरह से,'' और उसने मुझे दिखाया। उसने उस कपड़े को मुझे वापस दिया। ''उन्हें रगड़कर सुखाओ,'' उसने कहा, मैंने ऐसा किया, परंतु मैं हैरत में रह गया, क्योंकि, पिछली बार, मैंने तिब्बत में, औरतों को यह कहते हुए सुना था कि, वे इस प्रकार के कपड़े के टुकड़े को पाकर, बहुत खुश थीं और वो इसमें से कुछ उपयोगी चीज बना लेंगी, और हम यहाँ उसको, अपने हाथों को पोंछने में बिगाड़ रहे हैं। मेरी मॉ, यदि वह मुझे ऐसा करते हुए देख लेतीं, कुछ भी कहतीं।

अब तक मैं, वास्तव में, काफी प्रभावित हो चुका था। धातु में से पानी। छेद वाले बर्तन, जो उपयोग में लाये जा सकते हैं। नोजवान ने काफी प्रसन्नतापूर्वक मुझे रास्ता दिखाया। हम, एक कमरे में, जो जमीन में अंदर था, कुछ सीढ़ियाँ नीचे गए। ''यहाँ,'' उसने कहा, ''ये वो जगह है, जहाँ हम आदमी और औरतों की लाशों को रखते हैं।'' उसने एक दरवाजा खोला, और वहाँ पत्थर की मेजों पर, पहले से कुछ लाशें रखीं थीं जिनकी चीरफाड़ (dissection) की जानी थीं। हवा में अजनबी रसायनों की, जो उन लाशों को सड़ने से बचाने के लिए उपयोग में लाए गए थे, काफी तेज बदबू आ रही थी। उस समय मुझे कोई ख्याल नहीं था कि, वे क्या थे, क्योंकि, तिब्बत में, हम लाशों को काफी लंबे समय तक, बिना सड़े हुए, रख सकते थे क्योंकि, वहाँ का वातावरण ठंडा और सूखा था। यहाँ चुंगकिंग में, तपता हुआ गर्म था, उनमें यथासंभव शीघ्रता के साथ, जैसे ही वे मरे हों, इंजेक्शन लगाना आवश्यक था ताकि, वे कुछ महीनों के लिए, जब विद्यार्थियों को उन्हें चीरफाड़ करने की आवश्यकता होगी, सुरक्षित रखे जा सकें। वह एक अलमारी की तरफ चला और उसे खोला। ''देखो,'' उसने कहा। ''अमेरिका से आयातित नवीनतम शल्यउपकरण। लाशों को चीरने के लिए, टाँगों और हाथों को काट कर अलग करने के लिए। देखो!'' मैंने उन्हें देखा, वह सभी धातु के चमकते हुए टुकड़े, सभी क्रोमियम का, और सभी काँच का सामान, और मैंने सोचा, ठीक है, मुझे शक है कि, जैसा हम तिब्बत में करते थे, की अपेक्षा, यदि वे चीजों को अच्छी तरह कर सकते होंगे।

महाविद्यालय भवन में लगभग तीन घण्टे रहने के बाद, मैं वापस अपने सहयोगियों के पास चला, जो भवन के आहते में उत्सुकतापूर्वक मेरी प्रतीक्षा करते हुए बैठे थे। जो मैंने देखा था, और जो मैं कर रहा था, मैंने उन्हें बताया। तब मैंने कहा, ''चलें, अब शहर को देखें, देखें ये किस प्रकार की जगह है, मुझे ये एकदम जंगली लगती है। इसकी दुर्गंध और शोर बहुत भयानक हैं।'' इसलिए हम फिर अपने–अपने घोड़ों पर चढ़े और बाहर की और चले, और सीढ़ियों वाली गली, जिसमें कई दुकाने थीं, की और देखा। हम घोड़ों से उतरे, ताकि, एक–एक करके, उन विशिष्ट चीजों को, जो वहाँ बिक्री के लिए थीं, पैदल जाकर देख सकें। एक गली के अंत में, जिसके आगे कोई सड़क नहीं दिखती थी, और ये सहसा एक पहाड़ी की और जाकर खत्म हो गई थी, हमने गलियों की और देखा। इसने हमें इस तरह से बाँध दिया कि, हम नीचे टहलते हुए आए, और देखा कि, ये एकदम नीचे गिरी, और इसमें आगे भी सीढ़ियॉ थीं, जो इसे बंदरगाह की तरफ ले जा रही थीं। जैसा हमने देखा, हमने ये देखा कि, बड़े–बड़े मालवाही जहाज, मजबूत पुराना कबाड़, अपने तिकोने पाल लहराते हुए, मस्तूपों के विरुद्ध सुस्त हवा में, पहाड़ी चोटी के नीचे खड़े थे। कुली, एकरूपता में, लंबे बाँस के लठ्ठों को अपने कंधों पर रखकर, बाहर जाने वाले सामानों को लाद रहे थे। लठ्ठों के प्रत्येक किनारे पर टोकरी में भार रखा हुआ था। यहाँ बहुत गर्म था और हमें गर्मी में तपना पड़ रहा था। चुंगकिंग, अपने जलाने वाले वातावरण के लिए जाना जाता है। तब, ज्यों ही हमने अपने घोड़ों को आगे बढ़ाते हुए, चलना शुरू किया, बादलों में से कोहरा, कुहासा घिर कर नीचे आया, और ये नदी के ऊपर छा गया, और हम अंधेरे में टटोलने लगे। चुंगकिंग एक ऊँचा शहर है; ऊँचा और कुछ हद तक चेतावनी देता हुआ। ये लगभग बीस लाख की आबादी वाला, ढालू और पत्थर वाला एक शहर था। गलियॉ ओंधी थीं, इतनी ओंधी कि, वास्तव में, घरों में से कुछ एक, पर्वतों की बगल वाली गुफाओं में होते से लगे, जबकि दूसरे, रसातल में से बाहर उभरे हुए, अधपर लटकते हुए जैसे दिखाई दिए। यहाँ भूमि का प्रत्येक फुट बोया गया था और

ईर्ष्यापूर्ण तरीके से सुरक्षित किया जाता था। यहॉ चावल को या फलियों की कतार को या मक्के के पैबंदों को उगाने के लिए, पट्टियाँ और पैबंद थे, परंतु कहीं भी भूमि नष्ट या बेकार पड़ी हुई नहीं थी। हर जगह, थकी हुई उंगलियों से जंगली खरपतवार को बीनते हुए, नीली पोशाक में, आकृतियाँ, उनके ऊपर झुकी हुई थीं, मानो कि, वे पैदा ही इसी तरह हुए हों। जनता का उच्चवर्ग कियालिंग की घाटी में रहता था, जो चुंगकिंग का एक उपनगर था, जहाँ हवा, चीनीस्तरों के अनुसार न कि हमारे अनुसार, स्वस्थ थी, जहाँ की दुकानें कुछ अच्छी थीं और भूमि उपजाऊ थी। वहाँ पेड़ और आनंददायक जलधारायें थीं। वहाँ कुलियों के लिए नहीं, बल्कि धनाढ्य व्यापारियों के लिए, व्यावसायिकों के लिए, और अपने स्वतंत्र साधनों वाले लोगों के लिए स्थान था। उच्चाधिकारी और ऊँची जाति के लोग यहाँ रहते थे। चुंगकिंग एक शक्तिशाली शहर था; सबसे बड़ा शहर, जो हमने इससे पहले कभी देखा हो, परंतु हम इससे प्रभावित नहीं हुए।

अचानक भोर घिर आई। हम बहुत भूखे थे। हम पूरी तरह निराहार थे, इसलिए खाने के स्थान पर जाने के सिवाय, कुछ भी करने को नहीं था; और जैसे चीनी लोग खाते थे, हम एक स्थान पर गए, जिस पर भड़कीले चिन्ह (बने) थे, और जिस पर कहा गया था कि, वे चुंगकिंग में, बिना किसी विलंब के, सर्वोत्तम खाना दे सकते हैं। हम वहाँ गए और एक मेज पर जाकर बैठ गए। नीली पोशाक में एक आकृति हमारे पास आई और उसने पूछा कि, हमें क्या चाहिए। ''क्या तुम्हारे पास त्सम्पा है ?'' मैंने कहा। ''त्सम्पा'' उसने जवाब दिया। ''ओह! नहीं, हमारे पास वैसा कुछ नहीं है। ये कुछ हमारे पश्चिमी खाने में से होना चाहिए।'' ''ठीक है, तुम्हारे पास क्या है ?'' मैंने पूछा। ''चावल, नूडल, शार्क के गलफड़े, अण्डे।'' ''बिल्कुल ठीक'' मैंने कहा, ''हमें चावल के गोले, नूडल, शार्क के गलफड़े और बाँस की कलियॉ (bamboo soots) चाहिए। जल्दी करो।'' वह जल्दी से गया और कुछ ही क्षणों में, जो खाना हमें चाहिए था, उसको लेकर आया। हमारे पास दूसरे लोग भी खाना खा रहे थे और हम उनकी बातचीत और शोर से, जो वे कर रहे थे, बुरी तरह डरेहुए और परेशान थे। तिब्बत में, लामामठों में, ये अटूट नियम था कि, जो लोग खाना खा रहे हैं, वे बात नहीं करेंगे क्योंकि, ये खाने के प्रति असम्मान होता, और पेट में अंदर भयंकर दर्द पैदा करके, खाना इसका बदला ले सकता था। लामामठों में जब कोई खाना खाता, एक भिक्षुक, हमेशा पवित्रग्रन्थों में से जोर–जोर से कुछ पढ़ता और हमें खाते हुए उसे सुनते। यहाँ आसपास में, बहुत ही हल्के प्रकार के वार्तालाप चल रहे थे। हम को धक्का लगा और हम चिढ़े हुए थे। हमने पूरे समय अपनी प्लेटों को देखते हुए, उस हिसाब से खाना खाया, जो हमारे पद के अनुसार बताया जाता है। कुछ बातें उतनी हल्की नहीं थीं, क्योंकि, काफी कुछ गुप्त वार्तालाप, चीन के विभिन्न भागों में जापानियों और उनके द्वारा किए गए अत्याचारों के ऊपर हो रहा था। उस समय मैं इससे पूरी तरह अंजान था। हम प्रभावित नहीं हुए, यद्यपि, न तो चुंगकिंग से और न ही खाने वाले स्थान से। ये खाना केवल इसलिए ध्यान देने योग्य था क्योंकि, ये हमारा पहला खाना था, जिसके लिए मुझे पैसा अदा करना पड़ा। खाना खाने के बाद हम बाहर निकले और नगरपालिका के भवन में, ऑगन में, एक स्थान खोजा, जहाँ बैठकर हम बातें कर सकते थे। हमने अपने घोड़ों को, उनको आवश्यक आराम देने के लिए, उनको खिलाने और पानी पिलाने के लिए, बॉध दिया था क्योंकि, कल मेरे सहयोगी, फिर से घर, तिब्बत जाने वाले थे। अब वे, विश्वयात्री के अंदाज में, ये देखते हुए कि, वे ल्हासा में स्थित अपने दोस्तों के लिए क्या ले जा सकते हैं, घूम रहे थे, और मैं भी घूम रहा था कि, मैं लामा मिंग्यार डोंडुप को क्या भेज सकता हूँ। हमने इसके ऊपर विचार किया और तब मानो कि, एक साझी प्रेरणा हमारे अंदर आई, हम पैरों पर उठ खड़े हुए और फिर से दुकानों की और चले, और अपनी खरीददारी पूरी की। इसके बाद हम एक छोटे बगीचे में घूमे, जहाँ हम बैठे, और बातचीत करते रहे, बातचीत करते रहे। अब अंधेरा हो चुका था। शाम हमारे सिर पर थी। थोड़े से धुंधले कोहरे में से होते हुए, तारे अस्पष्ट रूप से चमकने लगे थे, क्योंकि कोहरा एक हल्की सी बाड़ (Èze) छोड़कर जा चुका

था। एक बार फिर हम उठ खड़े हुए और फिर से खाने की खोज में चले। इस बार समुद्री खाना मिला, खाना, जो हमने इससे पहले कभी नहीं खाया था और जो हमें एकदम अंजाना, अत्यंत अरुचिकर, विदेशी जैसा लगा, परंतु खासबात ये थी कि, ये खाना था, क्योंकि, हम भूखे थे। अपना मन भर के खाने के बाद, हमने खाने के स्थान को छोड़ दिया और वहाँ गए, जहाँ हमारे घोड़े बंधे हुए थे। वे हमें अपनी प्रतीक्षा करते हुए दिखाई दिए और उन्होंने हमारे पहुँचने पर, आनंद के साथ हिनहिना कर, हमारा स्वागत किया। वे काफी तरोताजे लग रहे थे और जब हमने उनके ऊपर सवारी की, तो काफी ताजगी महसूस की। मैं कभी अच्छा घुड़सवार नहीं रहा और निश्चित ही मैं, आराम किए हुए घोड़े की तुलना में, एक थके हुए घोड़े को प्राथमिकता देता था। हम गली में सवार होकर चले और हमने क्यालिंग (Kialing) की सड़क पकड़ी।

हमने चुंगकिंग के शहर को छोड़ दिया और शहर के बाहरी भागों में होकर चले, जहाँ हम रात को रुकने वाले थे, वह लामामठ, जो आज रात को मेरे लिए घर होने वाला था। हम दांई और को बंट गए और एक जंगली पहाड़ी की और चले। लामामठ हमारे ही क्रम (order) का था और ये, तिब्बत के लिए, घर जाने के लिए, हमारी समीपतम पहुँच में था। जब मैं प्रविष्ट हुआ और मंदिर में घुसा, ये प्रार्थना का समय था। सुगंधें, बादलों की तरह से महक रही थीं, और बूढ़े भिक्षुओं की गहरी आवाजें, सहायकों की ऊँची आवाजें, हमें गृहातुरता (homesidkness) के लिए तीखी वेदना दे रही थीं। दूसरे, ये जानते हुए कि मुझे कैसा लग रहा है, चुप थे, और उन्होंने मुझे, अपने लिए अकेला छोड़ दिया था। प्रार्थना समाप्त हो जाने के बाद, मैं अपने स्थान के लिए लोटा, मैंने सोचा और सोचा। मैंने उस विषय में सोचा, जब मैं, भूखा और दिल से दुखी था, और बहुत अधिक कष्ट झेलने के बाद, जब मैं पहली बार लामामठ में प्रविष्ट हुआ था। अब मैं दिल से दुखी था, शायद पहले से अधिक दुखी, जो इससे पहले कभी रहा हूँ, क्योंकि तब मैं ये सब जानने के लिए, जीवन के बारे में अधिक जानने के लिए, बहुत छोटा था लेकिन, अब मैं अनुभव करता हूँ कि, मैं जीवन और मृत्यु के बारे में बहुत कुछ जानता हूँ। थोड़ी देर बाद लामामठ का उम्रदराज प्रभारी मठाधीश, धीरे–धीरे रेंगता हुआ, मेरे बगल में आया। ''मेरे भाई,'' उसने कहा, ''भूतकाल के ऊपर बहुत अधिक मगन रहना या चिंतन करना, कोई बहुत अच्छी बात नहीं है, जबकि पूरा का पूरा भविष्य ही किसी के सामने हो।'' प्रार्थना खत्म हो चुकी है, मेरे भाई, शीघ्र ही ये अगली प्रार्थना का समय होगा। क्या तुम अपने बिस्तर पर सोने के लिए नहीं जाओगे क्योंकि कल करने को बहुत कुछ है।'' मैं अपने पैरों पर, बिना कुछ कहे हुए, और बिना उसका साथ लिए हुए, जहॉ मुझे सोना था वहाँ जाने के लिए, उठ खड़ा हुआ। मेरे साथी पहले ही सो चुके थे, शांत आकृतियाँ, मैंने उनको गुजर जाने दिया और उनके कंबलों में घुस गया, सो गया ? शायद। कोन जानता है ? शायद, ये वापस जाने की यात्रा के संबंध में, और उस आनंददायक पुनर्मिलन के, जो ल्हासा की इस यात्रा के अंत में उन्हें मिलेगा, स्वप्न देख रहे होंगे। मैंने भी स्वयं को, अपने कंबल में लुढ़का दिया, और लेट गया। मेरे सोने से पहले, चॉदनी की छाया लंबी होती गई और अधिक लंबी हो गई।

मैं मंदिर की तुरहियों की और घड़ियालों की आवाज से जागा। ये जगने का और एक बार फिर से, दुबारा प्रार्थना में शामिल होने का समय था। प्रार्थनासभा, खाने से पहले होनी चाहिए परंतु मैं भूखा था। फिर भी, प्रार्थना के बाद, मेरे सामने खाना आने पर, मुझे भूख नहीं थी। मेरा खाना हल्का था, बहुत हल्का, क्योंकि, मैं दिल से दुखी अनुभव कर रहा था। मेरे सहयोगियों ने भरपेट, बहुत अच्छी तरह से भरपेट खाना खाया परंतु मैंने सोचा, वे वापसी यात्रा के लिए, जो आज के दिन शुरू होने वाली है, अपने आपको सुदृढ़ बना रहे थे। नाश्ता खत्म करने के बाद, हम थोड़ा टहले। किसी ने भी कुछ अधिक नहीं कहा। कुछ अधिक दिखाई भी नहीं देता था, जिसके बारे में हम कहते। तब अंत में मैंने कहा, ''इस पत्र और इस उपहार को मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप को दे देना। उन्हें कहना कि मैं, उन्हें अक्सर

लिखता रहूँगा। उन्हें बताना कि, आप देख सकते हैं कि, मैं उनके साथ को, और उनके शिक्षण को, किस प्रकार याद करता हूँ।'' मैंने अपनी पोशाक के अंदर ही कुछ थोड़ी छेड़छाड़ की। ''और ये'' मैंने कहा, जैसे ही मैंने एक बंडल को प्रस्तुत किया, ''ये गहनतम (inmost) के लिए है। इसे भी मेरे शिक्षक को दे देना, वह इसे देखेंगे कि, ये दलाईलामा तक पहुँच जाए।'' उन्होंने मुझसे वह बंडल लिया और मैं भावनाओं से पूरी तरह से भरा हुआ, जिसे मैं दूसरों को नहीं दिखाना चाहता, एक तरफ को हट गया। मैं नहीं चाहता कि वे मुझे देखें, एक उच्च लामा इस प्रकार प्रभावित होता है। भाग्यवश, वे भी काफी दुखी थे, क्योंकि,–ऐसा होते हुए भी कि, तिब्बती स्तर के अनुसार, हमारे पदों में अंतर के बावजूद, हम लोगों के बीच में एक गंभीर मित्रता पनप आई थी। उन्हें भी बिछुड़ने का दुःख था, इस बात के ऊपर भी दुख था कि, मैं इस अंजान दुनियाँ में, जिससे वे घृणा करते थे, अकेला छोड़ा जा रहा हूँ, जबकि वे अपने प्रिय ल्हासा को जा रहे थे। थोड़े समय के लिए, छोटे–छोटे फूलों को देखते हुए, जो जमीन पर गलीचे की तरह बिछे हुए थे, पेड़ों की शाखाओं पर बैठी चिड़ियों को सुनते हुए, और सिर के ऊपर हल्के बादलों को देखते हुए, हम पेड़ों के बीच में घूमे। अब समय आ गया था। हम, पुराने, चीनी लामामठ की और, जो चुंगकिंग को अनदेखा करती हुई, नदियों को अनदेखा करती हुई, पहाड़ी के ऊपर और पेड़ों के झुरमुट के बीच में था। अधिक कहने को, अधिक करने को कुछ नहीं था। हम थोड़े निराश और दबे हुए महसूस कर रहे थे। हम अस्तबल की और गए। धीमे–धीमे, मेरे सहयोगियों ने अपने घोड़ों पर काठी बॉधना शुरू किया और मेरे घोड़े की लगाम मुझसे ले ली; मेरा घोड़ा, जो मुझे ल्हासा से यहाँ तक स्वामिभक्ति के साथ लाया था; एक सुखी प्राणी, जो अब तिब्बत को वापस जा रहा था। हमने आपस में कुछ शब्दों का आदान–प्रदान किया, केवल थोड़े से शब्द। तब वे अपने घोड़ों पर चढ़े और मुझे खड़ा छोड़ते हुए, उनके पीछे सड़क पर टकटकी लगाकर देखते हुए, आगे की और, तिब्बत की और बढ़ दिए। वह छोटे, और छोटे, दिखते जा रहे थे, एक मोड़ के बाद, वे मेरी आँखों से ओझल हो गए। धूल का एक हल्का सा गुबार, जो उनके जाने से पैदा हुआ था, दब गया। उनके घोड़ों की टापों की आवाजें, दूरी के कारण मर गईं। मैं भूतकाल के ऊपर विचार करता हुआ, और भविष्य के सपने देखता हुआ, खड़ा रहा। मैं नहीं जानता, कितनी देर तक मैं चुप्पी में खड़ा रहा परंतु अपनी इस हताशा की भावना से, एक आनंदपूर्ण आवाज के द्वारा वापस लाया गया, जो कहती थी, ''आदरणीय लामा, क्या आप ये याद नहीं करेंगे कि, चीन में कोई दूसरे भी हैं, जो आपके दोस्त हो सकते हैं ? मैं आपकी सेवा में हूँ, तिब्बत के आदरणीय लामा, आप चुंगकिंग में मेरे सहपाठी विद्यार्थी हैं।'' मैं धीमे से घूमा, और देखा कि, वहाँ, ठीक मेरे पीछे, एक खुशगवार, नोजवान चीनी भिक्षुक खड़ा था। मैं सोच रहा था कि, उसे आश्चर्य होगा कि, पता नहीं मेरा रवैया, उसके बारे में, उसके इस तरीके के बारे में, क्या होगा, क्योंकि, मैं एक मठाधीश था, एक उच्चस्तरीय लामा, और वह मात्र, एक चीनी भिक्षुक। परंतु मुझे उससे मिलकर खुशी हुई। वह हुऑग (Huang) था, जिसे मैं बाद में सगर्व मित्र कर पुकार सका। हम शीघ्र ही एक दूसरे को जान गए, और मैं विशेषरूप से यह जानकर खुश था कि, वह मेरे चिकित्सीय अध्ययन में, जो कल से प्रारंभ होगा, जैसा मेरा है, साथ रहने वाला है। वह भी, उन विशिष्ट चीजों, विद्युत और चुम्बकत्व का अध्ययन करने वाला था। वास्तव में, वह भी इन दोनों पाठ्यक्रमों में, जिनको मैं भी पढ़ने वाला था, शामिल था। हम एक दूसरे को अच्छी तरह समझ गए। हम मुड़े, और पीछे की और, लामा मठ के प्रवेश द्वार की और चले। जैसे ही हमने छोटे फाटक को पार किया, एक दूसरा चीनी भिक्षुक सामने आया और उसने कहा, ''हमें महाविद्यालय को सूचना देनी होगी। हमें एक पंजी पर हस्ताक्षर करने होंगे।'' ''ओह, मैं पहले से ही उसको कर चुका हूँ'' मैंने कहा, ''मैंने कल ही कर दिए थे'' ''हाँ, आदरणीय लामा,'' दूसरे ने कहा। ''परंतु ये विद्यार्थियों का रजिस्टर नहीं है, जिस पर कल आपने हमारे सामने हस्ताक्षर किये थे। यह बंधुत्व (fraternity) रजिस्टर है, क्योंकि, महाविद्यालय में हम सब भाई होने वाले हैं, जैसा कि, अमेरिकी महाविद्यालयों में होता है।'' इसलिए हम एक बार फिर साथ–साथ,

रास्ते पर, लामामठ के साथ वाले रास्ते पर, पेड़ों के बीच होकर, चले। रास्ते पर फूलों का गलीचा बिछा हुआ था, और हम क्यालिंग से चुंगकिंग जाने वाली मुख्य सड़क पर मुड़ गए। इन नोजवान आदमियों के साथ में, जो सभी मेरी जैसी उम्र के थे, यात्रा उतनी लंबी या उतनी कष्टप्रद प्रतीत नहीं हुई। शीघ्र ही एक बार दुबारा, हम उस भवन में आए, जो हमारे लिए दिन का घर होने वाला था और हम उसमें गए। नोजवान लिपिक, जो नीली पोशाक में था, हमें देख कर, वास्तव में, प्रसन्न हुआ। उसने कहा, ''आह, मैं आशा करता था कि, आप यहॉ आयेंगे। यहाँ एक अमरीकी पत्रकार है, जो चीनी बोल सकता है। वह तिब्बत के एक उच्चस्तरीय लामा से, बात करना चाहता है, मिलना चाहता है।

वह हमें गलियारे में होकर, फिर से आगे ले चला और दूसरे कमरे में गया, वह कमरा, जिसमें मैं पहले नहीं गया था। ये कुछ–कुछ स्वागत–सत्कार (reception) वाला कमरा था, क्योंकि, यहाँ काफी नोजवान पुरुष बात करते हुए, नोजवान औरतों के साथ बैठे थे, जिससे मुझे धक्का लगा। मैं उन दिनों, औरतों के बारे में बहुत कम जानता था। एक लंबा नोजवान, एक बहुत नीची कुर्सी में बैठा हुआ था। मुझे कहना चाहिए कि वह लगभग तीस वर्ष की आयु का था। जब हम प्रविष्ट हुए, वह उठकर खड़ा हो गया और हमने पूर्वी तरीके से, उसके दिल को छूकर अपने से लगाया। मैनें, वास्तव में, बदले में अपना छुआ। हमने उसके साथ परिचय किया और तब किसी कारणवश उसने अपना हाथ निकाला। इस समय मैं पूरी तरह बेखबर नहीं था, और मैंने उसे ले लिया और उसे मान्य तरीके से हिलाया। वह हॅसा, ''आह, मैं देख रहा हूॅ कि, आप पश्चिमी तरीकों पर, जो कि चुंगकिंग में लागू किए जा रहे हैं, स्वामित्व प्राप्त कर रहे हैं।'' ''हाँ,'' मैंने कहा, ''मैं इन भयानक दिखने वाली कुर्सियों पर ठीक तरह से बैठने की, और हाथ मिलाने की, स्थिति तक आ पहुँचा हूॅ। वह बहुत अच्छा नोजवान साथी था, और मुझे अभीतक उसका नाम याद है। वह चुंगकिंग में कुछ समय पहले गुजर गया। हम मैदानों में टहले और पत्थर की एक नीची दीवार पर बैठ गये, जहाँ हम काफी लंबे समय तक बात करते रहे। मैंने उसे तिब्बत के बारे में, अपने रीति–रिवाजों के बारे में बताया। मैंने उसे तिब्बत में अपने जीवन के बारे में बहुत कुछ बताया। उसने मुझे अमेरिका के बारे में बताया। मैंने उससे पूछा वह चुंगकिंग में क्या कर रहा है, उसके जैसा प्रखर बुद्धि वाला एक आदमी, इस तपते हुए स्थान में रह रहा है, विशेष रूप से उस समय, जब उसके लिए ऐसा करने का कोई खास कारण नहीं हो। उसने कहा कि, वह अपने विशेष लेखों की, प्रसिद्ध अमरीकी पत्रिका के लिए, एक श्रृंखला तैयार कर रहा है। उसने पूछा, क्या वह, इसमें मेरा उल्लेख कर सकता है, तब मैंने कहा, ''ठीक है, मैं चाहूॅगा कि तुम ऐसा न करो, क्योंकि, मैं यहाँ एक खास उद्देश्य से हूॅ; अध्ययन के लिए, उन्नति करने के लिए, और इस स्थान को आगे की पश्चिमी यात्राओं के लिए, छलाँग के प्रारम्भ के रूप में देखता हूॅ। गोया कि, मैं तब तक के लिए प्रतीक्षा करना चाहूॅगा, जब तक कि मैं बताने लायक, कुछ खास उपलब्धि प्राप्त नहीं कर लेता। और तब, मैं कहता गया, ''तब मैं तुम्हारे सम्पर्क में आऊँगा और इस साक्षात्कार को दूँगा, जिसे आप अभी लेना चाहते हैं।'' वह एक सुभद्र (decent) नोजवान साथी था और मेरे बिन्दु को समझ गया। हम शीघ्र ही मित्रता के बंधन में आ गए; वह समझने लायक ढंग से अच्छी चीनी भाषा बोल लेता था और हमें एक दूसरे को समझने में कोई विशेष दिक्कत नहीं हुई। वह हमारे साथ, कुछ दूर तक, लामामठ के रास्ते पर चला। उसने कहा, ''मैं, कई बार, कुछ करना, यदि इसकी व्यवस्था की जा सके तो, मंदिर की यात्रा और मंदिर की प्रार्थना में भाग लेना, चाहूॅगा। मैं आपके धर्म का नहीं हूॅ,'' उसने कहा, ''परंतु मैं इसका सम्मान करता हूॅ, और आपके मंदिर में, मैं अपनी श्रद्धा अर्पित करना चाहता हूॅ''। ''ठीक है,'', मैंने उत्तर दिया, ''तुम हमारे मंदिर में आओगे, तुम प्रार्थनाओं में भाग लोगे और तुम्हारा स्वागत किया जायेगा। ये मैं वादा करता हूॅ,'' इसके साथ ही, हमने अपना साथ छोड़ दिया, क्योंकि, हमें कल के लिए बहुत कुछ तैयारी करनी थी। कल, जबकि मैं अपने ताजा भविष्य के लिए विद्यार्थी के रूप में शुरूआत करूॅगा, मानो कि मैं पूरे जीवनभर पढ़ता ही रहूॅगा। वापस, लामामठ में मुझे अपने चीजों को छॉटना था। अपनी पोशाकें

देखनी थीं, जो यात्रा में गंदी हो गई थीं। मैं उन्हें धोने वाला था, क्योंकि, अपने रस्मो रिवाज के अनुसार, हम खुद अपने कपड़ों को धोते हैं; अपनी पोशाकों को, अपने व्यक्तिगत मामलों को, और इन गंदे कामों को हमारे वास्ते करने के लिए, नोकरों को इस काम में नहीं लगाते। बाद में, मैं चीनी विद्यार्थी के नीले कपड़े पहनने वाला था क्योंकि, मेरी खुद की, लामा जैसी पोशाक, दूसरे लोगों का विशेष ध्यानाकर्षण करती थी, और मैं नहीं चाहता था कि, मुझको प्रचार के लिए अकेला करके चुन लिया जाए, मैं शांति से पढ़ना चाहता था। सामान्य चीजों के अलावा, जैसे कि कपड़े धोना, हमें अपनी सेवाओं में उपस्थित होना पड़ता था और एक लामा नेता के रूप में हमें उन सेवाओं में व्यवस्था करने में भी हाथ बँटाना पड़ता था, क्योंकि यद्यपि, दिन के समय मैं विद्यार्थी होता था परंतु लामामठ में, अभी भी, मैं एक उच्च पदाधिकारी, पुजारी था, जिसके ऊपर ये जिम्मेदारी थी कि, वह उस कार्यभार को ढोए। इसलिए, दिन समाप्त हुआ। वह दिन जो कि मैं सोचता था, कभी समाप्त नहीं होने वाला है। वह दिन, जोकि मेरे जीवन का पहला समय होगा, जबकि मैं अपने लोगों से पूरी तरह से अलग हो चुका होऊँगा।

सुबह, ये अच्छी धूप भरी गर्म सुबह थी। हुआँग और मैं, सड़क पर, इस बार चिकित्सीय विद्यार्थी के रूप में, दुबारा अपना नया जीवन शुरू करने के लिए चले। हमने शीघ्र ही इस थोड़ी सी यात्रा को पूरा कर लिया और महाविद्यालय के मैदान में पहुँच गए, जहाँ सैकड़ों दूसरे, सूचनापटल पर झाँकते हुए, आराम से खड़े थे। हमने सावधानीपूर्वक, सभी सूचनाओं को पढ़ा और देखा कि, हम दोनों के नाम साथ–साथ थे, जिससे कि, हम हमेशा साथ–साथ पढ़ सकते थे। हमने दूसरों के सामने से धक्का देते हुए, अपना रास्ता बनाया। दूसरे अभी पढ़ रहे थे और हमने अपना रास्ता क्लासरूम की तरफ बढ़ाया, जो हमें बता दिया गया था। हम यहाँ, फिटिंग के तमाम अजनबीपन को देखते हुए, आश्चर्य करते हुए बैठे और गोया कि, मेजें, और दूसरी चीजों पर आश्चर्य किया। तब समय के अस्तित्व को महसूस करते हुए, दूसरे लोग, छोटे–छोटे समूहों में आए, और अपने स्थान पर बैठ गए। अंत में, एक घण्टा बजा और कहीं से एक चीनी आदमी प्रविष्ट हुआ। उसने कहा, ''सुप्रभात (good morning) भद्र पुरुषो'' हम सभी अपने पैरों पर उठ खड़े हुए, क्योंकि नियम ये कहते थे कि, अपनी श्रद्धा को प्रदर्शित करने का ये एक प्रमाणित तरीका है, और हमने वापस उनको जवाब दिया ''सुप्रभात।'' उन्होंने बताया कि, वे हमें कुछ लिखे हुए कागज देने वाले हैं और हमें अपनी असफलतओं से निरुत्साहित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उनका कार्य, हम जो नहीं जानते हैं, इस बात का पता लगाना न कि ये, कि हम कितना जानते हैं। उन्होंने कहा कि, जब तक वे हममें से प्रत्येक की वस्तुस्थिति का पता नहीं लगा लेते, वह हमें सहायता करने के लिए सक्षम नहीं होंगे। ये कागजात हरेक को देने होंगे, जिनमें विभिन्न प्रकार के मिलेजुले प्रश्न, जो गणित, भोतिकी, शरीरसंरचना विज्ञान, चिकित्सीय और शल्यचिकित्सा से संबंधित हर चीज और विज्ञान, एवं वे सभी विषय, जो हमको चिकित्सा और शल्यचिकित्सा पढ़ने के लिए, और उच्चस्तरीय विज्ञान को समझने के लिए, समर्थ बनायेंगे; एक यथार्थ चीनी ज्ञान का शोरबा। उन्होंने हमें स्पष्ट रूप से समझाया कि, यदि हम ये न समझ पायें कि, किसी प्रश्न का उत्तर कैसे देना है, तो हम ये लिख सकते हैं कि, यह हमने पढ़ा नहीं है लेकिन कुछ सूचना जानकारी अवश्य दें ताकि, वे हमारी ठीक स्थिति को, जहॉ तक हमारा ज्ञान है, समझ पाऐं। तब उन्होंने एक घण्टी बजाई। दरवाजा खुला और दो नोकर, जो किताबें जैसी दिखती थीं, उनको लादे हुए अंदर आए। वे हमारे बीच में आए और उन किताबों को हमें बाँट दिया। वास्तव में, ये किताबें नहीं, वल्कि, कागज पर लिखे गए प्रश्नों का और अनेक कागज के पृष्ठों का, जिन पर हमें लिखना था, पुलिंदा था। तब दूसरा आया और उसने पेंसिलें बॉटी। इस अवसर पर, हमें पेंसिलों का उपयोग करना था, ब्रशों का नहीं। इसलिए हम, एक–एक करके इनके प्रश्नों को पढ़ते हुए, और उनका जितना अच्छा हो सकता था, जवाब देते हुए, अभ्यस्त हुए। हम व्याख्याता के प्रभामंडल को देख सकते थे, अथवा कम से कम मैं तो देख ही सकता

था कि, वह एक सही व्यक्ति है, और उसका एकमात्र उद्देश्य हमारी मदद करना है।

मेरे शिक्षक और पथप्रदर्शक लामा मिंग्यार डोंडुप ने, हमें एक विशिष्ट उच्चस्तरीय प्रशिक्षण दिया था। प्रश्नपत्रों का, जिनको करने के लिए, हमें दो दिन का समय दिया गया था, ये परिणाम प्राप्त हुआ कि, काफी तमाम विषयों में, मैं अपने साथी विद्यार्थियों से काफी आगे था, परंतु यह दिखाता था कि, मुझे विद्युत और चुम्बकत्व का कोई ज्ञान नहीं था। शायद, उस इम्तिहान के एक सप्ताह बाद, हम एक प्रयोगशाला में गए, जहाँ हमें पहली बार, एक प्रदर्शन दिखाया गया। क्योंकि, इन दोनों अजनबी जैसे लगने वाले शब्दों को बताने के लिए, मेरे जैसे कई दूसरे भी, इस अर्थ का कोई विचार नहीं रखते थे। व्याख्याता ने, विद्युत के संबंध में हमको एक भाषण दिया, और उन्होंने कहा, ''अब मैं विद्युत के प्रभावों के संबंध में, तुम्हें एक व्यावहारिक प्रदर्शन दूँगा, एक हानिरहित प्रदर्शन।'' उन्होंने मुझे दो तार दिए और कहा ''इन्हें पकड़ो, इन्हें कस कर पकड़े रहो, जब तक मैं न कहूँ, चलें।'' मैंने सोचा कि, वह मुझे अपने प्रदर्शन में मदद करने के लिए कह रहे हैं (वह ऐसा था) और इसलिए मैंने तारों को पकड़ा, यद्यपि, मैं थोड़ा विचलित था क्योंकि, उनके प्रभामंडल ने मुझे बताया कि, वह कुछ कपट करने की जैसी रचना कर रहे थे। मैंने सोचा शायद ठीक हो, मैं ही उन्हें गलत सोच रहा हूँ, कैसे भी, वे एक अच्छे आदमी नहीं थे। वे मुड़े और अपने प्रदर्शन मेज की और, मुझसे दूर की और चले। वहाँ उन्होंने एक बटन को दबाया। मैंने प्रकाश को तार में आते हुए देखा और मैंने देखा कि, व्याख्याता का प्रभामंडल, आश्चर्य के साथ धोखा, दे रहा है। वे अति तीव्रता के साथ अचंभित होते हुए दिखाई दिये। ''और कस के पकड़ो,'' उन्होने कहा। मैंने ऐसा किया। मैंने तारों को कसकर पकड़ा, निचोड़ दिया। व्याख्याता ने मेरी और देखा और अपनी आखों को मला। वे भोंचक्के रह गये थे, जो हरेक को, लगभग किसी को भी, जो प्रभामंडल को देखने की योग्यता न रखता हो, उसे भी दिखाई पड़ रहा था। यह स्पष्ट था कि, इन व्याख्याता को भी, इससे पहले इस प्रकार का अचंभा नहीं हुआ था। दूसरे विद्यार्थी, आश्चर्य से, खुले हुए मुँह से, उनके मुँह की और ताकते रहे। वे नहीं समझ सके कि, ये सब किस संबंध में था। उन्हें इस बात का कोई अनुमान नहीं था कि, इसका आशय क्या था। शीघ्र ही, बटन को बंद करने के बाद, व्याख्याता वापस मेरी तरफ आये, और उन्होंने मुझसे दोनों तार वापस ले लिये। उन्होंने कहा, ''यहाँ कुछ गड़बड़ है, शायद तार जुड़े हुए नहीं हैं।'' उन्होंने दोनों तार अपने हाथ में ले लिये और हाथ में लिए हुए, अपनी मेज की और चले। एक तार उनके वॉये हाथ में था और दूसरा दॉये हाथ में। दोनों तारों को हाथ में लिए हुए, उन्होंने आगे बढ़कर, अपनी एक उंगली से, बटन को चालू किया। तब एक तीखी योयोयोयोयो के साथ में, एक प्रकार की भभक जैसी फूटी। बटन बंद करो, ये मुझे मारे डाल रहा है। इसी समय उनके शरीर में गाँठें जैसी लग गईं, मानो कि, उनकी सभी मांसपेशियॉ बाँध दी गई हों और लकवा खा गई हों। वे अभी भी चिंचिया रहे थे और चीख रहे थे और उनका प्रभामंडल डूबते हुए सूरज की तरह दिखाई दे रहा था। ''कैसे, बहुत मजेदार,'' मैंने सोचा, ''मैंने अभी तक, ऐसी कोई इतनी सुंदर चीज, जैसी इस आदमी के प्रभामंडल में थी, नहीं देखी है।''

व्याख्याता की लगातार निकलती हुई चीखें, दूसरे लोगों को जल्दी ही कमरे में ले आईं। एक आदमी ने इसका जायजा लिया, और मेज की और दोड़ा, और बिजली के बटन को बंद किया। बेचारा, गरीब व्याख्याता, कॉपता हुआ और पसीने से लथपथ हुआ, फर्श पर गिर गया। उसकी नजर में एक बेचारगी थी; उसके चेहरे पर पीला–हरा सा रंग छा गया था। अंत में वह मेज के किनारे को पकड़ता हुआ खड़ा हुआ। ''तुमने मेरे साथ ऐसा किया।'' मैंने जवाब दिया, ''मैं ? मैंने कुछ नहीं किया। आपने मुझे ये तार पकड़ने के लिए कहा था और मैंने पकड़े। तब आपने ये मुझसे वापस ले लिए और ऐसा दिखा, मानो कि, आप मरने वाले हैं''। उसने कहा, ''मैं इसे नहीं समझ सकता। मैं इसे नहीं समझ सकता।'' मैंने उत्तर दिया, ''आप क्या नहीं समझ सकते ? मैंने उन चीजों को पकड़ा, जिनके बारे में आप कह रहे थे ?'' उन्होंने मेरी और देखा : ''क्या वास्तव में, तुम्हें कुछ नहीं महसूस हुआ ? क्या तुम्हें

खुजली या ऐसी कोई और चीज महसूस हुई ?'' ''ठीक,'' मैंने कहा, ''मैंने एक हल्की सी सुखद गर्मी महसूस की और इसके अलावा कुछ नहीं। मैं क्यों महसूस करूँगा ?'' दूसरे व्याख्याता ने, जिसने बटन को, करेंट को बंद किया था, कहा ''क्या तुम इसे दुबारा फिर कोशिश करके दिखाओगे ?'' मैंने कहा, ''वास्तव में, मैं करूँगा, जितनी बार आप चाहेंगे, उतनी बार करूँगा।'' इसलिए उन्होंने तार मुझे दे दिए। उन्होंने कहा, ''अब मैं बटन चालू करने जा रहा हूँ। मुझे बताओ क्या हो रहा है?'' उन्होंने बटन दबाया और मैंने कहा, ''ये एक मजेदार हल्की सी गर्मी है, इस विषय में चिंता करने की कोई बात नहीं। ये ठीक वैसा ही है मानो कि, मैं अपने हाथों को आग के काफी समीप रखे हुए हूँ।'' उन्होंने कहा, ''इसे कसकर पकड़ो।'' और मैंने वैसा किया, मैंने वास्तव में, कसकर पकड़ा जब तक कि, मांसपेशियॉं, मेरे हाथ के पीछे की तरफ खिंच कर, खड़ी नहीं हो गईं। उन, और पहले वाले व्याख्याता ने, एक दूसरे की और देखा, और धारा का प्रवाह बंद कर दिया। तब उनमें से एक ने, दोनों तारों को देखा और उनके सिरों पर कपड़ा लगाया और उन्हें अपने हाथ में हलके से पकड़ा। ''बटन चालू करो,'' उसने दूसरे से कहा। इसलिए, दूसरे व्याख्याता ने बटन चालू किया और दूसरा व्याख्याता, जिसके हाथ में कपड़े लपेटे हुए तार थे, शीघ्र ही जमीन पर गिर गया। उसने कहा, ''ओह यह अभी भी चालू है।'' उसने कपड़े से ढके हुए दोनों तारों को, फिर से छूकर देखा। उसमें अभी भी, नीले रंग की दृश्यपूर्ण आभा थी और तभी, तार के सिरों से, पिघले हुए धातु का एक टुकड़ा, उछल कर गिरा। ''अब तुमने फ्यूज उड़ा दिए हैं,'' एक ने कहा, और वह कहीं दूसरी जगह, कुछ मरम्मत करने के लिए चला गया।

धारा दुबारा चालू हो जाने के बाद, उन्होंने विद्युत के संबंध में व्याख्यान देना शुरू किया। उन्होंने कहा कि वे मुझे, ये दिखाने के लिए कि विद्युत क्या कर सकती है, 250 वोल्ट का झटका देने की कोशिश कर रहे थे। मेरी खाल विशेष रूप से शुष्क है, और 250 वोल्ट की धारा ने मुझे बिलकुल भी प्रभावित नहीं किया। मैं अपने हाथों को, पूरी तरह से इस बात से अनभिज्ञ रहते हुए कि, वे चालू हैं या बंद, धारा के प्रमुख स्रोतों पर रख सकता हूँ। बेचारा गरीब व्याख्याता, इस प्रकार का बिलकुल नहीं था। वह विद्युत धाराओं के प्रति विशेष रूप से प्रभावित होने वाला था। व्याख्यान की अवधि के दोरान उन्होंने कहा, ''अमेरिका में यदि कोई व्यक्ति हत्या करता है, या वकील कहें कि, ये हत्या का अपराधी है, तो आदमी को विद्युत से मार दिया जाता है। उसे एक कुर्सी में फीते से बांध देते हैं और उसके शरीर से धारा प्रवाहित करते हैं, जिससे वह मर जाता है।'' मैंने सोचा कि ये कितना मजेदार है। मैंने आश्चर्य किया कि, ये मेरे साथ क्या करते, यद्यपि मुझे इसके लिए प्रयत्न करने की कोई इच्छा नहीं थी।

अध्याय तीन
चिकित्सीय अध्ययनकाल

एक नम, भूरा कुहासा, चुंगकिंग के ऊपरवाली पहाड़ी से घिरकर, घरों को लपेटते हुए, जिसने नदी, नीचेखड़े जहाजों के मस्तूलों, दुकानों में जलरही रोशनियों, को नारंगी–पीले रंग की धुंधली रोशनियों में बदल दिया, आवाजों को मंदाकर दिया, नीचे आया। शायद, इसने चुंगकिंग के एकभाग की दिखावट को ही सुधार दिया होता। सीढ़ियों पर से लुढ़कने की आवाज आई, और कोहरे में होकर, धुंधलके में से, एक बूढ़ा नजर आया और शीघ्र ही आँखों से ओझल हो गया। यहाँ भयानकरूप से शांति और केवल दबीहुईं, धीमी आवाजें थीं। एक मोटे कंबल की तरह से, कुहरा सब ओर, मारकरूप में था। हुआँग और मैंने दिनभर की सभी कक्षायें, पूरी समाप्त कर ली थीं और इससमय देर शाम हो रही थी। हमने महाविद्यालय के चीरफाड़कक्षों से निकलकर, बाहर जाने का और ताजी हवा में सांस लेने का, निश्चय किया। बदले में, हम इस कोहरे में घिर गए। मुझे भूख लगी थी, इसीप्रकार हुआंग को भी। नमी हमारी हड्डियों में घुस गई थी और उसने हमको एकदम जमा दिया था। ''चलें और कुछ खाना खाऐं, लोबसांग! मैं एक अच्छे स्थान को जानता हूँ,'' हुआँग ने कहा। ''ठीक है,'' मैंने जवाब दिया। ''मैं हमेशा मजेदार चीजों के लिए तैयार रहता हूँ। तुम मुझे क्या दिखाना चाहते हो ?'' ''ओह!, मैं तुम्हें यह दिखाना चाहता हूँ कि, बजाए इसके, जैसाकि तुम कहते हो, हम चुंगकिंग में अच्छीतरह रह सकते हैं।'' वह मुड़ा और उसने रास्ते की अगुवाई की, और गोया कि, वह मुड़ा और अंधेपन से लगातार तबतक चलता रहा, जबतक कि वह गली के किनारे नहीं पहुँच गया और उसने दुकान को नहीं पहचान लिया। हम प्रवेशद्वार में होकर, जो एक पहाड़ के बगल से, एक छोटी गुफा की तरह, दिख रहा था, थोड़ी दूर तक पहाड़ी के नीचे गए। बाहर की तुलना में, अंदर की हवा कुछ घनी दिख रही थी। लोग धूम्रपान कर रहे थे और दुर्गंधयुक्त धुंओं को, हवा में, बादल की तरह उड़ा रहे थे। यह लगभग पहली बार ही था कि, मैंने इतनी बड़ी संख्या में लोगों को धूम्रपान करते हुए देखा। लोगों को, सुप्रतिष्ठित ब्रांडों से, अपने मुँह को जलाते हुए और धुंए को अपनी नाक के नकुओं से निकालते हुए देखना, यह एक सदाशयता ही थी। एक आदमी ने, मेरे मोहितरूप से टकटकी लगाकर देखने को, आकर्षित किया। वह न केवल, अपने नकुओं से ही धुंआ निकाल रहा था, बल्कि अपने कानों से भी धुँआ निकाल रहा था। मैंने हुआँग को इस और संकेत किया। ''ओह, वह'' उसने कहा, तुम्हें मालुम है, वह एकदम बहरा है। उसके कान के पर्दे अंदर घुस गए हैं। यह उसके पास, एक अच्छी सामाजिक पूँजी है कि, उसके पास कान के पर्दे ही नहीं हैं, जोकि धुँए को रोक सकें। इसलिए वह इसे अपने नकुओं और कानों की तरफ भी भेजता है। वह एक विदेशी की तरफ जाता है और कहता है, ''आप मुझे एक सिगरेट दें और तब मैं आपको कोई ऐसी चीज दिखाऊँगा जिसे आप नहीं कर सकते।'' वह उसे भी धुँए में रखता है। यद्यपि ऐसा कुछ नहीं है। चलें खाना खायें। मैं खाने के लिए ऑर्डर दूँगा, ''हुऑग ने कहा।'' ''मैं यहाँ से अच्छी तरह परिचित हूँ और न्यूनतममूल्य पर अच्छी से अच्छी चीजों को प्राप्त कर लूँगा।'' ये मुझे अच्छा लगा। मैंने, पिछले कुछ दिनों में, कुछ अच्छी तरह खाया भी नहीं था। हर चीज इतनी अंजान थी और विशेषरूप से, खाना एकदम विदेशी जैसा था। हुआँग ने, वेटरों में से एक से कुछ कहा, जिसने एक छोटीकॉपी के ऊपर कुछ लिखा और तब हम बैठे, और बातचीत करते रहे। खाना, मेरे लिए समस्याओं में से एक है। मैं उस तरह का भोजन नहीं पा सका, जिसके लिए मैं अभ्यस्त था, और मुझे दूसरी चीजों के साथ, मांस और मछली खानी पड़ी। मेरे लिए, तिब्बत के एक लामा के रूप में, वास्तव में, ये क्रांति जैसा था, लेकिन ल्हासा में, पोटाला में, मुझे अपने वरिष्ठों द्वारा बताया गया था कि, मुझे इन विदेशी खानों के लिए अभ्यस्त होना पड़ेगा और मुझे इसप्रकार के खानों के लिए क्षमादान भी प्रदान किया गया था। तिब्बत में

हम पुजारी लोग, मांस नहीं खाते हैं, परंतु ये तिब्बत नहीं था, और मुझे (तिब्बत) निवास को जारी रखना था ताकि मैं अपने निर्दिष्टकार्य को पूरा कर सकूँ। जैसा खाना मैं चाहता था, उसे प्राप्त करना असंभव था। इसलिए मुझे ये सड़ागला, गंदा सा खाना, स्वयं से विद्रोह करते हुए, खाना पड़ा और ये प्रदर्शन करना पड़ा कि, मैं इसे पसंद करता हूँ। हमारा दोपहर का खाना आया। आधा कछुआ, जिसके साथ समुद्री घोंघे (slugs) सजे थे। उसके बाद मेंढ़कों की कढ़ी, जिसपर बंदगोभी की पत्तियाँ सजाई गई थीं। ये काफी अच्छे थे परंतु मुझे अपना त्सम्पा ही पसंद था। इसलिए चीजों को अच्छा कहते हुए, मैंने कढ़ी के मेंढ़कों को खाया, जिसके साथ में नूडल और चावल भी थे। हमने चाय पी। तिब्बत के बाहर रहने पर भी, एक चीज थी, जिसको तमाम तरह के प्रोत्साहन होने के बावजूद, मैंने कभी नहीं छुआ। मैंने कभी नशीलेपेयों का प्रयोग नहीं किया। कभीनहीं, कभीनही, कभीनहीं। हमारे विश्वास के अनुसार, इन नशीले पेय पदार्थों की तुलना में, दूसरा कुछ भी इससे खराब नहीं हो सकता; शराबी होने की तुलना में कुछ भी इससे खराब नहीं हो सकता। हम सोचते हैं कि, शराबी होना सबसे अधिक भयानक पाप है, जबकि शरीर, जोकि, आकाशीय यात्राओं का वाहन और आध्यात्मिक अंग है, पूरी तरह से शराब में तरबतर हो। ये शरीर से बाहर निकल जाता है और ये तमाम अस्तित्वों को दिखाने के लिए, चारे जैसा साबित होता है। केवल यही जीवन नहीं है। भौतिकशरीर तो एक अभिव्यक्ति (manifestation) मात्र है, जो सभी अभिव्यक्तियों में सबसे निचले स्तर की होती है, और कोई जितना ज्यादा पीता है, अस्तित्व के दूसरे धरातलों पर, वह उतना ही ज्यादा, अपने शरीर का नुकसान करता है। ये अच्छी तरह ज्ञात है कि, पियक्कड़ ''गुलाबी हाथी'' और कई चीजें जो उत्सुक हैं और जिनका भौतिकविश्व में कोई सानी नहीं है, देखते हैं। हमारा ये विश्वास है कि, ये कुछ दुष्टआत्माओं के प्राकट्य हैं। कुछ ऐसे अस्तित्व, जो भौतिकशरीर को कुछ नुकसान पहुँचाना चाहते हैं। ये अच्छी तरह ज्ञात है कि, जो पिये हुए हैं, वे ''अपने उचित भावनाओं के प्रभुत्व में नहीं हैं।'' इसलिए मैंने कभी भी नशीले पदार्थों को, किसी भी समय नहीं छुआ, यहाँ तक कि मक्के की शराब, या चावल की शराब भी।

ऐसा है, रंगरोगन की हुई (lacquered) बतखें, उनलोगों के लिए, जो मांस खाना पसंद करते हैं, बहुत अच्छी होती हैं। मैं वास्तव में, बाँस की कलियों को अधिक पसंद करता हूँ। ये पश्चिमीदेशों में प्राप्त नहीं हो सकतीं। इनका निकटतम विस्थापन, अजवाइन (celery), जो कुछ यूरोपीय देशों में पैदा होती है, का एक रूप है। अंग्रेजी अजवाइन इससे बिलकुल अलग होती है और वह उतनी उपयुक्त नहीं होती। चीनी खाने के बारे में कुछ कहते हुए, संभव है कि ये कहना कुछ और दिलचस्प हो सकता है कि, कटी हुई स्वे (suey) जैसा कुछ भी अच्छा नहीं होता; यह मात्र एक नाम है, जो चीनी खाने, किसी भी तरह के चीनी खाने के लिए, सामान्यरूप से लिया जाता है। यदि कोई, वास्तविकरूप में, अच्छा चीनी खाना, खाना चाहता है तो उसे प्रथम श्रेणी के, सम्पूर्ण चीनी रेस्त्राँ में जाना चाहिए, और उसे दमपुख्त कुकुरमुत्ते (ragout of mushroom) को और बाँस की कलियों (bamboo shoots) को खाना चाहिए। तब उसे मछली का सूप पीना चाहिए। उसके बाद रेगरोगन की हुई बतख। आपको चीनी रेस्त्राँ में कहीं भी, नक्काशीदार चाकू नहीं मिलेगा परंतु वेटर एक छोटी कुल्हाड़ी या वसूले को लाएगा, जिससे वह बतख को आपके चाहे हुए आकार में, चकतियों में काट देगा। जब ये आपके द्वारा अनुमोदित कर दिए जाते हैं, तब इन्हें ताजी प्याज के साथ, सेंडविच जो फीकी बेस्वाद डबलरोटी (bread) होती है, के अंदर लपेट दिया जाता है। कोई इन छोटी सेंडविचों में से ले सकता है और अपने मुँह का स्वाद खराब कर सकता है। खाना कमल की पत्तियों के साथ, और यदि आप चाहें तो कमल–ककड़ी के साथ समाप्त होता है। कुछ लोग कमल के बीज (कमलगट्टा) भी पसंद करते हैं, परंतु जो कुछ भी हो, आपको पर्याप्त मात्रा में चीनी चाय भी चाहिए। ये उस तरह का खाना था, जो हमको होटलों में, जो हुआँग के अच्छी तरह परिचित थे खाना पड़ा। कीमतें आश्चर्यजनकरूप से उचित थीं, और अंत में जब हम अपनी यात्रा को पूरा करने के लिए उठे, हम काफी अच्छी, प्रसन्न मुद्रा में थे।

अच्छी तरह भरे पेट, अच्छा खाना, और दुबारा से फिर कोहरे का सामना करना। इसलिए हमने क्यालिन (Kialing) जाने वाली सड़क के सहारे, गली में ऊपर की ओर चलना शुरू किया और जब हम कुछ दूर तक चल चुके थे, हम इस सड़क पर दांई ओर, अपने मंदिर की ओर जाने वाले रास्ते पर, मुड़े। जब हम वापस आए, तो ये प्रार्थना का समय था। हवा नहीं चल रही थी और खंभों के सहारे टिक्कियाँ (tablets) लटकी हुई थीं और खुशबुओं के बादल गतिहीन हो कर, अधर में लटके हुए थे। टिक्कियाँ लाल पदार्थ की होती हैं, जिनके ऊपर सुनहरा चीनी संकेत लगा रहता है। ये टिक्कियाँ पूर्वजों की थीं और उसीतरह उपयोग में लाई जाती थीं, जैसे कब्र के ऊपर लगाया गया पत्थर, जो पश्चिमी देशों में, मृतक को सम्मान देने के लिए लगाया जाता है। हमने हो ताई (Ho Tai) और कुआन यिन (Kuan Yin) को, जो अच्छे जीवन के देवता और करूणा की देवी हैं, को नमन किया और अपनी प्रार्थनासभा के लिए, धुंधियालेरूप से प्रकाशित मंदिर के अंदर की ओर, अपने रास्ते पर गए। उसके बाद हम अपने शाम के खाने को प्राप्त नहीं कर सके, बल्कि बदले में, कंबलों में लुढ़क गए और नींद में प्रविष्ट हो गए।

चीरफाड़ के लिए लाशों का कभी भंडारण नहीं किया जाता था। चुंगकिंग में किसी भी समय लाशों का उपलब्ध होना, एक अत्यंत साधारण सी बात थी। बाद में, जब युद्ध शुरू हुआ, हमें जितनी आवश्यकता थी, उससे अधिक लाशें मिलने लगी थीं, परंतु ये, जो चीरफाड़ के लिए प्राप्त की जातीं थीं, उन्हें हम एक तहखाने में, जिसे सावधानीपूर्वक ठंडा रखा जाता था, रखते थे। जैसे ही हमें सड़क पर से या किसी अस्पताल से कोई ताजी लाश मिलती, हम एक अत्यंत शक्तिशाली निसंक्रामक (disinfectant) उसकी कमर में सूचीभेद (inject) करके, उसके शरीर में लगा देते थे, जो उसको कुछ महीनों के लिए सुरक्षित रखता था। तलघर में जाना, उन लाशों को पटियों के ऊपर देखना और ये देखना कि, उनमें से अधिकांश पतली लाशें होती थीं, बहुत मजेदार था। हम बहुत तीव्र मतभेद रखते थे कि, सबसे ज्यादा पतली कौन लेगा। मोटीलाशें, चीरफाड़ के लिए, अत्यंत तकलीफदेह थीं, उनमें परिश्रम बहुत होता था और परिणाम बहुत कम आता था। किसी को लगातार, काटते–काटते, चीरफाड़ करते चले जाना था तब कहीं उसे कोई नस (nerve) या धमनी (artery) मिल पाती और एक–एक करके तमाम परतों को, उन मोटी मांसपेशियों में से उतारना पड़ता। लाशों की कोई तंगी नहीं थी। हमें लगातार, जल्दी–जल्दी, इतनी लाशें उपलब्ध हो जाती थीं कि, हम उन्हें, जिसे हम आचार कहते थे, की तरह से टंकी (tank) में रखते थे। वास्तव में, किसी लाश को तस्करी के द्वारा अस्पताल में लाना, उतना आसान नहीं था क्योंकि उनके कुछ रिश्तेदार, इन सारी चीजों का अत्यंत जोरदार विरोध करते थे। उन दिनों में नौजवान बच्चे, जो सड़कों पर मरते थे, बहुतायत में थे, अथवा वे वयस्क जिनके परिवार इतने अधिक गरीब थे कि, उनका अंतिमसंस्कार नहीं कर सकते थे, अंधेरे में लाशों को गलियों में छोड़ दिया करते थे। तब हम चिकित्सा के छात्र, भोर सुबह में, अच्छी से अच्छी और, वास्तव में, सबसे पतली, लाशों को छाँटकर लाने के लिए, जल्दी–जल्दी बाहर जाते। हम पूरी लाश को खुद ही अपने लिए लेते थे। बहुधा हम दो छात्र, एक लाशपर एक साथ काम करते थे, उनमें से एक सिर की और दूसरा पैरों की चीरफाड़ करता था। ये अधिक सहयोगपूर्ण था। यदि हम किसी परीक्षा के लिए अध्ययन कर रहे होते तो, बहुधा, हम अपना दोपहर का खाना, चीरफाड़ वाले कक्ष में ही खाते थे। एक विद्यार्थी को, एक लाश के पेट के ऊपर फैले हुए अपने खाने के साथ, जबकि उसकी किताब, जिसे वह पढ़ रहा था, किसी तख्ती के सहारे, उस लाश की जांघों पर पड़ी हो, देखना; ये कोई असामान्य बात नहीं थी। उससमय, हमें ऐसा कभी नहीं लगा कि, हमें इन लाशों के साथ रहने के कारण, कुछ भयंकर गंभीर संक्रमण (infection) भी हो सकते हैं। हमारे प्राचार्य डॉक्टर ली (Dr.Lee), नवीनतम अमरीकी विचारों को जानते थे; कुछ अर्थों में, वह अमरीकी विचारों की नकल करने के लिए, लगभग पागल

थे; परंतु कोई बात नहीं, वह एक भले आदमी थे। एक अत्यंत तीव्रबुद्धि वाले चीनी, जिनको मैं मिला, और उनके साथ में अध्ययन करना एक अत्यंत आनंददायक अनुभव था। मैंने काफी अध्ययन किया और काफी परीक्षायें पास कीं; लेकिन फिर भी मैं ये कहूँगा कि, मैंने तिब्बत में, लाश तोड़ने वालों के साथ में, जो सीखा, वह बहुत ही अच्छा था।

हमारा कॉलेज और उसके साथ जुड़ा हुआ अस्पताल, बंदरगाह की गोदी से काफी दूर था, सीढ़ियों वाली गली के पास। अच्छे मौसम में हमें नदी के पार, सीढ़ीदार खेतों के पार, अच्छा सुहावना दृश्य दिखता था, क्योंकि, ये अत्यन्त ही विशिष्टस्थिति में था। वास्तव में, ये एक बहुत विशिष्टस्थान की पहचान का चिन्ह (landmark) था। बंदरगाह में, गली के पास, व्यापारिकक्षेत्र में, एक पुरानी, इतनी पुरानी, जैसे लगता हो वह बिलकुल गिरने ही वाली है, एक दुकान थी। जिसका लकड़ी का काम घुन ने खा लिया था, और बोर्डों पर से पेन्ट की चकत्तियाँ (flkes) उखड़ रही थीं। दरवाजा जीर्णशीर्ण और सूखारोग से ग्रसित जैसा दिखता था। इसके ऊपर, भड़कीले रंग से चित्रित किया हुआ, चीते का एक कटआउट[4] (cutout) था। ये इस प्रकार व्यवस्थित किया गया था कि, इसका झुकाव प्रवेशद्वार के पीछे की तरफ आता था। जम्हाई लेते हुए जबड़े, और भयानकरूप से क्रूर दिखने वाले दांत और पंजे, जो किसी भी व्यक्ति के जेहन में खौफ पैदा करने के लिए काफी थे। ये चीता, साहस और संतानोत्पादक शक्ति, को प्रदर्शित करने के लिए बनाया गया था, जो पुंसत्व (virility) के लिए पुराना चीनी प्रदर्शन चिन्ह है। ये चुके हुए (rundown) लोगों के लिए, उनको प्रकाशित करने के लिए, और जो अपने अधिक आनंद प्राप्ति के लिए, अधिक पौरुषत्व प्राप्त करना चाहते थे, एक दुकान थी। औरतें भी यहाँ, कुछ दवायें, चीते का सत्व (extract), या जिन्सेंग[5] (ginseng) की जड़ का सत्व, जब वे बच्चे पैदा करना चाहती थीं और किन्हीं दूसरे कारणों से ऐसा नहीं कर सकती थीं, लेने के लिए आती थीं। चीते के सत्व अथवा जिन्सेंग की जड़ के सत्व में, कुछ ऐसे पदार्थ, ऐसे तत्व, जो पश्चिमीविज्ञान के लोगों ने, काफी शोध और व्यापार के बाद, अभी आविष्कृत किए हैं, होते थे, जिनसे कि, आदमी और औरतें, इन मुश्किल समयों में निजात पा सकते थे। चीनी अथवा तिब्बती, इसके बारे में आधुनिक शोधकार्यों के विषय में, इतना नहीं जानते हैं, इसलिए वे इसके बारे में कुछ भी प्रदर्शन नहीं करते हुए, इन दवाओं को तीन या चार हजार साल पहले से, उपयोग कर रहे हैं। ये तथ्य है कि, यदि पश्चिमीलोग सहयोगी प्रवृत्ति के हों तो पश्चिम, पूर्व से बहुत कुछ सीख सकता है। परंतु, इस पुरानी दुकान पर मुड़ने से पहले, जिसपर भयानक चीता नक्काशी से गढ़ा गया था तथा इसके ऊपर पेन्ट से लिखा गया था, जिसमें एक खिड़की थी, जिसमें अजीब–अजीब तरह के चूर्ण थे, ममीज (mummies) थीं और कुछ रंगीनद्रवों की बोतलें थीं। ये एक पुराने ढंग के डॉक्टर की दुकान थी, जहाँपर कामोत्तेजक पदार्थों के रूप में, चूर्ण रूप में, पीसे गए मेंढक, बारहसिंघा (antelope) के सींगों का चूर्ण प्राप्त किया जा सकता था तथा दूसरी तरह के अजीब–अजीब मिश्रणों को प्राप्त किया जा सकता था। इन स्थानों (quarters) में गरीब रोगी, जो अस्पताल में इलाज के लिए अथवा आधुनिक शल्यचिकित्सा के लिए नहीं जा सकता था, वह जाता था। इसके बदले में, ठीक उसी तरह से, जैसे उनके पिताजी आया करते थे और शायद, मरने के पहले उनके बाबा भी आते थे, वह इस गंदी सी दुकान पर आता था। वह अपनी शिकायतों को, प्रभारी डॉक्टर को बताता था, जो लकड़ी के एक भूरे कटघरे के पीछे, एक उल्लू की तरह बैठकर, मोटे–मोटे चश्मों में होकर उनको देखता था। वह इस प्रकरण में और इनके लक्षणों के ऊपर चर्चा करता और तब वह बूढ़ा

---

4 अनुवादक की टिप्पिणीः लकड़ी का एक फोटो जिसमें से अनावश्यक भाग काटकर निकाल दिये गये हों।

5 अनुवादक की टिप्पिणीः जिनसेंग (ginseng) उत्तरी अमरीका, पूर्वी एशिया (कोरिया, उत्तर–पूर्वी चीन, भूटान), पूर्वी साइबेरिया, जैसे विशेष ठण्डे स्थानों में पैदा होता है। शरीर के रोग प्रतिरोधीतंत्र को मजबूत बनाकर, जल्दी–जल्दी होने वाले सर्दी–जुकाम के इलाज के लिये उपयोग में लाया जाता है। शारीरिक तनाव को दूरकर, जीवनशक्ति (vitality) प्रदान करता है। सामान्यतः इसकी जड़ों, जो गाजर जैसे आकार की और भूरे रंग की होती हैं, का उपयोग किया जाता है।

वैद्य (physician) अपने सिर को हिलाता और अपनी उँगलियों के पोरुओं से छूता हुआ, वह आश्चर्यजनकरूप से आवश्यक दवाओं को देता। एक मान्यता ये थी कि, दवाओं को उनके विशेष तरीके से रंगा जाता था। ये इतिहास से भी पहले समय (prehistoric) का, अलिखित कानून जैसा था। पेट से संबंधित बीमारियों के लिए, पीले रंग की दवाइयाँ, हृदय रोगों अथवा रक्त से संबंधित बीमारियों के लिए लाल दवाइयाँ दी जाती थीं। पित्त (boil) या जिगर (liver) की शिकायतों के लिए अथवा अत्यधिकरूप से खराब गुस्से के लिए, हरे रंग की दवाइयाँ दी जाती थीं। मरीज, जो आँखों से परेशान हों, उनके लिए नीले रंग के लोशन दिए जाते थे। आदमी की शरीर का आंतरिक भाग, इस संबंध में समस्यामूलक था कि, उसे किस रंग की दवा दी जाए। यदि किसी आदमी को अंदरूनी दर्द है जो कि, आँतों की खराबी की वजह से है तो उसको भूरे रंग की दवाई दी जाती थी। गर्भवती माताओं को, जैसा कि बताया गया था, किसी कछुए का पीसा हुआ मांस तथा जबतक वह इसके प्रति सचेत हो सके, उससे पहले ही और उसके गर्भ पूरे होने के दिनों का सही से हिसाब न रखा गया हो, बच्चा लगभग बिना दर्द के आसानी से पैदा हो, दिया जाता था। एक हिदायत थी ''घर जाओ, टाँगों के बीच में अपना चोगा पहनो, ताकि तुम्हारा बच्चा, जमीन पर न टपक पड़े, और तब इस कछुए के मांस का चूर्ण खाओ।

पुराने अपंजीकृत (unregistered) चीनी डॉक्टर, अपना विज्ञापन कर सकते थे और इसे वे बहुत भव्यप्रदर्शन के रूप में करते थे। वह सामान्यतः, अपने घर के ऊपर पेन्ट किया हुआ बड़ा सा चिन्ह, ये दिखाने के लिए कि वह कितना अच्छा, चमत्कारी वैद्य है, एक बड़े चिन्ह का उपयोग करते थे। केवल इतना ही नहीं, बल्कि वह अपने प्रतीक्षाकक्ष में और शल्यकक्ष में उन तमाम पदकों (medals) को और वैजन्तियों (shields) को, जो उन्हें धनी और भयभीत मरीजों के इलाज के बाद, ये प्रमाणित करते हुए मिली हैं कि, किस चमत्कारी तरीके से उसने, उन रंगीन दवाओं के द्वारा, चूर्ण और घोलों के द्वारा, उस अज्ञात का अविज्ञात बीमारी से, इलाज किया था।

गरीब दंत–चिकित्सक (dentists) अर्थात् पुराने ढंग के दंत–चिकित्सक, इतने सौभाग्यशाली नहीं थे। अधिकांशतः, उनके पास कोई खास घर नहीं होता था, जिसमें वे अपने मरीजों को देख सकें, बल्कि वे सड़क पर बैठकर, मरीजों को देखते थे। शिकार (victim), एक संदूक पर, नीचे बैठता था और ऊपर बैठकर दॅत–चिकित्सक, तमाम तमाशबीन लोगों की भीड़ के बीच में, चुभाते और दबाते हुए उसका परीक्षण करता था और तब, एक चालाकीपूर्ण ढंग से, इशारेबाजी और प्रयास करते हुए, वह खराब दांत को उखाड़ लेता था। ''बढ़ो (advance)'' उनका सही शब्द था, क्योंकि, यदि बीमार भयभीत हो, या अधिक से अधिक शोर करने वाला हो, तो किसी दांत को उखाड़ना आसान नहीं था, और उससमय, वह दंत–चिकित्सक, सड़क चलते किसी भी आदमी को, या अपने पास में खड़े किसी भी व्यक्ति को, उस संघर्षशील शिकार को पकड़ने के लिए कहता। उससमय कोई निश्चेतक (anaesthetic) उपयोग में नहीं लाया जाता था। दंत–चिकित्सक, दूसरे डॉक्टरों की भाँति चिन्हों के साथ, अथवा पदकों के साथ, अथवा शील्ड के साथ विज्ञापन नहीं कर सकता था, परंतु बदले में, वह अपने गले में, उन निकाले हुए दांतों की माला, डालता था। जब भी उसने कोई दांत निकाला, वह दांत को उठा लेता, उसको सावधानी से साफ करता, उसमें होकर एक छेद बनाता, और तब वह, अपने गले की माला के मोती के रूप में, अपनी दक्षता के प्रमाण के प्रशंसापत्र के रूप में, पहनता कि, उसके पास ऐसे तमाम हैं।

ये हमें गंभीररूप से निराश करता था कि, मरीज, जिनके ऊपर हमने इतना अधिक समय खर्च किया है, उनकी देखभाल की है, और जिनको हमने नवीनतम इलाज दिया है, और जिनको हमने मंहगी दवाइयॉ दी हैं, वे नजर बचाकर, पुराने चीनी डॉक्टरों के घरों में, उनके द्वारा इलाज किए जाने के लिए रेंग जाते थे। हम दावा करते थे कि, हमने मरीज का इलाज किया है और वह झोलाछाप डॉक्टर दावा

करता था कि, उसने मरीज का इलाज किया है, परंतु मरीज कुछ नहीं बोलता था। वह केवल इस बात से प्रसन्न होता था कि, वह बीमारी से मुक्त हो चुका है।

हम अपने अध्ययन में, जैसे–जैसे आगे बढ़ते गए, अस्पताल के वार्डों में होकर टहलते थे और एक अर्हताप्राप्त (qualified) डॉक्टर के रूप में, लोगों को उनके घर में उनका इलाज करने के लिए, उनके ऑपरेशन में मदद करने के लिए, बाहर जाने को तैयार थे। कईबार हम चोटियों से, उन स्थानों के लिए, जिनमें पहुँच पाना बहुत मुश्किल होता, नीचे उतरते थे, शायद उन स्थानों के लिए, जहाँ कोई बेचारा, दुर्भाग्यशाली, ऊपर से गिरकर नीचे आ गया हो, जिसकी हड्डियाँ चटक गई हों, या मांस लगभग उस सीमा तक लुंजपुंज होकर कि, जिसे सुधारा नहीं जा सकता, नीचे गिर पड़ा हो। हम उन लोगों के यहॉ भी जाते थे, जो नदियों पर तैरते हुए मकानों में रहते थे। क्यालिंग नदी में लोग, जो नौकाघरों (houseboats) में, या बाँस की टटियों के ऊपर, जिनपर चटाई बिछाई हुई हों और उनपर छोटी–छोटी झोपड़ियॉ खड़ी कर ली गई हों, रहते हैं। ये नदी के किनारे पर हिलते, झूलते रहते थे, और जबतक हम विशेषरूप से सावधान न हों, विशेषकर रातों में, किसी के पैर का चूक जाना अथवा किसी ढीले बंधे हुए बांस के ऊपर खड़े हो जाना, जो उसको नदी में डुबा देता, बहुत आसान था। तब, छोटे बच्चों की उस अपरिहार्य भीड़ के द्वारा, जो ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण अवसरों पर हमेशा वहाँ इकट्ठे हो जाते थे, किसी का स्वागत हँसी के द्वारा नहीं किया जाता था। पुराने चीनी किसान, काफी हद तक दर्द को बर्दाश्त करने का प्रदर्शन करते थे। वे कभी शिकायत नहीं करते थे, और हमेशा उसके लिए, जो हमने उनके साथ किया है, कृतज्ञ रहते थे। हम बूढ़े लोगों की मदद करने के लिए, शायद, उनकी छोटी झोंपड़ियों की सफाई करने के लिए, और उनको खाना बनाने के लिए भी अपनी सामर्थ्य के बाहर भी चले जाते थे। परंतु नौजवान पीढ़ी के लिए, ऐसा करना कोई आनंददायक नहीं था। वे तनावग्रस्त रहते थे। इससे वे अजीब तरह के विचार प्रकट करते थे। मास्को से आए हुए आदमी, उनके चारों तरफ घूमते फिरते रहते थे, जो कि उनको, साम्यवाद के आगमन के लिए तैयार कर रहे थे। हम इसे जानते थे, परंतु पास खड़े होकर देखने और असहाय होकर देखने के सिवाय हम कुछ कर नहीं सकते थे।

परंतु इतनी अधिक अर्हता पाने के बाद भी, हमें विषय की अनेक शाखाओं व विविधताओं के साथ, अत्यधिक मात्रा में, एक दिन में लगभग चौदह घण्टे तक, पढ़ाई करनी थी। चुंबकत्व और वैसे ही विद्युत, उदाहरण देने के लिए दो ही काफी हैं। वह पहला व्याख्यान, जो मैंने चुंबकत्व के ऊपर सुना, मुझे अच्छी तरह याद है। तब यह विषय, मेरे लिए पूरी तरह से अनजान था। ये उतना ही अनजान था जितना कि विद्युत। इस विषय का शिक्षक, वास्तव में, उतना खुशगवार व्यक्ति भी नहीं था, परंतु यहाँ वह वाकया है, जो हुआ।

हुआँग ने, बोर्ड पर लगी हुई सूचनाओं को पढ़ने के लिए, ये देखने के लिए कि, अगली कक्षा के लिए कहॉ जाना है, भीड़ में होकर रास्ता बनाया। तब उसने पढ़ना शुरू किया, ''अरे लोबसांग,'' उसने कहा, उसने मुझे पुकारा, ''आज शाम को हमें चुंबकत्व के ऊपर व्याख्यान सुनने जाना है।'' हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि, हम एक ही कक्षा में थे, क्योंकि, हम लोगों के बीच में एक बहुत ही गंभीर मित्रता हो गई थी। हम एक चोकोर आकार की (square) जगह में, एक कक्षा में, उससे ठीक आगे जो विद्युत के लिए तय की गई थी, गए। हम अंदर घुसे। वहाँ भी, लगभग वैसे ही तमाम उपकरण रखे थे। हमें ऐसा लगा कि, हम अभी भी विद्युत के साथ ही व्यवहार कर रहे हैं। तारों के गुच्छे, धातुओं के टुकड़े, जो अनजानरूप से घोड़े की नाल के आकार में मुड़े हुए हैं। काली छड़ें, काँच की छड़ें, और विभिन्न प्रकार के काँच के संदूक, जिनमें पानी जैसा कुछ दिखता था, थोड़ी लकड़ियाँ और कुछ सीसा। हमने अपना स्थान ग्रहण किया। व्याख्याता, ऐंठ कर चलते हुए, भारी भरकम ढंग के साथ, कक्षा में अंदर अपनी मेज पर आए। वह एक मोटे व्यक्ति थे, शरीर से भारी और दिमाग से भी भारी। निश्चितरूप से, अपनी क्षमताओं के बारे में, उनकी कुछ अच्छी राय थी। जैसी राय, उनकी क्षमताओं के बारे में, उनके वे

सहयोगी, जो अमरीका में उनसे भी कहीं अधिक रह चुके थे, रखते थे, जहाँ से वे दूसरों के साथ, पढ़ाने वाले शिक्षकों के साथ, ये जानते हुए कि वे वास्तव में कितना कम जानते थे, वापस लौटे थे। ये अपने बारे में अच्छी तरह से निश्चिंत थे कि, वे प्रत्येक चीज को जानते हैं और उनका दिमाग अमोघ है, कभी गलती नहीं करता। उन्होंने अपना स्थान ग्रहण किया, और किसी वजह से, एक लकड़ी की हथोड़ी को उठा लिया और अपनी मेज के ऊपर जोर से ठोका, ''शांत'' वह चिल्लाये, यद्यपि वहाँ पहले से ही कोई आवाज नहीं थी। ''हम चुंबकत्व पढ़ने वाले हैं, तुममें से कुछ के लिए एक दिलचस्प विषय, चुंबकत्व के ऊपर'' उन्होंने कहा। उन्होंने एक छड़ को उठाया, जो घोड़े के नाल के आकार में मुड़ी हुई थी। ''ये, उन्होंने कहा, अपने चारों और एक क्षेत्र (field) रखती है'' मैंने तुरंत ही चरते हुए घोड़ों का ध्यान किया। उन्होंने कहा, मैं तुम्हें यह बताने वाला हूँ कि, लोहे के बुरादे के साथ चुंबक के क्षेत्र की रूपरेखा कैसे बनाई जाती है। चुंबकत्व, ''वे कहते गए'' जो कि, उस बल को, जो इसे उसकी रूपरेखा बनाने के लिए प्रेरित करता है, लोहे के हर कण को, स्वयं ही सक्रिय कर देगा। मैंने असावधानीपूर्वक हुआँग को कहा जो मेरे पीछे बैठा था, ''परंतु कोई बेवकूफ भी जब इसे देख सकता है, तो इसके साथ छेड़छाड़ क्यों ?'' व्याख्याता, अत्यधिक तेज गुस्से के साथ एकदम उछले। ''ओह!'' उन्होंने कहा, ''तिब्बत का महान लामा – जो चुंबकत्व और विद्युत के बारे में पहली चीज भी नहीं जानता, चुंबकीयक्षेत्र को देख सकता है, क्या वह देख सकता है'' उन्होंने उंगली से मेरी और तीखा इशारा किया। ''इसलिए महान लामा, तुम इस अद्भुत क्षेत्र को देख सकते हो। क्या तुम देख सकते हो ? अस्तित्व में एकमात्र आदमी, जो शायद इसे देख सकता है,'' उसने कटाक्ष करते हुए कहा। मैं खड़ा हुआ। ''हाँ आदरणीय शिक्षक महोदय, मैं इसे एकदम स्पष्टरूप से देख रहा हूँ।'' ''मैं इन तारों के आसपास प्रकाश भी देख रहा हूँ।'' उन्होंने अपने लकड़ी के हथोड़े को दुबारा उठाया और लगातार कईबार अपनी मेज पर मारा। ''तुम झूठ बोलते हो'' उन्होंने कहा, ''कोई इसे नहीं देख सकता। यदि तुम इतने होशियार हो तो आओ, और इसे मेरे सामने बोर्ड पर खींच कर बताओ। तब हम देखेंगे कि, तुम किस प्रकार की खिचड़ी पकाते हो।'' मैंने थके हुए अंदाज में आह भरी। चुंबक को उठाया और चॉक के एक टुकड़े के साथ, ब्लेकबोर्ड की ओर गया। मैंने चुंबक को बोर्ड के ऊपर रखा और उसके चारों ओर उस नीले से रंग की प्रकाश की शक्ल को उतार दिया, जो मैं चुंबक से बाहर निकलता हुआ देख सकता था। मैंने रेखायें बनाईं, और हल्की पट्टियाँ भी, जो क्षेत्र के अंदर थीं। ये मेरे लिए बहुत आसान काम था। मैं इस क्षमता के साथ पैदा हुआ था और मेरी ये क्षमतायें ऑपरेशन के द्वारा बढ़ा दी गई थीं। जब मैंने पूरा किया, वहाँ एकदम परम स्तब्धता थी और मैं पीछे घूमा। शिक्षक मुझे देख रहे थे और उनकी ऑखें काफी उभरी हुई थीं। ''क्या तुमने इसको इससे पहले पढ़ा है,'' उन्होंने कहा, ''ये कोई जालसाजी (trick) है!'' ''आदरणीय शिक्षक,'' मैंने जवाब दिया, ''आज के दिन तक, मैंने इसतरह के चुंबकों को नहीं देखा है।'' उन्होंने कहा,''ठीक है, मैं नहीं जानता कि, तुम इसे कैसे करते हो, लेकिन ये एकदम सही क्षेत्र है। मैं अभी भी कहता हूँ कि, ये कोई चालबाजी है। मैं अभी भी कहता हूँ कि, तिब्बत में, तुमने केवल चालबाजियाँ हीं सीखीं हैं। मैं इसे नहीं समझता।'' उन्होंने चुंबक को मुझसे ले लिया और उसे पतले कागज के टुकड़े से लपेट दिया और उस पर लोहे का बुरादा छिड़क दिया जिससे कि, ठीक वैसी ही शक्ल, जो मैं बोर्ड पर बना चुका था, उभरी। उन्होंने इस पर देखा। उन्होंने मेरी ड्राईंग के ऊपर देखा, और उन्होंने फिर वापस लोहे के बुरादे की रूपरेखा को देखा। मैं अभी भी तुम्हारा विश्वास नहीं करता, तिब्बत के आदमी,'' उन्होंने कहा। ''मैं अभी भी सोचता हूँ कि, ये कोई चालबाजी है।'' वह चिंतित होकर बैठ गए, और तब अपने सिर को हाथों में पकड़कर, विस्फोटक आवाज के साथ वह उछले और अपना हाथ फिर मेरे हाथ में दिया। ''तुम! '' उन्होंने कहा, तुमने कहा कि, तुम उस चुंबक के क्षेत्र को देख सकते हो। तुमने ये भी कहा कि, ''और इन तारों के पास की रोशनी को मैं देख सकता हूँ।'' ''ऐसा है'' मैंने जवाब दिया, ''मैं देख सकता हूँ। मैं इन्हें आसानी से देख सकता हूँ।'' ''ठीक है'' वह मेरे ऊपर जोर से चिल्लाए, ''अब हम तुम्हें गलत

सिद्ध कर सकते हैं, हम सिद्ध कर सकते हैं कि तुम जाली हो।'' वह कुर्सी पर पूरे घूमे और गुस्से में उन्होंने अपनी मेज के ऊपर जोर से हाथ मारे। जल्दी से वे कोने में गए और भुनभुनाते हुए एक डिब्बे को उठाया, जिसके ऊपर के सिरे से एक कुण्डली (coil) के तार निकले हुए थे। वह खड़े हुए और उन्होंने उसे मेरे सामने मेज पर रखा। ''अब, उन्होंने कहा, ''अब यहाँ एक बहुत ही दिलचस्प डिब्बा है, जिसे उच्चआवृत्ति (high frequency) वाला डिब्बा कहा जाता है। तुम मेरे लिए, इसके क्षेत्र की ड्राइंग बनाओ और मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास करूँगा। तुम जहाँ हो, वहीं इसके क्षेत्र का चित्र बनाओ।'' उन्होंने मेरी और देखा मानो कि, कह रहे हों, मैं देखता हूँ, तुम कैसे करते हो। मैंने कहा, ठीक है। ये काफी सरल है। इसे ब्लेकबोर्ड के पास रखें अन्यथा मैं अपनी स्मरणशक्ति से ही इसका चित्र बना सकूँगा।'' उन्होंने मेज के एक कोने को पकड़ा और मैंने दूसरे सिरे को, और हम उसे ब्लेकबोर्ड के ठीक पास ले गए। मैंने अपने हाथ में चॉक का टुकड़ा लिया और मैं बोर्ड की और घूम गया। ''ओह, मैंने कहा, ''ये सब पूरा हो गया''। मैंने आश्चर्य से देखा क्योंकि, उसमें केवल तार थे और कुछ नहीं, कोई क्षेत्र नहीं। मैं उनकी तरफ घूमा। उनका हाथ एक स्विच पर था। उन्होंने विद्युतधारा का प्रवाह बंद कर दिया था, परंतु एक गंभीर मूर्ति जैसी मुद्रा, उनके चेहरे पर थी। ''इसलिए!'' उन्होंने कहा, ''तुम वास्तव में इसे देख सकते हो! ठीक है, ठीक है, कितना अधिक ध्यान देने योग्य।'' उन्होंने फिर स्विच को चालू किया और कहा, ''मेरी तरफ से घूम जाओ और मुझे बताओ कि ये कब चालू है और कब बंद।'' मैंने घूमकर उनकी तरफ अपनी पीठ की और मैं उन्हें बताने के लिए सक्षम था, ''बंद, चालू, बंद।'' उन्होंने उसे बंद अवस्था में छोड़ा और उस रवैये में जैसे कि, एक आदमी जिसके विश्वास को भयंकररूप से कुचलने वाला झटका लगा हो, अपनी कुर्सी पर बैठ गए। तब सहसा उन्होंने कहा, ''कक्षा समाप्त।'' मेरी ओर मुड़ते हुए, ''तुम नहीं। मैं तुमसे अकेले मैं बात करना चाहता हूँ।'' दूसरे लोग विरोध में बड़बड़ाए। वे एक व्याख्यान सुनने के लिए आए थे और उन्हें कुछ दिलचस्प प्राप्त हुआ था। अब उन्हें क्यों कक्षा के बाहर निकाला जाना चाहिए ? उन्होंने, उनमें से एक दो को, कंधे से धक्का देते हुए बहुत तेजी के साथ कक्षा से भगा दिया। प्रवक्ता के शब्द नीची आवाज में थे। जब क्लास पूरी खाली हो गई, तो उन्होंने कहा; ''अब तुम इसके बारे में मुझे अधिक बताओ। ये किसप्रकार की हाथ की सफाई (trick) है ?'' मैंने कहा, ''ये कोई ट्रिक नहीं है। ये एक विशिष्टता है, जिसके साथ में मैं पैदा हुआ और जो एक विशिष्ट शल्यक्रिया (surgery) द्वारा, मेरे अंदर बढ़ाई गई है, मैं प्रभामंडल को देख सकता हूँ। मैं आपका प्रभामंडल भी देख सकता हूँ। इसको देखकर मैं जानता हूँ कि, आप विश्वास नहीं करना चाहते, आप ये विश्वास नहीं करना चाहते कि, किसी के पास ये क्षमता भी हो सकती है, जो आपके पास नहीं है। आप मुझे गलत सिद्ध करना चाहते हैं।'' नहीं, उन्होंने कहा, ''मैं तुम्हें गलत सिद्ध नहीं करना चाहता। मैं ये सिद्ध करना चाहता हूँ कि, मेरा खुद का प्रशिक्षण, मेरा खुद का ज्ञान सही है, और यदि तुम प्रभामंडल को देख सकते हो और निश्चितरूप से, जो मैंने सोचा है वह गलत है।'' बिलकुल नहीं, मैंने जवाब दिया। ''मैं ये कहता हूँ कि, आपका पूरा प्रशिक्षण प्रभामंडल के अस्तित्व को सिद्ध करने वाला है, क्योंकि बहुत थोड़ा, जो कुछ मैंने इस महाविद्यालय में विद्युत के बारे में अभी तक पढ़ा है, ये मुझे संकेत करता है कि, मनुष्य प्राणी को विद्युत के द्वारा ही शक्ति मिलती है।'' ''क्या बेवकूफी की बातें हैं,'' उन्होंने कहा। ''क्या एकदम उल्टी बात।'' और वे अपने पैरों पर उछल पड़े। ''मेरे साथ प्राचार्य के पास आओ। हम वहाँ इस बात को तय कर देंगे।''

डॉक्टर ली, महाविद्यालय के कागजपत्रों के साथ व्यस्त, अपनी मेज पर बैठे हुए थे। जैसे ही हम प्रविष्ट हुए, उन्होंने अपने चश्मे के काँचों में ऊपर की तरफ से झांकते हुए, हल्की सी नजर से हमारी तरफ देखा। तब उन्होंने चश्मे को हमें अधिक स्पष्टता से देखने के लिए उतार दिया। ''आदरणीय प्राचार्य,'' व्याख्याता ने कहा, ''ये आदमी, तिब्बत से आया हुआ यह आदमी, कहता है कि, ये प्रभामंडल को देख सकता है और यह भी कि, हम में से हरेक का प्रभामंडल होता है। ये मुझे बताने का

प्रयत्न कर रहा है कि, विद्युत एवं चुम्बकत्व के प्राध्यापक की तुलना में, ये मुझ से ज्यादा जानता है।'' डॉक्टर ली ने हमको बैठने के लिए हल्का सा इशारा किया और तब कहा, ''ठीक है, पूरे ठीक से संक्षेप में बताओ कि माजरा क्या है ? लोबसांग रम्पा प्रभामंडल को देख सकता है। ये मुझे मालुम है। तुम किसके बारे में शिकायत कर रहे हो, तुम्हारी शिकायत क्या है ?'' प्रवक्ता ने अपने कमी को जैसे पूरा किया। ''लेकिन आदरणीय प्राचार्य,'' उन्होंने व्यक्त किया, ''क्या आप भी ऐसी बेवकूफी की बातों में विश्वास करते हैं, ऐसी बकवास, ऐसी जालसाजी ?'' ''निश्चितरूप से मैं करता हूँ'' डॉक्टर ली ने कहा, ''क्योंकि ये तिब्बत के सर्वोच्च लोगों में से हैं और जिनको मैंने सुना है, उनमें भी सबसे ऊँचे हैं।'' पो चू (Po Chu) वास्तव में, पहाड़ी से, चोटी से, गिरते हुए लगे। डॉक्टर ली मेरी तरफ मुड़े और कहा, ''लोबसांग रम्पा, मैं तुम्हें पूछना चाहूँगा कि, तुम अपने खुद के शब्दों में प्रभामंडल के बारे में कुछ बताओ। ये मानकर बताओ कि, हम इस विषय में कुछ भी नहीं जानते। हमें बताओ ताकि, हम इसे समझ सकें और शायद, हम तुम्हारे इस विशिष्ट अनुभव से कुछ लाभ उठा सकें।'' ठीक है, ये एक बिलकुल अलग मामला था। मैं डॉक्टर ली को पसंद करता था, मुझे अच्छा लगा कि, उन्होंने जिस तरह से मामलों को अपने हाथ में लिया। ''डॉक्टर ली,'' मैंने कहा, ''जब मैं पैदा हुआ, ये क्षमता मेरे साथ थी कि, मैं लोगों को जैसे वे हैं, उनके वास्तविकरूप में देख सकता था। उनके चारों तरफ प्रभामंडल होता है जो उनके विचारों को झुठलाता है, स्वास्थ्य में कोई भी परिवर्तन, मानसिक या आध्यात्मिक अवस्थायें। ये प्रभामंडल, अंदर रहने वाले आत्मा के द्वारा, उत्पन्न किया गया प्रकाश होता है। मेरे जीवन के प्रारंभ के कुछ वर्षों में, मैं ऐसा सोचता था कि, जैसा मैं देखता हूँ, सभी वैसा ही देखते हैं। लेकिन, जल्द ही मुझे पता लग गया कि, ऐसा नहीं है। तब, जैसा आपको मालुम है, मैं एक लामामठ में प्रविष्ट हुआ। सात साल की उम्र में कुछ और विशिष्ट प्रशिक्षणों में होकर गुजरा। लामामठ में मेरे साथ एक विशिष्ट शल्यक्रिया की गई ताकि, मैं शुरू में जितना अच्छा देख सकता था, उससे और अधिक स्पष्टता के साथ देख सकूँ। लेकिन, इससे मुझे कुछ अतिरिक्त शक्तियाँ भी मिल गईं। इतिहास के बहुत पुराने दिनों में,'' मैं कहता गया, ''आदमी के पास तीसरा नेत्र होता था। अपनी खुद की गलतियों के कारण, आदमी को ये क्षमता खो देनी पड़ी। ल्हासा में, लामामठ में, मेरे प्रशिक्षण का यही एक उद्देश्य था।'' मैंने उनकी और देखा और देखा कि, वे इसको ठीक तरह समझ रहे थे। ''डॉक्टर ली,'' मैं कहता गया, ''मनुष्य शरीर पहले, एक नीले से रंग की रोशनी से घिरा रहता है, शायद एक इंच मोटा ये प्रकाश, शायद दो इंच मोटा। ये पूरे भौतिकशरीर को ढके रहता है। ये वह है जिसे हम ईथरिक (etheric) शरीर कहते हैं और ये सभी शरीरों में सबसे निम्नस्तर का होता है। ये सूक्ष्म और भौतिक शरीरों के बीच का जुड़ाव है। नीले रंग की तीव्रता, उस आदमी के स्वास्थ्य के साथ बदल सकती है। तब शरीर के बाद, उस विद्युत शरीर के बाद भी, एक प्रभामंडल होता है। ये विशेषरूप से इस बात पर निर्भर करते हुए कि, संबंधित व्यक्ति की आत्मोन्नति की क्या अवस्था है, उस व्यक्ति के आध्यात्मिकशिक्षण के स्तर के अनुसार, उसके विचारों के अनुसार, आकार में बदल सकता है। आपका स्वयं का प्रभामंडल, आपसे एक आदमी की लंबाई के बराबर दूरी पर है,'' मैंने प्राचार्य को कहा, ''ये एक विकसित आदमी का प्रभामंडल है। मनुष्य का प्रभामंडल, इसका आकार कुछ भी हो, ये रंगों की चक्करदार धारियों से बना होता है, जैसे कि शाम के वक्त में आकाश में बादल तैरते हैं, उसी भांति। ये उस व्यक्ति के विचारों के अनुसार बदलते हैं। ये शरीर के ऊपर के स्तर हैं, विशेषस्तर, जो अपने खुद के रंगों की क्षैतिज पट्टियाँ उत्पन्न करते हैं। कल, मैंने कहा, ''जब मैं पुस्तकालय में काम कर रहा था, मैंने देखा कि, कुछ पुस्तकों में चित्रों को, जो पश्चिमी धार्मिक आस्थाओं पर थीं, इनमें कुछ लोगों के बनाए गए चित्र थे। जिसमें उनके सिर के चारों और प्रभामंडल दिखाए गए थे। क्या इसका यह अर्थ निकलता है कि, पश्चिम के लोग, जिनको मैं विकास के मामले में, अपने से निम्नस्तर का समझता हूँ, प्रभामंडल को देख सकते थे जबकि, पूर्व के हम लोग नहीं देख सकते ? पश्चिमी देशों के लोगों के ये चित्र, मैंने जारी रखा, ''केवल अपने सिर के

चारों और ही प्रभामंडल रखते थे परंतु मैं केवल सिर के चारों ओर नहीं, बल्कि, पूरे शरीर के चारों ओर, हाथों के आसपास, उंगलियों और पैरों के आसपास देख सकता हूँ। ये ऐसी चीज है जिसे में हमेशा देखता रहा हूँ।'' प्राचार्य पो चू की ओर मुड़े। ''वहाँ, तुम देखो कुछ सूचना है, जो मुझे पहले मिली थी, मैं ये जानता था कि रम्पा के पास इसप्रकार की शक्तियाँ हैं। इन्होंने इन शक्तियों का उपयोग तिब्बत के नेता की ओर से किया था। यही कारण है कि, वह यहाँ हमारे साथ अध्ययन कर रहे हैं ताकि, ये आशा की जाती है कि, वह किसी विशेषयुक्ति को विकसित करने में सहयोग कर सकें जो कि, सम्पूर्ण मानव जाति के लिए, बीमारियों की पहचान करने और उनका इलाज करने के संबंध में, अपने आप में सम्पूर्ण, सबसे अधिक लाभदायक हो। तुम्हें आज यहाँ आने की आवश्यकता क्यों हुई ?'' उन्होंने पूछा। प्रवक्ता बहुत विचारमग्न दिखाई दिए। उन्होंने उत्तर दिया, ''हम चुम्बकत्व का प्रयोग शुरू करने ही जा रहे थे, और इससे पहले कि, मैं कुछ दिखा सकूँ, जैसे ही, मैंने क्षेत्रों के संबंध में बोला, इस आदमी ने कहा कि, वह चुम्बक के चारों और क्षेत्रों को देख सकता है, जो मुझे पूरी तरह से काल्पनिक प्रतीत हुआ। इसलिए मैंने इसे श्यामपट (black board) पर, चित्र बनाकर दिखाने के लिए बुलाया। मेरे आश्चर्य के साथ, ''वे कहते गए,'' ''ये क्षेत्र को ब्लेकबोर्ड पर चित्रित करने में सफल हुआ, और ये उस उच्च आवृत्ति के ट्रांसफॉर्मर की धारा के क्षेत्र को भी चित्रांकित करने में सफल हुआ परंतु जैसे ही उसके बटन को बंद किया गया, इसे कुछ नहीं दिखाई दिया। मुझे यकीन है कि ये कोई ट्रिक थी।'' उन्होंने विद्रोही ढंग से प्राचार्य की ओर देखा। ''नहीं,'' डॉक्टर ली ने कहा, ''वास्तव में ये कोई ट्रिक नहीं थी। ये ट्रिक बिलकुल नहीं थी क्योंकि, ये मुझे ज्ञात एक सत्य है। कुछ दिन पहले, मैं इनके शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप को मिला था, जो तिब्बत के चतुरतम व्यक्ति हैं, और उन्होंने मेरी मित्रता के कारण, अपने दिल की पूरी भलमनसाहत के साथ, कुछ प्रयोगों को किया और उन्होंने यह सिद्ध किया कि, वे वह सब कुछ कर सकते थे, जो लोबसांग रम्पा कर सकता है। हम सक्षम थे। ये हम लोगों का एक विशेष समूह है, जो इन मामलों में गंभीर शोधकार्य कर रहा है। परंतु दुर्भाग्यवश, पूर्वाग्रह, पीढ़ियों की गुलामी, और ईर्ष्या, हमलोगों को, इनके निष्कर्षों को प्रकाशित होने से रोकती रही। ये वह चीज है जिस पर मैं, तब से अबतक, खेद व्यक्त करता रहा हूँ।''

थोड़े समय की लिए वहॉ शांति रही। मैंने सोचा कि, प्राचार्य की ये कितनी भलमनसाहत है कि, उन्होंने मेरे अंदर विश्वास व्यक्त किया। प्रवक्ता कुछ निराश से दिखाई दे रहे थे, वास्तव में, मानो कि, उन्हें बिना बुलाए मेहमान जैसा अनापेक्षित धक्का लगा हो। उन्होंने कहा, ''यदि तुम्हारे पास ये शक्ति है तो तुम यहॉ चिकित्सा का अध्ययन क्यों कर रहे हो ?'' मैंने कहा, ''मैं चिकित्सा का अध्ययन करना चाहता हूँ और साथ ही साथ, मैं विज्ञान का भी अध्ययन करना चाहता हूँ ताकि, मैं उस यंत्र को बनाने में मदद कर सकूँ, जिसे मैंने तिब्बत के चांगतांग उच्चदेशीय क्षेत्रों में देखा था।'' प्राचार्य ने बीच में टोका, ''हाँ, मैं जानता हूँ कि, तुम उन लोगों में से एक थे, जो उस अभियान में गए थे। मैं उन यंत्रों के संबंध में और अधिक जानना चाहूँगा।'' ''कुछ समय पहले,'' मैंने कहा, ''दलाई लामा की प्रेरणा से हम लोगों का एक छोटा दल, पहाड़ियों की श्रृंखलाओं के बीच में छिपे हुए चांगतांग उच्चदेशों के लिए गया था। वहॉ हमने देखा कि, एक पूरा शहर, जो बहुत लम्बे समय पहले का है, उस समय से भी पहले का जहॉ तक का इतिहास लिखा गया है, एक गुजरी हुई नस्ल का शहर, एक शहर, जो एक हिमनद की बर्फ के अंदर आंशिक रूप से दब गया है, परंतु वह हिमनद, जहाँ–जहाँ पर वह थोड़ा गर्म था, बीच–बीच में पिघला। उस छिपी हुई घाटी में, उसमें बने हुए भवन और उन भवनों के यंत्र बिलकुल सही सलामत हालत में थे। एक ऐसा ही उपकरण एक डिब्बे के रूप में था, जिसको मैंने देखा और उसमें मानवीय प्रभामंडल को देखा और उस प्रभामंडल से, उसके रंगों से, उसकी सामान्य दिखावट से वे उस व्यक्ति की स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते थे। इसके अतिरिक्त, वे ये भी देख सकते थे कि, क्या कोई मनुष्य अपने शरीर में किसी बीमारी से ग्रस्त होने वाला है, क्योंकि ये

संभावनायें, शरीर में आने से पहले से ही प्रभामंडल में दिख जाती हैं। ठीक उसी ढंग से, जैसे कि, नजले के जीवाणु, शरीर में जुखाम आने से पहले, काफी पहले, प्रभामंडल में दिखाई दे जाते हैं। बीमारियों की शिकायतों की झलक पाने से पहले, उनका इलाज करना, व्यक्ति के लिए काफी आसान हो जाता है। तब शिकायतें, बीमारियाँ, इससे पहले कि, वह अपनी पकड़ जमा सकें, पूरी तरह उन्मूलित की जा सकती हैं।'' प्राचार्य ने अपना सिर हिलाया और कहा, ''बहुत अधिक सुरूचिपूर्ण है, कहते जाओ।'' मैं कहता गया : ''मैं उस पुराने उपकरण का, नया संस्करण अपने दिमाग में देख पा रहा हूँ। मैं उसी तरह की एक युक्ति को विकसित करने में मदद करना चाहूँगा ताकि, कोई आदमी, जिसे अतीन्द्रियज्ञान (clairvoyance) बिलकुल भी प्राप्त नहीं है, डॉक्टर या शल्यचिकित्सक, उस डिब्बे में होकर उस आदमी के प्रभामंडल को उनके रंगों के साथ देख सके। उसके पास तुलना करने के लिए एक चार्ट हो और उस चार्ट की सहायता से वह यह जानने में सक्षम हो कि, उस व्यक्ति के साथ वास्तव में गलत क्या है। वह बिना किसी परेशानी या बिना किसी गलती के यह पता लगाने में सक्षम होगा।'' ''लेकिन,'' प्रवक्ता ने कहा, ''तुम काफी अधिक विलंबित हो चुके हो। हमारे पास पहले से ही एक्स–किरणों (X-rays) का ईजाद हो चुका है!'' ''एक्स–किरणें,'' डॉक्टर ली ने कहा ''ओह, मेरे प्रिय मित्र, ये इस जैसे उद्देश्य के लिए बिलकुल निरर्थक हैं। वह केवल हड्डियों की भूरी छाया मात्र दिखाती हैं। लोबसांग रम्पा हड्डियों को नहीं दिखाना चाहते, ये वास्तव में, शरीर की प्राणशक्ति (vital force) को दिखाना चाहते हैं। मैं, इनका जो आशय है उसे कहीं अधिक सही तरीके से समझता हूँ। मैं निश्चयपूर्वक जानता हूँ कि, इनको इस संबंध में पूर्वाग्रहों (prejudices) और व्यावसायिक ईर्ष्याओं (professional jealousies) से लड़ाई लड़नी पड़ेगी।'' उन्होंने फिर से मेरी और देखा और कहा, ''परंतु कोई व्यक्ति, इसप्रकार की युक्ति के साथ, मानसिक शिकायतों के लिए, कैसे मदद कर सकता है ?'' ''आदरणीय प्राचार्य,'' मैंने कहा, ''यदि किसी व्यक्ति के विभक्त व्यक्तित्व (split personalities) हैं तो उसका प्रभामंडल वास्तव में, इसे स्पष्टरूप से दिखाता है, क्योंकि तब इसमें दोहरे प्रभामंडल होते हैं; और तब मैंने कहा कि, उचित उपकरण के साथ, उन दोनों प्रमामंडलों को धकेलकर एक ही बनाया जा सकता है– शायद उच्चआवृत्ति की विद्युत के द्वारा।''

अब मैं चूंकि, इसे पश्चिम में लिख रहा हूँ और मैं पा रहा हूँ कि, इन मामलों में अभिरूचि बढ़ती जा रही है। चिकित्सा से सम्बंधित, उच्चतम प्रतिभा वाले तमाम लोग, इस क्षेत्र में अपनी अभिरूचि बता चुके हैं, परंतु, वे कहते हैं कि मैं उनका नाम नहीं बताऊँ क्योंकि, इससे उनकी प्रतिष्ठा की हानि होगी। इसके आगे की कुछ अभियुक्तियाँ (remarks) दिलचस्प हो सकती हैं : क्या आपने कभी बिजली के तारों को हल्के से कुंहरे में देखा है ? यदि ऐसा है, खासतौर से पहाड़ी क्षेत्र में, तो आपने इनके चारों तरफ प्रभामंडल (corona) अवश्य देखा होगा। ये तारों को घेरती हुई, एक बहुत हल्की रोशनी होती है। यदि आपकी दृष्टि बहुत अच्छी है, तो आप रोशनी के लुपलुप (flicker) होने को देख सकते हो, बढ़ना–घटना, बढ़ना–घटना; क्योंकि तारों में होकर गुजरने वाली विद्युत की ध्रुवता (polarity) लगातार बदलती है। बहुत कुछ हद तक ऐसा ही मानवीय प्रभामंडल के साथ भी है। पुराने लोग, हमारे महान, महान, महान, पूर्वज, स्पष्टरूप से आभामंडल (aura) और तेजोमंडल (nimbus) को देख सकते थे, क्योंकि वे इन्हें महात्माओं के चित्रों के ऊपर पेन्ट से चित्रित करते थे। निश्चितरूप से, ये किसी की कल्पना मात्र ही नहीं कही जा सकती, क्योंकि, ये पेन्ट केवल सिर पर क्यों किया गया; और सिर पर किया गया ये पेन्ट भी, वास्तव में, प्रकाशमान होता है ? आधुनिक विज्ञान ने पहले से ही मस्तिष्क की तरंगों (brain waves) को नाप लिया है; मानवशरीर के विभवांतर को नाप लिया है। वास्तव में, एक अत्यंत प्रसिद्ध अस्पताल है, जहाँ एक्सरे के संबंध में, काफी बरसों पहले से शोधकार्य चल रहा था। उन शोधकार्यों से पता लगा कि, वे मानव आभामंडल का ही चित्र ले रहे थे, परंतु वे इसे समझ नहीं पाए।

वे जो पा रहे थे, न उन्होंने इसकी परवाह की क्योंकि, वे अस्थियों का ही फोटोग्राफ लेने की कोशिश कर रहे थे, शरीर के बाहर, रंगों का नहीं और उन्होंने आभामंडल के फोटोग्राफ को निरंतर, मात्र विक्षोभ (disturbance) समझा। दुखांतरूप से, आभामंडल से जुड़ा हुआ, ये फोटोग्राफी का सारा मामला, ताक में रख दिया गया, जबकि, वे एक्सरे के साथ प्रगति करते गए, जो मेरे अत्यंत विनम्र विचारों में, एक गलत ढंग है। मैं पूरीतरह से विश्वस्त हूँ कि, एक थोड़े से शोधकार्य के साथ, चिकित्सक और शल्य चिकित्सक, इस आश्चर्यजनक उपकरण को पा सकते हैं, जोकि, बीमार का इलाज करने में सहायक होगा। मैं देख पा रहा हूँ कि, जैसा मैं बहुत बरसों पहले भी किया करता था, एक विशिष्ट उपकरण, जिसे कोई भी डॉक्टर अपनी जेब में रखकर, अपने साथ ले जा सकता है और जिसे मरीज के सामने रखकर उसकी जाँच कर सकता है, जैसे कि धुंधियाले कॉच (smoked glass) के सामने हम सूर्य को देखते हैं। इस युक्ति के साथ वह मरीज के आभामंडल और रंगों की धारियों को, और उसकी रूपरेखा में आई अनियमितताओं को देख सकता है। वह एकदम ठीक से देख सकता है कि, मरीज के साथ क्या गलत है। ये अत्यधिक आवश्यक चीज नहीं है, क्योंकि केवल जान लेना ही सहायक नहीं होगा कि, किसी व्यक्ति के साथ गलत क्या है, बल्कि ये जानना भी आवश्यक है कि, उसका इलाज कैसे किया जाए, और उसे वह उस युक्ति के द्वारा जो मेरे दिमाग में है, इतनी आसानी से कर सकता है; विशेषरूप से उन मामलों में, जहाँ पर वेदना, मानसिक परेशानी के कारण हो रही हो।

अध्याय चार
उड़ानें

अभी उमसभरी शाम थी। मुश्किल से, कहीं थोड़ी हवा बहती हुई। जिस चोटी के ऊपर हम चढ़ रहे थे, उसके ऊपर के बादल, हमसे लगभग दो सौ फुट ऊँचाई पर थे। ये क्रुद्ध, घने बादल, जब वे काल्पनिक आकृतियों में, काल्पनिक पहाड़ी श्रृंखलाओं के बीच, ऊपर चढ़ रहे थे, हमें तिब्बत की याद दिला रहे थे। हुआँग और मैं, चीरफाड़ वाले कमरों में, एक मुश्किल दिन में थे। मुश्किल, क्योंकि, लाशें बहुत लंबे समय के लिए रखी गई थीं और उनकी दुर्गन्ध बहुत भयानक थी। सड़ने वाली लाशों की दुर्गन्ध, जीवाणुनाशक दवाओं की दुर्गन्ध, और दूसरी गन्धों ने हमको वास्तव में, बुरी तरह थका दिया (exhausted) था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि, मैं तिब्बत से, जहाँ हवा शुद्ध थी और जहाँ के मनुष्यों के विचार भी शुद्ध थे, यहाँ आया ही क्यों। कुछ समय बाद, हम चीरफाड़ वाले कक्षों से बाहर निकले, खुद को धोया और चोटी के ऊपर चले गए। हमने सोचा, टहलना और प्रकृति को देखना, अब ये अच्छा था। हमने साथ–साथ दूसरी चीजों को भी देखा क्योंकि, चोटी के किनारे पर ताकते हुए, हम नीचे की नदी में गुजरने वाले व्यस्त आवागमन को भी देख सकते थे। हम कुलियों को, जहाज पर सामान लादते हुए, बांस के लम्बे–लम्बे खम्बों के दोनों तरफ, एक टोकरे में रखी, भारी–भारी गाँठों को, जो लगभग नब्बे पाउंड के वजन तक की भारी हो सकती थीं, अपने कंधों पर लादे हुए, देख सकते थे। प्रत्येक टोकरा पाँच पोंड का था। इस प्रकार कुली एक सौ पिचानवे पोंड के बोझ को, पूरे दिन ढोते रहे थे। उनके लिए जीवन बहुत कठिन था। पूरी तरह थके हुए (exhausted) वे, मृत्युपर्यन्त काम करते थे और भरी जवानी में ही मर जाते थे। कामों के लिए, आदमी उन्हें घोड़ों की तरह जोतते थे, उनसे जानवरों से ज्यादा खराब व्यवहार करते थे और, जब वे स्वयं भुगत जाते थे, और कईबार वे मर जाते थे। उसके बाद भी, इससमय, हमारे चीरफाड़ वाले कक्षों में, और नए पैदा होने वाले डॉक्टरों और शल्य चिकित्सकों के लिए, जो उनसे दक्षता प्राप्त करेंगे, जो कि जीवित शरीरों को इलाज करने में सहायक होगी, हमें सामान (material) उपलब्ध कराते हुए, अपनी भलाई (goodness) के कामों को जारी रखते थे।

हम चोटी के किनारे से वापस मुड़े और पेड़ों और फूलों से सुगंधित होकर बहने वाली धीमी–धीमी हवा का सामना किया। सामने पेड़ों का एक छोटा झुरमुट सा था और उनतक पहुँचने के लिए, हमने अपने कदमों की चाल थोड़ी बदल दी। हम, कुछ अस्पष्ट अवर्णनीय चीज से, आने वाली किसी आकस्मिकता के अनजान खतरे को भाँपते हुए, कुछ बैचेनी और तनाव भरे अंदाज में, चोटी से कुछ पहले, रुक गए। इस बात के ऊपर निर्णय करने में समर्थ न होते हुए कि, ये क्या था, हमने प्रश्नसूचक दृष्टि से, एक दूसरे की और देखा। हुआँग ने संदिग्धरूप से कहा, ''ये बिजली की कड़क नहीं हो सकती।'' ''वास्तव में नहीं,'' मैंने उत्तर दिया। ''ये कुछ बेहद अनजान चीज है, कुछ ऐसी चीज, जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते।'' हम अनिश्चय की स्थिति में, एक तरफ को कान रखकर सुनते हुए, खड़े हुए। जहाँ से आवाज आ रही थी, उसे खोजने के लिये हमने अपने चारों तरफ देखा, जमीन में देखा, पेड़ों पर देखा, और बादलों में देखा। एक लगातार ''बम, बम, बम,'' जो लगातार तेज दर तेज होती जा रही थी, कटु से कटुतर होती जा रही थी। हमने जब ऊपर की ओर देखा, तो बादलों के बीच एक छेद में से एक काली पंखों वाली आकृति, ऊपर मंडरा रही थी। जबतक कि हम इसकी उपस्थिति के बारे में कुछ सावधान हो पाते, ये बादलों में, लगभग उल्टी दिशा में चली गई। ''मेरे भगवान!'' मैं चिल्लाया ''आकाशीय देवताओं में से एक, हमको लेने के लिए आया है।'' वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं था, जो हम कर सकते थे। हम आश्चर्य करते हुए, कि आगे क्या होता है, खड़े रहे। बिजली कड़कने के जैसा शोर था, इसप्रकार का शोर जिसे हम दोनों में से किसी ने भी इससे पहले नहीं सुना था। तब

जैसे ही हमने विचार किया, बादलों के पेट में लात मारती हुई, एक बड़ी जैसी आकृति प्रकट हुई, मानो कि वह इस थोड़ी सी कड़क से भी, अधीर हो रही हो। ये आकाश में चमकी और परेशान हुई हवा के थपेड़े जैसी एक तीखी चीख, चोटी के किनारे के ऊपर, सीधे हमारे सिरों के ऊपर घुमड़ी। शोर समाप्त हुआ और उसके बाद शांति थी। हम पूर्णरूप से हक्के–बक्के रह गए, पूर्णरूप से जमे हुए, एक दूसरे की तरफ देखते हुए। तब एक समान आवेग के साथ हम मुड़े, और चोटी के किनारे की ओर, ये देखने के लिए कि आकाश से आने वाली उस चीज के साथ क्या हुआ था, दौड़े। वह चीज एकदम अजनबी और काफी शोर भरी थी। हमने चोटी के किनारे पर, अपने आपको तेजी से गुस्से में झोंक दिया और सावधानीपूर्वक, उस चमकती हुई नदी के ऊपर, नजरें गढ़ाने लगे। इसके ऊपर जमीन पर फैली हुई अजनबी बालुई पट्टी थी। पंखों वाले कीड़े, इससमय शांत थे। जब हमने देखा, इसमें से ज्वाला के थूक के साथ ही, खाँसी जैसी हुई और काले धुँए का गुबार ऊपर को उठा। हम इससे उछल पड़े और पीले पड़ गए, परंतु केवल ये ही सबसे ज्यादा अजनबी नहीं थी। हमारे शंकालु, भय एवं आश्चर्य के अनुसार, बगल से द्वार खुला और दो आदमी बाहर आए। उससमय मैंने सोचा कि, ये सबसे अधिक आश्चर्यजनक चीज थी, जो मैंने पहले कभी देखी थी। हम यहाँ समय नष्ट कर रहे थे। हम अपने पैरों पर उछले और हमने नीचे उतरने वाले रास्ते पर दौड़ लगा दी। हम सीढ़ियों पर होकर नीचे गलियों में, आवागमन को अनदेखा करते हुए, सौहाद्रता को अनदेखा करते हुए, तेजी से चले। पानी के किनारे पर जाने के लिये पागलपन में दौड़े।

हम बैचेनी और गुस्से के साथ, नदी के किनारे, नीचे की ओर, अपने पैरों को पटकते हुए चले। लेने के लिए कोई नाव नहीं थी, और न कोई नाविक; कोई नहीं। वे सभी पानी में, उस जगह, जहाँ हम जाना चाहते थे, चले गए थे। लेकिन हाँ! एक बड़े पत्थर के पीछे वहाँ, एक नाव थी। उसे उठाने के विचार से और पार जाने के विचार से, हम उसकी ओर मुड़े, लेकिन जैसे ही हम पहुँचे, हमने देखा, कि एक बूढ़ा आदमी, नीचे के रास्ते पर, तेजी से अपने जाल को लिए हुए चला आ रहा है। ''मेरे, बाप,'' हुआँग चिल्लाया, ''हमें पार ले चलो।'' ''ठीक है,'' उस बूढ़े आदमी ने कहा, ''मैं नहीं जाना चाहता। तुम्हें वहाँ क्या काम है ?'' उसने अपने जालों को नाव में फैंका और पुराने टूटे हुए पाइप के साथ, जो उसके मुँह में था, नाव के किनारों से झुक गया। उसने अपनी टाँगों को क्रास किया और ऐसा दिखाया, मानो कि वह पूरी रात, केवल बातें करते हुए, वहीं रुका रहता। हम अधीरता के उन्माद में थे। ''आओ बूढ़े बाबा, तुम क्या लोगे ?'' बूढ़े ने एक भारी भरकम रकम माँगी, इतनी बड़ी रकम, जिससे कि ये पूरी पुरानी सड़ी नाव खरीदी जा सकती थी, हमने सोचा। परंतु हम उत्तेजना की हड़बड़ी में थे, हम उस समय, लगभग कुछ भी दे सकते थे। हमें नदी के दूसरे पार जाना था। हुआँग ने मोलभाव किया। मैंने कहा, ''ओह, हमको समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। वह जितना माँगता है, उसका आधा दे दो।'' बूढ़ा आदमी, इस पर झपटा। ये उस राशि से, जिसकी उसे उम्मीद थी, लगभग दस गुना था। वह इस पर उछला और हम उसकी नाव पर दौड़े। ''स्थिर हो जाओ, नौजवान भद्रपुरुषों, स्थिर हो जाओ। तुम मेरी नाव को तोड़ दोगे,'' उसने कहा। ''ओह आओ, बाबा,'' हुआँग ने कहा, ''जल्दी करो। दिन डूबता जा रहा है।'' गठिया से टूटता हुआ बूढ़ा आदमी, आराम–आराम से नाव पर चढ़ा। अस्थिर, व्यग्र। धीरे से उसने एक खम्बे को उठा लिया और हमको नदी की धार की ओर ले चला। नाव को तेजी से ले जाने के विचार में हम व्यग्र थे, परंतु उस बूढ़े आदमी को किसी प्रकार की जल्दी नहीं थी। धारा के बीच में भंवरों ने हमें पकड़ लिया और उछाल दिया। तब हमारी नाव फिर से दांए किनारे पर आ गई, और हम दूर किनारे की ओर चले। जैसे–जैसे हम समीप पहुँच रहे थे, समय बचाने के लिए, मैंने पैसा गिनना शुरू किया और उसे बूढ़े आदमी की ओर बढ़ा दिया। उसने निश्चय ही, इसको जल्दी से ले लिया। तब नाव के किनारा छूने का इंतजार किए बिना, हम घुटनों घुटनों तक पानी में कूद गए और किनारे की ओर दौड़े।

हमारे सामने एक अद्‌भुत मशीन थी। वह अमूल्य मशीन, जो आसमान से उतरी थी और जिसके साथ में कुछ आदमी लाए गए थे। हमने भय के साथ उसको और अपनी हद दर्जे की सीमा तक आश्चर्य के साथ, उसकी इस पहुँच को देखा। दूसरे लोग भी वहाँ थे, परंतु वे कुछ सम्मानजनक दूरी पर खड़े हुए थे। हम आगे बढ़े, इसके पास गए। इसके रबर चढ़े पहियों को दबाते हुए, हम इसके नीचे गए। हम सीधे आगे बढ़े और देखा कि वहाँ उसमें कोई पहिया नहीं था, लेकिन धातु का, स्प्रिंग जैसा एक दंड था, जिसके किनारे पर जूते जैसी एक आकृति लगी हुई थी। ''आह,'' मैंने कहा, ''ये एक स्किड (skid) जैसा है, जो इसे जमीन पर धीमा करता है। वह हमें अपनी पतंगों पर लगी चीजों जैसा दिखा।'' लगभग आधे डरे हुए, हमने मशीन के बगल की ओर इशारा किया। हमने ताज्जुब के साथ देखा कि, ये एक कपड़े जैसा है, जिस पर कुछ हदतक चित्रकारी की गई है और जिसे लकड़ी के ढॉचे के ऊपर तानकर लगाया गया है। अब ये वास्तव में, कुछ था! लगभग आधीदूरी तक, पंखों और पूंछ के बीच में, हमने एक पैनल को छुआ, और जब ये खुला तो धक्के के कारण, हम लगभग बेहोश हो गए और एक आदमी धीमे से जमीन पर उतरा। ''ठीक है,'' उसने कहा, तुम निश्चितरूप से बहुत अधिक उत्सुक दिखाई देते हो।'' ''हम वास्तव में (उत्सुक) हैं,'' मैंने जवाब दिया। ''तिब्बत में, मैं इसतरह की चीजों में उड़ा हूँ, ऐसी शांत चीजें।'' उसने मेरी ओर देखा और उसकी आँखे फैल गई। ''तिब्बत में! तुम क्या कहते हो ?'' उसने पूछा। ''हॉ मैंने किया,'' मैंने उत्तर दिया। हुआँग बोला, ''मेरा मित्र एक जीवंत बुद्ध है, एक लामा, जो यहाँ चुंगकिंग में पढ़ रहा है। वह आदमियों को उड़ाने वाली पतंगों में उड़ने का अभ्यस्त है'' उसने कहा। उस हवा की मशीन में बैठा हुआ आदमी अभिरूचिपूर्ण दिखाई दिया। ''यह अत्यंत सुंदर है,'' उसने कहा। ''क्या तुम अंदर आओगे, जहाँ हम बैठकर बात कर सकें ?'' वह मुड़ा और उसने मुझे अंदर का रास्ता दिखाया। ठीक है, मैंने सोचा, मैंने इसप्रकार के बहुत अनुभव लिए हैं। यदि ये आदमी इस मशीन में, स्वयं के ऊपर, विश्वास कर सकता है – तो मैं भी कर सकता हूँ। इसलिए मैं और मेरी देखा–देखी हुआँग भी साथ ही, अंदर प्रविष्ट हो गया। मैंने तिब्बत के उच्चदेशों में, इससे बड़ी चीजें देखी थीं, जिससे आकाश के देवता, इस विश्व के बाहर उड़ गए थे। लेकिन वह भिन्न प्रकार की थी, इतनी भयानक नहीं, क्योंकि उन्होंने जो मशीन उपयोग की थी, वह शांत थी, परंतु यह मशीन बहुत शोर कर रही थी और हवा को फाड़ रही थी, हिला रही थी।

उसके अंदर बैठने के स्थान थे, काफी आरामदायक स्थान भी। हम बैठे। तब उस आदमी ने, लगातार, मेरे साथ तिब्बत के ऊपर प्रश्न पूछना शुरू किया, जो मेरे हिसाब से पूरी तरह बेवकूफी भरे थे। तिब्बत, एक ऐसा इतना साधारण स्थान था और यहाँ वह तिब्बत के बारे में बात करते हुए एक अत्यंत भव्यमशीन के अंदर था। अंत में काफी समय बाद, और काफी कष्टों को झेलने के बाद, बदले में हम उससे कुछ जानकारी पा सके। मशीन, जिसको वे हवाईजहाज कहते थे, को आकाश में उड़ाने के लिए इसमें इंजन लगे हुए थे। ये इंजन थे, जो आवाज कर रहे थे, शोर कर रहे थे। उसने कहा। ये विशेष इंजन अमरीकियों द्वारा बनाया गया था और इसे शंघाई की एक चीनीफर्म ने खरीदा था, जो शंघाई से चुंगकिंग तक हवाईयात्रा प्रारंभ करने के लिए योजना तैयार कर रही थी। ये तीनों आदमी, जिनको हमने देखा था, थे विमानचालक (pilot), दिशासूचक (navigator), और इंजीनियर (engneer), जो अपनी अंतिम जाँच उड़ान में थे। ''पायलट, जिससे हम बात कर रहे थे, ने कहा, ''हमें मशहूर आदमियों में रुचि जाग्रत करनी है और उन्हें उड़ान का एक अवसर देना है, ताकि, वे हमारे उद्य ोग का अनुमोदन कर सकें।'' हमने ये सोचते हुए सिर हिलाया कि, ये कितना सुंदर था, और कैसे हमने कामना प्रगट की कि, हम भी मशहूर आदमी थे और हममें भी उड़ने का एक मौका मिलना चाहिए।

''वह चलता गया,'' तुम तिब्बत से हो, क्या तुम वास्तव में एक मशहूर आदमी हो, क्या तुम हमारे साथ इस मशीन में उड़ान को अजमाना चाहोगे ?'' मैंने कहा ''मेरे भगवान! मैं शीघ्र ही जितना तुम चाहोगे, उड़ान अजमाऊँगा।'' उसने हुआँग की तरफ इशारा किया और उसे, ये कहते हुए कि वह नहीं

जा सकता, बाहर उतर जाने के लिए कहा। ''ओह नहीं'', मैंने कहा, ''ओह नहीं। यदि एक जाएगा तो दूसरा भी जाएगा।'' इसलिए हुआँग को खड़ा रहने की इजाजत दे दी गई (जिसके लिए बाद में उसने मुझे धन्यवाद भी नहीं दिया)। दो आदमी, जो पहले से ही बाहर उतरे हुए थे, जहाज की ओर आए और हाथों के काफी संकेत दिए गए। उन्होंने सामने की ओर कुछ किया, तब वहाँ एक तेज ध्वनि हुई ''बम'' और उन्होंने कुछ और किया। अचानक ही एक धक्के जैसी आवाज हुई और भयानक कंपन हुए। हम, यह सोचते हुए कि, शायद कुछ दुर्घटना हो गई, और हम टुकड़ों में टूटने वाले हैं, चिपके रहे। ''लटके रहो,'' उस आदमी ने कहा। हम अधिक कठोरता के साथ पकड़े नहीं रह सके। इसलिए ये उसके लिए मोटा अंदाज ही था। ''हम उड़ान भरने ही वाले हैं,'' उसने कहा। ये एक साधारण घटिया गुलगपाड़ा था, हिचकोला, उभार, धमाके की आवाज। पहली बार से ज्यादा खराब, जब मैं आदमी उड़ाने वाली पतंगों में गया था। ये और ज्यादा खराब थी क्योंकि, झटकों के अतिरिक्त, इसमें शोर था, घिनौना शोर। एक अंतिम धक्का लगा, जिसने मेरे सिर को, लगभग मेरे कंधों के बीच में धकेल दिया और तब एक सनसनी, मानोकि कोई व्यक्ति मुझे नीचे और पीछे की ओर, तेजी से दबा रहा है। मैंने अपना सिर उठाने के लिए व्यवस्थित किया और खिड़की के बाहर की ओर देखा। हम हवा में थे, हम ऊँचाई पर चढ़ रहे थे। हमने नदी को एक चॉदी के धागे की तरह से लम्बा होते हुए देखा, दो नदियाँ जो मिलकर एक हो गईं। हमने कबाड़, कचरा और बेकार वस्तुऐं, छोटे खिलौने जैसे लकड़ी के छोटे–छोटे टुकड़े, तैरते हुए देखीं। तब हमने चुंगकिंग को, उसकी गलियों को, उन गलियों की सीढ़ियों को, जिनको बहुत कठिनाई के साथ बनाया गया था, देखा। इस ऊँचाई से वे समतल दिख रही थीं, परंतु चोटी के बगल से, सीढ़ीदार खेत अभी भी जोखिम भरे, भयावह, तीखे ढलान के साथ चिपके हुए थे। हमने किसानों को, अपने ख्याल से, कड़ी मेहनत करते हुए देखा। अचानक एकदम सफेदी आई, पूर्ण और बेखबर, बेसुध, इंजनों की आवाजें भी दबती गईं। हम बादलों के बीच थे। कुछ मिनट बादलों में से निकलती रोशनी, जो खिड़कियों से निकल रही थी। रोशनी और अधिक तीव्र होती जा रही थी। हम आकाश के हल्के–नीले प्रकाश में होकर बाहर निकले, जो पूरीतरह से सूर्य की सुनहरी रोशनी में डूबा हुआ था। जब हमने नीचे देखा ऐसा लगा कि, ये बर्फ के जमे हुए सागर के ऊपर फैला हुआ, चमकता हुआ, सफेद, चौंधियाने वाला, आँख को घायल करने वाला प्रकाश, अपनी आभा की तीव्रता के कारण है। हम चढ़ते गए, और अधिक चढ़ते हुए मैं इसके लिए सावधान था कि, उस मशीन का प्रभारी आदमी मुझसे बात कर रहा था। ''ये उससे ऊँचा है, जितना तुम इससे पहले कभी रहे होगे।'' ''बिलकुल नहीं,'' मैंने उत्तर दिया, ''क्योंकि जब मैंने आदमियों को उड़ाने वाली पतंगों में यात्रा शुरू की थी तब मैं सत्रह हजार फुट की ऊँचाई पर पहले से ही था।'' इससे उस आदमी को आश्चर्य हुआ। वह बगल की खिड़की में से बाहर को झाँकने को मुड़ा, पंख डूब गए, और हम बगल से, तीखी चीख के साथ में, गोता खा गए। हुआँग पीला–हरा चेहरे वाला हो गया। एक भयानक रंग और एक अनकहनी बात उसके साथ हुई। वह अपनी सीट से झटका खाकर बाहर आ गया, और जहाज की तली में औंधा होकर गिर पड़ा। ये उसके लिए कोई सुखद दृश्य नहीं था, और उसके लिए सुखद कुछ भी नहीं होने वाला था। मैं–मैं इसके लिए हवा की बीमारियों के प्रति, हमेशा ही निरापद (immune), अप्रभावित था और मुझे सिवाय इस तिकड़म में आनंद आने के, कुछ भी महसूस नहीं हुआ। हुआँग नहीं, वह डरा हुआ, इसके द्व ारा परेशान था। जबतक हम जमीन पर उतरे, वह केवल एक कॉपता हुआ मांस का लोंदा था, जो कभी–कभार दुःखभरी आह निकाल रहा था। हुआँग एक अच्छा वायुयात्री नहीं था। हम जमीन पर उतर सकें, उससे पहले ही उस आदमी ने इंजनों को बंद कर दिया था। और तब हम, धीमे–धीमे नीचे आते हुए, और अधिक नीचे आते हुए, आकाश में तैरने लगे। वहाँ केवल हमारी खिड़कियों में से आने वाली हवा की ''साँय–साँय'' जैसी आवाज गूँज रही थी और हमें ये बताने के लिए कि, ये आदमी के द्वारा बनाई गई मशीन थी, जहाज के बगल से लगे हुए कपड़ों पर ढोल बजाने जैसी जमीन की आवाज आ

रही थी। जब हम जमीन के ठीक पास आते जा रहे थे, अचानक ही, उस आदमी ने दुबारा अपने इंजनों को चालू किया और एकबार फिर हम कानों को फोड़ने वाली सैकड़ों अश्वशक्ति के इंजनों की आवाजों के साथ बहरे हो गए। एक गोलचक्कर, और हम जमीन पर थे। एक तेज झटका, और पूंछ की स्किड की तरफ से एक चीख, और हम चीखकर रुक गए। फिर से इंजनों को बंद कर दिया गया और पायलट और मैं बाहर जाने के लिए उठे। बेचारा हुआँग, उठने के लिए तैयार नहीं था। हमने उसे बाहर निकाला और फिर से स्वस्थ होने के लिए, बालू पर लिटा दिया।

मैं काफी भयभीत था कि, मैं काफी कठोर दिल का था; हुआँग ओंधे–मुँह पीली रेत पर पड़ा हुआ था, जो मीलों लंबी नदी के बीच में, जमीन के रूप में उभरी हुई थी। वह, खास प्रकार की आवाजें निकालते हुए और हलचल करते हुए, औंधा पड़ा हुआ था, और मैं प्रसन्न था कि, वह खड़ा होने के योग्य नहीं है। प्रसन्न, क्योंकि इसने मुझे रुकने के लिए, और उस आदमी से बात करने के लिए, जो मशीन को उड़ा रहा था, एक अच्छा बहाना दे दिया। हमने बातचीत की। दुर्भाग्यवश, वह तिब्बत के बारे में बात करना चाहता था। उड़ानों के लिए देश कैसा है ? क्या हवाईजहाज वहाँ उतर सकते हैं ? क्या पैराशूट (parachutte) के द्वारा उतारी गई सेनायें वहाँ उतर सकती हैं ? ठीक है, मुझे इस बात का लेशमात्र भी ख्याल नहीं था कि, पैराशूट क्या होते हैं परंतु सुरक्षित होकर एक तरफ बने रहने के लिए मैंने कहा ''नहीं।'' हम एक व्यवस्था की तरफ आए। मैंने उसे तिब्बत के बारे में बताया और उसने मुझे जहाजों के बारे में। तब उसने कहा ''मैं अत्यधिक सम्मानित अनुभव करूँगा, यदि तुम मेरे कुछ दोस्तों के साथ मिलो, जो कि, तिब्बत के रहस्यों में अत्यधिक दिलचस्पी रखते हैं।'' ठीक है, आपके ये मित्र मुझे क्यों मिलना चाहते हैं ? मैं महाविद्यालय में एक विद्यार्थी मात्र था और मैं हवा में एक विद्यार्थी बना रहना चाहता था, और ये व्यक्ति सामाजिक चीजों के बारे में सोच रहा था। मैं तिब्बत में, उन बहुत थोड़े लोगों में से था, जो हवा में उड़े थे। मैं आदमियों को उड़ाने वाली पतंग में, पहाड़ों के ऊपर, बहुत ऊँचाई तक उड़ा था। यद्यपि ये सनसनी, एक शांत आरामदायक और बहुत आश्चर्यपूर्ण रही थी, फिर भी पतंग तो जमीन से, रस्से से बंधी हुई थी। ये केवल हवा में ऊपर जा सकती थी। जमीन पर उड़ नहीं सकती थी, पायलट भले ही इसे उड़ाना चाहे। ये चारागाह में बंधे हुए एक याक की तरह से, रस्सी से बंधी हुई थी। मैं इस चीखने वाली मशीन, जिसमें मैं उड़ा था, के संबंध में और अधिक जानना चाहता था और मशीन में उड़ने के सपने देख रहा था, जो कि उड़कर, विश्व के किसी भी भाग में, कहीं भी जा सकती थी, जैसा पायलट ने मुझे बताया, और वह केवल तिब्बत के संबंध में बात के लिए चिंतित हो रहा था।

थोड़े समय के लिए ये एक गतिरोध जैसा लगा। हम एक दूसरे के आमने सामने, जमीन पर, बालू पर बैठे। बेचारा हुआँग, कराहता हुआ, और हमसे किसी प्रकार की कोई सहानुभूति प्राप्त न करना हुआ, अपनी एक बगल पर लेटा रहा। अंत में, हम एक व्यवस्था पर सहमत हुए। मैं उसके दोस्तों के साथ मिलने, तिब्बत के बारे में कुछ बातें बताने, और तिब्बत के कुछ रहस्यों के संबंध में बात करने के लिये राजी हुआ। मैंने इस संबंध में कुछ व्याख्यान देने के लिए अपनी सहमति दी। इसके बदले में, उसने मुझे दुबारा से हवाईजहाज में ले जाने के लिए और ये समझाने के लिए कि, चीजें कैसे काम करती हैं, कहा। हमने चारों तरफ घूमकर पहले मशीन को देखा, उसने विभिन्न वस्तुओं की ओर इंगित किया। पंख, पतवार, उठाने वाले – सभी प्रकार की चीजें। फिर हम अंदर गए और बगल–बगल में, ठीक सामने बैठे। हममें से हरेक के सामने, अब छड़ी जैसी एक कोई चीज थी, जिसमें आधा पहिया (wheel) जुड़ा हुआ था। इस पहिये को, दांई अथवा बांई और, घुमाया जा सकता था, जबकि पूरी छड़ी को आगे धकेला जा सकता था या सामने को खींचा जा सकता था। उसने मुझे समझाया कि, किस प्रकार से, वापस धकेलना, जहाज को ऊपर उठाता है और आगे खींचना, उसे नीचे उतारता है और उसे घुमाना, मशीन को भी घुमा देता है। उसने मुझे विभिन्न मूंठों (knobs) और बटनों (switches) के संबंध में भी बताया। तब इंजन शुरू किए गए और नीचे, काँच के डायलों के पीछे, मैंने हिलते–डुलते

संकेतकों (pointers) को देखा जो, जैसे–जैसे इंजन की गति बदल रही थी, अपनी स्थिति को बदल रहे थे। हमने एक लंबा समय व्यतीत किया। उसने अपनी भूमिका अच्छी तरह से अदा की, उसने हर चीज को अच्छी तरह समझाया। तब इंजन बंद करने के बाद, हम बाहर निकले और उसने निरीक्षण ढक्कनों को खोला, उठाया और विभिन्न विचारों को, विस्तार के साथ बताया। कार्बोरेटर, स्पार्कप्लग और दूसरी तमाम चीजें।

उस शाम, मैं अपने वायदे के अनुसार, उसके मित्रों से मिला। वे वास्तव में, चीनी थे। ये सभी सेना से जुड़े हुए थे। उनमें से एक ने मुझसे कहा कि, वह चिआंग काई–शेख[6] (Chiang Kai-Shek) को अच्छीतरह जानता है और उसने कहा कि जनरल लिसिमो (Lissimo) अपने तकनीकी सेना की धुरी को ऊँचा उठाने का प्रयास कर रहे हैं। चीनी फौज में सेनाओं के सामान्यस्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास कर रहे हैं। उसने कहा कि, कुछ ही दिनों के समय में एक या दो छोटे हवाईजहाज चुंगकिंग पहुँच जायेंगे। उसने मुझे बताया, कि ये वे हवाईजहाज थे, जो अमरीकियों से खरीदे गए थे। उसके बाद, मेरे दिमाग में, उड़ान के संबंध में हल्का सा ख्याल आया। मैं इन जहाजों में से एक में कैसे जा सकूँगा ? मैं हवा में ऊपर कैसे उड़ सकूँगा ? मैं उड़ान करना कैसे सीख पाऊँगा ?

हुआँग और मैं, कुछ दिन बाद, अस्पताल से विदा होने वाले थे, जब हमारे सिरों के ऊपर फैले हुए, भारी–भारी बादलों में से, दो एकल सीट वाले लड़ाकू विमान, जो वायदे के अनुसार शंघाई से आए थे, दो चांदी की आकृति में, दौड़ते हुए आये। उन्होंने चुंगकिंग के ऊपर एक चक्कर लगाया और फिर एक चक्कर लगाया। तब जैसे ही, उन्होंने अपने स्थान को, कि कहाँ उतरना है, ठीक से चिन्हित कर लिया, वे नीचे की ओर गोता लगा गए। हमने कोई समय व्यर्थ नहीं गँवाया। हम सीढ़ियों वाली गली से तेजी से नीचे उतरे, और बालू के पार चले। वहॉ दो चीनी पायलट, अपनी मशीनों के बगल से, उन गंदे बादलों में से होकर, अपनी उड़ान के धूल के चिन्हों को साफ करते हुए, पॉलिश करते हुए, खड़े हुए थे। हुआँग और मैं, उनके पास पहुँचे और उन दोनों में से, उनके नायक कप्तान पो कू (captain Po ku) के साथ, अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। हुआँग ने मुझे ये अच्छीतरह स्पष्ट कर दिया था कि, वह किसी भी प्रकार से हवा में ऊपर जाने के लिए प्रेरित नहीं होगा। उसने सोचा था कि : वह इस पहली और आखिरी उड़ान के बाद मर जाएगा।

कप्तान पो कू ने कहा, ''अरे हाँ, मैंने तुम्हारे बारे में सुन रखा है। मैं, वास्तव में, यह आश्चर्य कर रहा था कि, तुम्हारे सम्पर्क में कैसे आऊँ।'' और इसमें मेरी बहुत चापलूसी हुई। मैंने कुछ समय तक बात की : उसने मुझे इस मशीन और यात्री मशीनों के, जो हमने पहले देखी थी, बीच अंतर बताए। यह, जैसा उसने कहा, एक एकल सवारी वाली, और एक इंजन वाली, एक मशीन थी, लेकिन दूसरी, तीन इंजनों के प्रकार की थी। हमें वहॉ रुकने के लिए थोड़ा समय मिला क्योंकि, हमें अपने चक्रों (rounds) को पूरा करना था, अतः हम अत्यंत अनिच्छापूर्वक यहाँ से विदा हुए। अगले दिन, हमारी आधे दिन की छुट्टी थी और हम, जितना जल्दी संभव हो सका, उन दोनों जहाजों के पास, फिर वहॉ पहुँच गए। मैंने कप्तान से पूछा, जैसा कि उसने वायदा किया था, वह मुझे कब उड़ना सिखाने वाला है। उसने कहा, ''ओह, मैं शायद ऐसा नहीं कर सकूँगा। मैं केवल, चांगकाई शेख के आदेशों के कारण ही यहाँ हूँ। अभी हम इन जहाजों को दिखा रहे हैं।'' मैंने उस दिन, उसका साथ जारी रखा और जब मैंने देखा, एक दिन बाद उसने कहा, ''यदि तुम चाहो तो मशीन में बैठ सकते हो। ये तुम्हें अच्छा, संतुष्टिजनक लगेगा। बैठो, और नियंत्रणों को सीखने की कोशिश करो। वे कैसे दिखते हैं और कैसे काम करते हैं।'' वह पंख के मूल पर खड़ा हुआ, और मुझे नियंत्रणों को दिखाया और ये भी दिखाया

6 अनुवादक की टिप्पिणीः चिआंग काई–शेख (1887 - 1975) एक चीनी सैन्य अधिकारी और राजनेता थे जिन्होंने, 1928 से 1975 तक चीन के नेता के रूप में कार्य किया।

कि, वे कैसे काम करते हैं। ये वैसे ही थे जैसे कि, तीन इंजनों वाली मशीन में थे, परंतु वास्तव में, उनसे अधिक आसान थे। उन्होंने पुलिस के एक गार्ड को मशीनों के पास छोड़ा। –उस मंदिर की ओर जो हमारा घर था और उस शाम हमने उसे और उसके साथी को लिया, यद्यपि मैंने उसके ऊपर काफी कठोर परिश्रम किया था परंतु फिर भी मैं इस संबंध में, ये बयान नहीं दे सका कि वे मुझे उड़ना कब सिखाने वाले हैं। उसने कहा, ''ओह, तुम्हें काफी लंबे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस प्रशिक्षण में महीनों लगते हैं। सीधा–सीधा उड़ान भरना, जैसा तुम समझते हो असंभव है। तुम्हें प्रारंभिक पाठशाला में जाना पड़ेगा, तुम्हें एक दोहरी सीट वाली मशीन में उड़ना पड़ेगा और इससे पहले कि, तुम हमारे जैसे हवाई जहाज में उड़ने की अनुमति पा सको, तुम्हें अनेक घण्टों तक अभ्यास करना पड़ेगा।''

अगले दिन, शाम के समाप्त होने पर, हम फिर नीचे गए। हुऑग और मैंने नदी पार की और बालू पर पहुँच गए। दोनों आदमी अपनी मशीनों के साथ, एकदम अकेले थे। दोनों मशीनें, एक दूसरे से कई गज दूरी पर थीं। पो कू के मित्र के साथ कुछ गड़बड़ी दिख रही थी क्योंकि, उसके इंजन का ढक्कन उड़ गया था, और उसके साथ–साथ, सभी औजार भी फैले पड़े थे। पो कू, खुद अपनी मशीन का इंजन खोले खड़ा था। वह इसे सुधार रहा था। वह रुका, थोड़ा ठीक–ठाक किया, और फिर दुबारा शुरू किया। वह, ''फुट फुट फुट'' की आवाज के साथ शुरू हुआ परन्तु एकसार नहीं चल सका। वह हमारी तरफ देख रहा था। जैसे ही उसने पंखों की ओर देखा, वह खड़ा हुआ और इंजन से व्यर्थ ही समय गंवाते हुए खिलवाड़ करने लगा था। तब जैसे ही मोटर ने, एक अच्छी तरह से प्रसन्न बिल्ली की तरह से एक साथ गुर्राहट की, वह एक चिकने तेलीय कपड़े के ऊपर अपने हाथों को पोंछता हुआ सीधा खड़ा हो गया। वह प्रसन्न दिखाई दिया। वह हमसे बातचीत करने के लिए, हमारी ओर घूमा जबकि, उसका साथी आवश्यक कार्य से, दूसरे जहाज से, उसकी तरफ आया। पो कू अपनी मोटर को बंद करने के लिए गया, परंतु दूसरे पायलट ने अपने हाथ, व्यग्रतापूर्वक, पागलपन में हिला दिए, इससे वह पंखों पर से, शीघ्रतापूर्वक जमीन पर गिर पड़ा ।

मैंने हुआँग की ओर देखा। मैंने कहा, ''आ हा हा,'' उसने कहा, ''क्या मैं अंदर बैठ सकता हूँ, ये भी नहीं'' ठीक है, मैं अंदर बैठूँगा, लोबसांग'' हुआँग ने कहा, ''तुम कुछ भी नहीं सोच रहे हो, बहुत हड़बड़ी में हो ?'' ''बिलकुल नहीं,'' मैंने जवाब दिया। ''मैं इस चीज को उड़ा सकता हूँ, मैं इसके बारे में सब कुछ जानता हूँ।'' ''लेकिन यह आदमी,'' हुआँग ने कहा, ''तुम अपने आपको मार डालोगे।'' ''बकवास,'' मैंने कहा। ''क्या मैं पतंगों में नहीं उड़ चुका हूँ ?'' बेचारा हुआँग, थोड़ा सा, चोटी पर से गिरे हुए की तरह से दिखा, क्योंकि उसका, हवावाजी का निजी ज्ञान बहुत अच्छा नहीं था।

मैंने दूसरे जहाज की ओर देखा, परंतु दोनों पायलट, मुझे परेशान करने, मुझे व्यस्त रखने के लिहाज से, बहुत दूर थे। वे अपने इंजनों के हिस्सों से कुछ करते हुए, बालू पर घुटनों के बल बैठे थे। निश्चितरूप से, वे कुछ गहरे डूबे हुए थे, मगन थे। वहाँ, आसपडौस में, हुआँग के सिवाय, कोई भी दूसरा नहीं था। इसलिए मैं जहाज की ओर बढ़ चला। जैसा मैंने दूसरों को करते हुए देखा था, मैंने दोनों पहियों के सामने, रोक की पच्चड़ों को जल्दी से हटा दिया और जहाज में कूद पड़ा, जिससे जहाज लुढ़कने लगा। नियंत्रण मुझे, पहले ही कईबार समझा दिए गए थे, और मैं जानता था कि, थ्रोटल[7] (throttle) कौन सा है, और ये भी जानता था कि, मुझे क्या करना है। मैंने उसे कसकर आगे की ओर, रोक से ठीक सामने की ओर, इतनी कठोरता के साथ धकेला कि, मेरी वायीं कलाई में लगभग मोच सी आ गई। इंजन ने पूरी शक्ति के साथ चीखना शुरू किया, दहाड़ना शुरू किया मानो कि, वह इसे फाड़कर स्वयं मुक्त हो जायेगा। तब हम बालू की उस पीली पट्टी के ऊपर, तेजी से ऊपर उठने लगे। मैंने, जहाँ पानी और बालू मिलते हैं, वहाँ एक चमक देखी। एक क्षण के लिए मुझे थोड़ा डर लगा,

7 अनुवादक की टिप्पिणीः इंजन की गति को बढ़ाने घटाने के लिये ईधन को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था थ्रोटल वाल्व तथा संबंधित लीवर को थ्रोटल लीवर कहते हैं।

तब मुझे याद आया : पीछे खींचा। मैंने नियंत्रक को पीछे की ओर खींचा। जहाज की नाक ऊपर उठी, पहियों ने, तरंगों को ठीक से चूमा और पानी की बौछारें कीं। हम ऊपर उठे। ऐसा लगा कि, मेरे नीचे कोई अत्यंत शक्तिशाली हाथ, मुझे दबा रहा है और मुझे ऊपर उठा रहा है। इंजन घुर्राया और मैंने सोचा, ''इसे इतना तेज नहीं चलना चाहिए, इसका थ्रोटल पीछे किया जाए, अन्यथा ये टुकड़ों में टूट कर, नीचे गिर जाएगा।'' इसलिए मैंने थ्रोटल के नियंत्रण को एक चौथाई रास्ते तक पीछे खींचा, जिससे इंजन की आवाज कम हुई। मैंने जहाज के बगल की ओर देखा और एक धक्का लगा। नीचे, बहुत दूर, चुंगकिंग की सफेद चोटियाँ थीं। मैं ऊपर था, वास्तव में ऊपर, इतना ऊपर कि, मैं मुश्किल से ही ये समझ सकता था कि, मैं कहाँ था। मैं हमेशा ऊँचा ही चढ़ता चला गया। चुंगकिंग की सफेद चोटियॉ ? कहॉ ? भगवान! यदि मैं, और ऊपर जाऊँगा, तो मैं, दुनियाँ के ही बाहर चला जाऊँगा, मैंने सोचा। ठीक उसी समय, एक भयानक सिहरन हुई, और मुझे लगा कि, मैं टुकड़ों में टूटने वाला हूँ। मेरे हाथ का नियंत्रण, झटके से मेरी पकड़ के बाहर खिंचा। मैं मशीन, जो झुक गई थी, के एक ओर झूल गया। तब उसने बहुत तेजी से झटका खाया और नीचे की ओर चक्कर खाने लगी। एक क्षण के लिए, मैं गहरे डर में आ गया। मैंने स्वयं से कहा, ''तुमने इस बार ऐसा किया है, लोबसांग, मेरे बेटे। तुम अपने आपको बहुत अधिक काबिल समझते हो। कुछ सेकंड और गुजरने दो और वे चट्टानों के ऊपर, तुम्हारे चिथड़े–चिथड़े उड़ा देंगे। ओह, मैंने तिब्बत को छोड़ा ही क्यों ?'' तब मैंने इस बात का कारण सोचा, जो मैंने अपने पतंगों की उड़ानों के अनुभव से सीखा था। एक चक्कर, जिसमें नियंत्रण अपना काम नहीं करते। मुझे, ये कोशिश करने के लिए, थ्रोटल को, और कुछ दिशासूचक नियंत्रणों को पूरा खोल देना चाहिए। जैसे ही मैंने ये सब सोचा, तो मैंने फिर से थ्रोटल को दांई और, आगे की ओर, खींचा, और इंजन, नए सिरे से दहाड़ा। तब मैंने उस नियंत्रण को पकड़ लिया और अपने आपको, अपनी सीट के पीछे की तरफ, चिपका लिया। मैंने अपने हाथों और घुटनों से नियंत्रण को आगे की ओर खींचा। आश्चर्यजनकरूप से, नाक नीचे डूबी मानो कि, तली इस दुनियाँ के बाहर निकल गई। मैंने कोई सुरक्षा पेटी नहीं बॉध रखी थी और मैं अपने नियंत्रण के साथ भी, कसकर जुड़ा हुआ नहीं था। मैं बाहर की ओर फैंका जा सकता था। मैंने ऐसा महसूस किया, मानो कि, मेरी शिराओं में बर्फ जम गई है, और कोई इस बर्फ को, मेरे पीछे की ओर धकेल रहा है। मेरे घुटने आश्चर्यजनकरूप से कमजोर हो गए थे। इंजन दहाड़ा, और ऊँचे और ऊँचे चढ़ते हुए, रिरियाया। मैं गंजा था, और मुझे विश्वास है कि, यदि मेरे सिर पर बाल होते, तो वह सिर पर एकदम सीधे खड़े हो गए होते। ''ओह काफी तेज है,'' मैंने स्वयं से कहा, और धीमे से, ओह, इतना धीमे से कि, ये लगभग टूट गया, मैंने धीमे धीमे, अपने डर को कम करते हुए, नियंत्रण को पीछे की तरफ थोड़ा ढ़ीला किया। नाक ऊपर उठी, और ऊपर उठी, परंतु उत्तेजना में, मैं उसे समतल करना भूल गया। नाक तब तक ऊपर उठती चली गई जब तक कि, एक अनजान सिहरन ने मुझे नीचे देखने के लिए प्रेरित नहीं किया, या ये ऊँचाई थी ? मुझे लगा कि, पूरी पृथ्वी मेरे सिर पर थी। एक क्षण के लिए, मेरा ये पूरा ज्ञान समाप्त हो गया कि, क्या हो चुका है। तब जहाज को एक झटका लगा और ये एक बार फिर गोता खा गया, जिससे कि, नीचे की कड़ी जमीन, नोदकों (propellers) के एकदम, ठीक सामने थी। मुझे कठिन परिश्रम करना पड़ा। मैं औंधा होकर, और पैरों को, घुटनों को, अपने हाथों से पकड़े हुए, कॉकपिट में उल्टा लटका हुआ, और कोई सुरक्षा पेटी नहीं, और निश्चितरूप से, बिना किसी आशा के, उड़ रहा था। मैं स्वीकार करता हूँ कि, मैं डरा हुआ था, परंतु मैंने सोचा, ''ठीक है, यदि मैं किसी घोडे की पीठ पर टिका रह सकता हूँ, तो मैं मशीन में भी टिका रह सकता हूँ।'' इसलिए मैंने नाक को नीचे जाने दिया, कुछ और नीचे, और तब धीमे धीमे, छड़ी को वापस खींचा। फिर मैंने महसूस किया कि, जैसे कोई शक्तिशाली हाथ मुझे दबा रहा था; इस बार, यद्यपि, मैंने सावधानीपूर्वक, हरसमय जमीन को ध्यान से देखते हुए, छड़ी को धीमे से वापस खींचा, तथापि मैं उड़ान के दौरान, जहाज को समतल करने में समर्थ हुआ। एक या दो क्षण के लिए, अपने

माथे पर आई पसीनें की बूंदों को पोंछते हुए, और ये सोचते हुए कि, ये कितना भयानक मामला था, मैं वहाँ बैठा; पहले एकदम सीधे नीचे जाना, फिर एकदम सीधे ऊपर आना, तब औंधे होकर उड़ान भरना; और अब मुझे ये ज्ञात नहीं है कि, मैं कहाँ हूँ।

मैंने बगल से ऊपर देखा। मैंने झाँक कर जमीन पर देखा। मैं गोल–गोल घूमता गया, और मुझे इस बात का धुंधला सा भी ख्याल नहीं था कि, मैं कहाँ था। मैं गोबी (Gobi) के रेगिस्तान में हो सकता था। अंत में, जब मैंने सारी आशायें छोड़ दीं, मेरे अंदर कॉकपिट में मौजूद हर चीज के संबंध में प्रेरणा उपजी –सब ठीक थीं – नदी, ये कहाँ थी ? स्पष्टरूप से मैंने सोचा, यदि मैं नदी को देख लूँ, तो मैं दांए या बांए जा सकता हूँ, और अंत में, मैं कहीं पहुँच ही जाऊँगा। इसलिए, मैंने दूर तक देखते हुए, अपने जहाज को, हल्के से, गोलाई में मोड़ा। अंत में, मैंने एक हल्की चॉदी के धागे जैसी धारा, जमीन पर देखी। मैंने जहाज को उस दिशा में मोड़ दिया और सीधा वहाँ बनाए रखा। मैंने थ्रोटल को आगे को दबाया और उसके बाद अतिशीघ्रता के साथ, यह सोचते हुए कि, जो शोर मैं पैदा कर रहा था, उससे कुछ टूट सकता है, थ्रोटल को पीछे की ओर खींचा। मैं इस समय बहुत प्रसन्न अनुभव नहीं कर रहा था। मैंने ऐसा समझा कि, मैं हर काम को उसकी पराकाष्ठाओं तक जाकर कर रहा था। मैंने थ्रोटल को आगे को धक्का दिया, जिससे नाक खतरे के साथ तेजी से ऊपर उठी, और यदि मैं थ्रोटल को पीछे खींचता, तो नाक खतरे के साथ, दुःख भरी तेजी के साथ, नीचे डूब जाती। इसलिए मैं अब हर चीज को धीमे–धीमे, उपयोग में जा रहा था। ये मेरा नया रवैया था, जो उस अवसर के लिए मैंने चुना।

जब मैं इसके ठीक ऊपर था, ये दुबारा से फिर घूम गया, और मैं चुंगकिंग की चोटियों को निशाना बनाते हुए, नदी के साथ–साथ उड़ने लगा। ये बहुत आश्चर्यजनक था। मैं जगह को नहीं समझ सका। तब मैंने नीचे आने का निश्चय किया। उन सफेद चोटियों की ओर, जो तीखी चढ़ाई के साथ गहरा घाव देती हुई खड़ी थीं, नीचे की ओर उन सीढ़ीदार खेतों को देखते हुए, जिन्हें ढूढ़ना मुश्किल था, मैंने नीचे चक्कर लगाए, चक्कर लगाए। अंत में मुझे ऐसा लगा कि, नदी के ऊपर दिखने वाले ये धब्बे, चुंगकिंग के आसपास खड़े जहाज थे, एक छोटेपैडल वाले स्टीमर जहाज, नावें (sampans) कबाड़ा और टूटेफूटे। इसलिए मैं और नीचे गया। तब मैंने बालू की एक पट्टी देखी। मैं घुमावदार तरीके से, सिंघी जैसी गोदते हुए, चारे की तलाश में गया। बालूकी पट्टी बड़ी होती गई, बड़ी होती गई। भय से बुत बने हुए तीन आदमी, पो कू और उसका दोस्त पायलट और हुआँग, ये तीन आदमी ऊपर की ओर देख रहे थे। ये अपने आप में काफी निश्चिंत थे, जैसा उन्होंने बाद में बताया, कि वे एक जहाज को खो चुके थे। परंतु, अब मैं, अत्यधिक आत्मविश्वास से भरा हुआ, भलीभाँति विश्वस्त था। मैं हवा में ऊपर उठ चुका था। मैं औंधा होकर उड़ चुका था, मैंने चुंगकिंग को ढूंढ लिया था। अब, मैंने सोचा कि, मैं दुनियाँ का सबसे अच्छा विमानचालक हूँ। ठीक तभी, मेरी बांई टाँग में, जहाँ उससमय से, जब मैं लामामठ में जला था, एक खराब गूथ (scar) है, खुजली हुई। अचेतनरूप से मैंने सोचा कि, जहाज झूमा, मैंने अपनी टाँग में चिकोटी काटी; मेरे बांए गाल पर, हवा का एक अंधड़ टकराया। जैसे ही पंख मुड़े, जहाज की नाक नीचे गई और शीघ्र ही, मैं चीखता हुआ, बगल से लुढ़क गया। एकबार फिर, मैंने थ्रोटल को आगे को दबाया और डरते–डरते पीछे की ओर, नियंत्रण स्तंभ की ओर, खींचा। जहाज कॉपा और उसके पंख हिलने लगे। मुझे लगा, मैंने सोचा कि, वे अब गिरने ही वाले हैं। किसी चमत्कार के कारण वे रुके रहे। एक क्रुद्ध घोड़े की तरह से जहाज चिंघाड़ा, और तब समतल उड़ान पर आ गया। मेरा दिल, इन प्रयासों पर काफी तेजी से आश्चर्य करता हुआ, भय और आतंक के कारण, भारी पड़ रहा था। मैं दुबारा से, फिर उस छोटे बालू के थेगड़े के ऊपर, एक गोल घेरे में उड़ा। ''अब ठीक है,'' मैंने स्वयं सोचा, ''अब मुझे इस चीज को नीचे उतारना है। मैं उसे कैसे करूँगा ?'' ''नदी, यहाँ एक मील चौड़ी थी। मुझे ये मानो एक इंच चौड़ी दिखाई दी और वह छोटा सा हिस्सा, जिसपर मुझे उतरना था, अत्यल्प दिखाई दिया। मैं ये सोचते हुए कि क्या करना है, चक्कर लगाने लगा। तब मुझे याद आया

कि, उन्होंने क्या कहा था, उन्होंने कैसे उड़ान को समझाया था। इसलिए मैंने किसी धुँए की तरफ देखा, जिससे कि हवा का रुख, हवा किस ओर बह रही थी, पता लगे, क्योंकि उन्होंने मुझे बताया था कि, मुझे बहती हुई हवा की दिशा में ही विमान को उतारना चाहिए। मैंने एक अलाव[8] (bonfire) के माध्यम से, जो नदी के किनारे पर जलाई गई थी, देखा कि, ये नदी के ऊपर की ओर बह रही थी, और तब मैंने अपना रास्ता उलट दिया, ताकि मैं नदी के नीचे की तरफ से हवा में उड़ूँ। जैसे ही मैं चुंगकिंग की तरफ को धीमे–धीमे उड़ा, मैंने धीमे–धीमे, थ्रोटल को वापस आसानी से खींचा, ताकि मैं, धीमे–धीमे चलता रहूँ, और जहाज नीचे और नीचे उतरता चला जाए। जब मैं काफी नीचे आ गया और मशीन मेरे दिल और पेट को छोड़ती हुई, स्थिर होकर नाचने लगी और एक पत्थर की तरह से नीचे गिरी या मैंने अपने आप को एक बादल पर लटकते हुए अनुभव किया। मैंने वास्तव में, बहुत तेजी से थ्रोटल को आगे की और धक्का दिया और नियंत्रण स्तंभ को खींचा, परंतु मुझे फिर से एक चक्कर लगाना पड़ा और नए सिरे से शुरूआत करने के लिए, मुझे एक बार फिर से, नदी के ऊपर की तरफ की ओर जाना पड़ा। मैं इस उड़ान वाले कार्य से बहुत थक रहा था, और चाहता था कि, मैं इसे फिर से, दुबारा शुरू नहीं करूँ। मैंने सोचा, हवा में ऊपर उठना, यह एक चीज थी, लेकिन एक ही समय में, वापस नीचे आना बिलकुल अलग चीज थी।

इंजन का शोर लगातार एकधुन का (monotonous), नीरस होता जा रहा था। मैं निरुत्साहित होकर, चुंगकिंग के फिर से नजर में आने की फिराक में था। अब मैं नीचाई पर था। पहाड़ियों, जो अक्सर सफेद दिखती थीं, परंतु अब सूरज की तिरछी किरणों के कारण हरी–काली सी दिख रही थीं, के बीच में, नदी के ठीक ऊपर, धीमे चल रहा था। जैसे ही मैं, बालू की पट्टी पर, बीच में, एकदम पतली नदी के साथ पहुँचा, मैं कई मील चौड़ाई तक उड़ चुका था – मैंने देखा, तीन आकृतियाँ, उत्तेजना के साथ, ऊपर नीचे की ओर उछल रही थीं। मैं उनको देखने में इतना अधिक दिलचस्पी रखता था कि, मैं उस सब के बारे में, जमीन पर उतरने के बारे में, भूल गया। तबतक मेरे दिमाग में आ गया था कि, यही वह स्थान है, जहाँ मुझे उतरना चाहिए। ये मेरे पहियों के नीचे से निकल गया। पूंछ के, स्किड (skid) के, नीचे से निकल गया। इसलिए मैंने गति पाने के लिए, विरक्ति एवं ऊब के साथ, घृणित थ्रोटल को फिर आगे की और बढ़ाया। ऊँचाई पाने के लिए, मैंने नियंत्रण को पीछे की ओर खींचा और मैं उड़ान में, तेजी से बांई और गया। अब मैं, दृश्य से परेशान सा, चुंगकिंग से परेशान सा, हर चीज से परेशान, नदी को फिर ऊपर की ओर देख रहा था।

मैं एक बार फिर से, हवा की दिशा में, नदी के नीचे की ओर मुड़ा। दांई ओर, उस पार मैंने एक सुंदर दृश्य देखा। सूर्य नीचे ढल रहा था, नीचे जाता हुआ यह लाल था, लाल और बड़ा; ये मुझे ध्यान दिलाता हुआ कि, मुझे भी नीचे जाना था, और मैंने सोचा कि, मैं नीचे जाऊँगा और टकरा कर मर जाऊँगा, और मैंने खुद अनुभव किया कि, मैं देवताओं के साथ जुड़ने के लिए अभी तैयार नहीं हूँ। अभी काफी कुछ करना बाकी है। इसने, मुझे भविष्यकथन का ध्यान दिला दिया, और मुझे मालुम था कि, मुझे चिन्ता करने जैसी कोई बात नहीं है। भविष्यकथन! वास्तव में, मैं सुरक्षित उतरूँगा और सब कुछ ठीक होगा।

इसके चिन्तन ने मुझे, चुंगकिंग के बारे में सोचना, लगभग भुला दिया। यहाँ, ये लगभग बांए पंख के ठीक नीचे था। मैं धीमे से आराम में आया। पतवार के डण्डे को, ये निश्चित करने के लिए कि, बालू के सामने वाली, पीली बालू, इंजन के सामने लगभग मृतप्राय थी। मैंने और धीमा किया, और धीमा किया। जहाज धीमे–धीमे करके नीचे उतरता गया। मैंने थ्रोटल को फिर से वापस खींचा ताकि, जैसे ही इंजन की आवाजे बंद हों, मैं पानी से लगभग दस फुट ऊपर रहूँ। ये सुनिश्चित हो जाने के बाद कि, टकराने पर आग नहीं लगेगी, मैंने इंजन को बंद कर दिया। तब काफी आराम–आराम से, मैंने नियंत्रण

8 अनुवादक की टिप्पिणीः मौजमस्ती या उत्सव मनाने के लिये, अथवा संकेत के रूप में, कूड़ा–करकट को इकट्ठा करके, खुले में जलाई गयी आग।

स्तंभ को आगे को ढकेला, जिससे ऊँचाई कम हो। इंजन के ठीक सामने मैंने बालू को और पानी को देखा मानो कि, मैं ठीक उसके ऊपर ही अपना लक्ष्य बनाए हुए हूँ। इसलिए मैंने धीमे से, नियंत्रण स्तंभ को वापस खींचा। थोड़ा सा झटका, फिर एक खड़खड़ाहट, और उसके बाद उछाल। एक बार फिर से घिसटने जैसी आवाज, एक खिंचाव, एक झटका, और तब चीख, मानो कि, हर चीज टुकड़ों में टूटने वाली है। मैं जमीन पर था। जहाज भी, जमीन पर ठीक उतरने वाला ही था। एक क्षण के लिए मैं बमुश्किल, यह विश्वास करते हुए एकदम शांत बैठ गया, कि सबकुछ समाप्त हो गया है, यह कि इंजन के शोर भी अब, वास्तव में, नहीं थे, परंतु ये केवल मेरे कानों की कल्पनामात्र थी। तब मैंने अपने आसपास देखा। पो कू और उसके साथी और हुआँग, लाल तमतमाते चेहरे के साथ, सप्रयास, श्वांस रहित, मेरी तरफ दौड़कर आए। वे फिसलकर, मेरे ठीक नीचे रुक गए। पो कू ने मेरी ओर देखा, जहाज की ओर देखा, और दुबारा फिर मेरी ओर देखा। तब उसका चेहरा, सदमे के कारण और उसके बाद मिलने वाले आराम के कारण, वास्तव में, पीला पड़ गया। वह स्वयं इतना अधिक आराम में महसूस कर रहा था कि, वह गुस्सा करने के लिये भी समर्थ नहीं था। लंबे समय बाद, लंबे अंतराल के बाद, पो कू ने कहा, ''सब ठीक हो गया है। तुम्हें सेना में भर्ती होना पड़ेगा अन्यथा मैं बहुत बड़ी मुसीबत में फंस जाऊँगा।'' ''ठीक है,'' मैंने कहा, ''मुझे ठीक लगता है। इस उड़ान वाले काम में कुछ खास नहीं है। परंतु मैं अनुमोदित (aproved) तरीकों से इसे सीखना चाहूँगा।'' पो कू का चेहरा फिर से लाल हो गया और वह हँसा। ''तुम एक जन्मजात विमान चालक हो, लोबसांग रम्पा,'' उसने कहा। ''तुम्हें उड़ान सीखने का अवसर मिलेगा।'' इसप्रकार, ये चुंगकिंग को छोड़ने का पहला चरण था। एक शल्य चिकित्सक के रूप में और एक विमानचालक के रूप में मेरी सेवायें कहीं दूसरी जगह उपयोग में लाई जायेगीं।

उस दिन, जब हम बाद में, इस सब मामले के ऊपर बातचीत कर रहे थे, मैंने पो कू को पूछा कि क्यों, वह इतना अधिक चिंतित क्यों था, वह दूसरे जहाज में उड़कर मुझे रास्ता बताने के लिए क्यों नहीं आया। उसने कहा, ''मैं ऐसा करना चाहता था, परंतु तुम प्रारंभ के बिन्दु से काफी दूरतक उड़ चुके थे, इसलिए मैं नहीं आ सका।''

हुआँग ने, वास्तव में, इस कहानी को फैला दिया और पो कू और उसके साथियों ने भी ऐसा ही किया और कुछ दिनों के लिए, मैं महाविद्यालय और अस्पताल के लिए, वार्तालाप का विषय बन गया, जिससे मुझे काफी अरूचि हुई। डॉक्टर ली ने एक सख्त सजा देने के लिए, परंतु वास्तव में, मेरा अभिनंदन करने के लिए, मुझे औपचारिक रूप से बुला भेजा। उन्होंने कहा कि, वह भी अपने जवानी के दिनों में, इसीप्रकार की कोई चीज खुद करना चाहते थे परंतु, ''मेरे योवनकाल में कोई हवाईजहाज नहीं थे, रम्पा। तब हमें घोड़ों पर या पैदल जाना पड़ता था।'' उन्होंने बताया कि, ये एक असभ्य तिब्बती के लिए काफी जंगली वहशीपन जैसा होगा, उसे सबसे अच्छा झटका देना कि, जिसे वह बरसों तक रहा है। उन्होंने जोड़ा कि, ''रम्पा, जब उनके ऊपर तुम उड़े और जब वे सोच रहे थे कि, तुम अब टकराने वाले ही हो, उनके प्रभामंडल कैसे दिख रहे थे ?'' उन्हें हँसना पड़ा जब मैंने कहा कि, वे पूरी तरह से डरे हुए थे और उनके प्रभामंडल सिकुड़े हुए पीले, नीले धब्बेदार थे, जिनमें बीच–बीच में मेरून रंग की धारियॉ थीं। मैंने कहा, मुझे खुशी है कि, उससमय वहॉं, यह देखने के लिए कोई नहीं था कि, मेरा प्रभामंडल किसप्रकार का था। ये निश्चित रूप से भयानक रहा होगा। निश्चित रूप से, मुझे ऐसा लगता है।''

इसके बहुत समय बाद नहीं, मुझसे मिलने जनरल लिसिमो चांगकाई शेख का एक प्रतिनिधि मेरे समीप आया और मुझसे प्रस्ताव किया कि मैं उचित तरीके से उड़ान को सीखने का मौका लूँ और चीनी फौज में कमीशन प्राप्त करूँ। जो अफसर मेरे पास आया था, उसने कहा कि, ''यदि हमारे पास समय है तो इससे पहले कि, जापानी गंभीररूप से हमारे देश के ऊपर अतिक्रमण करें, हम एक विशेष

सैन्यविभाग की स्थापना करना चाहते हैं, जिससे कि, वे लोग जो घायल हैं और चल फिर नहीं सकते, उनका हम ऐसे चिकित्सकों के द्वारा इलाज करा सकें, जो पायलट भी हैं।'' इसलिए ऐसा समझा गया कि, मुझे मानवशरीर के अलावा भी कुछ और अधिक पढ़ना चाहिए। रक्त के प्रवाह के साथ–साथ, मुझे तेल के प्रवाह के संबंध में भी पढ़ना था। आदमी के कंकाल के साथ–साथ, मुझे हवाईजहाज के ढांचे को भी पढ़ना था। वे दोनों ही समान रूचि के थे और दोनों में कुछ बातें एक समान थीं।

इस प्रकार वर्ष गुजरते गए और मैं एक अस्पताल में काम करते और फालतू समय में उड़ान भरते हुए, एक योग्यता प्राप्त डॉक्टर, और एक योग्यता प्राप्त चालक, दोनों में प्रशिक्षित हो गया। हुआँग इसके बाहर हो गया। वह उड़ान में बिलकुल रूचि नहीं रखता था और जहाज का विचारमात्र ही उसे पीला कर देता था। इसके बदले पो कू मेरे साथ ठहरा, क्योंकि वह देख चुका था कि, कितने अच्छे तरीके से हम साथ–साथ रहते हैं और हमने, वास्तव में, साथ–साथ एक संतुष्टिजनक दल बनाया।

उड़ान, आश्चर्यजनक सनसनी थी। हवाईजहाज में ऊपर होना, और हवाईजहाज के इंजन को बंद कर देना और फिर उसी तरीके से जैसे कि, पक्षी करते हैं, बिना इंजन के सरकते रहना (gliding), ये सब वैभवयुक्त लगता था। ये आकाशीय यात्राओं जैसा ही अच्छा था, बहुत कुछ उससे मिलता जुलता था, जिन्हें मैं करता था और जिनको कोई भी दूसरा आदमी कर सकता है, बशर्ते, उनके दिल ठीक ठाक रूप से स्वस्थ हों और उन्हें इसपर बने रहने का पर्याप्त धैर्य हो।

क्या आप जानते हैं कि, सूक्ष्मशरीर से यात्रायें (astral travel) क्या होती हैं ? क्या आप मकान के छत पर तैरने और शायद, कुछ अधिक दूरी के लिए, दूरी पर स्थित देशों के लिए, महासागरों के ऊपर जाने की उड़ान (soaring) के आनंद की कल्पना कर सकते हैं? हम सभी इसे कर सकते हैं। ये केवल तभी होता है जबकि, शरीर का अधिक आध्यात्मिक भाग (spiritual body), शरीर के कवच से अलग करके बाहर रख दिया जाता है, और दूसरी विधाओं में चलता रहता है और अपने रजततंतु के सिरे पर रहता हुआ, विश्व के लोकों के इतर, दूसरे भागों में यात्रा करता है।'' इस सम्बंध में कोई जादू नहीं है, कुछ गलत नहीं है। यह स्वाभाविक और पुष्टिकर है, और बीते गए दिनों में, बिना किसी सहारे के या बिना किसी परेशानी के, सभी लोग इसप्रकार की सूक्ष्मशरीर यात्राओं को कर सकते थे। तिब्बत के साधू और भारत के तमाम लोग, अपने सूक्ष्मशरीरों में स्थान–स्थान की यात्रा करते थे, और इसमें कुछ भी अजनबी नहीं है, अनोखा नहीं है। सारी दुनियाँ की धार्मिक पुस्तकों में, सभी धर्मों के बाइबल में, ऐसी चीजों का जैसे ''रजततंतु (silver cord)'' और ''स्वर्ण कटोरे (golden bowl)'' का उल्लेख है। तथाकथित रजत तंतु, ऊर्जा की एक धुरी मात्र है, विकरित ऊर्जा, जो अनंतविस्तार की क्षमता रखती है। ये मांसपेशियों की तरह से अथवा धमनियों की तरह से, अथवा किसी स्प्रिंग के टुकड़े की तरह से, पदार्थ का बना हुआ कोई तंतु नहीं है, परंतु ये स्वयं जीवन है। यह, वह ऊर्जा है, जो भौतिकशरीर को सूक्ष्मशरीर के साथ जोड़ती है।

मनुष्य के अनेक शरीर होते हैं। एक क्षण के लिए, हमारी रूचि, केवल भौतिक और उसके अगले चरण, सूक्ष्मशरीर में है। हम यह सोच सकते हैं कि, जब हम दूसरी अवस्था में होते हैं, तो हम दीवारों के आरपार चल सकते हैं अथवा फर्श पर गिर सकते हैं। हम विभिन्न घनत्व वाले फर्शों पर आराम से चल फिर सकते हैं। सूक्ष्मशरीर की इस यात्रा में, रोजमर्रा की, दुनियादारी की, कोई रुकावटें हमारे रास्ते में नहीं आतीं। किसी घर के दरवाजे, किसी को अंदर या बाहर बंद करके नहीं रख सकते। परंतु, सूक्ष्म शरीर के लिये भी दीवारें, दरवाजे होते हैं जो कि, सूक्ष्मशरीर के लिये भी इतने ही ठोस और इतने ही निश्चित होते हैं जैसे कि भौतिक शरीर के लिए।

क्या आपने कभी प्रेतात्मा (ghost) को देखा है ? यदि ऐसा है, तो वह शायद अपने सूक्ष्म अस्तित्व में रहा होगा, वह शायद किसी ऐसे व्यक्ति का, जिसे आप जानते हों, सूक्ष्म प्रक्षेप होगा, अथवा कोई दूसरा व्यक्ति, जो विश्व के किसी दूसरे हिस्से से आपको मिलने के लिए आया होगा। आप एक

समय पर, एक विशेष जीवंत स्वप्न में हो सकते हैं। कभी आपने स्वप्न में देखा होगा कि, आप आकाश में ऊपर, एक धागे अथवा तंतु से बंधे हुए, एक गुब्बारे की तरह से तैर रहे हैं। आपने देखा होगा कि, वहाँ से, आकाश से, उस तंतु के दूसरे सिरे पर रहते हुए, आप नीचे की ओर देखने के लिए सक्षम हैं और ये पाया होगा कि, आपका शरीर, कुम्हलाया हुआ सा, चलने फिरने से लाचार, स्थिर एवं सख्त था। यदि आप इस परेशान करने वाले विचार, दृष्टि के ऊपर बने रहें तो आपने, अपने आपको, भटकटैया के टुकड़े, जैसे हवा में ऊपर की और तैरते हैं, तैरते हुए, पाया होगा। थोड़े समय बाद, आपको लगा होगा कि, आप खुद दूरस्थ देश में अथवा किसी दूरस्थ जिले में, जिसे आप जानते हैं, हैं। यदि आपने किसी चीज के बारे में सुबह सोचा होगा तो, वह आपको स्वप्न में मिल गई होगी। ये सूक्ष्मशरीरी यात्रा थी।

इसप्रकार प्रयत्न करें; रात को जब आप सोने वाले हों तो आप जीवंत रूप से सोचें कि, आप किसी परिचित व्यक्ति को मिलने जा रहे हैं। सोचें कि उस व्यक्ति को आप मिलने के लिए कैसे जा रहे हैं। ये आपके शहर में रहने वाला ही कोई दूसरा व्यक्ति हो सकता है। ठीक है, जैसे आप लेटे हुए हैं, एकदम स्थिर शांत बने रहें, शरीर को आसानी से ढ़ीला छोड़ दें। अपनी आँखों को बंद करें और कल्पना करें कि, आप बिस्तर के ऊपर तैर रहे हैं। तैरते तैरते, खिड़की में से बाहर निकल गए, और आप गली के ऊपर तैर रहे हैं – ये जानते हुए कि, कोई चीज आपको चोट नहीं पहुँचा सकती – ये जानते हुए कि, आप गिर नहीं सकते। अपनी कल्पना में आप ठीक वही रास्ता चुनें, जो आप वास्तव में गली–गली में होकर चुनते, जाते, जबतक कि, आप परिचित व्यक्ति के दरवाजे पर न पहुँच जाएँ। यदि आपका उद्देश्य शुद्ध है तो, आप ऐसा करने में समर्थ होंगे। इसमें कोई परेशानी नहीं है। कोई खतरा नहीं है। कोई नुकसानदायक चीज नहीं है। यहाँ केवल एक ही नियम हैः आपका उद्देश्य शुद्ध होना चाहिए।

फिर से, दुबारा देखें। यदि आप पसंद करें तो दोहरायें, परंतु इसे एक या दूसरे दृष्टिकोणों से देखना अच्छा होगा, ताकि आप ये जान सकें कि, ये कितना अधिक सरल है। जैसे आप अपने बिस्तर के ऊपर लेटे हुए हैं, आपके आसपड़ौस में आपको विक्षुब्ध करने के लिए दूसरा कोई नहीं है। आपके शयनकक्ष के दरवाजे अंदर से बंद हैं ताकि कोई अंदर आ नहीं सकता, शांत रहें। कल्पना करें कि, आप अपने शरीर से, धीमे से अलग हो रहे हैं। इसमें कोई नुकसान नहीं है, कोई दूसरा आपको घायल नहीं कर सकता। कल्पना करें कि, आप विभिन्न प्रकार की हल्की–हल्की चीखों को, चरमराहटों को सुन सकते हैं और जैसे ही आपका आध्यात्मिकबल आपके शरीर को छोड़ता है और आपके शरीर के ऊपर घनीभूत हो जाता है, आपको इसमें तमाम हल्के झटके, छोटे झटके प्रतीत होंगे।

कल्पना करें कि आप, अपने शरीर का ठीक जैसा ही समरूप, अपने शरीर के ऊपर बना सकते हैं और ये आपके भौतिकशरीर के ऊपर भारहीनरूप से तैर रहा है। आप हलका सा हिलना–डुलना, हलका सा चढ़ना–गिरना महसूस करेंगे। डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। यह स्वाभाविक है, हानिरहित है। जब आप शांति रखेंगे आप पायेंगे कि, अब आपका स्वतंत्र आत्मा, तैरता रहेगा जबतक कि, आप वहाँ से कुछ दूर ऊपर तक नहीं पहुँच जाते। तब आप स्वयं, अपने शरीर की ओर, अपने भौतिक शरीर की और देख सकते हैं। आप देखेंगे कि, आपका भौतिक और सूक्ष्मशरीर, एक चमकदार रजततंतु से, एक हल्के नीले रंग के चाँदी के तंतु से, एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, जो जीवन के साथ, विचारों के साथ, जो कि भौतिक से सूक्ष्मशरीर में और सूक्ष्मशरीर से भौतिकशरीर में आते जाते हैं, के साथ धड़कता है। जबतक आपके विचार शुद्ध हैं, तबतक, कुछ भी चीज आपको परेशान अथवा घायल नहीं कर सकती।

लगभग हर व्यक्ति को सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने का अनुभव प्राप्त होता है। अपने दिमाग को पीछे ले जाओ और सोचो कि, क्या तुम ऐसा याद कर सकते हो : कभी आप नींद में रहे हैं और आपके मन के ऊपर ऐसी छाप है कि आप, हिल या झूल रहे थे, गिर रहे थे और तब आप इससे पहले कि

जमीन में जाकर टकराते, एक झटके के साथ जाग गए ? ये गलत तरीके से की गई, आकाशीय यात्रा थी, आनंददायक तरीके से नहीं। असुविधा अथवा अप्रसन्नता के रूप में, आपको नुकसान उठाने की आवश्यकता नहीं है कि, ये भौतिक और सूक्ष्मशरीरों के कंपन में अंतर होने के कारण उत्पन्न हुई थी। ये हो सकता है कि, जब आप यात्रा करने के बाद, अपने भौतिकशरीर में प्रवेश करने के लिए तैर रहे हों कुछ शोर, कुछ भरती, या कुछ रुकावट, ने स्थिति में थोड़ी सी विसंगति पैदा की और आपका सूक्ष्मशरीर, आपके भौतकशरीर में अपनी ठीक स्थिति में नहीं आया, इसलिए वहाँ एक झटका लगा, एक झटका। आप इसे एक रुकती हुई बस में लगने वाले झटके के समान समझ सकते हैं। बस जो कि हम कहें कि, सूक्ष्मशरीर, दस मील प्रति घण्टे की गति से यात्रा कर रहा है। जमीन, जिसे हम भौतिकशरीर के रूप में कहेंगे, नहीं चलती। बस के स्टेशन छोड़ने, और आपके गिरने के बीच के थोडे से स्थान के लिए आपको धीमे करना पड़ेगा या एक झटका झेलना पड़ेगा। इसलिए यदि आप इस गिरने के अनुभव को लेना चाहते हो तो, आपको ये आकाशीययात्रा करनी पड़ेगी यद्यपि, आप इसे जानते भी नहीं हैं, क्योंकि वापस आते समय लगने वाला झटका, एक बुरी तरह का उतरना कहलाएगा। जो आपके आकाशीययात्रा में किए गए सभी अनुभवों, जो आपने देखे, की स्मृति को भुला देगा, मिटा देगा। उस अवस्था में, बिना प्रशिक्षण के, आप सोते रह सकते हैं, जबकि यर्थातः आप आकाशीय यात्रा में हों। इसलिए आपने केवल ये विचार किया होगा कि आपने स्वप्न देखा, ''मैंने पिछली रात एक स्वप्न में देखा कि मैं अमुक–अमुक स्थान को यात्रा पर गया, और ऐसा–ऐसा देखा।'' कितनी बार आपने ऐसा कहा ? सभी स्वप्न होते हैं! परंतु ये क्या था ? थोड़े से अभ्यास के बाद, जब आप पूरी तरह जगे हुए हों, आप आकाशीय यात्रायें कर सकते हैं और आपने जो देखा और जो किया, उसकी स्मृति को बनाए रख सकते हैं। इसका एक बड़ा नुकसान, वास्तव में ये है कि, जब आप आकाशीय यात्राओं में हों, तो अपने साथ कुछ नहीं ले जा सकते और न ही कोई चीज वापस ला सकते हैं, इसलिए ये सोचना, अर्थहीन होगा कि आप पैसा नहीं ले जा सकते, रूमाल नहीं ले जा सकते, परंतु केवल अपनी आत्मा को ले जा सकते हैं।

दिल की बीमारी वाले लोगों को आकाशीयगमन का अभ्यास नहीं करना चाहिए। उनके लिए ये हानिकारक हो सकता है। परंतु जिनके हृदय मजबूत हैं, उनके लिए किसीप्रकार का कोई खतरा नहीं है, क्योंकि जहाँतक आपकी नीयत शुद्ध है, जहाँतक आप, किसी बुराई के अथवा दूसरे से प्राप्ति के संबंध में नहीं सोच रहे हैं, किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं हो सकता।

क्या आप आकाशगमन करना चाहते हैं ? इसके संबंध में शुरूआत करना, ये सबसे आसान तरीका है। सबसे पहले इसे याद रखें : मनोविज्ञान का यह पहला नियम है कि, इच्छा और कल्पना के बीच युद्ध चलता है और इसमें हमेशा कल्पना ही जीतती है। इसलिए हमेशा ये कल्पना करें कि आप किसी चीज को कर सकते हैं; और यदि आप पर्याप्त मजबूती के साथ ऐसी कल्पना करेंगे तो आप ऐसा कर सकते हैं। आप कुछ भी कर सकते हैं। यहाँ इसे स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत है।

कोई चीज जिसकी आप वास्तव में कल्पना करते हैं, आप कर सकते हैं, आप कर सकते हैं, कोई बात नहीं, ये प्रेक्षकों के लिए, कितनी भी मुश्किल या असंभव ही क्यों न हो। कोई भी चीज, जिसे आपकी कल्पना असंभव कहती है, तब, आपको ये असंभव होगा, भले ही आप इसे पूरा करने के लिए अपने पूरेदम से इच्छा और प्रयत्न क्यों न करें। इसे ऐसे सोचें; दो मकान है, पैंतीस फुट ऊँचे और एक दूसरे से दस फुट दूर। उनकी छतों के बीच में एक लंबा पट्टा डाला हुआ है पट्टा शायद दो फुट चौड़ा है यदि आप इस पट्टे पर चलकर पार होना चाहते हैं तो, आपकी कल्पना, उन सारी दिक्कतों की, असुविधाओं की तस्वीर, आपके सामने प्रस्तुत कर देगी। हवा आपको हिला सकती है, या शायद लकड़ी में से कोई चीज कॉटा चुभ सकता है। आपकी कल्पना कहती है कि, आप असावधान हो सकते हैं, परंतु कोई बात नहीं कि, आपकी कल्पना ये कहे कि, आपके लिए ये यात्रा असंभव होगी तो आप गिरेंगे और

मर जायेंगे। ठीक है, कोई बात नहीं, कितनी भी कठिनाई के साथ आप इसका प्रयत्न करें। किन्तु यदि, आप एक बार ऐसी कल्पना कर लें कि, आप इसे नहीं कर सकते, तो आप इसे करें, लेकिन नहीं कर पायेंगे, और वह पट्टे के ऊपर की जाने वाली छोटी सी दूरी आपके लिए असंभव हो जायेगी। इच्छाशक्ति कितनी भी क्यों न हो, ये आपको सुरक्षित पार नहीं करने देगी। फिर भी यदि पट्टा जमीन पर होता तो आप बिना किसी हिचकिचाहट के इस दूरी को पार कर सकते थे, जो इस मामले में इस तरह से जीत जाती है ? इच्छा शक्ति ? अथवा फिर से कल्पना, यदि आप कल्पना करें कि, आप दोनों घरों के बीच रखे गए पट्टे के ऊपर चल सकते हैं, तो आप उसे सरलता से कर सकते हैं, इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि, हवा चल रही है या लठ्ठा हिल भी रहा है, जबतक कि, आप ये कल्पना रखें कि, आप इसे सुरक्षितरूप से पार कर सकते हैं। लोग बंधे हुए रस्सों के ऊपर चलते हैं, शायद वे इनपर, एक सायकल से भी चल सकते हैं, परंतु कोई भी इच्छाशक्ति, उनसे ऐसा नहीं करा सकती। ये केवल कल्पना ही है, जो करा सकती है।

ये एक दुर्भाग्यशाली चीज है कि हम इसे ''कल्पना'' कहते हैं क्योंकि विशेषरूप से पश्चिम में ये चीज अद्‌भुत लगती है, कुछ अविश्वसनीय भी लगती है, परन्तु फिर भी, इस पृथ्वी के ऊपर, कल्पना एक भयानक अजनबी ताकत है। कल्पना ही किसी व्यक्ति को ये सोचने के लिए कह सकती है कि, वह प्यार में है, इसप्रकार प्यार, एक दूसरा मजबूत बल बन जाता है। हमें इसे नियंत्रित कल्पना (controlled imagination) कहना चाहिए। हम इसे चाहे कुछ भी कहें, हमें हमेशा ध्यान रखना चाहिए : कल्पना और इच्छा के किसी भी युद्ध में, ये केवल कल्पना ही है, जो हमेशा जीतती है। पूर्व में हम इच्छाशक्ति के संबंध में बिलकुल परेशान नहीं होते, विचार नहीं करते, क्योंकि इच्छाशक्ति, एक फंदा है, एक जाल है, जो मनुष्य को पृथ्वी से बांधकर रखता है। हम नियंत्रित कल्पना के ऊपर भरोसा करते हैं, और इससे परिणाम प्राप्त करते हैं।

यदि आप किसी दंतचिकित्सक के पास दांत उखड़वाने जायें, आप एक भय की कल्पना करते हैं, जो आपकी प्रतीक्षा कर रहा है, एक भयंकर पीड़ा, आप दांत उखाड़ने के प्रत्येक चरण की कल्पना करें। शायद सुई का चुभाया जाना, अथवा अंदर सुई लगाने जाने के बाद, निश्चेतक का झटका, तब दंत चिकित्सक द्वारा की गई जाँच। आप अपने बेहोश होने की या चीखने की, या रक्तस्राव होने के बाद मर जाने की, या कुछ वैसी ही कल्पना करें। सब बकवास, वास्तव में, आपके लिए ये एकदम वास्तविक होगा कि, जैसे ही आप कुर्सी पर बैठेंगे, आपको बहुत तेज दर्द होगा, जो पूर्णरूप से अनावश्यक है। ये कल्पना का एक उदाहरण है, जिसे गलत ढ़ंग से इस्तेमाल किया गया। ये नियंत्रित कल्पना नहीं है। ये स्वतंत्र घूमती हुई कल्पना है, और किसी भी व्यक्ति को इसे अपने अंदर आने की इजाजत नहीं देनी चाहिए।

औरतों को, बच्चे के प्रसव के समय होने वाले खतरे, और दर्द की दुखभरी कहानियाँ सुनाई जायेंगी। जन्म के समय पर होने वाली माता को; उन आने वाले तमाम कष्टों के बारे में जो उसको, स्वयं को तनावग्रस्त कर देंगे, उसको कड़ा बना देंगे, ताकि वह दर्द की टीस को अनुभव कर सके। ये उसे समझा देता है कि, जो कुछ उसने कल्पना में सोचा, वह पूरा सही था यह कि बच्चे को जन्म देना एक कष्टसाध्य कार्य है, इसलिए वह और अधिक तनाव में आ जाती है, जिससे उसे दुबारा फिर दर्द होता है, और अंत में उसे एक जबरदस्त भयानक समय गुजारना पड़ता है। परंतु पूर्व में ऐसा नहीं है। लोग सोचते हैं कि, बच्चे को जन्म देना आसान है, और दर्द रहित है, इसलिए ऐसा है भी। पूर्व में औरतों को बच्चे पैदा होते हैं और शायद कुछ घण्टों बाद ही, वे अपने घर के कामों में व्यस्त हो जाती हैं, क्योंकि वे जानती हैं कि कल्पना को किस प्रकार नियंत्रित किया जाए।

आपने ''मस्तिष्क की धुलाई (brain washing)'' के संबंध में सुना होगा। जो कि, जापानियों और रूसियों द्वारा उपयोग में लाई जाती थी ? ये किसी की कल्पना के ऊपर लूटने जैसा कार्य है और

दूसरे आदमी को, ये दूसरी चीजें सोचना, कल्पना कराना, जिसे कि पकड़ कराने वाला, आपसे कल्पना कराना चाहता है। ये पकड़ने वाले के द्वारा, पकड़े जाने वाले व्यक्ति के ऊपर, उसकी कल्पना के नियंत्रण का एक तरीका है, ताकि वह उन सब बातों को स्वीकार कर ले, जिनका स्वीकार करना शायद उस बंदी के जीवन के मूल्य के बराबर हो सकता है। नियंत्रित कल्पना, इस सब को हटा देती है क्योंकि शिकार, जिसका मस्तिष्क साफ किया जाता है, अथवा जिसको कष्ट भी दिए जाते हैं, कोई दूसरी चीज बदले में सोच सकता है, और तब ये कटु अनुभव, शायद इतना बड़ा नहीं होता, निश्चित ही शिकार इसके अधीन तो नहीं होता।

क्या आप कष्ट अनुभव करने की विधि को जानते हैं ? चलिए हम आपकी उंगली में एक पिन चुभाते हैं। ठीक है, हम सुई की नोंक आपके मांस के ऊपर रखते हैं, और ठीक उस क्षण, जब सुई आपकी खाल में अंदर घुसेगी, अनुभव होने वाले छोटे से दर्द के लिए प्रतीक्षा करते हैं। और मांस में से हल्की सी खून की धारा बाहर निकलकर के आयेगी। हम अपनी सारी शक्तियों को उस बिन्दु की परीक्षा करने के लिए, यहाँ केन्द्रीभूत कर दें। यदि हमारे पैर में दर्द हो, तो हम, उंगली में सुई चुभाने के इस पूरे तरीके को भूल जायेंगे। हम अपनी पूरी कल्पना को अपनी उंगली पर, और उस पिन की नोंक के ऊपर, बनाकर रखते हैं। सबकुछ छोड़कर, हम उस दर्द की कल्पना करते हैं, जो ये पैदा करेगी। परंतु पूर्व वाले प्रशिक्षित लोग ऐसा नहीं करेंगे। वह अपनी उंगली के आसपास नहीं घूमता है, और न ही सुई चुभाने की उस क्रिया को जो इसके बाद आती है, वह अपनी कल्पना को, नियंत्रित कल्पना को नष्ट कर देता है – पूरे शरीर के ऊपर, ताकि दर्द जो वास्तव में उंगली में हुआ, पूरे शरीर में फैल जाए, और इसप्रकार एक छोटी सी बात में, पिन को चुभाने जैसी बात में, ये बिलकुल नहीं महसूस होता। ये नियंत्रित कल्पना है। मैंने ऐसे लोगों को देखा है, जिनके अंदर बंदूक के बोनट घुसाए गए हैं। वे न तो बेहोश हुए, न ही चिल्लाये, क्योंकि वे जानते थे कि, संगीन की नोंक उनकी ओर आ रही थी, और वे उससमय कुछ और ही सोच रहे थे – फिर से नियंत्रित कल्पना – और इसप्रकार, दर्द एक स्थान पर केन्द्रीभूत होने की बजाय, शरीर के पूरे क्षेत्र के ऊपर फैल गया ताकि, शिकार उस बंदूक की नोंक के घुसने के दर्द को सहने से बच गया।

सम्मोहन (hypnotism), कल्पना का दूसरा अच्छा उदाहरण है। इसमें जिस व्यक्ति को सम्मोहित किया जाता है, वह अपनी सारी कल्पनाओं को, उस व्यक्ति को दे देता है, जो उसको सम्मोहित कर रहा है। सम्मोहित होने वाला व्यक्ति, कल्पना करता है कि, वह दूसरे सम्मोहित करने वाले व्यक्ति के सामने कमजोर है, झुका हुआ है, परास्त है। वह कल्पना करता है, कि उसे नींद आती जा रही है, कि वह सम्मोहित करने वाले व्यक्ति के प्रभाव में आता जा रहा है। इसलिए यदि सम्मोहनकर्ता पर्याप्तरूप से पीछे पड़ने वाला (persuading) हो, और मरीज की कल्पना को संतुष्ट कर सके, तो वह मरीज समर्पण कर देता है और आसानी से सम्मोहन करने वाले के निर्देशों के बस में हो जाता है, और ये सब यहाँ करना है। उसी तरीके से, जैसे कोई व्यक्ति स्वसम्मोहन (autohypnotism) में जाता है, वह यह महसूस करता है कि, वह स्वयं के प्रभाव में आता जा रहा है, इसप्रकार, वह अपने स्वयं के वृहद आत्मा के नियंत्रण में आ जाता है। कल्पना, वास्तव में, सभी विश्वास के इरादों की जड़ है; लोग इसे पैदा करते हैं, और पैदा करते हैं और कल्पना करते हैं कि, यदि वे अमुक–अमुक स्थान की यात्रा करेंगे, अथवा अमुक–अमुक व्यक्ति के द्वारा उपचारित किए जायेंगे, तो वे तुरंत ही, उस स्थान पर उपचारित हो जायेंगे। उनकी कल्पना इस मामलें में, वास्तव में, शरीर को आज्ञा देती है, इसलिए इलाज प्रभावित होता है, और वह इलाज स्थाई होता है, वहाँतक, जहाँतक कि, कल्पना अपने आदेशों को बनाए रखती है, वहॉतक, जहाँतक कि, कल्पना में कोई दूसरा संदेह, अंदर नहीं घुसता।

ठीक, एक छोटा सा घरेलू उदाहरण और, क्योंकि ये नियंत्रित कल्पना का प्रकरण उन आवश्यक महत्वपूर्ण चीजों में से है, जिसे कि आप हमेशा समझ सकते हैं। नियंत्रित कल्पना का आशय हो सकता

है, सफलता और असफलता के बीच अंतर, स्वास्थ्य और बीमारियों के बीच अंतर। परंतु ऐसा है; क्या आपने कभी, एक एकदम सीधी खुली सड़क के ऊपर, सायकल पर सवारी की है, और अचानक ही आपने शायद, अपने पहिए से कुछ फुट की दूरी पर आगे ही, सामने एक बड़ा सा पत्थर देखा? आपने सोचा होगा, ''ओह मैं उसे बचा नहीं सकता!'' और निश्चितरूप से, पर्याप्तरूप से, ऐसा नहीं कर सके होंगे। आपका अगला पहिया डगमगाएगा और आप कितना भी प्रयत्न क्यों न करें, आप सीधे ही निश्चित रूप से पत्थर में जा भिड़ेंगे, ठीक वैसे ही जैसे कि, लोहा, चुंबक की ओर आकर्षित किया जाता है। इच्छाशक्ति, कितनी भी क्यों न हो, आपको इस पत्थर से बचा नहीं सकती। फिर भी, यदि आप कल्पना करें कि, आप उसे बचा सकते थे, तो बचायें, आप निश्चितरूप से ऐसा कर पायेंगे। इस अत्यंत महत्वपूर्ण नियम को याद रखें, क्योंकि ये आपके सभी कामों में अंतर पैदा कर सकता है। यदि आप अपने से, कुछ करने की लगातार इच्छा करते रहे, जबकि कल्पना इसका विरोध करती हो, तो आपको अवसाद, तनाव उत्पन्न हो जायेगा, जो कि, वास्तव में, अनेक मानसिक बीमारियों का कारण है। आज की अवस्थाओं में परेशानियॉ बहुत अधिक हैं और कोई भी व्यक्ति, (उसे नियंत्रित करने की बजाय) अपनी इच्छा शक्ति को उस पर लगाते हुए, अपनी कल्पना को दबाने की कोशिश करता है। ऐसे में विचार में अंतर्द्वंद (conflict) पैदा होता है, और अंत में अवसाद उत्पन्न हो जाता है। वह आदमी विक्षिप्त भी हो सकता है, और पागल भी हो सकता है। ऐसे बीमारों से, जिन्होंने ऐसा कुछ करना चाहा परन्तु, उनकी कल्पना, कुछ दूसरा ही सोच रही थी, पागलखाने पूरी तरह से भरे हुए हैं। और फिर भी, किसी आदमी के लिए, वास्तव में, नियंत्रित कल्पना करना और इसका प्रभावशील होना, एक साधारण मामला है। ये कल्पना ही है – नियंत्रित कल्पना – जो किसी व्यक्ति को, ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने के लिये, या किसी तेज रफ्तार वाले हवाईजहाज के ऊपर उड़ने के लिए, और पुराने कीर्तिमानों (records) को तोड़ने के लिए, और इनमें से कोई भी कमाल दिखाने के लिए, जो हमने अभी पढ़े हैं, योग्य बनाती है। नियंत्रित कल्पना। कोई व्यक्ति सोचता है कि, मैं इसे कर सकता हूँ, और उसे कर सकता हूँ, और वह कर सकता है। वह किसी व्यक्ति से बात करने की कल्पना कर सकता है, और वास्तव में करता है, और वह कुछ काम करने की इच्छा करता है। उसका आशय पूरीतरह से सफल होने में है, इसलिए उसका अर्थ उसकी पूरी सफलता में है। इसलिए यदि आप, अपने रास्ते को आसान बनाना चाहते हैं ठीक उसी प्रकार से, जैसे कि पूर्व के लोग करते हैं तो, अपनी इच्छाशक्ति के बारे में भूल जायें, ये वास्तव में, एक फंदामात्र और माया है। केवल नियंत्रित कल्पना को याद रखें। आप जो सोचेंगे वैसा होगा। कल्पना और विश्वास, क्या दोनों एक ही नहीं है ?

अध्याय पाँच
मृत्यु का दूसरा पक्ष

बूढ़ा त्सोंग–ताई मर गया। मानो सोते में वह लपेट लिया गया। हम दिल से बहुत दुखी थे। पूरा वार्ड संवेदना से शांत था। हम मृत्यु को जानते थे, हम मृत्यु का सामना कर रहे थे और उसे पूरे लंबे दिन में झेलते रहे थे। कई बार पूरी रात में भी। परंतु बूढ़ा त्सोंग–ताई मर गया।

मैंने उसके झुर्री पड़े, भूरे चहरे की और देखा। जैसेकि, खाल, कमाए हुए चमड़े (parchment) की तरह, खींचकर किसी ढाँचे के ऊपर लगा दी गई हो, जैसेकि, हवा में उड़ाई जाने वाली भिनभिनाती हुई पतंग के ऊपर, कसकर लगाई गई हो। बूढ़ा त्सोंग–ताई, जीवन्त, सभ्य, बृद्ध, पुरुष था। मैंने उसके पतले चेहरे की ओर, अच्छे–भले सिर की ओर, और उसकी दाढ़ी के छुटपुट सफेद हुए बालों की ओर, देखा। कुछ वर्षों पहले, वह पेकिंग के सम्राटों के महलों में, एक उच्चपदधारी अधिकारी होता था। तब क्रांति आई, और बूढ़ा व्यक्ति, भयानक गृहयुद्ध के पिछवाड़े की ओर धकेल दिया गया। उसने चुंगकिंग की ओर अपना रास्ता पकड़ा, और एक बाजार माली (market gardner) के रूप में, नए सिरे से दुबारा शुरूआत करते हुए, कठोर जमीन पर, मात्र अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए, स्वयं को व्यवस्थित किया। वह एक शिक्षित, बूढ़ा आदमी था, जिसके साथ बात करना सुखद लगता था। अब उसकी आवाज सदा के लिए शांत हो गई थी। हमने उसे बचाने का भरसक प्रयत्न किया था।

कठोर जीवन, जो उसने जिया था, उसके लिए बहुत ही मुश्किल साबित हुआ। एकदिन वह अपने खेत में काम कर रहा था, और वह गिर पड़ा। घण्टों तक वहीं पड़ा रहा। वह इतना अधिक बीमार था कि, चल–फिर भी नहीं सकता था, इतना अधिक बीमार कि, सहायता के लिए पुकार भी नहीं सका। अंत में, जबकि बहुत अधिक देर हो चुकी थी, वे हमारे पास आए। हमने बूढ़े आदमी को अस्पताल में भर्ती किया और मैंने और मेरे दोस्त ने उसकी देखभाल की। अब वहॉ कुछ भी शेष नहीं था, सिवाय इसके कि, मैं उसके दफनाये जाने की प्रक्रिया को देखूँ, और ये भी देखूँ कि, उसकी बूढ़ी पत्नी, इच्छाओं के परे उठ गई है।

मैंने प्रेम के साथ उसकी ऑखे बंद की, ऑखे, जो मेरे प्रश्नों की झड़ी लगा देने पर, अब मेरी ओर हास्यास्पदरूप से और अधिक नहीं देख पायेंगी। मैंने सुनिश्चित किया कि, उसके जबड़ों पर बांधी गई पट्टियाँ, कसकर बंधी थीं ताकि, उसका मुॅह लटके नहीं; मुॅह, जिसने मुझे इतना प्रोत्साहन दिया था, चीनी भाषा और चीनी इतिहास के बारे में, इतनी शिक्षा दी थी; क्योंकि, शाम को लगातार उस आदमी से मिलते रहना, उससे छोटी–छोटी चीजें सीखना और उससे, एक से दूसरे आदमी की बात करना, ये मेरी आदत ही बन गई थी। मैंने चादर को उसके ऊपर फैलाया और तानकर कस दिया। दिन काफी ऊपर चढ़ चुका था। एक घण्टे से कुछ ऊपर ही हो चुका था जबतक कि, मुझे अस्पताल छोड़ देना चाहिए था, क्योंकि उसकी सहायता करने और उपचारित करने के प्रयास में, मैं सत्रह घण्टे से अधिक समय के लिये कर्त्तव्य (duty) पर रहा था।

मैंने पहाड़ी के ऊपर की तरफ को, अच्छी तरह से प्रकाशित दुकानों से गुजरते हुए, अपना रास्ता पकड़ा, क्योंकि अंधेरा हो चुका था। मैंने अंतिम मकानों को भी गुजर जाने दिया। आकाश पर बादल छाये हुए थे। नीचे बंदरगाह में, बगल के घाटों पर, पानी कोड़े से मार रहा था और जहाज अपने लंगर बाँधने की जगह पर उछलकर, डावाँडोल हो रहे थे।

जैसे ही मैं अपने रास्ते पर, लामामठ की ओर चला, हवा गहराई और मानो चीड़ के पेड़ों के बीच में से, दुखी होकर कराह उठी। किसी कारण से, मैं काँप गया। मैं भयानक दर्द के आतंक से दब गया। मैं अपने मन से मौत के ख्याल को निकाल नहीं सका। मनुष्यों को इतनी पीड़ा के साथ क्यों

मरना पड़ता है ? बादल तेज चाल से, जैसे कि, व्यापार में लगे आदमियों के ध्यान अपने कामों पर रहते हैं, चन्द्रमा के चेहरे को धुंधला करते हुए, उसे साफ करते हुए, फर के पेड़ों के बीच, झरोंखों से आने वाली चाँदनी से अंधेरे को प्रकाशित करते हुए, सिर से ऊपर से होकर, गुजर रहे थे। बादल फिर–फिर कर, साथ–साथ आ जाते, चॉदनी पूरी तरह रुक जाती और सबकुछ धुंधला, अंधेरा और अपशकुनी हो जाता। मैं काँप गया।

जैसे ही में सड़क पर चला, मेरे कदमों ने शांति में, खोखली गूंज पैदा की, ऐसी गूंज मानो कि कोई ठीक मेरे पीछे ही चलते हुए, मेरा पीछा कर रहा है। मैं परेशान हो गया, मैं फिर से काँपा, और मैंने अपनी पोशाक को अपने चारों तरफ कसकर लपेट लिया। ये किसी चीज के लिए परेशानी होगी, मैंने स्वयं से कहा। ''मैं वास्तव में कुछ अतिविशिष्ट अनुभव कर रहा हूँ। मैं सोच नहीं पा रहा कि, ये क्या हो सकता है''। ठीक तभी, मैं छोटे पथ से, जो कि लामामठ की पहाड़ी की ओर जाता था, पेड़ों के बीच होता हुआ, प्रवेशद्वार पर आया। मुख्य सड़क से हटकर, दांए हाथ को मुड़ा। कुछ क्षणों के लिए, जहाँ पर गिरे हुए पेड़ों ने एक दूसरे को रोक रखा था, उनके बीच की थोड़ी सी खाली जगह में होकर, मैं इसके साथ तबतक चलता रहा। अब पेड़ों में से कोई जमीन पर गिर पड़ा था और दूसरा कोई तिरछा झुका हुआ खड़ा था। ''मैं सोचता हूँ कि, थोड़े समय के लिए बैठ लिया जाए। मैं नहीं जानता कि, मेरे साथ क्या हो रहा है'' मैंने स्वयं से कहा। इसके साथ ही, मैं पेड़ों के बीच खाली जगह में से होकर निकला और किसी पेड़ के तने के पास, साफ स्थान की खोज करने लगा। मैं नीचे बैठ गया और मैंने अपनी पोशाक को अपनी टांगों के पास, उन्हें बर्फीली ठंडी हवा से बचाने के लिए, खींचकर लपेट लिया। ये भयानक था। अजीब, रोंगटे खड़े कर देने वाली चीखें और सरसराहट, उस रात की सभी छोटी–मोटी आवाजें मेरे ऊपर टूट पड़ीं। ठीक तभी, चलते हुए बादल, सिर के ऊपर से निकल गए और अच्छी चमकीली चांदनी की एक किरण, जैसे कि एक साफ दिन में, शरीर को प्रकाशित करती हुई, रिक्तस्थान के बीच आई। ये मुझे अजनबी लगी; प्रकाश, चॉदनी, उतनी ही चमकीली, जितनी कि, सबसे चमकदार धूप हो सकती है। मैं काँप गया, और खतरे को देखकर, अपने पैरों पर उछल गया। खाली जगह के दूसरी तरफ से, एक आदमी, पेड़ों के पास आता जा रहा था। ताज्जुब के साथ, मैंने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा। ये कोई तिब्बती लामा था। अपनी छाती में से खून उड़ेलते हुए, अपनी पोशाक पर धब्बे डाले हुए, एक लामा मेरी ओर को आ रहा था। उसके हाथ भी खून से रंगे हुए थे। वह मेरी ओर आया, और मैं, तने के एक ठूंठ के ऊपर, लगभग ठोकर खाकर गिर गया। मैं भय में बैठ गया। ''लोबसांग, लोबसांग क्या तुम मुझसे डर गए हो ? एक सुपरिचित आवाज गॅूजी। मैं खड़ा हुआ, अपनी आँखों को मला और उस आकृति की ओर दौड़ा। रुको!'' उसने कहा, ''तुम मुझे छू नहीं सकते, मैं तुम्हें अंतिम अलविदा (good bye) कहने आया हूँ क्योंकि, इससमय मेरे पृथ्वी पर रहने का समय समाप्त हो गया है, और मैं जाने ही वाला हूँ। क्या हम बैठकर बातें करें ?'' मैं, टूटे दिल से, भौंचक्का हुआ, और अपना स्थान गिरे हुए पेड़ के ऊपर बनाते हुए, नम्रता के साथ मुड़ा। सिर के ऊपर बादल घुमड़ रहे थे, एक 'रात की चिड़िया' केवल अपने खाने की तलाश के ख्याल से, स्पष्टरूप से हमें और हमारे कार्य को देखते हुए, मेरे सिर के ऊपर घूम रही थी। उस तने के एक सिरे के ऊपर, जिसपर हम बैठे थे, कहीं से एक 'रात का प्राणी' आया और खाने की तलाश में, सड़ी हुई वनस्पतियों के ऊपर रेंगने लगा। यहाँ इस उजाड़ रिक्तस्थान में, हवा ने सब साफ कर दिया और सब सुखा दिया। मैं बैठा और एक प्रेत से बात की; मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के प्रेत से, जो जीवन के परे जाकर, मुझसे बात करने के लिए लौटे थे।

वह मेरे बगल में बैठे, जैसेकि, इससे पहले भी, ल्हासा में कई बार मेरे साथ बैठ चुके थे। मुझे स्पर्श न करते हुए, शायद मुझसे तीन गज दूरी पर। ''लोबसांग, जब तुमने ल्हासा छोड़ा, उससे पहले, तुमने मुझे ये बताने के लिए कहा था कि, मेरे इस पृथ्वी पर जीवन का समय, कब खत्म हो रहा है।

अब मेरे जीवन का समय समाप्त हो गया। मैं यहाँ हूँ'' मैंने उनकी ओर, जिनको मैं बाकी सभी दूसरे आदमियों से ऊपर समझता था, देखा। मैंने उनकी ओर देखा और इस तरह के चीजों के तमाम अनुभव होने के बावजूद भी मुश्किल से ही विश्वास कर पाया– कि ये व्यक्ति, अब हाड़मांस के शरीर में नहीं था, परंतु एक आत्मा था, जिसकी रजततंतु काट दी गई थी और स्वर्ण का कटोरा, हिल रहा था। जैसा कि मैं उन्हें जानता था, उन्होंने घनीभूत होते हुए, पूर्णरूप से मेरी और देखा। सुनहरे रंग के आवरण के साथ, ईंटिया लाल चोगे में, वह अपनी पोशाक में थे। वह थके हुए से दिखाई दिए, मानो कि, अत्यंत कष्ट के साथ, उन्हें लंबी यात्रा करनी पड़ी हो। मैं ये देख सकता था कि, उन्होंने दूसरों की सेवा में और उनके भले के लिए, अपने सुखों का त्याग कर दिया था। ''वह कितने दुबले दिखाई देते हैं,'' मैंने सोचा। तब वह, उस आदत में जिसे मैं जानता था, थोड़े से मुड़े। उनकी पीठ में एक खंजर भोंक दिया गया था। उन्होंने अपना कंधा थोड़ा सा झटका और स्वयं को व्यवस्थित किया और मेरी ओर चेहरा घुमाया। जैसे ही मैंने देखा कि, खंजर का सिरा, उनकी छाती से बाहर निकला हुआ था, और घाव में से खून गिर रहा था, खून गिरकर बाहर आ रहा था, और उसने सुनहरी पोशाक को पूरी तरह से भिंगो दिया था, मैं डर के मारे जम गया। इससे पहले वह मेरे लिए धुंधले धब्बे जैसे थे। मैंने विस्तार से नहीं देखा। मैंने उन्हें, उनकी छाती में खून बहते हुए देखा, उनके हाथों में खून देखा, परंतु अब मैं अधिक समीप से, ध्यान से, देख रहा था। हाथ, जो मैंने देखे खून से रंगे हुए थे, जहाँ उन्होंने, जब खंजर घुसा तो, अपने हाथों से उसे पकड़ लिया था। मैं काँप गया और मेरे अंदर का खून जम गया। उन्होंने मेरी टकटकी बंधी निगाह को देखा, उन्होंने मेरे चेहरे के ऊपर छाए आतंक को देखा और उन्होंने कहा, मैं तुम्हारे सामने जानबूझ कर इस तरह आया हूँ लोबसांग, ताकि तुम यह देख सको कि, क्या हुआ है ? अब चूंकि तुमने मुझे इसतरह से देख लिया है, अब वैसे देखो जैसा मैं हूँ।'' मांस में से खून के धब्बे गायब हो गए, एक सुनहरी रोशनी चमकी और तब वह एक सुंदरता के साथ, पूर्णशुद्धि के साथ, दृष्टि में परिवर्तित हो गए। ये एक प्राणी था, जो अपने विकास के मार्ग पर ऊँचा उठ चुका था। एक प्राणी, जो बुद्धत्व को प्राप्त हो चुका था।

तब इतनी स्पष्ट, जितनी कि मंदिर की घंटियाँ, उनकी आवाज मेरे पास पहुँची, शायद मेरे भौतिक कानों की ओर नहीं, परंतु मेरी अंतरात्मा की ओर। सुंदरता की एक आवाज, अनुरागभरी, सख्ती से भरपूर, जीवन से, वृहदजीवन से भरपूर। ''मेरे पास समय कम है, लोबसांग मैं शीघ्र ही अपने पथपर जाऊँगा, क्योंकि वहाँ वे लोग हैं, जो मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। परंतु तुम, मेरे मित्र, तमाम साहसिक कार्यों में मेरे साथी, तुम्हें प्रसन्न करने, तुम्हें आश्वासन देने, और ये कहने के लिए, मुझे सबसे पहले तुम्हारे पास आना था, ''विदाई, कुछ समय के लिए।'' लोबसांग, भूतकाल में, इस संबंध में, इन मामलों में हम आपस में इतनी देर तक बात कर चुके हैं। मैं तुमसे फिर कहता हूँ, तुम्हारा पथ कठिन होगा, खतरनाक होगा, और लंबा होगा, परंतु इस सबके बावजूद, पश्चिम के लोगों के पूरे विरोध और ईर्ष्या के बावजूद भी अंत में तुम सफल होगे।''

लंबे समय तक हम बातें करते रहे; उन चीजों के लिए, जो हमारे बीच में अभिन्न थीं। मैं गर्म और आनंद की स्थिति में था। रिक्तस्थान, गर्मी के किसी दोपहर से भी ज्यादा, तीव्रतमधूप से भी अधिक चमक के साथ, सुनहरी चमक से भर चुका था। मैं सच्चे प्यार से भरा हुआ था। तभी अचानक मेरे शिक्षक, मेरे प्रिय, लामा मिंग्यार डोंडुप, अपने पैरों पर खड़े हुए परंतु उनके पैर जमीन के सम्पर्क में नहीं थे। उन्होंने अपने हाथों को मेरे सिर के ऊपर फैलाया और अपना आशीर्वाद दिया, और उन्होंने कहा, ''मैं हमेशा तुम्हारी निगरानी करूँगा लोबसांग, तुम्हारी उतनी मदद करूँगा, जितनी मैं कर सकता हूँ, परंतु पथ कठिन है, झटके तमाम लगेंगे, और आज भी, जब ये दिन समाप्त होगा, तुम्हें एक और धक्का लगेगा। झेलो, लोबसांग झेलो, जैसे तुम पिछले समय में झेलते रहे हो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।'' मैंने अपनी ऑखों को उठाया और मेरी आँखों के सामने, देखते ही देखते, वे हलके पड़ गए और चले

गए। सुनहरा प्रकाश समाप्त हो गया और अब बिलकुल नहीं था, और रात का अंधेरा दौड़ता हुआ आया और हवा ठंडी हो गई। सिर के ऊपर बादल, गुस्से में उत्पात मचाते हुए दौड़ लगाने लगे। रात के छोटे–छोटे प्राणी छटपटाने और भागदौड़ करने लगे। एक छोटे प्राणी की, बड़े प्राणी का शिकार होने की एक, आतंक भरी चीख गूँजी, जो उसकी अंतिम सांस के साथ थी।

एक क्षण के लिए मैं स्तब्ध रह गया, तब मैंने जमीन पर लात मारी और एक पेड़ के ठूंठ के पास बगल से खड़ा हो गया, तब मैंने घास के ऊपर नाखून से नोंचा और मैं अपने सम्पूर्ण प्रशिक्षण के बाद भी, थोड़े समय के लिए, मैं आदमी नहीं बचा था। तब मुझे अपने अंदर वो प्यारी आवाज, एकबार फिर दुबारा सुनाई दी। ''प्रसन्न रहो मेरे लोबसांग, प्रसन्न रहो क्योंकि ये आखिरी समय नहीं है, क्योंकि वह सब जिसके लिए हम लड़ते रहे, मूल्यवान है और अवश्य होगा। ये अंत नहीं है।'' इसलिए मैं अपने पैरों पर काँपता हुआ उठा, अपने विचारों को संघनित किया, अपनी पोशाक को झाड़ा, और अपने हाथों में जमीन से लगी हुई कीचड़ को रगड़कर साफ किया।

धीमे–धीमे, मैंने अपनी यात्रा को, ऊपर पहाड़ी की ओर, लामामठ की ओर, अपने पथपर जारी रखा। ''मृत्यु,'' मैंने सोचा, ''मैं खुद अपनी मृत्यु के दूसरी तरफ जा चुका हूँ, परंतु मैं लौट आया। मेरे शिक्षक, मेरी पहुँच के बाहर, बुलाने के परे चले गए हैं। वे गए, और मैं यहाँ अकेला हूँ।'' इसलिए अपने मन में इन सारे विचारों के साथ, मैं लामामठ में पहुँचा। प्रवेशद्वार पर ही काफी संख्या में भिक्षुक थे, जो दूसरे रास्तों से अभी वापस लौटकर आए थे। अंधे होकर, मैं उनके साथ (भीड़ में) रगड़ा, और उनके साथ–साथ अंधेरे में मंदिर को रास्ता बनाया, जहाँ पवित्र छवियाँ मेरी ओर टकटकी लगाकर देख रही थीं और अपने गढ़े गए चेहरों पर समझ तथा करुणा रखती हुईं प्रतीत हुईं। मैं पूर्वजों के टेबलेट पर देखने लगा, लालपट जिनके ऊपर सुनहरे संकेत थे, हमेशा जलते रहने वाली सुगंधियों, जिनकी सुगंध धुंए के रूप में घूमती हुई लटक रही थी, जैसे कि एक सोता हुआ सा बादल, फर्श और सिर के ऊपर ऊँचीछत के बीच में घुमड़ रहा हो। मैंने दूरस्थित कोने की तरफ को अपना रास्ता बनाया, जो वास्तव में, एकदम सही एवं पवित्र जगह थी, और मैंने फिर दुबारा सुना, ''प्रसन्न रहो लोबसांग, अति प्रसन्न हो, क्योंकि यह वह अंत नहीं है, जिसके लिए हमने इतना झेला और ये झेलने लायक है और होगा। प्रसन्न रहो। मैं डूबकर पद्मासन की स्थिति में बैठ गया, और भूत और वर्तमान के ख्यालों में विचरने लगा। मैं नहीं जानता, मैं कितने समय तक इस स्थिति में रहा। मेरे शब्द, मेरे चारों ओर घुमड़ रहे थे। कठिनाइयाँ मेरे ऊपर घिरती जा रही थीं। मेरे प्रिय शिक्षक इस दुनियाँ से विदा हो गए थे, लेकिन उन्होंने मुझे बताया था, ''ये अंत नहीं है, ये सब मूल्यवान है।'' मेरे समीप के भिक्षु, अपने–अपने कार्यों में, धूल साफ करने में, तैयार करने में, ताजी सुगंध को जलाने में, मंत्र जाप में, जुट गये परंतु कोई भी मेरे दुख में विक्षुब्ध करने नहीं आया, क्योंकि में अकेला बैठा था।

रात चलती गई। भिक्षुओं ने प्रार्थना के लिए तैयारी की। चीनीभिक्षु, मुंड़े हुए सिरों के साथ, अपनी काली पोशाक में, अपनी खोपड़ी में जलाएगए सुगंधि के चिन्हों सहित, मक्खन के दीपों की हिलती हुई रोशनी में, प्रेत की तरह दिखते हुए (उपस्थित थे)। जैसे ही मंदिर की ऊँची आवाजें गूंजी और चांदी की घंटियाँ बजीं, मंदिर का पुजारी, अपने पॉच मुँह वाले बुद्ध के मुकुट में, मंत्र जपता हुआ आया। मैं धीमे से अपने पैरों पर उठा और अपने अनिच्छुक मन से मठाध्यक्ष की ओर चला। उसके साथ मैंने, जो हो चुका था उसका विचार किया, और यह कहते हुए कि, मैं दिल से बहुत बीमार था, मध्यरात्रि की प्रार्थना से मुझे छोड़े जाने के लिए, उनको कहा। मैं अपने दुख को लामामठ के विश्व को नहीं दिखाना चाहता था। उन्होंने कहा, ''नहीं, मेरे भाई! तुम्हारे लिए खुशी मनाने का कारण है, तुम मृत्यु के परे जाकर वापस लौटे हो, और आज के दिन तुमने अपने शिक्षक से सुना है, और तुमने अपनी ऑखों से उनके जीवंत बुद्धपन के सबूत को देखा है। मेरे भाई, तुम्हें दुखी महसूस नहीं करना चाहिए क्योंकि, जाना आवश्यक, परंतु अस्थाई है। रात्रि की प्रार्थनासभा में आओ मेरे भाई, और उस चीज का आनंद लो,

जो कि, बहुत से लोगों को उपलब्ध नहीं है।''

''प्रशिक्षण सब अच्छा ही है,'' मैंने सोचा। ''मैं ठीक से जानता हूँ कि, इसलोक में मृत्यु, कहीं दूसरे वृहद जीवन में जन्म है। मैं जानता हूँ कि, मृत्यु बिलकुल नहीं होती कि, ये माया का संसार है, और वास्तविक जीवन, अभी आना बाकी है, जब हम इस पृथ्वी, जो एक पाठशाला को छोड़कर अधिक कुछ नहीं है, जिसमें हम अपने पाठों को सीखने के लिए आते हैं, के स्वप्न की अवस्था से बाहर हो जाते हैं। मृत्यु ? ऐसी कोई चीज नहीं है। तब मैं क्यों दिल से दुखी हूँ ?'' जब मैंने इस प्रश्न को स्वयं से पूछा, लगभग उससे पहले ही उत्तर मेरे मन में आ गया। मैं निराश हूँ, क्योंकि मैं स्वार्थी हूँ, क्योंकि मैंने वह खो दिया है, जिसको मैं प्यार करता था, क्योंकि जिसको मैं प्यार करता था, वह मेरी पहुँच के बाहर है। मैं वास्तव में स्वार्थी हूँ, क्योंकि जो चला गया है, वह भव्यजीवन के लिए गया है, जबकि अभी भी मैं इस पृथ्वी के भंवर में लुभाया हुआ, फंसा हुआ हूँ, झेलने के लिए, दुखी होने के लिए, भूखा रहने के लिए, वह कार्य करने के लिए छोड़ा गया, जिसके लिए एक विद्यार्थी स्कूल में आता है और तबतक परेशान होता है, जबतक कि वह अंतिम परीक्षा पास नहीं कर लेता। तब अपनी नई योग्यताओं के साथ, दुबारा नए सिरे से सीखने के लिए, वह दुनियाँ में जाता है। मैं स्वार्थी हूँ, मैंने कहा, क्योंकि मैं अपने खुद के स्वार्थलाभ के लिए, अपने प्रिय शिक्षक को इस भयानक दुनियाँ के ऊपर, यहाँ रखना चाहता हूँ।

मृत्यु ? मृत्यु में डरने जैसा कुछ नहीं है। ये वह जीवन है, जिसके बारे में हम डरते हैं। जीवन, जो हमें तमाम गलतियों को दूर करने के लिए सक्षम बनाता है।

मृत्यु से भय खाने की कोई जरूरत नहीं है। इस जीवन से वृहदजीवन में जाने पर, डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। नरक से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस तरह का कोई स्थान है ही नहीं, न्याय का दिन जैसा कुछ भी नहीं है। मनुष्य स्वयं अपने आपका न्याय करता है, और मनुष्य की अपनी कमजोरियों के अलावा कोई दूसरा कठोर न्यायाधीश भी नहीं है, अपनी खुद की कमजोरियाँ, जब वह इस पृथ्वी से जीवन के परे चला जाता है और जब वह अपनी ऑखों से अपने गलत मूल्यों को गिरते हुए देखता है, और जब वह सच्चाई को देख पाता है[9] : इसलिए आप सभी, जो मृत्यु से डरते हैं, किसी ऐसे से जानें, सीखें, जो मृत्यु के पार जा चुका है, और वहाँ से वापस लौट चुका है। मृत्यु से भय करने की आवश्यकता नहीं है, न्याय का कोई दिन नहीं होता, सिवाय इसके कि, इसे आप स्वयं करते हैं। कोई नरक नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति, इससे मतलब नहीं कि, वह क्या है न इससे कि, उन्होंने क्या किया है, को एक अवसर दिया जाता है। कोई भी हमेशा के लिए नष्ट नहीं होता। कोई भी इतना खराब नहीं होता कि, उसे दूसरा अवसर ही न दिया जा सके। हम दूसरों की मृत्यु से डरते हैं क्योंकि, ये हमें उनके अच्छे प्रेम, और उनके साथ, से वंचित कर देता है। क्योंकि हम स्वार्थी हैं, और हम अपनी खुद की मृत्यु से डरते हैं, क्योंकि ये अज्ञात में एक यात्रा है और जिसे हम बिलकुल नहीं समझते, जिसे हम बिलकुल नहीं जानते, उससे हम डरते हैं। लेकिन – कोई मृत्यु नहीं है केवल दूसरे रूप में, वृहदजीवन में जन्म है। सभी धर्मों के प्रारंभिक दिनों में, ये शिक्षा थी; मृत्यु नहीं है केवल दूसरे स्तर पर वृहदजीवन में जन्म है। पुजारियों की पीढ़ी दर पीढ़ी, सत्य का ये पाठ, बदलता रहा है, भ्रष्ट होता रहा है, जब तक कि, उन्होंने हमको गंधक और उसकी तितली के साथ, और नरक की कहानियों की साथ, डर के साथ, धमकाया नहीं। वे, ये सब अपनी शक्तियों को बढ़ाने के लिए करते हैं, यह कहने के लिए कि ''हम पुजारी हैं, हमारे पास स्वर्ग की कुंजी है। हमारी आज्ञा का पालन करो या नरक में जाओ।'' लेकिन मैं, दूसरे अनेक लामाओं की तरह, मृत्यु के दूसरी तरफ जा चुका हूँ और वापस लौट चुका हूँ। हम सत्य को जानते हैं। हम जानते हैं कि, वहाँ हमेशा प्रतीक्षा रहती है, किसी ने

---

9 अनुवादक की टिप्पिणी : Dr. Michel Duff Newton, ने अपनी पुस्तकों Destiny of souls तथा Journey of souls में भी कुछ ऐसा ही लिखा है। श्री न्यूटन ने बड़ी संख्या में, मरीजों को गहरे सम्मोहन में ले जाकर, उनके पिछले जीवनों का (past life regression) अध्ययन किया है, और दो जीवनों के बीच में, आत्माओं को, इस और विगत अनेक जीवनों की झाँकी दिखाकर, अपना अगला जीवन स्वयं चुनने की स्वतंत्रता दिये जाने की पुष्टि की है। लॉस एंजिलिस में रहने वाले, अंर्तराष्टीय ख्यातिप्राप्त, न्यूटन जानेमाने मनोवैज्ञानिक, सम्मोहक, और लेखक हैं।

कुछ भी किया हो, कोई फर्क नहीं पड़ता, कोई फर्क नहीं पड़ता, कोई अपने आपको कितना भी दोषी क्यों न महसूस करे। हर आदमी को संघर्ष करना चाहिए क्योंकि, आशा हमेशा बनी ही रहती है। लामामठ के मठाध्यक्ष ने मुझे कहा था, ''अर्द्धरात्रि की प्रार्थनासभा में शामिल हो, मेरे भाई, और ये, तुमने इस दिन जो देखा है, मुझे बताओ। मुझे यह भयानक लगा। वास्तव में, ये मेरे लिए अग्निपरीक्षा थी। मैं दिल से दुखी था। मेरे अंदर भयानक डर बैठा हुआ था, मैं मंदिर के एकांत कोने में, ध्यान करने के लिए लौटा, जिससे कि, भयानक शाम गुजर जाए। मिनिट, घण्टों की तरह, और घण्टे, दिनों की तरह प्रतीत हो रहे थे और मैंने सोचा कि, मैं कभी इसके साथ नहीं रहूँगा। भिक्षु आए और गए। मंदिर के गर्भगृह में मेरे आसपास चेतनता थी, परंतु मैं, भूतकाल के ऊपर विचार करते हुए, और भविष्य से भयभीत होते हुए, अपने ख्यालों में अकेला था।

परंतु यह नहीं होना था। कुल मिलाकर मुझे, अर्द्धरात्रि की प्रार्थनासभा में शामिल नहीं होना था। जैसे कि, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझे पहले ही, शाम को ही, चेतावनी दे दी थी कि, अगला झटका अभी आना बाकी है, दिन समाप्त होने से पहले, एक भयानक झटका। मैं अपने शांत कोने में, भूतकाल पर सोचते हुए, और भविष्य के संबंध में, ध्यान कर रहा था। उस रात को लगभग ग्यारह बजे जब मेरे आसपास के सभी लोग शांत थे, मैंने एक आकृति को अपनी ओर आते हुए देखा। ये एक बूढ़ा लामा था, जो ल्हासा के मंदिर में, कुलीनलोगों में से था। एक वृद्ध जीवंतबुद्ध, जिसे अधिक समय तक इस पृथ्वी पर जिन्दा नहीं रहना पड़ा। वह गहरी छाया में से मेरी तरफ, जहाँ मक्खन के टिमटिमाते हुए दीपक थे, को बढ़ा। वह आया, और उसके चारों तरफ नीले से रंग की आभा थी। उसके सिर के चारों तरफ की आभा पीली थी। वह हाथ फैलाए हुए, हथेलियाँ ऊपर की तरफ किये हुये, मेरी ओर आया, और कहा, ''मेरे बेटे, मेरे बेटे, मेरे लिए तुम्हें पार लगाना, भारी काम है। अंतरतम तेरहवें दलाई लामा, इस श्रृंखला की अंतिम कड़ी, इस विश्व से शीघ्र ही गुजरने वाले हैं।'' वृद्ध आदमी, भिक्षु, जो मेरे पास आया था, ने मुझे बताया कि, चक्र का अंत समीप आ रहा है, और ये कि, दलाई लामा बस गुजरने ही वाले हैं। उसने मुझे कहा कि, मुझे बहुत जल्दी करनी चाहिए और ल्हासा को लौटना चाहिए, ताकि बहुत अधिक देर होने से पहले, मैं उन्हें देख सकूँ। उसने मुझे यह बताया, फिर उसने कहा, ''तुम्हें बहुत जल्दी करनी चाहिए। लौटने के लिए तुम जो भी साधन ले सकते हो लो। ये अनिवार्य है कि, तुम आज रात को ही यहॉ से छोड़ दो।'' उसने मेरी ओर देखा, और मैं अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ। जैसे ही मैंने ऐसा किया, वह धुंधला गया, और एक छाया में वापस समा गया, जो अब वहाँ नहीं थी। उसकी आत्मा, उसके शरीर, जो अभी भी ल्हासा में जोकांग में था, में लौट चुकी थी। मेरे लिए घटनायें बहुत तेजी से घट रही थीं। एक दुख के बाद दूसरा दुख, घटना के बाद घटना। मैं स्तब्ध रह गया। मेरा प्रशिक्षण, वास्तव में, बहुत कठोर रहा था। मुझे जीवन के बारे में और मृत्यु के बारे में, और कोई भावना प्रदर्शन नहीं करने के संबंध में, पढ़ाया गया था, परंतु फिर भी कोई क्या कर सकता है जब किसी के प्रिय मित्र तेजी से, एक के बाद एक, मर रहे हों ? क्या किसी आदमी को पत्थरदिल होना चाहिए, जमा हुआ चेहरा, और सबसे एकदम अलग, अथवा किसी को गर्म भावना भी रखनी चाहिए ? मैं इन व्यक्तियों को प्रेम करता था। बूढ़ा त्सोंगताई, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप और तेरहवें दलाई लामा, अब एक ही दिन में, कुछ ही घण्टों के अंतराल में, मुझे बताया गया था कि, एक के बाद एक ये मर रहे हैं। दो पहले ही मर चुके थे और अब तीसरा.... कितना समय है वह भी चले जायेंगे ? कुछ दिन। मुझे जल्दी करनी चाहिए, मैंने सोचा। मैं लौटा और अंदर वाले मंदिर से लामामठ के मुख्यभवन की ओर, अपना रास्ता तय किया। मैं पत्थर के गलियारों में अंदर होकर, मठाध्यक्ष की कोठरी की ओर गया। जैसे ही मैं उनके कमरे की ओर मुड़ने ही वाला था, मैंने अचानक पदचाप और धमाके की आवाज सुनी। मैंने अपने कदम तेज कर दिए। दूसरे भिक्षु, जेरसी, वह भी तिब्बत से था, ल्हासा से नहीं परंतु चांबो से, को भी किसी दूसरे लामा के द्वारा, ये दूरानुभूति–संदेश मिला था। वह भी चुंगकिंग को छोड़ने के लिए और

उसके बाद, मेरे सहायक के रूप में, मेरे साथ वापस लौटने के लिए, उद्वेलित था। ये वह आदमी था, जिसने मोटरवाहन और आने–जाने के दूसरे अन्य साधनों का, अध्ययन किया था। वह काफी जल्दी में था; शीघ्र ही अपने संदेशवाहक के जाने के बाद, वह अपने पैरों पर उछलकर खड़ा हुआ और पत्थर के गलियारे के नीचे की ओर, मठाध्यक्ष की कोठरी की ओर, दौड़ा उसने कोई समझौता नहीं किया, बल्कि मक्खन के ऊपर, जो किसी लापरवाह भिक्षु के हाथ से, दीपक से जमीन पर गिर गया था, फिसल गया। वह फिसलकर बुरी तरह जमीन पर गिरा। उसका एक हाथ और एक टाँग टूट गई और जैसे ही मैं कोने की ओर मुड़ा, मैंने उसे, उसकी एक हड्डी बाहर निकली हुई, मृत्यु के निकट, हाँफते हुए, वहाँ लेटे हुए देखा।

इस शोरशराबे पर मठाध्यक्ष अपनी कोठरी के बाहर आए। हम दोनों अपने घायल, गिरे हुए भाई के बगल से, घुटनों पर झुककर बैठ गए। मठाध्यक्ष ने उसके कंधों को पकड़ा, जबकि मैंने टूटी हड्डी को वापस जमाने के लिए, उसकी कलाई को खींचा। तब मैंने खपच्चियाँ और पट्टियॉ मंगाईं, और शीघ्र ही जरसी की भुजा और टांग को, खपच्चियों और पट्टियों से बांध दिया। टाँग का मामला थोड़ा अलग था, क्योंकि, ये एक विवृत अस्थिभंग (compound fracture) था, और हमें उसके कक्ष की ओर ले जाना पड़ा, और खिंचाव (traction) लगाना पड़ा। तब मैंने उसे किसी दूसरे की देखभाल में छोड़ा।

मठाध्यक्ष और मैं उसकी कोठरी की ओर गए, जहाँ मैंने उसे, उस संदेश के बारे में बताया, जो मुझे मिला था। मैंने अपने दृश्य के बारे में उसको वर्णन किया, उसे स्वयं को भी, लगभग इसीप्रकार का एक प्रभाव मिला था। इसलिए तब ये तय किया गया कि, मैं लामामठ को इसी क्षण छोड़ दूँ। मठाध्यक्ष ने शीघ्रता से एक संदेशवाहक को भेजा, जो दौड़कर, चुंगकिंग के लिए घोड़ा लाने के लिए, और सरपट दौड़ते हुए जाने के लिए, एक मिशन के लिए गया। मैं खाना खाने के लिए और अपने साथ खाना बांधने के लिए ही रुका। मैंने अतिरिक्त कंबल और अतिरिक्त पोशाकें लीं, और तब मैं, खुलेस्थान में से गुजरते हुए, जहाँ शाम की शुरुआत में मुझे इस तरह का सदैव स्मरणीय अनुभव प्राप्त हुआ था, जहॉ पर मैंने अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप को अंतिम बार देखा था, नीचे की ओर अपने मार्गपर पैदल ही चला। भावना की पीड़ा को अनुभव करते हुए, अपनी भावनाओं से लड़ते हुए, लामा की अविचलित निर्विकार चालढाल में, मैं चलता गया। इसप्रकार मैं अपने पथ के अंत में आया, जहाँ मैं सड़क पर पहुँचा। मैं खड़ा रहा और प्रतीक्षा करता रहा।

मेरे पीछे, मैंने सोचा कि, मंदिर में कांसे के घड़ियालों की गहरी आवाजें, भिक्षुओं को प्रार्थनासभा के लिए बुला रही होंगी। चांदी की घंटियों की टुनटुनाहट इन प्रतिउत्तरों को रोक देगी और बांसुरियाँ और तुरहियाँ बजाई जायेंगीं। शीघ्र ही रात में हवा चली और एक शक्तिशाली मोटर की आवाज सुनाई दी और कुछ दूरी पर उसके हेडलेम्पों की चांदी जैसी चमकदार किरणें दिखाई दीं, और एक दौड़ती हुई कार, दौड़वाली कार, टायरों की चीख के साथ, सड़क पर मेरी ओर आकर रुकी। उसमें से एक आदमी बाहर कूदा। ''आपकी कार, आदरणीय लोबसांग रम्पा, क्या मैं इसे पहले घुमा लॅू ?'' ''नहीं,'' मैंने जवाब दिया। ''बांये हाथ की ओर पहाड़ी से नीचे उतरो।'' मैं ड्रायवर के बगल से कूदकर अंदर बैठ गया। चुंगकिंग को छोड़ता हुआ भिक्षु, जिसे मठाध्यक्ष ने बुलाया था, ड्रायवर को और शक्तिशाली कार को पाने के लिए दौड़कर आया। वास्तव में ये एक शक्तिशाली वाहन था, एक गहरीकाली अमरीकन मोंस्टर। मैं ड्रायवर के बगल में बैठा और हमने चेंगतू की सड़क पर, जो चुंगकिंग से दो स मील दूर था, तेजी से, पूरी रात गाड़ी भगाई। इसके आगे प्रकाश के तमाम झुण्ड, हेडलैम्प से हमें सड़क की ऊबड़ खाबड़ गड्ढों को दिखाते हुए, बगल के पेड़ों को प्रकाशित करते हुए, और भद्दी छायाएं दिखाते हुए, मानोकि हमें पकड़ने के लिए डरा रही हों, मानोकि हमें तेजी से और तेज चलने के लिए डरा रही हों दौड़ते रहे। ड्रायवर इजेन, एक अच्छा, सुप्रशिक्षित, सुरक्षित चलने में सक्षम ड्रायवर था। तेजी से और तेजी से हम सड़क पर एक धुंधलके के साथ चले। मैं पीछे बैठा, और सोचता रहा,

सोचता रहा।

मेरे दिमाग में, मेरे प्रिय शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप का विचार, और जिस ढंग से उन्होंने मुझे प्रशिक्षित किया, और वह सब जो उन्होंने मेरे लिए किया, था। मेरे माता–पिता के बजाय, वह मेरे लिए, अधिक महत्वपूर्ण थे। मेरे दिमाग में मेरे प्रिय शासक के विचार भी थे। तेरहवें दलाई लामा, अपनी श्रृंखला की अंतिम कड़ी, क्योंकि पुराना भविष्यकथन यह कहता था कि, तेरहवें दलाई लामा गुजर जायेंगे, और उनके गुजरने के बाद तिब्बत में एक नई व्यवस्था आयेगी। 1950 में चीनी साम्यवादियों ने तिब्बत में अतिक्रमण प्रारंभ किया, परंतु इससे पहले साम्यवादियों का तीसरा स्तंभ ल्हासा में रहता था। मैंने इस सब के ऊपर विचार किया, जो मैं जानता था कि, ये सब होने वाला है, मैं इसे 1933 में जानता था, मैं इसे 1933 से पहले जानता था क्योंकि, सबकुछ ठीक वैसे ही हो रहा था, जैसा कि भविष्यकथन था।

इसलिए हम दो सौ मील दूर स्थित, चेंगतू के लिए, पूरी रात दौड़ते रहे। चेंगतू में हमें और पेट्रोल लेना पड़ा, हमने अपनी टांगों को लगभग दस मिनिट तक के लिए फैलाया और खाना खाया। उसके बाद हम फिर उस जंगली रास्ते पर चेंगतू से लगाकर याआन तक अंधेरे में, पूरी रात चले। अभी हमें सौ मील दूर और जाना था, और वहाँ जैसे–जैसे भोर होती जा रही थी, सूरज की पहली किरणें आकाश में चमक रही थीं। सड़क समाप्त हुई, कार इससे आगे नहीं जा सकती थी। मैं लामामठ में गया, जहाँ दूरानुभूति से यह संदेश प्राप्त हो गया था कि, मैं अपने रास्ते पर हूँ। एक घोड़ा तैयार था, एक अच्छा दमदार घोड़ा, एक जिसमें लात मारते ही वह, पीछे के पैरों पर खड़ा हो जाता था, परंतु इस आकस्मिकता में, मेरे पास आनाकानी करने के लिए, घोड़े को मनाने के लिए, समय नहीं था। मैं चढ़ गया और उस पर बैठा, और घोड़े ने ऐसा दिखाया मानो, वह इस उद्देश्य पर जाने की मेरी आकस्मिकता को समझता था। साईस ने लगाम छोड़ दी और हम बंदूक की गोली की तरह से सड़क पर, आगे की ओर तिब्बत के रास्ते पर दौड़ पड़े। कार चुंगकिंग को वापस लौट जाती और एक लंबा रास्ता तय करने के बाद, ड्रायवर को मंदगति से चलाने का आनंद प्राप्त होता, जबकि मुझे, हमेशा बढ़िया पशुओं के साथ, जिनके पास अपूर्व शक्ति थी, एक के बाद एक घोड़े बदलते हुए, लकड़ी की ऊँची काठी पर बैठना पड़ा और सवार होना पड़ा, क्योंकि मैं जल्दी में था।

यात्रा के वृतांत को बताने की अधिक आवश्यकता नहीं है। अकेले घुड़सवार की कटु कठिनाइयाँ। यांगस्ते नदी को पार करने के संबंध में बताने की आवश्यकता नहीं है और न ही ऊपर सारवीन के संबंध में। मैं दौड़ता गया, दौड़ता गया। इसतरह घुड़सवारी करना, थका देने वाला काम था परंतु मैंने ये नियत समय में पूरा किया। मैं पहाड़ों के बीच, एक दर्रे में होकर मुड़ा, और एक बार फिर, मैंने अपनी नजर पोटाला की सुनहरी छतों के ऊपर, गढ़ा दी। मैंने गुम्बदों के ऊपर टकटकी लगाई, जो दलाई लामा के दूसरी चीजों के पार्थिव अवशेषों को ढके हुए थे और मैंने सोचा, दूसरा गुम्बद कितना जल्दी आ जाए, जिसमें कि दूसरा शरीर छिपा रखा हो।

मैं सवार हुआ और फिर से प्रसन्नता की नदी को पार किया। इस समय मैं खुद में प्रसन्न नहीं था। मैंने इसे पार किया और इसके साथ चला और मैं समय पर पहुँच गया। कठिन तेज दौड़ती हुई यात्रा बेकार नहीं गई। मैं सभी औपचारिक उत्सवों के लिए वहॉ पहुँच गया और उन सबमें मैंने सक्रिय सहयोग किया। वहाँ मेरे लिए एक और असुखद घटना थी। एक विदेशी वहाँ था, जो अपने लिए सब प्रकार की रियायतें चाहता था। उसने सोचा कि, हम मात्र गंवारू लोग थे, देशी लोग थे, और वह इस सबकी देखभाल करने वाला मालिक था। वह हरेक को दिखता हुआ, हर चीज में सामने रहना चाहता था, और चूंकि मैं उसके स्वार्थीउद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सका, उसने एक मित्र को रिश्वत देने की कोशिश की और मुझे एक कलाई घड़ी देने की पेशकश की – उसने मुझे हमेशा से अपना शत्रु समझा, और मुझे और मेरे लोगों को मारने के लिए, अपने आपे से, अपनी सीमाओं से, बाहर हो गया। तथापि,

इसका इससे कोई संबंध नहीं है, सिवाय इसके कि, मेरे शिक्षक कितने सही थे, जब उन्होंने मुझे ईर्ष्या के संबंध में चेतावनी दी थी।

वास्तव में हमारे लिए, ये बहुत खराब दिन थे, दुख भरे दिन थे। मैं उत्सवों के बारे में और दलाई लामा के अंतिम संस्कार के संबंध में और अधिक लिखना नहीं चाहता। यह कहना काफी होगा कि, उनके शरीर को हमारी पुरानीपद्धति से संरक्षित किया गया और दक्षिण की ओर मुँह करते हुए, बैठी हुई मुद्रा में, जैसी कि हमारी परंपरा थी, रखा गया। समय के बाद समय गुजरते जाते हुए, उनका सिर पूर्व की ओर घूम जायेगा। अनेक लोग, ये कहते हुए कि, उनको पूर्व की ओर देखना चाहिए, इसे मृत्यु के परे का संकेतक मानते हैं। ठीक है, चीनी आक्रामक पूर्व की ओर से तिब्बत को परेशान करते हुए आये। पूर्व की ओर घूमना, वास्तव में, एक चिन्ह था, एक चेतावनी थी, यदि हम इसकी सावधानी रख पाते तो।

मैं फिर अपने माता–पिता के घर को गया। बूढ़ा त्सू मर चुका था। अनेक लोग, जिनको मैं जानता था, बदल चुके थे। वहॉ सबकुछ अजनबी था। ये मेरा घर नहीं था। मैं मात्र एक मिलने वाला था, एक अजनबी, उच्चश्रेणी का लामा, मंदिर का एक भद्रव्यक्ति जो चीन से अस्थाईरूप से वापस लौटा था। मुझे अपने माता–पिता से मिलने के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी। कम से कम मैं, इसके लिए तैयार था। बातें मजबूरी में हुईं, वातावरण तनावपूर्ण था। मैं अब इस घर का बेटा नहीं था, बल्कि एक अजनबी था, परंतु एकदम अजनबी नहीं, इस मामले में जैसा कि, सामान्यतः समझा जाता है, क्योंकि मेरे पिताजी मुझे अपने निजीकक्ष में ले गए और उन्होंने अपने सुरक्षित तिजोरी में से हमारे लेखे की पुस्तक को, उसके सुनहरे ढक्कन को हटाते हुए, सावधानीपूर्वक खोला। बिना एक शब्द बोले हुए, मैंने अपने नाम के हस्ताक्षर वहॉ कर दिए; अंतिमप्रविष्टि। मैंने अपने नाम के हस्ताक्षर किए, अपना पद, और अपनी नई योग्यता, एक योग्यताप्राप्त डॉक्टर और शल्यचिकित्सक के रूप में। तब पुस्तक को दृढ़तापूर्वक दुबारा लपेटकर, अपने उसी गुप्तस्थान में फर्श के नीचे रख दिया गया। हम साथ–साथ कमरे की ओर लौटे, जहाँ मेरी माँ और बहन बैठी थीं। मैं अपनी विदाई की ओर वापस मुड़ा। आंगन में साईस मेरे घोड़े को पकड़े हुए था। मैं घोड़े पर सवार हुआ, और बड़े दरवाजों में से होकर, अंतिमबार निकला। ये बहुत दुखी दिल से था कि, मैं लिंगखोर वाली सड़क पर मुड़ा और अपना रास्ता मेन्जूकांग की ओर बढ़ाया, जो तिब्बत का मुख्य अस्पताल है। मैंने यहाँ काम किया था, और अब मैं यहाँ उस बहुत वृद्ध भिक्षु, चिनरोब नोबो की, जो इसका प्रभारी था, सौहाद्रयात्रा पर जा रहा था। मैं उसे अच्छीतरह जानता था, एक भला वृद्धआदमी। जब मैंने लोहपहाड़ी के चिकित्सा स्कूल को छोड़ा, उसके बाद उसने मुझे काफी कुछ पढ़ाया था। वह मुझे अपने कमरे में ले गया और चीनी दवाओं के बारे में पूछा। मैंने कहा, ''चीन में वे दावा करते हैं कि, वे सूचीभेदन[10] (accupuncture) और मोक्सीबस्टन[11] (moxibustion) के, इलाजों को लाने के लिए सर्वप्रथम थे परंतु मैं अधिक अच्छा जानता था। मैंने पुराने अभिलेखों में यह देखा है कि, सालों–साल पहले, कैसे ये दो पुराने इलाज के तरीके, तिब्बत से लाकर चीन में उपयोग में लाए गए थे।'' उनकी दिलचस्पी अधिक बढ गयी, जब मैंने उन्हें बताया कि, चीनीलोग, और पश्चिमी ताकतें भी, इस बात की जॉच कर रही थी कि, ये दोनों तरीके कैसे काम करते हैं, क्योंकि, ये निश्चयात्मकरूप से काम करती हैं। सूचीभेदन, अत्यंत पतली सूचियों को, जो इतनी पतली होती हैं कि, दर्द बिलकुल अनुभव नहीं होता, शरीर के विभिन्न भागों में अंदर घुसाने का, एक विशेष तरीका है। ये सुइयॉ त्वचा के अंदर घुसाई जाती हैं, जिससे ये स्वास्थ्यसुधार की प्रतिक्रियाओं को बढ़ा देती हैं। वे रेडियम की सुइयों का प्रयोग करते हैं और आश्चर्यजनक इलाज का दावा करते हैं, परंतु पूर्व के हमलोग, सूचीभेदन का

10 अनुवादक की टिप्पिणीः सूची भेदन (accupuncture) और सूची दाब (accupressure) दोनों ही चीनी इलाज की विधियाँ है, जिनका वर्तमान में संपूर्ण विश्व में प्रसार हो रहा हे

11 अनुवादक की टिप्पिणीः मोक्सीबस्टन (moxibustion) ये चीनी इलाज की प्राचीन पद्धति हे, जो अधिक प्रचलित नहीं है।

शताब्दियों से इतनी ही सफलता के साथ, उपयोग करते आ रहे हैं। हमने मोक्सीबस्टन विधि का भी उपयोग किया है। यह विभिन्न जड़ीबूटियों को एक नलिका में तैयार करने की और उसका एक सिरा जलाने की ताकि ये लाल चमकने लगे, विधि है। ये चमकता हुआ सिरा, खाल और तंतुओं के बीमार सिरों के ऊपर लाया जाता है, और उस क्षेत्र को गरम करने पर जड़ीबूटियों की अच्छाइयॉ, अपने आरोग्यकारी प्रभावों के साथ, सीधे ही उन तंतुओं में प्रवेश कर जाती हैं। ये दो विधियाँ, बार–बार सिद्ध की जा चुकी हैं, परंतु ये कैसे काम करती हैं, इसको अभी तक ठीक–ठीक नहीं खोजा जा सका है।

मैंने फिर बड़े भंडारगृह की ओर देखा, जिसमें विभिन्न प्रकारों की, छैः हजार से अधिक अनेक–अनेक, जड़ीबूटियॉ रखी थीं। इसमें से अधिकांश चीन को पता नहीं थीं, शेष दुनियाँ को पता नहीं थीं। धतूरा, उदाहरण के लिए, जो एक पेड़ की जड़ होती है अत्यधिक शक्तिशाली निश्चेतक (anaesthetic) दवा है, और ये किसी व्यक्ति को एक ही बार में, बारह घण्टे तक लगातार, बेहोश रख सकती है और एक अच्छे चिकित्सक के हाथों देखे जाने पर, उसमें किसी प्रकार के अवांछनीय प्रभाव भी उत्पन्न नहीं होते। मैंने अपने चारों तरफ देखा, और ऐसा कुछ नहीं पा सका, जो चीन और अमरीका के आधुनिक तरीकों पर अग्रसर होने के बावजूद, दोष के रूप में मिल सके। इलाज के पुराने तिब्बती तरीके, अभी भी संतोषजनक रूप से कार्य करते हैं।

अगले दिन मैं अपने पुराने स्थान पर, जब मैं अपने समय में शिष्य था, सोया, और मैं सेवाओं में शामिल हुआ। ये सब मुझे पीछे ले गया। इन पत्थरों में कैसी–कैसी याद्दाश्त बसी हुई थीं। सुबह जब मैं थोड़ा हलका था, मैं लोहपहाड़ी की सबसे ऊॅची चोटी पर चढ़ गया, और पोटाला पर, सर्पउद्यान पर, ल्हासा पर, और चारों तरफ के बर्फ से ढके हुए पहाड़ों के अंदर, दृष्टि गढ़ाकर देखने लगा। मैं लंबे समय तक नजर गढ़ाए देखता रहा और फिर वापस चिकित्सीय पाठशाला में गया, अपनी विदाई ली और अपना त्सम्पा का थैला उठाया और तब अपने कंबल के साथ, जो रोल किया हुआ था और मेरी अतिरिक्त पोशाक, जो मेरे सामने थी, मैं अपने घोड़े पर पुनः सवार हुआ और पहाड़ी से नीचे की तरफ का अपना रास्ता लिया।

सूर्य एक कालेबादल के पीछे छिपा हुआ था। जब मैं नीचे, रास्ते की तलहटी में गया, और शी (Sheë) गॉव के पास से गुजरा। सभी जगह तीर्थयात्री थे, तिब्बत के सभी भागों से आए हुए, और आगे से आए हुए तीर्थयात्री, जो पोटाला को अपनी श्रद्धा अर्पित करने आए थे। जन्मपत्री बनाने वाले, अपने–अपने सामान के संबंध में, चिल्ला–चिल्ला कर, आवाजें लगा रहे थे और जिनके पास जादुई दवाऐं, और ताजगी देने वाले तमाम इलाज थे। ताजे उत्सवों ने व्यापारियों को, व्यवसाइयों को, खोमचेवालों को और सभी प्रकार के वर्णन वाले भिखारियों को इस पवित्र सड़क पर यहॉ ला दिया था। पड़ोस से, सामान से लदा हुआ याक का एक काफिला, जो ल्हासा के बाजारों में दूर से लाया गया था, पश्चिमी दरवाजे से होता हुआ आ रहा था। मैं ये सोचते हुए कि, इतने अच्छे तरीके से, मैं इसे दुबारा फिर नहीं देख पाऊँगा, और बिछोह के विचार पर दुखी होते हुए, बीमार दिल से दुखी, महसूस करते हुए, देखने के लिए रुका। मेरे पीछे खड़खड़ाने की आवाज हुई। ''आपके आशीर्वाद, आदरणीय चिकित्सीय लामा,'' एक आवाज आई, और मैं लाश तोड़ने वाले लोगों में से एक को, उन आदमियों में से एक को, जिसने मेरी मदद के लिए बहुत कुछ किया था, जब मैं तेरहवें दलाई लामा, जिनकी लाश को मैंने अभी देखा था, के आदेश से वहॉ था, जिसके साथ मैंने अध्ययन किया था, को देखने के लिए पीछे मुड़ा। जब मैं पुरानी जमाने की परम्पराओं से, जब लाशें चीरफाड़ नहीं की जाती थीं, गुजरने के योग्य हो सका, मुझे अपने विशिष्टकार्य के कारण, मुझे लाशों के चीरफाड़ करने के लिए, हर प्रकार की सुविधा दी गई थी, और यहाँ उनमें से एक आदमी था, जिसने मेरे लिए बहुत कुछ हद तक, मदद की थी। मैंने उसे इस बात पर प्रसन्न होते हुए, कि कम से कम पुराने समय के कुछ लोगों में से कोई मुझे जानता तो है, अपनी शुभकामनायें दीं। ''आपकी शिक्षा, वास्तव में, आश्चर्यजनक थी,'' मैंने कहा।

''आपने मुझे इतना अधिक पढ़ाया, चुंगकुंग के चिकित्सीय स्कूल से भी ज्यादा।'' वह प्रसन्न दिखाई दिया, और गुलाम के रूप में अपनी जुबान को बाहर निकाला, वह पारम्परिकरूप से मेरे पीछे आया और दरवाजे पर, भीड़ के साथ मिल गया।

कुछ क्षण और, पोटाला को देखते हुए, लोहपहाड़ी को और तमाम सुखद उद्यानों को देखते हुए, मैं अपने घोड़े के बगल से खड़ा रहा, और तब मैं, क्यी (kyi) नदी को पार करते हुए, अपने रास्ते पर चला। यहाँ जमीन सपाट थी, अच्छी तरह सिंचित घास की हरियाली के साथ एक स्वर्ग। एक दूसरे पहाड़ों से छैः हजार फुट ऊपर उठते हुए, समुद्रतल से बारह हजार आठ सौ फुट ऊँचाई पर, उदारतापूर्वक छोटे–बड़े विभिन्न लामामठों को, जिन्होंने साधु परम्परा को बनाकर रखा, सम्भालते हुए और धीमे–धीमे पहाड़ी के दर्रो को मिलाने के लिए, सड़क की चढ़ाई बढ़ती गई। मेरा घोड़ा तरोताजा था, अच्छीतरह देखभाल किया हुआ और अच्छीतरह खिलाया–पिलाया हुआ। वह जल्दी करना चाहता था। और मैं टिका रहना चाहता था। भिक्षु और व्यापारी, सवार होकर पडौस से निकल गए, उनमें से कुछ ने मेरी ओर उत्सुकता के साथ देखा, क्योंकि, मैं परम्परा से हट चुका था और मैं अकेला तेजी से दौड़ रहा था। मेरे पिताजी, बिना किसी नौकर–चाकर के, बिना ठाठबाट के, जो उनके हिसाब से ठीक होता, कभी नहीं चढ़े होंगे, परंतु मैं नयेजमाने का था। इसलिए अनजान लोग, लगातार उत्सुकता के साथ, मुझ को देख रहे थे, परंतु दूसरे जिन्हें में जानता था, उन्होंने मित्रवत् शुभकामनायें दीं। अंत में मेरे घोड़े ने और मैंने, चढ़ाई का सामना किया और हम बड़े मठ, पत्थर के सपाट स्थान पर आ गए, जो अंतिम स्थान था, जहाँ से ल्हासा को देखा जा सकता था। मैं घोड़े पर से उतरा और उसे रस्सी से बॉध दिया। मैं एक सुविधाजनक चट्टान के ऊपर बैठा, जैसे मैं लम्बी दूरी तक घाटी में देख रहा था।

आकाश गहरा नीला था, गहरा नीला, जो केवल इतनी अधिक ऊँचाई पर ही दिखाई दे सकता है। सिर के ऊपर, बर्फ जैसे सफेद बादल, आराम–आराम से घूम रहे थे।

एक काला कौआ, फड़फड़ा कर मेरे बगल से नीचे गिरा और मेरी पोशाक में से ढूंढ–ढकोर कर दाना चुगने लगा। बाद के विचार के रूप में, मैंने परम्परा के तौर पर एक पत्थर उठाकर अपने बगल में पड़े ढेर के ऊपर मारा। ढेर, जो तीर्थयात्रियों के शताब्दियों तक किए गए काम के द्वारा बना था, क्योंकि यह वह स्थान था जहां से तीर्थयात्री, इस पवित्रशहर का पहला और अंतिम दृश्य, प्राप्त करते थे।

पोटाला मेरे सामने था, उसकी दीवारें आधार से अंदर की ओर ढलान वाली। इस प्रभाव को युति प्रदान करते हुए, खिड़कियॉ भी नीचे से ऊपर की ओर ढलान वाली थीं। ये जीवंत चट्टान से देवताओं द्वारा गढ़ी गई भवन जैसी दिखाई देती थी। मेरा चाकपोरी, बिना इस पर अपना वर्चस्व स्थापित किए, पोटाला से भी ऊॅचा था। आगे मैंने, चारों ओर प्रशासनिक भवनों से घिरी हुई, ज्योकिंग की स्वर्णित छतों, जो तेरह सौ साल पुराना मंदिर है, को देखा। मैंने मुख्य सड़क को सीधा देखा विल्लो (willow) के पेड़ के झुरमुट में होकर, झुण्ड, सर्प मंदिर और सुंदर पैबंद जैसा, जो कि नोबरूलिंगा था, और की चू (kyi chu) के साथ–साथ लामा का उद्यान। परंतु पोटाला की स्वर्णिम छतें प्रकाश के द्वारा मानो जल रही थीं, तेज धूप को पकड़ती हुई, और वापस उसे सुनहरी लाल किरणों के रूप में फैंकती हुई, वर्णक्रम के हर रंग के साथ। गुम्बज के नीचे यहां दलाई लामा के शरीर के अवशेष रखे थे। ऐतिहासिक इमारत, जिसमें तेरहवें दलाई लामा के अवशेष रखे थे, काफी ऊॅचाई पर था, लगभग सत्तर फुट – तीन मंजिल ऊपर – और एक टन शुद्ध सोने से मढ़ा हुआ, और पवित्र स्थान (shrine) के अंदर मूल्यवान गहने थे, नगीने, सोना और चांदी। खाली गोले के पुराने स्वामी के बगल से, सौभाग्य यहॉ स्थित था, और अब तिब्बत बिना दलाई लामा के था; अंतिम जा चुका था, और भविष्यकथन के अनुसार, अगला जो आने वाला था, वह होगा, जो उन विदेशी मालिकों की सेवा करेगा, और जो साम्यवादियों का बंधुआ गुलाम होगा।

द्रेपुंग (Drepung), सेरा (Sera), गांडेन (Ganden) के लामामठ घाटी के बगल से चिपके हुए थे। ल्हासा का राजज्योतिषी केन्द्र (oracle) नेहचुंग (Nechung), पेड़ों के झुरमुट के बीच, आधा छिपा हआ, सफेद और सुनहरा चमक रहा था। द्रेपुंग वास्तव में, पहाड़ों के बगल से बिखरा हुआ, चावल के एक सफेद ढेर जैसा दिख रहा था था। सेरा जिसे जंगली गुलाब की बाड़, और गांडेन, जिसे आनंदपूर्ण कहते हैं; मैंने उनको देखा और अपने उस समय के ऊपर विचार किया, जो मैंने इनकी दीवारों के अंदर गुजारा था, मैंने उनकी दीवारों के अंदर, शहर की बसाहट देखी। मैंने काफी अधिक संख्या में छोटे–छोटे लामामठों को भी देखा, हरजगह घूमा, पहाड़ के ऊपर बगल से, पेड़ों की कतार के नीचे; मैंने उन साधुकुटियों, जो बिखरी हुईं थीं, जहॉ पहुॅचना अत्यधिक कठिन है, को भी देखा, और मेरे विचार, उनमें रहने वाले आदमियों की ओर गए, और शायद कैद हो गए। बिना किसी प्रकाश के, अंधकार में जीवन के लिए, भौतिकशरीर में फिर वापस नहीं आने के लिए, अंधेरे मे दिन में एकबार खानां, परंतु उनके इस विशिष्ट प्रशिक्षण के कारण, उन्हें आकाशगमन की क्षमतायें, विश्व को बिना शरीर के, आत्मा से देखने की क्षमतायें, प्राप्त हुईं। मेरी निगाह आवारा की तरह घूमती रही; प्रसन्नता की नदी ने, कटावों में होकर और दलदली भूमि में, पेड़ों के घेरे के पीछे होकर फिर दुबारा से खुले मैदान में प्रकट होते हुए, घुमाव लिया। मैंने निगाह डाली और अपने मातापिता के घर को देखा, एक बड़ा साम्राज्य, जो कभी मेरा घर नहीं रहा। मैंने तीर्थयात्रियों को सड़क पर इकट्ठे होते हुए, जमघट लगाते हुए, अपनी परिक्रमा करते हुए देखा। तब कहीं दूरस्थ लामामठों से मैंने पुनः मंदिर के घड़ियालों की हल्की सी ध्वनि की हवा, और तुरहियों की चीख, और अपने गले में एक ढेला जैसा उभरते हुए, महसूस किया और अपनी नाक के पुल पर, मैंने चुभती हुई सनसनी अनुभव की। ये मेरे लिए हद से ज्यादा था। मैं मुड़ा और अपने घोड़े के ऊपर दुबारा सवार हुआ और अज्ञात की ओर चलता गया।

मैं देहात में चलता चला गया जो लगातार जंगली होता जा रहा था, और अधिक जंगली हो रहा था। मैं आनंददायक पार्कों में घूमा और बालुई जमीन से होकर, छोटे–छोटे इलाकों में होकर, चट्टानी और जंगली उभारों के ऊपर, उभार जिनपर पानी लगातार टकरा रहा था, और आवाज के साथ हवा भर रही थी, फुहारों की बौछार के साथ मेरी खाल पर डुबकी लगा रही थी, गुजरा। मैं पहले की तरह से रात में लामामठों में ठहरता हुआ, चलता चला गया। इसबार मैं, दोहरे तरीके से स्वागत करने योग्य अतिथि था क्योंकि मैं ल्हासा के उत्सवों के संबंध में, प्रथमतः जानकारी दे सकने में योग्य था, क्योंकि मैं एक युग का अंत था, एक दुखी समय हमारे देश के ऊपर आएगा। मुझे काफी खाना और ताजे घोड़े दिए गए थे, और कई दिनों की यात्रा के बाद, मैं फिर युआन पहुॅचा, जहॉ मेरे आनंद के लिए, ड्रायवर जर्सी के साथ बड़ी कार मेरा इंतजार कर रही थी। खबरें छनकर आ चुकी थीं कि मैं अपने रास्ते पर था, और चुंगकिंग के बूढ़े मठाध्यक्ष ने विचारपूर्वक, इसे मेरे लिए भेज दिया था। वास्तव में, मैं प्रसन्न था क्योंकि मैं काठी के घावों से रगड़ा हुआ और यात्रा से थका और ऊबा हुआ था। उस अच्छे बड़े वाहन को, जो एक दूसरे विज्ञान का उत्पाद है, जो मुझे तेजी से, अपने साथ ले जाएगा, जिसको तय करने में मुझे सामान्यतः कई दिन लगते, उसको कुछ ही घण्टों में कर देगा, देखना वास्तव में प्रसन्नता ही थी। इसलिए मैं धन्यवाद देता हुआ कार में बैठा कि, चुंगकिंग के लामामठ का मठाध्यक्ष मेरा मित्र था और ल्हासा में, मेरे घर से इस कठिन वापसीयात्रा के बाद, उसने मेरी सुखसुविधा का इतना ख्याल रखा। शीघ्र ही हम चॉगतू की सड़कपर तेजी से आगे बढ़ रहे थे। जहॉ हमने रात को विश्राम किया। जल्दी करने की आवश्यकता नहीं थी और हम कुछ ही घण्टों में चुंगकिंग को वापस आ रहे थे, इसलिए हम रात को वहॉ रुके। सुबह हमने आसपड़ौस के स्थान को देखा और कुछ स्थानीय खरीददारी की। फिर हम चुंगकिंग की सड़क पर दुबारा चले गए।

लाल चेहरे वाला लड़का, अभी भी, केवल छोटे नीले कपड़ों में, हल जोत रहा था। हल, अलाभप्रद प्राणी, भैंसे के द्वारा, के द्वारा खींचा जा रहा था। वे कीचड़ में, उसे पलटने की कोशिश में

जिससे कि धान को रोपा जा सके, हल चला रहे थे। हम तेजी से चले, सिर के ऊपर, अचानक धावा बोलते हुए, झपटते हुए मानो कि, जीवन के एकमात्र आनंद के लिए, चिड़ियाऐं आपस में एक दूसरे को बुला रही थीं। शीघ्र ही, हम चुंगकिंग के बाहरी इलाके में पहुॅचने लगे। यूकेलिप्टस पेड़ों की चांदी की लाईन के साथ–साथ, नींबू और चीड़ के हरे पेड़ों के साथ, हम सड़क के सहारे पहुॅच रहे थे। शीघ्र ही हम, एक छोटी सड़क पर आए, जहॉपर मैं उतरा और मैंने पैदल ही लामामठ की ओर अपना रास्ता तय किया। जैसे ही मैं दुबारा, गिरे हुए पेड़ों और आड़े तिरछे पड़े हुए पेड़ों के, उन खाली स्थानों में से गुजरा, मैंने सोचा कि ये दृश्य कितने स्मरणीय है, क्योंकि मैं एक तने के ऊपर बैठा था, और मैंने अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप से बात की थी। थोड़े समय के लिए मैं ध्यान में रुका। एक बार फिर, मैंने अपना सामान उठाया और अपना रास्ता लामामठ की ओर बनाया।

सुबह मैं चुंगकिंग गया। गर्मी बहुत जोरदार थी, तपती हुई, दमघोंटू। उस असहनीय गर्मी में, रिक्शेवाले भी, और उनपर सवारियां भी, थकी हुई मुरझाई हुई क्लांत दिखाई दे रही थीं। मैं तिब्बत में ताजा हवा से आने वाले ने, अपने आपको आधे से ज्यादा मुर्दा समझा, परंतु मुझे लामा के रूप में दूसरों को उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए, सीधे तनेहुए, खड़े रहना था। सात तारों की गली में, मैं अपने दोस्त हुआंग के साथ आया, जो खरीददारी में व्यस्त था, और मैंने दोस्त के रूप में, उसका अभिवादन किया। ''हुआंग,'' मैंने कहा, ''ये सारे लोग यहॉ क्या कररहे हैं ?'' ''क्यों, लोबसांग,'' उसने उत्तर दिया, ''लोग शंघाई से आ रहे हैं। जापानियों द्वारा उत्पन्न परेशानियॉ, व्यापारियों को अपनी दुकानों को बंद करने के लिए और यहॉ चुंगकिंग में आने के लिए मजबूर कर रही है। मैं समझता हूॅ कि, विश्वविद्यालयों में से कुछ, गंभीररूप से ऐसा ही सोच रहे थे और किसीप्रकार वैसे ही, ''वह चलता गया।'' मेरे पास आपके लिए एक संदेश है। जनरल (अब मार्शल) फेंन यू–हिस्यांग (Fen Yu-hsiang) आपसे मिलना चाहते हैं। उन्होंने मुझे ये संदेश आपको देने को कहा था। जाओ और उन्हें मिलो, जितनी जल्दी दौड़ सकते हो।'' उसने कहा कि वह जाएगा। हमने आराम से अपनी खरीददारी की, ये इतना गर्म था कि, और जल्दी की भी नहीं जा सकती थी, और तब हम वापस लामामठ में गए। एक या दो घण्टे बाद, हमने मंदिर की ओर अपना मुॅह किया, जिसके पड़ौस में जनरल का अपना घर था, वहॉ मैं उससे मिला। उसने मुझे जापानियों के बारे में, और उन परेशानियों के बारे में, जो वे शंघाई में पैदाकर रहे थे, बहुत कुछ बताया। उसने मुझे बताया कि, कैसे अंतर्राष्ट्रीय बसाहट (International settlement) ने यहॉपर, ठगों की, बदमाशों की, जो वास्तव में व्यवस्था बनाने के लिए प्रयत्न नहीं कर रहे थे, अपनी पुलिस में भर्ती की है। उसने कहा, ''रम्पा युद्ध आने वाला है, युद्ध आ रहा है। जितने हम पा सकते हैं, हमें सभी डॉक्टर चाहिये और ऐसे डॉक्टर भी, जो पायलट भी हों। हमें वे चाहियें।'' उसने मुझे चीनी फौज में कमीशन का प्रस्ताव किया, और ये समझ (understanding) दी कि मैं जितना चाहूॅ उतना उड़ सकता हूॅ।

जनरल एक अच्छा आदमी था, छः फीट से भी अधिक लंबा, चौड़े कंधों वाला और एक बड़े सिर वाला। वह कई अभियानों में सम्मिलित रहा था, और उसने सोचा था, कि जापानी परेशानी के रहने तक, अब सैनिक के रूप में उसके दिन समाप्त हो गए हैं। वह एक कवि भी था, और वह चन्द्रमा को देखने के लिए मंदिर के समीप रहता था। मैं उसे पसंद करता था। वह एक ऐसा एक होशियार आदमी था, जिसके साथ मैं चल सकता था। इसलिए उसने मुझे, एक विशेषघटना को, जिसे जापानियों ने, चीन के ऊपर आक्रमण करने का बहाना प्राप्त करने के लिए, अंजाम दिया था, स्पष्टतः बताया। कुछ जापानी भिक्षु, दुर्घटनावश मारे गए थे, और जापानी अधिकारियों ने मॉग की, कि शंघाई के मेयर को उन्हें जापानी सामान का बहिष्कार करने से रोकना चाहिए, राष्ट्रीयबचाव से अपने को तोड़ लेना चाहिए और बहिष्कार के नेताओं को गिरफ्तार करना, और उन मारेगए भिक्षुओं की क्षतिपूर्ति के लिए गारंटी मिलनी चाहिए। मेयर ने शांति को बहाल रखने के लिए और जापानी फौजों के बढ़ते हुए जमाव को देखते हुए 28 जनवरी 1932 को, ये आखिरी बात (ultimatum) स्वीकार कर ली। परंतु उस रात को 10.30 बजे

जब मेयर ने आखिरी बात को वास्तव में स्वीकार किया उसके बाद, जापानी पनडुब्बियों और जलयानों ने काफी बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय बसाहट की गलियों परं कब्जा करना शुरू किया, इसप्रकार नए विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की। ये सब मेरे लिए खबरें थीं। मैं इस सब के बारे में नहीं जानता था, क्योंकि मैं दूसरी जगह यात्रा पर था।

जब हम बातें कर रहे थे, भूरे काले गाउन में, हमें ये बताने के लिए कि, सर्वोच्च मठाध्यक्ष ताई शू (Tai Shu) यहॉ हैं, और हमें भी उन्हे मिलना है, एक भिक्षु आया। मुझे, उसे इन घटनाओं के बारे में, तिब्बत में अपने प्रिय 13वे दलाई लामा के अंतिम संस्कारों के बारे में, यह बताना पड़ा। बदले में, उसने उन गंभीर भयों के बारे में, जिसे वे और दूसरे लोग, चीन की सुरक्षा के संबंध में समझते थे, मुझे बताया। ''ये नहीं कि हम अंतिम परिणाम से डरते थे,'' उसने कहा, ''परंतु विनाश, मौतें, और कष्ट, ये पहले आयेंगे।''

इसलिए उन्होंने मुझे अपने प्रशिक्षण को, उनकी मर्जी के अनुसार चलाने के लिए, दुबारा चीनी सेना में कमीशन को स्वीकार कर लेने के लिए दबाव दिया, और तभी एक झटका आया। ''तुमको शंघाई जाना चाहिए,'' जनरल ने कहा। ''आपकी सेवाओं की वहॉ अत्यधिक आवश्यकता है, और मैंने सुझाव दिया कि, आपके मित्र, पो कू, आपके साथ जायेंगे। मैंने पहले से ही तैयारियॉ कर दी हैं, परंतु इसको स्वीकार करना, आपके और उनके ऊपर है।'' ''शंघाई ?'' मैंने कहा। ''ये रहने के लिए भयानक स्थान है। मैं इसके बारे में, वास्तव में, ज्यादा नहीं सोचता तथापि, मैं जानता हूँ कि मुझे जाना चाहिए, इसलिए मैं इसे स्वीकार करूँगा।''

वह बात करता गया और करता गया, और शाम की छायाऐं, धीमे–धीमे हमें लपेटने लगीं, और दिन अंधेरे में बदल गया, और इसलिये अंत में हमको जाना ही था। मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ, और मैंने बाहर की ओर, आंगन में अपने कदम बढ़ाये, जहॉ पाम का अकेला पेड़, गर्मी में मुरझाया हुआ, थका हुआ खड़ा था, उसकी पत्तियॉ नीचे झुकी हुई थीं और भूरी पड़ रही थीं। हुआंग, अचलरूप से बैठे हुए, इसबात के ऊपर आश्चर्य करते हुए, कि साक्षात्कार इतना लंबा क्यों था, मेरी प्रतीक्षा करते हुए धैर्यपूर्वक बैठा था। वह भी अपने पैरों पर खड़ा हुआ। हमने अपने कदम शांति से, पत्थर के छोटे पुल के ऊपर होकर, चट्टानी चढ़ाइयों से नीचे पथ पर नीचे की ओर गुजरते हुए, अपने खुद के लामामठ की ओर बढ़ाए।

हमारे रास्ते पर, प्रवेशद्वार से पहले, एक बड़ी चट्टान थी और हम इसके ऊपर चढ़ गए, जहॉ से हम नदियों को देख सकते थे। आजकल वहॉ काफी चहल पहल थी। छोटे स्टीमर साथ–साथ इंजनों की घुरघुराहट (chugging) कर रहे थे। हवा द्वारा पकड़े जाने के कारण, उनकी कीपों (funnels) में से धुंए एक काले झण्डे (banner) के रूप में फूंक दिए जाने के लिए, ऊपर को उठ रहे थे। हॉ, अब जब मैंने तिब्बत को छोड़ा था, वहॉ हमेशा की तुलना में और अधिक स्टीमर थे। शरणार्थी हरदिन अधिक संख्या में आ रहे थे, लोग जो भविष्य को देख पाते थे, देख रहे थे कि चीन में, वास्तव में, अतिक्रमण का क्या अर्थ होता है। पहले से भीड़भाड़ वाले शहर में और अधिक जमावड़ा बढ़ रहा था।

जैसे हमने रात के आकाश को देखा, हमने बड़े तूफान के बादलों को इकट्ठे होते हुए देखा, और हम जानते थे कि, बाद में, रात में, पहाड़ों से तूफान आयेगा और बिजली कड़केगी। प्रचण्ड मूसलाधार वर्षा के कारण, नीचे आते हुए स्थानों पर, दलदल धंसान हो जाएगा और आवाजों और गूँज के साथ, हम बहरे होते जायेंगे। क्या ये भी चीनपर आनेवाले खतरों का संकेत था ? निश्चितरूप से यह ऐसा ही प्रतीत हुआ। हवा में तनाव था, विद्युत थी। देश के भविष्य पर विचार करते हुए, जिसको हमदोनों इतना अधिक पसंद करते थे, मेरा ख्याल है कि, हम दोनों ने एक साथ ही आह भरी, परंतु हमारे ऊपर रात आ चुकी थी। बरसाती तूफान की शुरूआती भारी बूंदे, हम पर गिर कर, हमें भिगो रही थीं। हम दोनों एकसाथ मुड़े, और मंदिर में अपना रास्ता लिया जहॉ मठाध्यक्ष, उस बात को बताने के लिए, जो हो

चुकी थी, उत्सुकता के साथ, हमारा इंतजार कर रहे थे। मैं उन्हें मिलकर, और बातों के ऊपर विचार करते हुए, और उस बात के संबंध में प्रशंसा प्राप्त करने के लिए, जिस रास्ते को तय करना, मैंने स्वीकार कर लिया है, वास्तव में प्रसन्न था। मंदिर की छत पर पड़ रही वर्षा और उत्पाती तूफ़ान से अपने आपको बचाते हुए, रात में हम बहुत देरतक बातें करते रहे और बातें करते रहे। अंतिमरूप से हमने फर्श पर अपने बिस्तरों की ओर का रास्ता पकड़ा, और सोने चले गए। सुबह होने के साथ ही पहली प्रार्थना के बाद, हमने और अधिक आनंद रहित चरण के लिए, फिर से जीवन के दूसरे चरण में प्रवेश करने की, अपनी यात्रा की तैयारी शुरू की।

अध्याय छैः
अतीन्द्रियज्ञान

शंघाई! मुझे कोई भ्रम नहीं था। मैं जानता था कि शंघाई, वास्तव में रहने के लिये एक अत्यन्त कठिन स्थान होने वाला है। परन्तु, भाग्य का विधान था कि मैं वहाँ जाऊँ, इसलिये हमने अपनी तैयारियाँ शुरू कीं, और पो, कू और मैं, बाद में सुबह, हम साथ–साथ नीचे सीढ़ियों वाली गली में बन्दरगाह की गोदी पर टहलने गये और हम एक जहाज पर गये, जो हमें नदी में काफी दूर, शंघाई तक ले जायेगा।

अपने केबिन में –हमने केबिन को साझा किया था– मैं अपनी शायिका पर लेटा, और पिछले समय के बारे में विचार किया। पहली बार, मैंने, शंघाई के सम्बंध में, मैं जो कुछ भी जानता था, उस पर विचार किया। यह तब था, जब मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, मुझे अतीन्द्रियज्ञान की बारीकियों को सिखा रहे थे और चूंकि ये विशिष्टज्ञान, किसी के लिये रुचिपूर्ण और दूसरों के लिये सहायक हो सकता है, मैं अपना सच्चा अनुभव यहाँ दे रहा हूँ।

कुछ वर्ष पहले की बात है, जब मैं ल्हासा के बड़े लामामठों में से एक का विद्यार्थी था। मैं और मेरी कक्षा के अन्य छात्र, बाहर जाने की इच्छा करते हुए, स्कूल के कमरे में बैठे थे। कक्षा सामान्य से खराब थी, क्योंकि शिक्षक बड़ा मनहूस (bore) था। पूरी कक्षा को उनके शब्दों को समझने में और सजग रहने में दिक्कत महसूस हो रही थी। यह उन दिनों में से एकदिन की बात है, जब सूरज सिर के ऊपर, गर्मी से चमक रहा था, जब ऊन के हल्के फाये जैसे बादल, सिर के ऊपर ऊँचे दौड़ रहे थे। सीलन भरी कक्षाऐं और अभिरुचिहीन शिक्षक की गूँजती हुयी आवाज; हर चीज हमें बाहर धूप और गर्मी में बाहर जाने के लिये बुला रही थी। सहसा वहॉ पदचाप सुनाई दिये। कोई कमरे में आ चुका था। अपनी पीठ शिक्षक की और किये हुए हम, यह देख नहीं सके कि, आने वाला कौन था, और हम घूम कर उनकी ओर देखने का साहस नहीं कर सकते थे, यदि वह हमारी और देख रहे हों। कागज की सरसराहट, ''हममम मेरी क्लास को कौन खराब कर रहा है।'' एक तेज ''चटाक'' की आवाज, जैसे ही शिक्षक ने अपनी छड़ी मेज पर पटकी, हम सब डर के मारे उछल पड़े। ''लोबसांग रम्पा, इधर आओ।'' पूर्वाभास से भरा हुआ मैं, अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ, घूमा और तीन बार झुककर दण्डवत की। अब मैने क्या किया है ? क्या मठाध्यक्ष ने मुझे आगंतुक लामाओं के ऊपर पत्थर गिराते हुये देख लिया है? क्या मुझे अखरोटों के आचार में से कुछ को चखते हुये देख लिया है ? क्या मैं – परन्तु शिक्षक की आवाज ने, शीध्र ही मेरे मन को राहत प्रदान की : ''लोबसांग रम्पा, आदरणीय वरिष्ठलामा, आपके शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने आपको तुरन्त बुलाया है। जाओ, और उनकी तरफ, मेरी अपेक्षा अधिक ध्यान दो''। मै जल्दी से गया।

गलियारे में होकर, सीढ़ियों के ऊपर दायीं और घूमकर, और लामाओं के लिये सुरक्षित क्षेत्र में। ''यहॉ सभल कर चलो,'' मैने सोचा, ''कोई चिड़चिड़ा बूढ़ा, यहॉ साथ में है। यहॉ से सातवें दरवाजे पर वायीं और, ये है।'' जैसे ही मैने दस्तक देने के लिये, अपना हाथ उठाया; आवाज आई ''अन्दर आ जाओ'' और मैं अन्दर गया। जब खाना आसपास हो, तो तुम्हारा अतीन्द्रियज्ञान कभी असफल नहीं होता। मेरे पास चाय और अखरोट का आचार है। तुम एकदम सही समय पर आये हो।'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने, मुझसे इतनी जल्दी पहुँचने की उम्मीद नहीं की थी, परन्तु अभी उन्होंने निश्चितरूप से मेरा स्वागत किया। जब हमने खाना खाया, तब उन्होंने बातें कीं। ''मैं तुम्हें विभिन्न प्रकार के उपकरणों के साथ उपयोग करते हुए, टकटकिया कॉच (gazing crystal) का अध्ययन कराना चाहता हूँ। तुमको उन सब से परिचित होना चाहिये।''

हमारे चाय खत्म करने के बाद, वे मुझे नीचे भण्डारकक्ष की ओर ले गये। यहॉ सभी प्रकार के

उपकरण रखे हुये थे, प्लेनचिट (plancÈtte)[12], टेरोकार्ड[13] (tarot cards), काले दर्पण (black mirrors) और पूर्णतः आश्चर्यचकित करने वाले उपकरणों की एक श्रृखंला। हम आसपास घूमे। उन्होंने विभिन्न वस्तुओं की ओर इंगित किया और उनके उपयोग को समझाया। तब मेरी ओर मुड़ते हुए, उन्होंने कहा, ''कोई एक क्रिस्टल उठा लो, जो तुम्हें लगता है कि, तुम्हारे लिये सामंजस्यपूर्ण होगा। सबको देखो और अॅपनी पंसद का चुन लो।'' मेरी निगाह, अतिसुन्दर गोले, असली चट्टानी क्रिस्टल, जिसमें कोई दोष नहीं है, और ऐसे आकार का है कि, पकड़ने के लिये, उसे दोनों हाथों में उठाना पड़ेगा, के ऊपर पड़ी। मैने उसे उठा लिया और कहा, ''ये वह है जो मैं चाहता हूॅ।'' मेरे शिक्षक हँसे। ''तुमने सबसे पुराने और सबसे अधिक मूल्यवान को चुना है। यदि तुम इसका उपयोग कर सकते हो, तो तुम इसे ले सकते हो।'' ये विशिष्ट क्रिस्टल, जो अभी भी मेरे पास है, पोटला की काफी निचली गुफाओं मे से एक में मिला था। उन सामान्य दिनों में इसे ''जादुई गोला (the magic ball)'' कहा जाता था, और इसे चिकित्सा से संबंधित मानकर, लोहपहाड़ी के चिकित्सकीय लामाओं को दिया गया था।

इस अध्याय में, थोड़ा बाद में, मैं कॉच के गोलों, काले दर्पणों, और पानी के गोलों (water globes) के बारे में बताऊॅगा; परन्तु अभी यह बताना कि, इन्हें कैसे तैयार किया जाता है, और हमने अपने आप को इनके साथ उपयोग के लिये कैसे प्रशिक्षित किया, ये दिलचस्प हो सकता है।

स्पष्ट है कि, यदि कोई शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ है, और उसकी नजर अच्छी है। और ऐसा ही तीसरी ऑख के साथ भी है। वह ठीक होना चाहिये, और उसके लिये हमें इनका तथा दूसरी युक्तियों का उपयोग करने के लिये तैयार होना चाहिये। मैने अपना क्रिस्टल उठा लिया था, और अब मैं उसपर देख रहा था। दोनों हाथों में पकड़े हुये ऐसा लगा कि, यह भारी गोला है, जिसमें एक खिड़की की औंधी (inverted) तस्वीर दिख रही थी, जिसके हाशिये पर एक चिड़िया बाहर बैठी हुई थी। अधिक समीप से देखने पर, मैं लामा मिंग्यार डोंडुप का धुंधला सा, परावर्तित चित्र देख सका, और हॉ – अपना खुद का परावर्तन भी। ''तुम इसपर देख रहो हो, लोबसांग, और यह तरीका नहीं है, जिसमें इसका उपयोग किया जा सके। इसे पूरा ढको और तबतक प्रतीक्षा करो, जबतक कि तुम न दिखने लगो।''

अगली सुबह, मुझे अपने पहले खाने के साथ कुछ जड़ीबूटियॉ लेनी थी, जड़ीबूटियॉ खून को साफ करने के लिये, सिर को साफ करने के लिये और सामान्य संरचना को व्यवस्थित करने के लिये। ये सुबह और शाम, दो हफ्तों तक ली जानी थीं। हर शाम को मुझे, अपनी ऑखों और सिर के ऊपर के भाग को काले कपड़े से ढकते हुये, डेढ़ घण्टे आराम करना था। इस बीच, मुझे विशेष श्वसन क्रिया का एक विशेष लय (rhythem) के साथ अभ्यास करना था। इस अवधि में, मुझे अत्यंत सावधानीपूर्वक ध्यान से, निजी स्वच्छता के साथ ये सब करना था।

दो सप्ताह पूरे होने पर, मै पुनः लामा मिंग्यार डोंडुप के पास गया, ''हम छत पर छोटे शांत कक्ष की ओर चलें,'' उन्होने कहा। ''जबतक तुम इससे, और अधिक परिचित नहीं हो जाते, तुम्हें एकदम शांति की आवश्यकता होगी।'' हम सीढ़ियों पर चढ़े और सपाट छत पर जाकर निकले। उसके एक ओर, एक छोटा सा घर था, जहाँ दलाईलामा, जब वह भिक्षुओं को वार्षिक आर्शीवाद देने के लिये चाकपोरी आते, अपने श्रोताओं (audiances) को मिलते थे। अब हम इसका उपयोग करने जा रहे थे। मैं जा रहा था, और यह वास्तव में, मठाध्यक्ष तथा लामा मिंग्यार डोंडुप के उपयोग के लिये एक घण्टा

---

12 अनुवादक की टिप्पिणी : यह एक त्रिकोणात्मक बोर्ड होता है, जिसके नीचे चलनशील घिर्रियाँ (castors) लगी रहती हैं, उंगलियों के सिरे से हल्के से छुए जाने पर, ऐसा समझा जाता है कि कोई अलौकिक शक्ति अथवा अवचेतन मन, चाहे गये प्रश्नों का उत्तर देता है, अथवा पारलौकिक संदेश प्राप्त होते हैं।

13 अनुवादक की टिप्पिणी : टेरट (tarot) कार्ड, ताश के पत्तों की तरह चार रंगों (प्रत्येक रंग में 14 कार्ड) में विभाजित 56 कार्डों की गड्डी होती है। प्रारंभ में इसका उपयोग खेल में होता था, परंतु आजकल इनका उपयोग भविष्यकथन के लिये किया जाता है।

था, परन्तु अन्यों के लिये नहीं। हम इसके अन्दर फर्शपर, अपनी अपनी गद्दियों पर बैठे। हमारे पीछे एक खिड़की थी, जिसमें से हम दूरी पर स्थित पहाड़ों को, जो हमारी आनंददायक घाटी के संरक्षक के रूप में थे, देख सकते थे। पोटला भी यहॉ से देखा जा सकता था, परन्तु ये इतना परिचित था कि, इस संबंध में चिंता करने की आवश्यकता नहीं थी। मैं देखना चाहता था कि, क्रिस्टल में क्या है। ''इस तरफ को घूम जाओ, लोबसांग। क्रिस्टल को देखो और जब सभी परावर्तन समाप्त हो जायें तो मुझे बताओ। हमें प्रकाश के उन सभी विषम बिन्दुओं को छोड़ देना चाहिये। ये वे हैं जिन्हें हम देखना नहीं चाहते।'' ये ध्यान रखने योग्य मुख्य बिन्दुओं में से एक है। उन सभी प्रकाशों को छोड़ दो, जो परावर्तन पैदा करते है। परावर्तन केवल ध्यान को नष्ट करते हैं। हमारा तरीका उत्तर वाली खिड़की की ओर पीठ करके बैठ जाने का और उचित मोटाई का एक मोटा परदा, खिड़की पर डालने का था, ताकि धुंधला प्रकाश बना रहे। अब परदे गिरा देने के बाद, क्रिस्टल मेरे हाथों में मृत, निष्क्रिय दिखाई दिया। इसकी सतह को दूषित करने के लिये, परावर्तन बिल्कुल नहीं।

मेरे शिक्षक मेरे बगल में बैठे। ''क्रिस्टल को अपने हाथों से गीले कपड़े से रगड़ कर साफ करो, उसे इस काले कपड़े से पकड़ कर उठाओ। अपने हाथों से इसे मत छूओ।'' जैसा मुझे निर्देशित किया गया था, सावधानीपूर्वक मैंने वैसे ही किया। गोले को पोंछा, सुखाया, काले कपड़े से, जो मोड़कर चोकोर किया था, ढककर, उसको अपने हाथों में पकड़ा। क्रिस्टल को नीचे, अपने बायें हाथ में संभाले हुये, हथेलियॉ ऊपर की ओर किये हुए, मेरे दोनों हाथ, एक दूसरे को क्रॉस किये हुये थे। ''अब, क्रिस्टल में अन्दर देखो। उसके ऊपर नहीं, परन्तु अन्दर। ठीक केन्द्र में देखो और तब अपनी नजर को एकदम खाली हो जाने दो। किसी चीज को देखने की कोशिश मत करो, अपने दिमाग को एकदम खाली छोड़ दो।'' बाद वाला भाग, मेरे लिये कठिन नहीं था। मेरे शिक्षकों में से कुछ सोचते थे कि, मेरा दिमाग तो हर समय खाली ही रहता है।

मैने क्रिस्टल पर देखा। मेरे विचार चलते रहे। अचानक ही मेरे हाथों में गोला बढ़ता हुआ महसूस हुआ। और मैंने महसूस किया मानो कि, मैं इसके अन्दर गिरने वाला ही था। इसने मुझे उछाल दिया और यह छाप हल्की पड़ गई। एकबार और मैने क्रिस्टल के गोले को अपने हाथों में पकड़ा। ''लोबसांग! जो मैंने तुम्हें बताया था, उस सब को क्यों भूल गये ? तुम उसे देखने की कगार पर ही थे और तुम्हारे अचानक आश्चर्य ने इसकी सतत्ता के धागे को तोड़ दिया। आज तुम कुछ नहीं देख सकोगे।''

क्रिस्टल के ऊपर देखते हुये, अपने मन को उसके आंतरिक भाग पर केन्द्रित करना होता है। तब एक विशेष प्रकार की सनसनी आती है, मानो कि, किसी दूसरे विश्व से कोई दूसरा, अन्दर कूदने वाला है। कोई शुरूआत, डर या आश्चर्य, इस अवस्था मे पूरी चीज को बिगाड़ देता है। तब सीखते समय, एक ही चीज करने की है, वास्तव में, क्रिस्टल को एक तरफ उठाकर रख देना और ''देखने'' का प्रयास नहीं करना, जबतक कि कोई पूरी एक रात सो न ले।

अगले दिन हमने फिर प्रयास किया। मैं पहले की तरह खिड़की की तरफ अपनी पीठ करके बैठा, और यह देखते हुये कि प्रकाश, विक्षुब्ध करने वाला प्रकाश, पूरी तरह छोड़ दिया जाये। सामान्यतः मुझे ध्यान की पद्मासन मुद्रा में बैठना चाहिये था, परन्तु अपनी टॉग घायल होने के कारण, ये मुझे अधिक आरामदायक नहीं था। आराम अत्यावश्यक है। किसी को शांत और आराम से बैठना चाहिये। परम्परागत रूप से, दुखद स्थिति में बैठने और कुछ न देख पाने के बजाय, अपरम्परांगत रूप से सुखद स्थिति में बैठकर देखना, अधिक अच्छा होता है। हमारा नियम था, तुम जैसे चाहो बैसे, आरामदायकरूप से बैठ सकते हो क्योंकि, दुखदस्थिति, ध्यान को बिगाड़ देती है।

मैंने क्रिस्टल के अन्दर टकटकी लगाकर देखा। मेरे बगल में लामा मिंग्यार डोंडुप, ठीक सीधे, अचल होकर बैठे मानो कि, पत्थर में गढ़े गए हों। मैं क्या देखता ? यह मेरा विचार था, क्या वह वैसे

ही होगा, जबकि मैने पहली बार प्रभामण्डल को देखा ? क्रिस्टल धुंधला दिखाई दिया, सुस्त, निष्क्रिय। ''मैं कभी इस चीज में देख नहीं सकूँगा,'' मैने सोचा। अभी शाम थी, जिससे, छाया को परेशान करता हुआ, सूर्य की रोशनी का कोई बड़ा प्रभाव, नहीं होगा, न ही बादल, अस्थायी रूप से प्रकाश को बाधित कर सकेगें, और इससे अच्छे प्रकाश के साथ देखा जा सकता है। कोई छाया नहीं, प्रकाश का कोई बिन्दु नहीं। कमरे में धुंधलका था। काला कपड़ा मेरे हाथों के बीच में, और गोला उसके ऊपर। मैं इसकी सतह के ऊपर कोई परावर्तन नहीं देख सका। परन्तु मैं अन्दर देखने के लिये, अपेक्षित था।

अचानक क्रिस्टल में जान आती देखी। घुमड़ते हुये धुंऐ की तरह, अन्दर सफेद रंग की धब्बे (fleck) उसके केन्द्र पर दिखाई दिये। ऐसा लग रहा था, मानो एक शांत तूफान, एक बड़ा तूफान, अन्दर आ गया हो। धुंआ गहराता गया, और गहराता गया, और गहराता गया और गहराता गया, और तब गोले की सतह के ऊपर, एक फिल्म के रूप में फैल गया। ये एक परदे की तरह था, जो मुझे देखने से रोकने के लिये बनाया गया था। मैनें मानसिकरूप से इसकी जॉच की, अपने दिमाग को बाधा (barrier) के पार ले जाने की कोशिक की। गोला फैलता हुआ दिखाई दिया, और मुझे तलीरहित रिक्त स्थान में सिर गिरने जैसा भयानक प्रभाव लगा। ठीक तभी, तुरई बजी और सफेद पर्दा हिलकर, बर्फीले तूफान में बदल गया, जो मानो सूरज की दोपहरी की गर्मी से पिघल गया। ''तुम अब इसके पास ही थे, लोबसांग, बहुत पास।'' ''हॉ, मैं कुछ देख पाता, यदि तुरई नहीं बजी होती। इसने मुझे बंद कर दिया।'' ''तुरही? ओह, तुम उससे उतने ही दूर थे, ऐ? ये तुम्हारा अवचेतन था, जो तुम्हें चेतावनी दे रहा था कि, अतींद्रियज्ञान और क्रिस्टल पर टकटकी लगाकर देखना, केवल कुछ लोगों के लिये ही हैं, कल फिर हम इससे आगे जायेंगे''

तीसरी शाम को, मेरे शिक्षक और मैं, पहले की तरह साथ–साथ बैठे। एकबार फिर, उन्होने मुझे नियमों का स्मरण कराया। ये तीसरी शाम अधिक सफल रही। मैं गोले को हल्के से पकड़ कर बैठा और उसके धुंधले आंतरिकभाग में किसी अदृश्य के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित किया। अचानक घूमता हुआ धुंआ प्रकट हुआ और वह शीघ्र ही एक परदा बन गया। मैंने अपने मन से सोचते हुये इसकी जाँच की; ''मैं ठीक जा रहा हूँ, मैं अब ठीक जा रहा हूँ!'' तब गिरने का भयानक अनुभव हुआ। इसबार मैं इसके लिये प्रस्तुत था। मैं अचानक, काफी अधिक ऊँचाई से, सीधा नीचे, धुऐं की तरफ गिरा, ढंका हुआ विश्व, जो आश्चर्यजनकरूप से, तेजी से बढ़ रहा था। केवल कठोर प्रशिक्षण ने, जब मैं अत्यधिक तेजी के साथ, सफेद सतह के ऊपर पहुँचने वाला था, मुझे चीखने से रोका और मैं उसमें से बिना हानि के सीधे गुजर गया।

अन्दर सूर्य चमक रहा था, मैंने अत्यन्त वास्तविक आश्चर्य के साथ, अपने आसपास देखा। मैं निश्चित रूप से मर गया होता, क्योंकि ये वह जगह थी, जिसे मैं नहीं जान सकता था। क्या अजनबी स्थान है! पानी, काला पानी, मेरे सामने फैला हुआ था, जहॉ तक मैं देख सकता था, जितना मैं सोच सकता था, उससे अधिक पानी वहाँ था। कुछ दूरी पर एक भयानक बड़ी मछली जैसा जीव, पानी की सतह के बाहर आने को दबाब डाल रहा था। बीच में एक काले पाइप ने, धुंऐ जैसा कुछ, हवा से वापस फेंके जाने के लिये, ऊपर की तरफ फेंका। मेरे आश्चर्य के अनुसार, मैने देखा कि, एक छोटा आदमी, ''मछली की पीठ'' पर तैर रहा है। मेरे लिये यह अत्यधिक था। मैंने उड़ना चाहा और वह मेरे रास्ते पर स्तब्धित होकर रुक गया। यह हद से ज्यादा था। बड़े–बड़े पत्थर के मकान; बहुमंजिले, ऊँचे, मेरे सामने थे। मेरे ठीक सामने, एक चीनी आदमी, एक उपकरण को, दो पहियों पर खींचने के लिये दौड़ा। स्पष्टतः वह कुछ सामान ले जाने वाला कुली जैसा था, क्योंकि उस पहिये वाली चीज पर एक औरत बैठी थी। ''वह कोई अपंग होनी चाहिये,'' मैने सोचा, ''और उसे पहियों पर ढोना पड़ेगा।'' मेरी तरफ एक आदमी, तिब्बती लामा आ रहा था। मैने अपनी सांस रोकी, यह ठीक लामा मिंग्यार डोंडुप की तरह था, जब वह बहुत अधिक जवान थे। वह मुझमें अन्दर होते हुए, सीधे मेरी और आये, और मैं डर के मारे उछल पड़ा।

''ओह!'' मैं रोने लगा, ''मैं अंधा हूँ। ये अंधेरा था और मै देख नहीं सकता था। ''ये सब ठीक है, लोबसांग, तुम ठीक कर रहे हो। मुझे परदे खींचने दो।'' मेरे शिक्षक ने ऐसा ही किया, और कमरे में शाम का पीला प्रकाश भर गया।

''तुम्हारे अंदर निश्चितरूप से, अतीन्द्रियज्ञान की अत्यधिक शक्तियॉ हैं, लोबसांग; उन्हें केवल निर्देशित करने की आवश्यकता है। काफी असावधानी से मैने क्रिस्टल को छुआ और तुम्हारे विवरण से मैने यह पाया कि, वर्षो पहले, जब मैं शंघाई गया था और जब मैं, स्टीमर और रिक्शा पहली बार देखने के साथ ही, लगभग मर सा गया था, वह छाप तुमने देखी है। तुम ठीक कर रहे हो।''

मैं अभी भी डर में था, अभी भी भूतकाल में रह रहा था। तिब्बत के बाहर, क्या–क्या अजनबी और भयानक चीजें हैं। शर्मीली मछलियाँ, जो धुंऐ को डकार कर फेंकती है और जिनके ऊपर कोई चढ़ सकता है, आदमी जो पहियेदार गाड़ी के ऊपर औरत को ढोता है, मैं इस सब को सोच कर डरा हुआ था। इस तथ्य के साथ डरा हुआ कि, बाद में, मुझे उस ऐसे अजनबी संसार में जाकर रहना पड़ेगा।

''अब तुम क्रिस्टल को पानी में डुबाकर धोओ ताकि, अभी तुमने जो देखा है, उसका प्रभाव मिट जाए। इसे अभी डुबा दो और इसे कटोरे की तली में रखे हुए कपड़े के ऊपर टिका रहने दो, तब इसे दूसरे कपड़े से बाहर उठाओ। अभी भी तुम इसे अपने हाथों से मत छुओ।

किसी क्रिस्टल को उपयोग में लाते समय, याद रखने के लिये यह एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। प्रत्येक प्रेक्षण लेने के बाद, इसको विचुम्बकित किया जाने चाहिये। किसी व्यक्ति के पकड़ने से क्रिस्टल, ठीक उसी प्रकार चुम्बकित हो जाता है, जैसे कि, लोहे का एक टुकड़ा, चुम्बक के सम्पर्क में लाये जाने पर चुम्बकित हो जाता है। लोहे में से चुम्बकत्व को हटाने के लिये, सामान्यतः उसको थपकी देना काफी है परन्तु क्रिस्टल को (विचुम्बकित करने के लिये), उसे पानी में डुबाया जाना चाहिये। जबतक कि कोई, प्रत्येक परिणाम को जानने के बाद, उसे विचुम्बकित नहीं करता, वह अधिक, और अधिक भ्रम में आ जाता है। बाद वाले लोगों के लिये, ''प्रभामण्डल के विकरण,'' बनने शुरू हो जाते हैं, जिससे परिणाम गलत प्राप्त होते हैं।

किसी भी क्रिस्टल को, उसके मालिक के सिवाय, प्रेक्षण के लिये चुम्बकित करने के उद्देश्य के अलावा, अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा काम में नहीं लाना जाना चाहिये। जितने ज्यादा अधिक लोगों के द्वारा गोले को उपयोग में लाया जाता है, वह उतना ही कम उत्तरदायी होता जाता है। हमें पढ़ाया गया था कि, जब हम एक दिन में कई बार प्रेक्षण ले चुके हों तो, हमें क्रिस्टल को अपने साथ बिस्तर में रखना चाहिये ताकि, हम इसे व्यक्तिगतरूप से इसके पास में रहकर, चुम्बकित कर सकें। अपने साथ में क्रिस्टल रखने से भी, इसीप्रकार के परिणाम प्राप्त हो सकेंगें। परन्तु हम मूर्ख, धीमे–धीमे टहलते हुये, और क्रिस्टल गोले को घुमाते हुये, दिखाई देंगे।

जब इसे उपयोग में नहीं लाया जाये, तो क्रिस्टल को एक काले कपड़े से ढककर रखना चाहिये। किसी को भी, कभी भी, इसके ऊपर सूर्य की तेज रोशनी नहीं पड़नी देनी चाहिये, क्योंकि यह अच्छे उद्देश्य के लिये, इसके उपयोग को हानि पहुॅचाता है। और न हीं, क्रिस्टल को केवल रोमांच के लिये, किसी को देना चाहिये। इसके पीछे एक उद्देश्य है। रोमांच चाहने वाला कोई, इसमें वास्तविक रुचि नहीं रखता वल्कि एक सस्ता मनोरंजन चाहता है, जो क्रिस्टल के प्रभामण्डल (aura) को नुकसान पहुॅचाता है। ये ठीक वैसा ही है जैसे कि, किसी कीमती कैमरे अथवा घड़ी को, एक बच्चे को दे दिया जाये ताकि, उसकी निष्क्रिय उत्सुकता की संतुष्टि की जा सके।

अधिकांश लोग क्रिस्टल का उपयोग कर सकते हैं, यदि वे ये पता करने का कष्ट करें कि, उन्हें किसप्रकार का क्रिस्टल ठीक बैठता है। हम ये पक्का कर लेते हैं कि, हमारे चश्में हमें ठीक बैठते हों। क्रिस्टल भी उसी तरह, समानरूप से महत्वपूर्ण है। कुछलोग चट्टानी क्रिस्टल के साथ अधिक अच्छा देख सकते हैं और कुछ लोग कॉच के द्वारा। चट्टानी क्रिस्टल अधिक शक्तिशाली प्रकार का होता है। यहॉ मैं

उस इतिहास को दे रहा हूँ जो चाकपोरी में लिखा हुआ रखा है।

लाखों साल पहले, ज्वालामुखी ने आग की लपटें और लावा अपने मुँह से बाहर निकाला। जमीन में बहुत नीचे, विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ और बालू, भूचाल के कारण रई की तरह बिलोऐ गये और ज्वालामुखी की गर्मी के कारण, पिघलकर कॉचरूप में परिणित हो गए। भूकम्प के कारण कॉच टुकड़ों में टूट गया, और उगलकर, पर्वतों के बगल से बाहर फेंक दिया गया। जमे हुये लावे ने इसका अधिकांश भाग ढक लिया।

समयचक्र में, चट्टानों पर से गिरने के कारण, इस प्राकृतिक कॉच अथवा चट्टानी कॉच के टुकड़े नीचे गिर गये। इनमें से एक टुकड़ा, मानवजीवन के भोर में, जनजाति के पुजारियों द्वारा, देखा गया। उन बहुत पुराने दिनों में, पुजारी ऐसे आदमी थे, जिन्हे गूढ़शक्तियॉ प्राप्त थीं, जो भविष्यकथन कर सकते थे और किसी वस्तु का इतिहास, मनोमापन (psychometry) से बता सकते थे। उनमें से किसी एक ने, इस विशेष क्रिस्टल के टुकड़े को छुआ और वह उसे घर लाने के लिये प्रभावित हुआ। वहॉ एक स्पष्ट स्थान रहा होगा, जहॉ की अतिन्द्रिय छाप उसे मिली। परिश्रमपूर्वक, उसने और दूसरे लोगों ने, उस टुकड़े को गोले के रूप में आकार दिया, क्योंकि उसे हाथ में पकड़ना आसान था। सदियों तक पीढ़ी दर पीढ़ी, यह पुजारी से पुजारी तक, गुजरता रहा, हरेक उस कठोर पदार्थ को घिस घिस के पॉलिस करता रहा। धीमे–धीमे यह गोला, साफ और गोल होता गया। बहुत लम्बे समय तक वह इसे भगवान की ऑख (God's eye) के रूप में पूजते रहे। आत्मज्ञान (enlightenment) के समय में, यह अपने आप में एक उपकरण के रूप में आया। जिससे कि, बृह्माण्डीय चेतना को पकड़ा जा सके। अब लगभग चार इंच के आकार का, और पानी के समान साफ यह गोला, पत्थर की एक मजूंषा में रखकर, सावधानीपूर्वक पैक कर दिया गया और पोटाला के काफी नीचे, एक सुरंग में छिपा दिया गया।

शताब्दियों बाद, इसे एक खोजी भिक्षु के द्वारा खोजा गया और इसपर तथा मंजूषा पर लिखे हुऐ वर्णन का कूटानुवाद (decode) किया गया। ''ये भविष्य की खिड़की है,'' जो यह कहती है कि, जिनको यह क्रिस्टल यह अनुकूल होगा, वे भूत और भविष्य को देख सकते हैं। ये दवा के मंदिर के उच्चपुजारी के कब्जे में रहा। ''वैसे के वैसे ही'' क्रिस्टल को आधुनिक चिकित्सा के मंदिर, चाकपोरी में लाया गया, और ऐसे व्यक्ति के लिये, जो इसे उपयोग में ला सके, संभालकर रखा गया। मैं वह व्यक्ति था, यह मेरे लिये रखा गया था।

इसप्रकार का चट्टानी क्रिस्टल मिलना दुर्लभ है, और बिना किसी दोष के मिलना, इससे दुगना दुर्लभ है। ऐसे क्रिस्टल को हरकोई उपयोग नहीं कर सकता। इसे अत्यधिकरूप से मजबूत और वर्चस्वशाली (dominant) होना चाहिये। कांच के गोले प्राप्त किये जा सकते हैं, और जो लोग, आवश्यक प्रारंभिक अनुभव लेना चाहते है। इसका सही आकार, तीन से चार इंच होता है, परन्तु आकार कदापि महत्वपूर्ण नहीं है। कुछ भिक्षुओं के पास क्रिस्टल की छोटी पच्चड़ होती है, जिसे बड़ी अगूंठी में जड़ दिया जाता है। महत्वपूर्ण बात यह देखना और सुनिश्चित करना है कि, उसमें कोई दोष नहीं हो अथवा बहुत ही हल्का दोष हो, जो उसे दबेहुऐ हल्के प्रकाश में से देखने पर दिखाई नहीं पड़ता हो। चट्टानी छोटे क्रिस्टल अथवा कॉंचों के साथ, यह लाभ है कि, वे हल्के वजन के होते हैं, और जब कोई इस गोले को अपने हाथ में पकड़ना चाहे तो यह विन्दु विचारणीय है।

किसी व्यक्ति को, जो किसी क्रिस्टल को खरीदना चाहता है, मनोवैज्ञानिक समाचार पत्रों में विज्ञापन देना चाहिये। इसप्रकार की चीजें, जो किन्हीं निश्चित दुकानों में बिक्री के लिये सुलभ होती हैं, जादूगरों अथवा मंच पर प्रदर्शित करने वालों के लिये अधिक उपयुक्त होती हैं। सामान्यतः इसमें कुछ दाग–धब्बे हो सकते हैं, जो तबतक दिखाई नहीं दे सकते, जबतक कि, इसे उपयोग में लाने के लिये घर न लाया जाये। इसलिये किसी क्रिस्टल को अनुमोदन के आधार पर ही खरीदो और इसे जितना जल्दी हो सके खोलो और चलती जलधारा के नीचे धोओ। सावधानीपूर्वक, इसे सुखाओ और काले

कपड़े में रखते हुए, इसकी परख करो। कारण ? इसपर लगे उँगलियों के निशानों को, जो दोषों जैसे दिखाइे दे सकते हैं, धोओ और इसे इस तरह पकड़ो कि, आपकी उँगलियों के निशान, आपको भ्रमित न कर सकें।

आप नीचे बैठने की आशा नहीं रख सकते, क्रिस्टल में अन्दर देखो, और ''चित्रों को'' देखो। अपनी असफलता के लिये क्रिस्टल को दोष देना ठीक नहीं है। यह मात्र एक उपकरण है, और आप किसी दूरदर्शक की, यदि आप उससे गलत सिरे पर देख रहे हों, और छोटे चित्र दिखाई दें, केवल इसलिये निंदा नहीं कर सकते।

कुछ लोग, क्रिस्टल का उपयोग नहीं सकते। छोड़ देने से पहले, उन्हें एक ''काले दर्पण का'' उपयोग करना चाहिये। इसे बहुत सस्ते में बनाया जा सकता है। किसी मोटर का सामान बेचने वाली दुकान से, हेडलाइट का कॉच खरीदो। कॉच अवतल और एकदम चिकनी सतह वाला होना चाहिये। कगार वाले कॉच इस उद्देश्य के लिये उपयुक्त नहीं हैं। एक सही कॉच की बाहर वाली वक्र सतह को एक दीपक की ज्योति के ऊपर लाओ। इसे आगे पीछे घूमाओ, ताकि कॉच की बाहरी सतह पर एक समान रूप से कालोंच बैठ जाये। ये किसी सेल्यूलोज की बार्निश से पक्का किया जा सकता है, जिसे पीतल का सामान धुंधला होने से बचाने के लिये लगाया जाता है।

कालादर्पण तैयार हो जाने के पश्चात्, इसे गोल क्रिस्टल की भाँति प्रयोग करते हुये आगे बढ़ो। वे सुझाव, जो किसी भी प्रकार के क्रिस्टल पर लागू होंगे, इस अध्याय के अन्त में दिये गये हैं। कालेदर्पण के साथ कोई भी व्यक्ति, सभीप्रकार के फालतू परावर्तनों को हटाते हुए, अंदरूनी सतह पर देखता है।

एक दूसरे प्रकार का कालादर्पण होता है, जिसे हमे ''शून्य'' के नाम से जानते हैं। ये पहले दर्पण की तरह ही होता है परन्तु इसमें काजल अन्दर वाली सतह में चढ़ाया जाता है। इसका एक प्रमुख नुकसान यह है कि, इसके ऊपर लगे हुये काजल को पक्का नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे चमकदार (glossy) सतह प्राप्त होगी। ये उन लोगों के लिये उपयोगी होता है, जो परावर्तनों से परेशान होते है।

कुछ लोग, पानी से भरे कटोरे का उपयोग करते है और उसमें टकटकी लगा कर देखते हैं। कटोरा साफ होना चाहिये और उसमें किसीप्रकार का कोई नमूना नहीं होना चाहिये। इसके अन्दर एक काला कपड़ा रखें और इसप्रकार ये कॉच का क्रिस्टल बन जाता है। तिब्बत में एक झील है। वह इस तरह स्थित है कि, उसमें कोई भी देख सकता है, परन्तु अधिकतर लोगों को, इसमें पानी नहीं दिखाई देता। यह एक प्रसिद्ध झील है, जो राजकीय ज्योतिषियों द्वारा अत्यधिक महत्वपूर्ण भविष्यवाणियों के लिये, उपयोग में लायी जाती है। हम इसे च्यो–कोर ग्याल–कि नाम–त्सो (अग्रेंजी में इसे, Heavenly lake of the victorious wheel of religion, धर्म के विजयी पहिये की स्वैर्गिक झील) कहते हैं। यह वह स्थान है जिसे ताक–पो (Tak-po) कहते हैं, जो ल्हासा से सौ मील दूर है। ये जिला सभी तरफ पहाड़ियों से घिरा है और झील उन्हीं चोटियों के बीच में स्थित है। सामान्यतः, पानी वास्तव में बहुत नीला है, परन्तु कईबार, जब कोई इसे निश्चित लाभ की दृष्टि से देखता है तो, यह घुमावदार व सफेद हो जाता है, मानोकि इसके अन्दर कलई डालकर घोल दी गई हो। पानी चक्र के रूप में घूमता और झाग बना लेता है और तभी अचानक ही, झील के बीच में एक कालाछिद्र उभरता है और इसके ऊपर, सफेद घने बादल बन जाते हैं। कालेछिद्र के बीच में और सफेद बादलों के बीच में भविष्य का चित्र उभरता है, जिसमें भविष्य की घटनाऐं देखी जा सकती हैं।

इस स्थान पर जीवन में कम–से–कम एक बार, दलाई लामा अवश्य आते हैं। वह समीप में ही एक खेमे में ठहरते हैं और झील को देखते है। वह केवल स्वयं से संबंधित, महत्वपूर्ण घटनाओं को देखते हैं, महत्वहीन या कम महत्व की घटनाओं को नहीं। जीवन से उनके गुजरने का समय और ढंग।

ये झील कभी गलत सिद्ध नहीं हुई।

हम सभी झील तक नहीं जा सकते परन्तु थोड़े धैर्य और विश्वास के साथ, एक क्रिस्टल का उपयोग कर सकते हैं। पश्चिमी पाठकों के लिये, यहॉ एक विधि सुझाई गई है। यहॉ पर क्रिस्टल का आशय, चट्टानी क्रिस्टल, कॉच, कालेदर्पण और पानी के कटोरे से है। एक हफ्ते के लिये अपने स्वास्थ्य के ऊपर ध्यान दें। इस विशेष सप्ताह में (इस दुःखभरी दुनियाँ में, जहाँतक संभव हो सके) चिन्ताऐं और क्रोध वर्जित रखें। खाना किफायत से खाऐं और कोई सॉस (sauce) या तली हुई चीजें न खाऐं। क्रिस्टल को जितना संभव हो सके, उसमें कुछ भी न देखने का प्रयास करते हुए उपयोग करें। ये आपके व्यक्तिगत चुम्बकत्व में से कुछ को, उसको हस्तान्तरित कर देगा और आपको इससे सुपरिचित बनाने के लिये और महसूस करने के लिये सुपरिचित बना देगा। जब आप क्रिस्टल को उपयोग में नहीं ला रहे हों तो, इसे सब तरफ से बंद करना उचित होगा। यदि आप कर सकते हैं तो, इसे एक संदूक में रखें, जिसमें ताला लगाकर बंद किया जा सकता हो। इससे आपकी अनुपस्थिति में दूसरे लोगों को, खेलने से रोका जा सकेगा। सूर्य की सीधी रोशनी को, जैसाकि आप जानते हैं, वर्जित किया जा सकना चाहिये।

सात दिन बाद, क्रिस्टल को शांत कमरे में, जिसमें उत्तर की तरफ से प्रकाश आता हो ले जायें। शाम का समय सबसे अच्छा होता है क्योंकि, उस समय सूर्य का सीधा प्रकाश नहीं होता है। क्रिस्टल को अपने हाथों से पकड़ें और उसकी सतह में होने वाले परावर्तनों को ध्यान से देखें। इनको खिड़कियों के परदे खींचकर, अथवा अपनी स्थिति को बदल कर समाप्त किया जा सकता है।

जब आप संतुष्ट हो जायें तो, कुछ सेकण्डों के लिये, क्रिस्टल को अपने माथे के बीच में रखकर पकड़ें, और तब इसे धीमे से हटा लें। अब उसे अपने हाथों की पसों में रखें, उसका पिछला हिस्सा आपकी गोदी में रह सकता है। क्रिस्टल की सतह के ऊपर निष्क्रियरूप से देखें, और अपनी दृष्टि को क्रेन्द पर, अन्दर की ओर करें, जिसमें आपको एक रिक्तक्षेत्र की कल्पना करनी चाहिये। अपने दिमाग को रिक्त हो जाने दें। किसी भी चीज को देखने का प्रयत्न बंद कर दें। अपनी तीव्र भावनाओं को छोड़ दें।

पहली रात के लिये, दस मिनट का समय काफी है। धीमे–धीमे समय को बढ़ायें, सप्ताह के अंत तक आप इसे आधा घण्टा तक कर सकते हैं।

अगले हफ्ते, अपने मन को जितना जल्दी हो सके, खाली करने का प्रयास करें। क्रिस्टल के अन्दर रिक्तता पर टकटकी लगायें। आपको लगेगा कि, इसकी बाहरी रूपरेखा हिलने लगी है। ऐसा लगेगा कि, पूरा गोला ही बढ़ रहा है और आप ऐसा महसूस कर सकते है कि, आप आगे की तरफ गिर रहे हैं। ऐसा होना चाहिये। आश्चर्य के साथ प्रांरभ न करें क्योंकि, यदि आप ऐसा करेगें तो ये आपको शेष शाम के लिये दिखाना बंद कर देगा। औसत आदमी, पहली बार देखने में, ऐसा झटका खाता है, जैसाकि हम नींद में जाने से पहले खाते हैं।

थोड़े अधिक अभ्यास के साथ, आप यह पायेंगे कि क्रिस्टल बढ़ता, और बढ़ता जा रहा है। जब आप देखेंगे तो एक शाम आप पायेंगे कि, ये अन्दर से चमकदार और सफेद धुंऐ से भरा हुआ है। ये साफ हो जायेगा बशर्ते आप झटका न खायें। – और तब आपको, सामान्यतः, अपने भूतकाल का प्रथम दृश्य दिखाई देगा। ये कुछ आप से संबंधित हो सकता है, क्योंकि केवल आपने गोले को काम में लिया है। इसको जारी रखें। अपने खुद के मामलों को देखें। जब आप इच्छानुसार देख सकते हैं, आप जो जानना चाहते हैं, इससे कहें। दृढ़तापूर्वक, जोर से कहना, सबसे अच्छा। ''मैं अमुक–अमुक को आज रात में देखने वाला हूँ'' यदि आप विश्वास करते हैं, तो वह देख सकते हैं, जिसकी आप इच्छा करते हैं। ये उतना ही आसान है।

भविष्य जानने के लिये, आपको अपने तथ्यों को तलाशना होगा। जो आपके पास उपलब्ध हो

उस सभी डाटा को इकट्ठा करें और उन्हें स्वयं को बताऐं। तब क्रिस्टल को पूछें और आप जो देखना और जानना चाहते हैं, स्वयं को कहें।

यहॉ एक चेतावनी। क्रिस्टल को कोई भी अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये उपयोग नहीं कर सकता, न तो घुड़दौड़ के परिणाम के भविष्यकथन के लिये, और न ही दूसरे को घायल करने के लिये। यहॉ गूढविज्ञान का एक शक्तिशाली नियम है, जो आप के खुद के सिर पर आघात करेगा, यदि आप क्रिस्टल का दुरूपयोग करना चाहेंगे। ये नियम समय की भॉति अत्यधिक निष्ठुर है।

अब तक आप, अपने निजी मामलों में अध्ययन करने का अभ्यास कर चुके होगें। क्या आप दूसरों के लिये इसका उपयोग करना चाहेगें ? क्रिस्टल को सावधानीपूर्वक पानी में डुबाऐं उसकी सतह को छुए बिना, सावधानीपूर्वक सुखाऐं। तब उसे दूसरे व्यक्ति को दें। कहें, इसे अपने हाथ में पकड़ो और जो तुम जानना चाहते हो, सोचो। तब तुम मुझे वापिस दो।'' स्वाभाविकरूप से, आप ने अपने प्रश्नकर्ता को, न बोलने के लिये, अथवा न विक्षुब्ध करने के लिये, कह दिया होगा। ये परामर्श दिया जाता है कि पहली बार, आप अपने किसी सुपरिचित मित्र के साथ प्रयोग करें। चूंकि जब कोई सीख रहा हो, अजनबी लोग, बहुधा असंबद्ध प्रतीत होते हैं।

प्रश्नकर्ता जब क्रिस्टल को आपको वापिस करें, आप उसे अपने हाथ में ले लें। या तो खाली अथवा काले कपड़े में ढके हुये, ये कोई अर्थ नहीं रखता कौन सा; तबतक आप क्रिस्टल को निजत्व प्रदान कर चुके होगें। अपने आप को आरामदायक स्थिति में स्थिर करें। क्रिस्टल को एक सेकण्ड के लिये अपने माथे तक उठायें, तब अपने हाथों को किसी भी तरीके से अपनी गोदी में टिका दें, जिससे आपको किसी भी प्रकार का जोर न पड़ सके। उसके अन्दर देखें और यदि संभव हो तो अपने मन को पूरी तरह खाली हो जाने दें। परन्तु पहली बार का यह प्रयास, यदि आप स्वयं के बारे में सचेत हों तो कुछ हद तक कठिन हो सकता है।

तब तक, अपने आप को, शांत कर लें। यदि आपने, अपने आप को, जैसा परामर्श दिया गया है, प्रशिक्षित कर लिया है, तो तीन में से एक चीज दिखाई देगी। ये सच्चे चित्र, संकेत अथवा छाप हो सकते हैं। आपका लक्ष्य, सच्चे चित्र होना चाहिये। क्रिस्टल में बादल दिखते हैं और जो आप जानना चाहते हैं, उसका सही चित्र, जीवंत चित्र आपको दिखाने के लिये, ये बादल बाद में छँट जाते हैं। इनको समझने या शब्दों में व्यक्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती है।

कुछ लोग सच्चे चित्र नहीं देख सकते; वे संकेत देखते हैं। उदाहरण के लिये, वह देख सकते हैं XXX अथवा एक हाथ, ये कोई एक पवनचक्की हो सकती है, या कोई खंजर। कुछ भी हो, आप शीध्र ही इनका अर्थ निकालना, और सही से समझना सीख जायेंगे।

तीसरी चीज छाप है। यहॉ कुछ भी निश्चित नहीं सिवाय इसके, घुमड़ते हुये बादल और थोड़ी सी चमक, लेकिन जैसे क्रिस्टल पकड़ा जाता है, निश्चित छाप महसूस की जाती है अथवा सुनी जाती है। व्यक्तिगत झुकावों को हटा देना, अत्यधिक आवश्यक है, और किसी एक निश्चित प्रकरण में, किसी की व्यक्तिगत भावनाओं के प्रति, क्रिस्टल द्वारा बताये गये कथन को, अनसुना नहीं किया जाना चाहिये।

वास्तविक देखने वाले, किसी व्यक्ति को उसकी मृत्यु की तारीख, अथवा उसकी मृत्यु की संभावना भी नहीं बताते। आप जान जायेगें परन्तु कभी भी बताना नहीं चाहिये और न ही, किसी व्यक्ति को आसन्न बीमारियों के संबधं में चेतावनी देनी चाहिये। बदले में कहें : आपको, अमुक–अमुक तारीखों पर, सामान्य से थोड़ी अधिक सावधानी लेने का परामर्श दिया जाता है।'' और कभी किसी व्यक्ति को ये न बताऐं : ''हॉ, आपके पति किसी लड़की के पीछे बाहर गये हैं जो – – इत्यादि, इत्यादि।'' यदि आप क्रिस्टल का सही तरीके से उपयोग कर रहे हैं तो आप जान जायेंगे कि, वह बाहर हैं, परन्तु वह व्यापार के सिलसिले में बाहर हैं ? क्या वह उसकी कोई रिश्तेदार है ? कभी नहीं, कभी नहीं, किसी परिवार को तोड़ने के लिये अथवा अप्रसन्नता पैदा करने के लिये कुछ भी न कहें। ये क्रिस्टल का दुरूपयोग होगा।

इसका उपयोग केवल भलाई के लिये करें और बदले में आपको भलाई मिलेगी। यदि आप कुछ नहीं देख रहे हों, तो ऐसा कह दें, प्रश्नकर्ता आपका आदर करेगा। आप ये देखने के लिये आविष्कार कर सकते हैं और शायद ऐसा कुछ कह सकते हैं, जिसको प्रश्नकर्ता गलत समझता हो, तब आपकी प्रतिष्ठा और इज्जत चली जायेगी, और आप भी गूढ़विज्ञानों के प्रति बदनामी पैदा करेंगे।

प्रश्नकर्ता को अपना प्रेक्षण बतादेने के बाद, सावधानीपूर्वक क्रिस्टल को लपेटें और उसे धीमे से नीचे रख दें। आपको परामर्श दिया जाता है कि, जब प्रश्नकर्ता चला जाये तो, क्रिस्टल को पानी में डूबाकर साफ करें। पोंछकर सुखाऐं और तब अपने खुद के चुम्बकत्व के साथ, इसे पुनः व्यक्तिगत बनाने के लिये अपने हाथ में रखें। आप क्रिस्टल को जितना ज्यादा अपने पास रखेंगे, उतना ही अच्छा होगा। इसपर खरोंच पड़ने से बचायें, और जब आप समाप्त कर चुकें, तो इसे काले कपड़े में रखें। यदि आप कर सकते हैं तो, उसे एक डिब्बे में रखें और ताला लगायें। बिल्लियाँ अधिक आक्रामक होती हैं। उनमें से कुछ, लम्बे समय के लिये, इसके ऊपर ''टकटकी लगाकर'' बैठ सकती हैं, और जब अगली बार क्रिस्टल का उपयोग करें, तो आप, बिल्ली का जीवनवृत्त और उसकी महत्वाकाँक्षाओं को नहीं देखना चाहेंगे। यह किया जा सकता हैं। तिब्बत में कुछ ''गूढ़विज्ञान'' लामामठों में, क्रिस्टल बिल्ली से भी प्रश्न करते हैं। जब वह जवाहरातों की सुरक्षा के अपने कर्त्तव्य से मुक्त होकर आती है, तब भिक्षु जान जाते हैं कि, क्या उनको चुराने का कोई प्रयास किया गया था।

प्रबलरूप से यह परामर्श दिया जाता है कि, क्रिस्टल पर निगाह बांधकर देखने के प्रशिक्षण से किसी भी रूप में संलग्न होने से पहले, आपको अपने स्वयं के, गुप्त उद्देश्यों के बारे में पूरी तरह से जॉच कर लेनी चाहिये। गूढ़विज्ञान, दुधारू हथियार है, और जो इससे केवल, उत्सुकता के कारण खेलते हैं, कईबार मानसिक (mental) और नाड़ियों (nerves) की बीमारियों के रूप में, दण्डित किये जाते हैं। इसके माध्यम से आप, दूसरों को मदद करने के आनंद को जान सकते हैं, परन्तु आप ये भी समझ सकते हैं कि, ये भयानक और अविस्मरणीय होता है। इसलिये यह सुरक्षित होगा कि, आप पहले इस अध्याय को पढ़ लें, जबतक कि, अपने उद्देश्यों के बारे में पूरी तरह से सुनिश्चित न हो जायें।

एकबार क्रिस्टल को तय करने के बाद, उसे बदलना नहीं चाहिये। इसे निश्चितरूप से नित्य या कम से कम, हर दूसरे दिन, स्पर्श करने की आदत बनायें। एक पुरानी अरबी कहावत है, 'जबतक कि खून नहीं बहाना हो, तलवार को अपने मित्र को भी मत दिखाओ', क्योंकि, यदि आपने किसी कारण से हथियार को दिखा दिया तो, वे अपनी उगुंली को तलवार से चुभाकर खून निकालेंगे। ऐसा ही क्रिस्टल के साथ भी है। यदि आप इसे किसी दूसरे को दिखाते हैं तो, उसको पूरी तरह से पढ़िये, भले ही अपने लिये। इसे पढ़िये, यद्यपि किसी दूसरे को यह कहने की भी आवश्यकता नहीं है कि, आप क्या देख रहे या क्या कर रहे हैं। ये कोई अंधविश्वास नहीं है, बल्कि स्वयं को प्रशिक्षित करने का तरीका है। ताकि, जब कभी आप क्रिस्टल को खोलें तो, बिना पूर्वतैयारी के या बिना विचारे, स्वयं ही दिखाई पड़ जाये।

अध्याय सात

अनुग्रह उड़ान

नाव धीमे से सीको क्रीक (Soochow creek) में खिसककर रुक गई। चीनी कुली झुण्ड बनाकर, पगलाये से, चीखते और इशारेबाजी करते हुए, ऊपर चढ़े। शीघ्र ही हमारा सामान हटा दिया गया। हमने एक रिक्शा लिया और हम एक बांध के साथ–साथ, चीनी शहर के एक मंदिर में, जहॉ मैं कुछ समय के लिये रुकने वाला था, जल्दी से ले जाये गये। पो कू और मैं, कोलाहल की इस दुनियाँ में चुप थे। वास्तव में, शंघाई बहुत शोर–शराबे वाला स्थान था और व्यस्त भी। सामान्य से अधिक व्यस्त, क्योंकि, जापानी अपने चुटीले आक्रमण की तैयारी के लिये, आधार तैयार कर रहे थे, और पिछले कुछ समय से वे विदेशी नागरिकों की, जो मार्कोपोलो पुल को पार करना चाहते थे, तलाशी ले रहे थे। वे उनकी अच्छी तरह से खानातलाशी लेकर, उनके लिये अत्यधिक स्तब्धित होने का कारण बन रहे थे। पश्चिमी लोग ये नहीं समझ सके कि, जापानी अथवा चीनी, दोनों में से कोई भी, इस बात में मनुष्य शरीर को देखने में कोई शर्म महसूस नहीं करते थे, परन्तु वे मनुष्यशरीर के विचार के सम्बधं में शर्म महसूस करते थे और जब पश्चिमी लोगों की, जापानियों के द्वारा खानातलाशी ली जाती थी तो वे ऐसा सोचते थे कि, जानबूझकर हमारी बेइज्जती की जा रही है, जबकि ऐसा नहीं था।

कुछ समय के लिये, मैने शंघाई में निजी चिकित्सा अभ्यास (practice) शुरू किया, परन्तु पूर्वीलोगों के लिये, समय का कोई महत्व नहीं है। हम ये नहीं कहते कि अमुक–अमुक वर्ष, क्योंकि समय लगातार चलता रहता है। चिकित्सकीय और मनोवैज्ञानिक कार्यों के साथ–साथ, मैने निजी प्रेक्टिस की। अपने कार्यालय में और अस्पतालों में, मुझे मरीज देखने होते थे। आराम का कोई समय नहीं होता था, जो समय चिकित्सीयकार्य से बचता था, वह हवाईयात्रा की उड़ानों से संबंधित सिद्धांतों में, और गहन अध्ययन करने में गुजरता था; रात घिरने के कई घण्टों बाद, मैं शहर की झिलमिलाती रोशनियों के ऊपर, और दूर देहात में, केवल किसानों की झोंपड़ियों से आती हुई, टिमटिमाती हुई, हल्की सी रोशनियों के मार्गनिर्देशन में, उड़ता था। वर्ष अनदेखे गुजर गये, मैं इतना व्यस्त था कि, तारीखों की चिंता नहीं की। शंघाई की नगरपरिषद, मुझे अच्छी तरह जानती थी और उसने मेरी व्यावसायिक सेवाओं का पूरा–पूरा उपयोग किया। श्वेत रूसियों के बीच, मेरा एक अच्छा मित्र था। बोगोमोलोफ (Bogomoloff), उन लोगों में से एक था, जो क्रान्ति की अवधि में, मास्को से भागे थे। वह उस दुखभरे समय में, अपना सब कुछ खो चुका था, और अब उसे, नगरपालिका परिषद ने काम पर लगा लिया था। वह पहला श्वेत आदमी था, जिसको मैंने जाना और पूरी तरह जाना। – वास्तव में एक मानव।

वह इसे अच्छी तरह समझ गया कि, शंघाई में आक्रमण के खिलाफ, कोई बचाव नहीं है। हमारे सामान वह भी, आने वाले आतंक को पहले से देख सकता था।

सात जुलाई 1937 को, मार्कोपोलो पुल[14] के ऊपर एक घटना हुई। घटना के बारे में बहुत कुछ

14 अनुवादक की टिप्पिणी : जून 1937 से जापानियों ने मार्कोपोलो पुल के पश्चिमी सिरे पर अपने गहन प्रशिक्षण प्रारम्भ किये। अक्सर ये रात को होते थे। चीनी सरकार ने जापानियों से निवेदन किया कि वे इनकी पूर्वसूचना उन्हें दे दिया करें ताकि वहॉ के स्थानीय निवासियों को असुविधा न हो। जापानियों ने यह शर्त स्वीकार की। 7 जुलाई की रात को जापानियों द्वारा बिना पूर्वसूचना के ये उद्यम प्रारम्भ कर दिये गये। चीनियों ने इसे हमले की तैयारी मानते हुए रायफल से हवाई फायर किये। लगभग 11:00 बजे दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। जब एक जापानी सैनिक अपने ठिकाने पर नहीं पहुँचा, तब जापानियों ने उच्चाधिकारियो की सहमति से उसकी खोज–खबर लेना शुरू किया। उन्होंने चीनी अधिकारियों से सहयोग की माँग की, जिसे चीनियों ने पूर्वसूचना न होने के कारण ठुकरा दिया। आठ जुलाई को प्रातः लगभग 3:30 बजे जापानी अपनी फौज को लेकर पुल पर हमला करने पहुँचे। चीनी फौज भी तैयारी के साथ वहाँ आ गई। लगभग 4:50 बजे वेंपिग में तलाश करने की इजाजत मिली। 5:00 बजे जापानियों ने मार्कोपोलो पुल के ऊपर तोप के हमले प्रारम्भ कर दिये। लगभग 1000 फौजियों के साथ चीनियों ने पुल को किसी भी कीमत पर बचाये रखने के आदेशों के साथ जबाबी कार्रबाई की। दोपहर के करीब कुछ जानें गवांकर जापानियों ने पुल पर कब्जा कर लिया। 9 जुलाई को कुहरे और वर्षा का लाभ उठाते हुए, चीनियों ने लगभग 6:00 बजे तक फिर से पुल को अपने कब्जे में ले लिया। इस बीच जापानी और चीनी अधिकारियों के बीच बातचीत चली। चीनियों ने खेद व्यक्त किया और दोषियों के प्रति कार्रबाई करने का आश्वासन दिया। जापानियों की ओर से संधि का विरोध किया गया और उन्होंने उच्चाधिकारियों के आदेशों के विरुद्ध 3

लिखा जा चुका है, और मैं इसे दोहराना नहीं चाहता। ये घटना, चीन और जापान के बीच, युद्ध प्रारंभ होने का वास्तविक कारण होने की बजह से, उल्लेखनीय बनी। अब सारी चीजें, युद्ध–काल के आधार पर थीं। हम पर मुश्किल समय आया था। जापानी लोग उग्ररूप से आक्रामक थे। विदेशी व्यापारियों में से अनेक ने, और विशेषकर चीनियों ने, आने वाली तकलीफों का पूर्वाभास कर लिया था और उन्होंने स्वयं को, अपने परिवारों को और अपने सामानों को, चीन के अन्दरूनी भागों में, जैसे – चुंगकिंग, या अन्य विभिन्न भागों में, हटा दिया था परन्तु शंघाई के बाहरी जिलों में रहने वाले किसान, किसी कारण से, स्पष्टरूप से ये समझे हुये कि, वे यहॉ सुरक्षित रहेगें, एकदम शहर में उमड़ पड़े थे।

अन्तर्राष्ट्रीय सेना की ब्रिगेड की गाड़ियाँ, दिन और रात, शहर में शांति को बिगाड़ते हुये, विभिन्न देशों के, किराये के सैनिकों से भरी हुई गाड़ियों को, शहर की गलियों में उड़ेलती रहीं। उनमें अक्सर शुद्ध हत्यारे होते थे, जिन्हें केवल अपनी नृशंसता के कारण भरती किया गया था। यदि कहीं कोई घटना होती, जिसे वे पसंद नहीं करते, तो वे बिना किसी चेतावनी के, बिना किसी उत्तेजना अथवा कारण के, अपनी मशीनगनों को खोलते हुये, रायफलों को, अपनी रिवाल्वरों को, अनजान नागरिकों और नुकसान न पहुँचाने वाले लोगों को मारते हुए, और सामान्यतः दोषी व्यक्तियों के विरूद्ध कुछ न करते हुए, फौज के रूप में आ जाते। हम शंघाई में कहा करते थे कि, इन लालचहरे वाले बर्बरों की तुलना में, जैसा कि हम अन्तर्राष्ट्रीय पुलिसबल के लोगों को कहते थे, जापानियों के साथ निभाना आसान है।

कुछ समय के लिये, मैनें औरतों के, डॉक्टर और शल्यचिकित्सक के रूप में इलाज करते हुए, औरतों के डॉक्टर और शल्यचिकित्सक के रूप में विशेषज्ञता हासिल कर ली थी और वास्तव में, शंघाई में मेरी प्रेक्टिस अधिक संतोषजनक थी। जो अनुभव मैंने, सक्रिययुद्ध के पहले कुछ दिनों में, प्राप्त किया, उसने बाद में, मेरे लिये, अच्छा आधार तैयार किया।

घटनाऐं तेजी से, और अधिक तेजी से, बढ़ती जा रही थीं। जापानियों की घुसपेंठ के आतंक की खबरें आती ही जा रही थीं। जापानी सेना और उसके माल–असबाब देश में, चीन में, लगातार बढ़ते ही जा रहे थे। वे किसानों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे, लूट रहे थे, बलात्कार कर रहे थे, जैसा वे अक्सर करते थे। 1938 के अंत में, दुश्मन शहर के बाहरी घेरे तक आ चुका था; कम हथियारोंवाली चीनी सेनाओं ने, वास्तव में, वीरतापूर्वक सामना किया। उन्होने मृत्युपर्यन्त मुकाबला किया। उनमें से कुछ को, जापानी सेना ने, वास्तव में, वापिस खदेड़ दिया। चीनी, केवल अपनी मातृभूमि को बचाने के लिये लड़ रहे थे, परन्तु वे अपने जनवाहुल्य के कारण भारी पड़ रहे थे। इस आशा में कि जापानी, अपने संधिपत्रों (conventigons) का आदर करेंगे, और ऐतहासिक स्थानों पर बमबारी नहीं करेंगे, शंघाई को खुला शहर घोषित कर दिया गया था। शहर पूरी तरह से असुरक्षित था, तोपें नहीं थीं, किसी प्रकार के कोई हथियार नहीं थे। सेना को वापिस बुला लिया गया था। शहर शरणार्थियों से भरा हुआ था। पुरानी आबादी अधिकांशतः जा चुकी थी। विश्वविद्यालय, अध्ययन और संस्कृति केन्द्र, बड़े–बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठान, बैंकें और दूसरे लोग, इनको चुंगकिंग जैसे स्थानों पर, और दूसरे दूरस्थ जिलों में, हटा दिया गया था। परन्तु इनके बदले में शरणार्थी, सभी स्टेशनों और सभी राज्यों के लोग, जापानियों के कारण अस्थिर, ये सोचते हुये कि यहॉ सुरक्षा अधिक संख्या में थी, भागकर यहाँ आ चुके थे। हवाई हमले, लगातार और लगातार, तेज होते जा रहे थे, परन्तु लोग उनके प्रति थोड़े कठोर हो रहे थे, थोड़े अभ्यस्त हो रहे थे। तब एक रात जापानियों ने वास्तव में, शहर के ऊपर बमबारी की। जितने भी जहाज हो

घंटों तक गोलीबारी की।

यदि संधि और युद्धविराम, दोनों सेनाओं की अपने–अपने क्षेत्रों में वापसी के साथ, जारी रखे गये होते, तो मार्कोपोलो पुल की यह घटना छुटपुट हो कर रह जाती, तथापि 9 जुलाई की अर्द्धरात्रि से दोनों पक्षों द्वारा, युद्धविराम का उल्लंघन किया गया। दोनों पक्षों द्वारा फौजों का भारी जमावड़ा किया गया। 11 जुलाई की शाम से जापानियों ने अपनी सेनाओं को वापस बुलाना शुरू किया। 20 जुलाई को फिर से दोनों तरफ से पूरी तैयारियों के साथ युद्ध हुआ। 'जापानी चीनियों का सहयोग चाहते हैं, उनकी जमीन नहीं' इस कथन के साथ फिर च्यांग काई शेंख के साथ वार्ता शुरू हुयी, जो असफल रही। अंत में 9 अगस्त 1937 को शंघाई में एक जापानी नोसेनिक अधिकारी को गोली मार दी गई और यही द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बना।

सकते थे, उनमें से हर एक ने हवाई उड़ानें भरीं, लड़ाकू विमानों में भी बम लादे गये और यहाँ तक कि, कॉकपिट तक में विमानचालकों के पास भी, बगल से फेंकने के लिये हथगोले (grenades) थे। रात का आकाश, हवाईजहाजों से भर गया। बिना बचाव वाले शहर पर, टिड्डी (locust) के झुण्ड के रूप में पंक्तिवद्ध उड़ते हुये, और टिड्डी के झुण्ड के रूप में उड़ते हुये, रास्ते में जो भी चीज आई, उसका सफाया कर दिया। हर जगह अंधाधुंध तरीके से, बमबारी हो रही थी। शहर, आग की लपटों का समुद्र बन गया था, और कोई बचाव नहीं था; हमारे पास कुछ भी नहीं था, जिससे हम स्वयं का बचाव कर पाते।

आधी रात के करीब, उपद्रव के चरम पर, मैं एक सड़क पर टहल रहा था। मैं एक मरती हुई औरत के प्रकरण में संलग्न था। अब बम गिरते जा रहे थे, और मैं भौंच्चका था कि, कहॉ छिपा जाये। अचानक वहॉ, लगातार बढ़ती हुई, सीटी की एक हल्की सी आवाज हुई, और तब एक गिरते हुए बम की खून जमा कर देने वाली चीख। एक सनसनी फैल गई, मानो कि सम्पूर्ण ध्वनि, सम्पूर्ण जीवन, थम गया हो। वहॉ खालीपन का एक एहसास हुआ, एकदम खालीपन। मुझे मानो एक दैत्यहाथ ने उठा लिया, हवा में घुमाया, तेजी के साथ हवा में उछाला, और हिंसक तरीके से, गुस्से के साथ फेंक दिया। मैं कुछ मिनटों के लिये, मुश्किल से अपने अन्दर कोई सांस; आश्चर्य करते हुये कि, मानो मैं पहले से मरा हुआ था, और दूसरे लोक में जाने की यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा था, आधा भौंच्चका रहकर पड़ा रहा। कांपते हुये मैने खुद को ऊपर उठाया और पत्थर प्रतिमा के रूप में अपने आसपास घूरा। मैं ऊँचे–ऊँचे मकानों की दो पक्तियों के बीच, सड़क पर टहल रहा था; परन्तु अब मैं एक एकांत समतल पर, जिसका कोई उपयोग नहीं था, खड़ा हुआ था। मात्र ध्वस्त मलबे के ढेर, महीन धूल के ढेर, जिसके ऊपर मनुष्य शरीरों के खून से लथपथ छिछड़े और मानव अंग पड़े थे। घरों में भीड़ भर गई थी और भारी बम गिराया गया था। ये मेरे इतना निकट था कि, मैं आंशिकरूप से रिक्तस्थान में था और कुछ असाधारण कारण से मैने कोई आवाज नहीं सुनी और मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ। नरसंहार भयावह पीड़ा देने वाला था। सुबह हमने, लाशों को इकट्ठा करके, ढेर लगाया और उन्हें जलाया, महामारी को फैलने से बचाने के लिये उन्हें जलाया, क्योंकि गरमधूप में, लाशें पहले से ही हरी पड़ रही थीं और फूल रहीं थीं, सड़ रहीं थीं। शायद कोई जिंदा बच गया हो, उसे बचाने के लिये, कई दिनों तक हमने मलबे के नीचे खोदा। शहर को बीमारी से बचाने के प्रयास में, जो मर गये थे उनको खोदते हुये और उसी स्थान पर उन लाशों को जलाया।

एक दिन देर शाम को, मैं शंघाई के पुराने भाग में था। मैंने एक नहर के आर–पार एक लम्बे ढलुआ पुल को पार ही किया था। मेरे दांई ओर, गली के बूथ के नीचे, अपनी दुकानों के पटलों (counters) के ऊपर, कुछ चीनी ज्योतिषी और भविष्यवक्ता, उत्साही ग्राहकों के भविष्यपठन के लिये, जो इस बात को जानने के उत्सुक थे कि, वे इस युद्ध में जियेंगे या मर जायेंगे, और क्या हालात कुछ सुधरेगें, बैठे हुए थे। मैंने, हल्के से आश्चर्य के साथ, ये सोचते हुये, कि ये लोग, पैसा कमाने वालों और उनके कथन के ऊपर, जो वास्तव में विश्वास करते हैं; उनको देखा। भविष्यकथन करने वाले, उन सड़े हुये चरित्रों के ऊपर जो उनको युद्ध का परिणाम बताते हुये, औरतों को अपने आदमियों की सुरक्षा के बारे में बताते हुये, ग्राहकों के नामवाले बोर्डो के ऊपर चढ़े हुये थे। और थोड़ा आगे, दूसरे ज्योतिषी – शायद अपने व्यावसायिक कर्त्तव्यों से कुछ आराम करते हुये, – जनता के लेखक रूप में, कार्य कर रहे थे; वे चीन के दूसरों भागों में भेजने के लिये, संभवतः पारिवारिक मामलों की खबर देते हुये, लोगों के लिये पत्र लिख रहे थे। उन्होंने उन लोगों के लिये, जो लिख नहीं सकते थे, खतरनाक जीवंतलेखन किया था और उन्होंने ऐसा खुले में किया; कोई भी व्यक्ति जो रुकना चाहता था, परिवार के निजी कार्यकलापों को भी सुन सकता था। चीन में कोई निजत्व नहीं होता। गली के लेखक, जो वह लिख रहे थे, उसे बड़ी जोर–जोर से चिल्लाकर कहते थे, ताकि दूसरे नयेग्राहक, संभावितग्राहक, ये समझ सकें

कि, उन्होंने कितनी सुन्दर कलात्मकता के साथ पत्र लिखा है। मैंने अपना अस्पताल की तरफ चलना जारी रखा, जहॉ मैं कुछ ऑपरेशन करने वाला था। मैं सुगंधि बेचने वाले के बूथ से गुजरा, पुरानी किताबें बेचने वालों के बूथ से निकला, जो अधिकांश शहरों की भांति, हमेशा पानी के तरफ इकट्ठे हो जाते थे, और अपने सामानों को, नदी के किनारे दिखाते थे। और आगे, सुगंधि बेचने वाले, और मंदिरों के सामान, जैसेकि, हो ताई (Ho Tai) और कुआन यिन (Kuan Yin) देवताओं की मूर्तियॉ; इनमें से पहले, हो ताई (Ho Tai), अच्छे जीवन के देवता, और बाद वाली कुआन यिन (Kuan Yin) करुणा की देवी है, खोमचे वाले थे। मैं अस्पताल में गया और अपने निर्धारित कार्यो को किया। बाद में उसी रास्ते से लौटा। जापानियों ने अपने बमवर्षक विमानों के कार्यो को अन्जाम दे दिया था। अब वहॉ न तो बूथ थे और न हीं, किताबों की दुकानें। अब वहॉ न तो चीजों के बेचने वाले थे, न सुंगधि के, क्योंकि वे और उनके सामान, धूल में बदल चुके थे, आग की लपटें भवनों को निगल रही थीं, उन्हें कमजोर कर रहीं थी, जिससे यह फिर राख की राख, और धूल की धूल हो गई।

परन्तु पो कू और मुझे शंघाई में रूके रहने के अलावा, कुछ दूसरे भी काम करने थे। .हम जनरल च्यांग काई–शेख के सीधे आदेशों के अनुसार, शंघाई में हवाई एम्बूलेंस को शुरू करने की संभावना के बारे में जॉच पड़ताल कर रहे थे। इन उड़ानों में से एक विशेष उड़ान मुझे अच्छी तरह याद है। दिन एकदम ठंडा, जमा देने वाला था, ऊन के सामान सफेद बादल, सिर के ऊपर सजे थे। क्षितिज के ऊपर, कहीं से, एक साथ घुर–घुर–घुर (crump-crump-crump)[15], जापानी बमों की उबाऊ आवाज आयी। कदाचित, समय–समय पर, कहीं दूर, हवाई इंजनों की, गर्मियों के किसी दिन में मक्खियों की आवाज के सामान, भिनभिनाहट हुई। उस दिन और लगातार पिछले कई दिनों तक, उखड़ी हुई सड़क, जिसके किनारे हम बैठे थे, ने अनेक लोगों के पैरों के वजन को ढोया। निरर्थक नृशंसता और शक्ति में उन्मत्त, जापानियों से बचने के प्रयास में, बूढ़े किसान, अपने जीवन के लगभग अंतिम समय में, एक पहिये वाली गाडियों (borrows) के ऊपर, अपना घर गृहस्थी का सामान ढकलते हुये किसान, पैर घसीटते हुए, पैदल चलते रहे।

किसान, अपनी पीठपर लगभग उस सभी सामान को, जो उनके पास था, लादे हुए, जमीन पर लगभग झुककर चल रहे थे। कम हथियारबंद सेनाऐं, बैलगाड़ियों पर लादे हुये, अपने अत्यन्त कम उपकरणों के साथ, दूसरी तरफ जा रही थीं। ये लोग, इस निर्मम फौजी हमले के विरूद्ध, अपने देश को, अपने घरों को बचाने के लिये, अंधे होकर, अपनी मौत की ओर बढ़ रहे थे। ये भी न जानते हुये कि, उन्हें क्यों आगे बढ़ना चाहिये, ये भी न जानते हुये कि युद्ध किस कारण से प्रारंभ हुआ, अंधे होकर आगे बढ़ रहे थे।

हम एक तीन मोटर वाले, पुराने विमान के पंख के नीचे, दुबककर बैठ गये, एक पुराना हवाई जहाज – वह पहले से ही टूट–फूट चुका था, हमारे इन आलोचनाविहीन और उत्सुक हाथो में पहुँचने से पहले। केनवास से मढ़े हुये पंखों से, नशीलीहवा छिलके की तरह, उतर रही थी। चौड़ा निचला ढॉचा मरम्मत किया गया था और फटे हुये बांसों की सहायता से मजबूत बनाया गया था, और कार के टूटे हुये स्प्रिंग के सिरे से, लम्बे स्किड (skid) को नया जूता पहनाया गया था। पुराने ऐबी (Abie), हम उसे ऐसा कहते थे, ने हमको अभीतक असफलता नहीं दिखाई थी। यह सही है कि, कईबार उसके इंजन बंद हो जाते थे, परन्तु एक समय में केवल एक। वह बड़े पंखों वाला एक सवारी का जहाज था जो गोयाकि, किसी मशहूर अमेरिकन कम्पनी का बना हुआ था। उसका मुख्यढॉचा लकड़ी का, जिसपर कपड़ा मढ़ा गया था, बना था और सरलीकरण, (streamlining) एक ऐसा शब्द था, जो जब वह बनाया गया था, तब अज्ञात था। एक सौ बीस मील प्रति घण्टे की चाल, लगभग दूनी दिखाई देती थी।

15 अनुवादक की टिप्पिणी :चिकनाई कम होने के कारण, इंजन की आवाज

कपड़े ढोल की सी आवाज करते थे, पुर्जे चरमरा रहे थे और विरोध करते थे और खुला हुआ निकास नल (exhaust pipe), जोर से शोर करता था।

काफी समय पहले उसका रंग सफेद पोता गया था, जिसके बगल में और पंखोपर बड़े–बड़े लाल क्रॉस बनाये गये थे और अब वह दुख से परेशान और मरा हुआ था। इंजन से निकलने वाला तेल, हाथीदांत के गहरे पीले जंग की तरह और पुरानी चीनीनक्काशी की तरह, दिखाई देता था। पीछे जलने वाला पेट्रोल, बहता हुआ और फूँकता हुआ, दूसरे रंगों को सहयोग करता था, जबकि, समय–समय पर लगे हुये विभिन्न धब्बे, उस पुराने जहाज को अजीब दिखावट देते थे।

अब भारी गोलों की बमबारी करने वाला फंदा (racket) समाप्त हो गया था। दूसरा जापानी हमला समाप्त हो गया था और हमारा काम अभी शुरू होने ही वाला था। एकबार हमने फिर अपने–अपने कम उपकरणों की जाँच की; आरियॉ दो, एक बड़ी और एक छोटी नोंकदार; चाकू मिले–जुले, चार। उनमें से एक भूतपूर्व कसाई का चाकू था, दूसरा फोटोग्राफी को रि–टच (re-touch) करने वाला चाकू था। दूसरे दो चिकित्सक की अधिकृत छुरियॉ थीं।

चिमटियॉ संख्या में थोड़ी सी थीं। ऊपरी खाल में लगाने वाली दो सिरिजें (syringes), जिनकी सुईयॉ शोकपूर्ण ढंग से भौंतरी हो गई थी। एक सोखने वाली सिरिंज, जिसमें रबर की नली और एक मध्यम आकार का पहिया था। फीते, हॉ हमें उनके बारे में विश्वस्त हो जाना चाहिये था। किसी निश्चेतक के बिना, हमें अपने बीमार को बांधना पड़ता था।

आज उड़ान की बारी पो कू की थी, और मुझे पीछे बैठना था, और जापानी लडाकू विमानों की निगरानी करनी थी, हमारे पास इन्टरकॉम की विलासिता (luxury) नहीं थी। हमारे पास एक लम्बी रस्सी थी जिसका एक सिरा पायलट के पास था और दूसरा सिरा, प्रेक्षक द्वारा मोटे–मोटे संकेतों द्वारा झटका दिये जाने के लिये था।

सर्तकतापूर्वक, मैंने नोदकों (propellors) को हिलाया, क्योंकि ऐबी ने जोर से प्रतिविस्फोटन (back fire) किया था। एक–एक करके इंजनों ने खाँसा, तेल के काले धुंऐ के थक्के को थूका और कर्णवेधी आवाज में जागा। वे जल्दी ही गरम हो गये और लयबद्ध आवाज में व्यवस्थित हो गये। मैं जहाज पर चढ़ा और मैने जहाज के पिछले हिस्से की तरफ अपना रास्ता लिया, जहॉ हमने, निरीक्षण के लिये कपड़ें में काटकर, एक खिड़की, बना रखी थी : रस्सी में दो झटके दिये और पो कू को सूचित कर दिया कि, मैं, टेक (strut) के बीच में, बलपूर्वक फर्श पर पालथी मारकर बैठे हुये, सुरक्षित स्थिति में था। इंजन का शोर बढ़ता गया और पूरा जहाज हिला, और खेत में नीचे की और चला। अवतरण दांते (landing gear) की एक कुचलने वाली गड़गड़हाट और ढांचे की ऐंठती हुई लकड़ी की चटकन की आवाज हुई। जैसे ही हमने मेंड़ (ridge) को टक्कर मारी, पूंछ हिली और नीचे गिर गई। मैं फर्श से छत तक उछल गया। मैने और अधिक कसकर पकड़ लिया, क्योंकि मैंने खुद को, फली में एक मटर की तरह, महसूस किया। अंतिम धमाके और खनखनहाट के साथ, वह बूढ़ा हवाईजहाज हवा में ऊँचा चढ़ा, और जैसे ही इंजनों के थ्रोटल (throttle) को पीछे किया गया, आवाज कम हो गई। जैसे ही हमने, पेड़ों के बीच रिक्तस्थान से, ऊपर चढ़ती हुई हवा से टकराया, एक शातिर मोड़ और डुबकी लगी, और मेरा चेहरा प्रेक्षण खिड़की में से लगभग बाहर निकल गया। पो कू की तरफ से रस्सी में, छोटा सा हिंसक झटका, जिसका अर्थ, ''ठीक है, हमने फिर से सब ठीक कर लिया है। क्या तुम अभी वहॉ हो,?'' मेरे जबाबी झटके, इतने व्यक्त करने वाले थे, जैसेकि मैं उन्हें कर सकता था, ये सूचित करते हुये कि, मैंने उसकी इस उड़ान के संबंध में क्या सोचा।

पो कू देख सकता था कि, हम कहॉ जा रहे हैं। मैं देख सकता था कि, हमने पीछे क्या छोड़ दिया। इसबार हम वूहू (wuhu) जिले के एक गॉव में जा रहे थे, जहॉ तेज हवाई हमले हुये थे और

अनेक–अनेक आकस्मिकताऐं, और उस स्थान पर कोई तात्कालिक सहायता नहीं। हमने उड़ते समय और प्रेक्षक के रूप में काम करते हुये, हमेशा जहाज को घूमाया। ऐबी में अनेक अंधस्थान (blind spots) थे और जापानी लड़ाकू विमान बहुत तेज थे। बहुधा उनकी तेजचाल ने हमको बचाया था। जब हम अत्यधिक लदे न हों, हम मात्र पचास की चाल तक, धीमी कर सकते थे। औसत जापानी पायलट को निशानेबाजी में कोई दक्षता हासिल नहीं थी। हम यह कहा करते थे कि, हम उनके ठीक सामने अधिक सुरक्षित हैं, क्योंकि जो उनके जहाज की नाक के ठीक सामने होता था, उसे वह हमेशा चूक जाते थे। मैंने घृणित ''खूनी बर्तनों'' से, जापानी जहाजों से, सर्तकतापूर्वक, सावधानीपूर्वक, सजग रहकर, अच्छी निगरानी की। पीलीनदी हमारे (जहाज की) पूंछ के नीचे से निकली। रस्सी में तीन बार झटके लगे। ''हम नीचे उतर रहे हैं।'' पो कू ने संकेत दिया। पूंछ ऊँची गई। जैसे ही नोदक निष्क्रिय हुये, इंजनों की आवाजें मरती गईं और बदलकर सुखद ''विक–विक विक विक'' की आवाज हुई। हम थ्रोटल को काफी पीछे करते हुये नीचे उतरने लगे। जब हमने अपने पथ को सही किया, पतवारों की चटकने की आवाजें आईं। ढकने वाले कपड़े से, जो खुली हवा में कांप रहा था, थपथपाने और झटकों की आवाजें आईं। जब हमने जमीन को छुआ, सहसा इंजनों का एक छोटा विस्फोट (burst) हुआ, और एक झटके के साथ आवाजें आईं। और एकबार फिर, मेंड़ से मेंड़ तक की आवाज। तब उस क्षण, जिसको पूछ में तंग, भाग्यहीन प्रेक्षक सबसे अधिक घृणा करता था; उस क्षण, जब पूँछ गिरी और धातु का जूता, दमघोंटू धूल के गुबार उठाते हुये; धूल, जिसमें मानव मलमूत्र के कण भरे हुये थे, जिसको चीनीलोग खाद की तरह से काम में लाते थे, झुलसी हुयी जमीन में, हल की तरह चलने लगा।

मैने अपनी भारी आकृति को, (जहाज की) पूंछ के स्थान में लेटे होने की स्थिति से, ढीला किया और जैसे ही मेरा रक्तप्रवाह पुनः चालू हुआ, मैं दर्द की कराह के साथ उठ खड़ा हुआ। मैं दरवाजे की तरफ, विमान के ढालू कंधे पर चढ़ गया। पो कू ने इसे पहले से ही खोल दिया था, और हम जमीन पर कूद गये। दौड़ती हुईं आकृतियॉ हमारी तरफ आईं। ''जल्दी आओ,'' यहॉ तमाम आकस्मिकताऐं हो गई हैं। जनरल टीन (Tien) के शरीर में धातु की एक छड़ घुस गई है और वह आगे पीछे अटकी हुई है।''

टूटी–फूटी झोपड़ी में, जिसे आकस्मिक अस्पताल के रूप में उपयोग में लाया जा रहा था, जनरल ठीक सीधे बैठे थे, उनकी सामान्य पीली त्वचा, दुख और थकान के कारण, भूरी–हरी हो गई थी। वायें कूल्हे के ठीक ऊपर, स्टील की एक चमकीली छड़, घुस गई थी। ये कार उठाने वाले जैक के छड़ की तरह दिख रही थी, यथार्थ में भले ही यह कुछ भी हो। लगभग बेकार बम के फूट जाने के कारण, ये शरीर में घुसी थी। निश्चित रूप से, इसे न्यूनतम संभव (minimum possible), विलम्ब के साथ, निकालना था। पीछे की तरफ निकलने वाला सिरा, सैक्रो इलिआक क्रेस्ट (sacro-iliac crest) के ठीक ऊपर, चिकना और भौतरा था, और मैने सोचा कि यह, पेट में नीचे उतरते हुये, चूक गई है अथवा बगल से घुस गई है। मरीज के सावधानीपूर्वक निरीक्षण के बाद, मैंने पो कू को बाहर (बुला) लिया, और उसे किसी असामान्य उद्देश्य के लिये, उन दोनों के सुनाई देने के क्षेत्र के बाहर, जहाज की ओर भेजा। जब वह दूर था, तो मैंने सावधानीपूर्वक, जनरल के घावों को और धातु की छड़ को साफ किया। वे छोटे कद के बूढ़े थे, परन्तु (उनकी) भौतिकस्थिति अच्छी थी। हमारे पास कोई निश्चेतक (anaesthetic) नहीं थे। हमने उन्हें बताया, परन्तु मुझे जितना हो सकता था, उतना नरम होना था। ''मैं आपको परेशान करूॅगा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं कितना भी सावधान क्यों न होऊँ'' मैने कहा। ''परन्तु मैं अपना सर्वोत्कृष्ट करूँगा। वह बिल्कुल परेशान नहीं हुये। उन्होने कहा, ''आगे बढ़ो'' यदि कुछ भी नहीं किया गया तो, मैं किसी भी प्रकार से मर जाऊँगा, इसलिये मेरे पास खोने को कुछ नहीं है, बल्कि सिर्फ पाना ही पाना है।''

सप्लाई बक्स के ढक्कन में से मैंने, लगभग अठारह इंच वर्गाकार, लकड़ी का एक टुकड़ा निकाला, और (उसके) केन्द्र में एक छेद बनाया, जिससे वह छड़ के लिये एकदम सही आकार का हो।

इस समय तक, पो कू, प्लेन की औजारों की किट के साथ, वापिस लौट चुका था। वे जैसे भी थीं। हमने सावधानी से बोर्ड को छड़ के ऊपर चूड़ी की तरह घूमाकर चढ़ा दिया और पो कू ने इसे मरीज की शरीर के विरूद्ध, कसकर पकड़ लिया। मैंने छड़ को अपनी बड़ी स्टिलटन रिंच (Stilton wrench) से पकड़ा, और धीमे से खींचा। कुछ नहीं हुआ, सिवाय इसके कि, वह दुर्भाग्यशाली मरीज सफेद फक पड़ गया।

''ठीक है, मैने सोचा, ''हम रिंच को ऐसे ही नहीं छोड़ सकते। इसलिये या तो मारो अथवा इलाज करो।'' मैंने अपने घुटनों को पो कू के सामने झुकाया, जो बोर्ड को अपनी स्थिति में पकड़े था, छड़ की पकड़ दुबारा ठीक की और उसको धीमे से घुमाते हुये, कसकर खींचा। एक भयानक चूसने जैसी आवाज के साथ, छड़ स्वतंत्र होकर बाहर गई और मैं असतुलित होने के कारण, अपने सिर के बल पीछे जाकर गिरा। शीघ्र ही मैने खुद को उठाया, और हमने जनरल के लिये, खून के बहाव को रोकने की जल्दी की। टार्च (flashlight) की मदद से घाव में झांकते हुये, मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि, कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ है। इसलिये हमने टांके लगा दिये और जहाँतक पहुँच सकते थे, घाव को साफ कर दिया। अबतक, उत्तेजक (stimulant) दवाओं के लेने के साथ, जनरल पहले से अच्छे दिखाई दे रहे थे और जैसा उन्होने कहा – काफी प्रसन्न अनुभव कर रहे थे। अब वह अपनी करवट से लेटने में समर्थ थे, जबकि इससे पहले उन्हें, उस धातु की छड़ के भारी वजन को झेलते हुये, सीधा बैठना पड़ रहा था। मैंने घाव पर पट्टी बांधने का काम और उसे पूरा समाप्त करने का काम पो कू पर छोड़ा। और अगले मरीज, एक औरत, जिसकी दायीं टांग घुटने से ठीक ऊपर, बम से उड़ गई थी, के लिये चल दिया। बहुत लम्बे समय से, खून रोकनेवाली एक पट्टी (tourniquet) उसके ऊपर कसकर बांधी गई थी। वहॉ केवल एक ही चीज थी, जो की जा सकती थी; हमें इस ठूंठ (stump) को काटना पड़ा।

आदमियों ने हमारे लिये, एक दरवाजे को तोड़ा और इसके ऊपर हमने औरत को लिटा कर फीते से बाँध दिया। जल्दी से मैंने शरीर के प्रभावित स्थान पर "V" आकार में मांस को काटा। बारीक नजर से मैंने टूटी हड्डी को जितना संभव हो सका ऊँचा किया। तब सावधानीपूर्वक मांस के दोनों टुकड़ों को साथ–साथ मोड़ा और उनको एक गद्दी जैसा बनाने के लिये हड्डी के सिरे पर सीं दिया। लगभग डेढ़ घण्टे से कुछ अधिक समय लगा, जिसमें से पीड़ा के आधे घंटे को छोडकर, पूरे समय वह औरत शांत रही, उसने कोई आवाज नहीं की, हल्का सा रिरियाना भी नहीं, और न उसने कोई बचाव (flinch) किया। वह जानती थी कि वह मित्रों के हाथों में है। वह जानती थी कि, हमने जो भी कुछ किया, वह उसके हित में था।

दूसरे मामले भी थे। छोटी–मोटी चोटें, और बड़ी भी, और जिस समय तक उन्हें निपटाया गया था, अंधेरा हो चुका था। चालक के रूप में, आज पो कू के उड़ान भरने की बारी थी, परन्तु वह धुंधली रोशनी में देखने में असमर्थ था इसलिये (कार्य) मुझे ग्रहण करना पड़ा।

हम जल्दी से, अच्छी सावधानी के साथ, अपने उपकरणों को समेटते हुये, जहाज की ओर वापिस लौटे। उसने एक बार फिर, ठीक से हमारी सेवा की थी। तक पो कू ने नोदकों को झुलाया और मोटरों को चालू किया। खुले हुए निकास (exhaust) पाइप में से, घायल करती हुई नीले–लाल रंग की लपटें निकलीं, और हमें आग खाने वाले अजगर की तरह से दिखाई दीं, जो इससे पहले किसी हवाई जहाज में दिखाई नहीं दीं थीं। मैं संघर्षपूर्ण तरीके से जहाज में चढ़ा और पायलट के बैठने के स्थान पर गिर पड़ा। मैं इतना थका हुआ था कि, मैं मुश्किल से अपनी ऑखों को खुला रख पा रहा था। पो कू ने बाद में मुझसे छीना–झपटी की, दरवाजा बंद किया और फर्शपर गिर कर नींद में सो गया। मैंने बाहर खड़े आदमी को हाथ हिलाया और उसने पहियों के आगे लगे हुये बड़े पत्थरों की ओट को हटा दिया।

अंधेरा होता जा रहा था और पेड़ों का दिखना बहुत ही मुश्किल हो गया था। मैंने इस स्थान के धोखे को याद कर लिया था, मैंने दायीं तरफ के (star-board) इंजन को चक्कर लगाने के लिये मोड़ा। कोई हवा नहीं चल रही थी। तब, जिसकी मैंने आशा की थी कि यह सही दिशा है, के सामने की ओर, मैंने तीनों थ्रोटल, जितने ज्यादा वे खोले जा सकते थे, खोल दिये। इंजन ने शोर किया और जब हम आगे चले, हवाईजहाज हमेशा बढ़ने वाली चाल के कारण हिलता हुआ थरथराया, झनझनाया। उपकरण अदृश्य थे, हमारे पास कोई रोशनियॉ नहीं थी, और मैं जानता था कि, क्षेत्र का अनदेखा भाग, भयानक रूप से समीप आ चुका था। उपकरण दिखाई नहीं दे रहे थे, मैंने नियंत्रण स्तंम्भ को पीछे खींचा। जहाज ऊपर उठा, अटका और डूब गया और फिर ऊपर उठा। हम जहाज में स्थिर थे। मैंने आलस के साथ एक वृत के रूप में चढ़ते हुये, उसे मोड़कर घुमा दिया। रात के ठंडे बादलों के ठीक नीचे, वह समतल हो गया, और अपने जहाज के लिये मैं, भूमि का कोई पहिचान चिन्ह (landmark) देखने लगा। पीली नदी, ये अंधेरी पृथ्वी पर, एक हल्की सी झलक दिखाती हुई, वायीं ओर थोड़ी दूर थी। मैंने आकाश में किसी दूसरे हवाईजहाज की तलाश की, क्योंकि मैं बचावरहित था। पो कू, मेरे पीछे की ओर, फर्श पर, नीचे सोया पड़ा था और मेरे पास जहाज के पीछे की तरफ से निगरानी करने वाला कोई नहीं था।

अपने रास्ते पर व्यवस्थित होने के बाद, ये विचार करते हुये कि ये आकस्मिक यात्राऐं, आश्चर्य जनकरूप से कितनी थकान पैदा कर देने वाली होती हैं, मैं पीछे झुका, सुधार की आशा करने के लिये, कुछ करने के लिये और बेचारी खून से लथपथ लाशों की मरम्मत करने के लिये कोई ऐसी चीज, जो हाथ में आ सके। मैंने, इंग्लेण्ड और अमेरिका के अस्पतालों के बारे में सुनी कहानियों, और ऐसा कहा जा सकता था कि, उन सामानों और उपकरणों की भरपूर आपूर्ति की, जिन्हें वे रखते है, दमदार मोटी कहानियों, पर विचार किया। पर हमारे पास ऐसा कुछ नहीं था, हमें कैसे भी व्यवस्था करनी पड़ती थी और अपने साधनों पर चलते चले जाना था।

घोर अंधकार रात्रि में, जहाज का जमीन पर उतारना, लगभग मुश्किल मामला था। वहॉ केवल, किसानों के घर में धुंधले से टिमटिमाते हुये तेल के दिये थे, जो जल रहे थे और पेड़ों की गहरी अंधियारी थी। परन्तु जैसे–तैसे उस पुराने हवाईजहाज को नीचे उतारना था। कुलबुलाते हुये और पूंछ की स्किड खींचने के साथ, मैंने उसे नीचे उतारा। इसने पो कू को बिल्कुल परेशान नहीं किया; वह गहरी नींद में था। मैंने मोटरों को बंदकर दिया और निकलकर बाहर आ गया। ओटों को पहियों के सामने और पीछे रखा, और तब जहाज की ओर लौटा, दरवाजा बंद किया, और फर्श पर पड़ कर सो गया।

बाहर उठने वाले शोर के कारण हम सुबह जल्दी, उठगये। इसलिये हमने दरवाजा खोला, वहॉ हमें यह बताने के लिये एक नौकर था कि, जैसा हमने सोचा था, एक दिन की छुट्टी के बदले हमें एक जनरल को दूसरे जिले में ले जाना था, जहॉ उसे च्यांग–काई–शेख के साथ, नानकिन क्षेत्र में युद्ध के संबंध में बात करनी थी। ये जनरल कुछ कंजूस प्रवृत्ति का था। वह घायल हो गया था, और सैंद्धातिक रूप से वह स्वास्थ्यलाभ कर रहा था। हमने सोचा कि, वह जी चुरा रहा है, वह स्वयं–महत्वपूर्ण (self-important) व्यक्ति था, और पूरा स्टाफ दिल से उसे नापंसद करता था। हमें अपने आप को थोड़ा मजबूत बनाना पड़ा। इसलिये हम अपने आप की सफाई करने के लिये, अपनी वर्दी को बदलने के लिये, झोपड़ी में गये क्योंकि, जनरल बर्दी (dress) ड्रेस के मामले में कुछ जरूरत से ज्यादा जोर देने वाला था। हम जब झोपड़ी में थे, तेजी के साथ बरसात आई, और जैसे–जैसे दिन गुजरता गया, हमारा धुंधलापन बढ़ा। वर्षा! अन्य चीनी लोगों की तरह, हम इससे घृणा करते थे। चीन के एकतरफ, एकनजर में, चीनी सिपाहियों को देखना था, सभी साहसी और मेहनती लोग, शायद दुनियॉ के सभी बहादुर जवानों की तुलना में सबसे अधिक बहादुर थे, परन्तु वे आवाज के साथ, लगातार, झड़ी

की बरसात, वर्षा से घृणा करते थे, चीन में वर्षा भरी–पूरी हुई। इसने हर चीज को पीछे छोड़ दिया, हर चीज को छिपाते हुये, उस हर चीज को भिगोते हुये, जो बाहर थी। जब हम छाते लेकर वापस अपने जहाज के नीचे गये, हमने चीनी सेना की एक टुकड़ी को देखा। वे हवाईअड्डे के बगल से, एक सड़क पर चल रहे थे। सड़क जो पानी से पूरी तरह भीगी हुई थी और दलदली बन गई थी। आदमी वर्षा के कारण, दुखी हृदय से इसे देख रहे थे। उन्हें अनेक परेशानियाँ थी, झेलने को काफी था, और वर्षा ने इसे और गहरादिया था। वे उदासीनता से इसपर आगे बढ़े उनकी रायफलें केनवास के थैलों से सुरक्षित की हुईं थीं, जो उनके कंधे पर लटके हुये थे। उनकी पीठ पर, आड़ी तिरछी रस्सी के साथ बंधे हुए थैले थे, जो उन्हें यथास्थान रखती। यहॉ उन्होंने अपने सारे सामान को, युद्ध के सारे सामान को, अपने खाने को, अपनी हरचीज को, रख दिया। अपने सिरपर उन्होंने घासफूस के टोप पहन रखे थे और अपने दायें हाथों में, अपने सिरों के ऊपर वे एक तेल से डूबा हुआ पीला कागज और बॉस के छाते रखे हुये थे। अब मुझे कुछ आश्चर्य लगा। परन्तु पॉच या छः सौ सैनिकों को पॉच या छः सौ छतरियों के नीचे, सड़क पर मार्च करते हुए देखना, ये पूरी तरह से सामान्य था। हमें भी अपने जहाज तक जाने के लिये छातों का उपयोग करना पड़ा।

जब हम जहाज के बगल में आये, हम आश्चर्य के साथ भौंचक्के रह गये। वहॉ आदमियों का एक समूह था, जिसने, बरसात को जनरल से दूर रखने के लिये, अपने सिरों के ऊपर केनवास की एक चांदनी तान रखी थी। उसने गर्व के साथ हमें इशारा किया, और कहा – ''तुम दोनों में से किसके पास उड़ान का लम्बा अनुभव है?'' पो कू ने थके हुये अंदाज में कहा, ''जनरल मुझे है,'' उसने कहा। ''मैं दस साल से उड़ान भरता रहा हूँ, परन्तु मेरा सहयोगी मुझसे अधिक अच्छा पायलट है और उसके पास ज्यादा अनुभव है।'' ''मैं निर्णायक हूँ कि, कौन सबसे अच्छा है'' जनरल ने कहा। ''तुम उड़ान भरोगे और वह हमारी सुरक्षा की निगरानी करेगा।'' इसलिये पो कू पायलट के केबिन में गया। और मैंने अपना रास्ता जहाज की पूँछ की ओर बनाया। हमने इंजनों को चलाने की कोशिश की। मैं छोटी खिड़की में से देख सकता था और मैने जनरल और सहयोगियों को जहाज पर आते देखा। दरवाजे के पास काफी झमेला था, कुछ उत्सव जैसा, ज्यादातर हाथ हिलते हुये और झुकते हुये, और तब एक अर्दली ने जहाज के दरवाजे को बंद किया और दो मैकेनिकों ने पहियों की सामने लगीं रोकों (chocks) को हटाया। पो कू को हाथ हिलाकर विदाई दी और इंजनों ने शुरू होकर ऊपर की ओर चक्कर लगाये। उसने मुझे अपनी रस्सी से संकेत दिया कि, हम ठीक से ऊपर उठ गये।

मैं इस उड़ान में पूरी तरह खुश अनुभव नहीं कर रहा था। हम जापानियों की लाइन के ऊपर उड़ने जा रहे थे, और जापानी इस मामले में बहुत सजग थे कि, उनकी तैनातियों के ऊपर कौन उड़ता है। उससे ज्यादा खराब, हमारे पास तीन लड़ाकू विमान थे – केवल तीन – जो हमारी सुरक्षा करने के लिये माने जाते थे। हम जानते थे कि, वे जापानियों का पूरा–पूरा ध्यानाकर्षण करेंगे, क्योंकि, जापानी लडाकू विमान ये देखने के लिये कि, यह माजरा क्या है ऊपर आयेंगे। हमारे जैसे तीन मोटर वाले पुराने जहाज को, तीन लड़ाकू विमान क्यों सुरक्षा दे रहे थे? तथापि, चूँकि, जनरल ने बिना किसी गलती के कहा था, वह वरिष्ठ था, और वह था जो हमें आदेश दे रहा था, इसलिये हम इकट्ठे हो गये। हम खेत के नीचे की ओर इकट्ठे हुए। धूल के एक बबंडर और निचले ढ़ांचे (under carriage) की चटचटाहट के साथ, जहाज चारों तरफ झूला, तीनों इंजन अपनी अधिकतम सीमा तक परिक्रमण कर उठे और हमने क्षेत्र में नीचे की ओर झपट्टा मारा। एक झंकार और चीख के साथ, पुराना जहाज हवा में टूट गया। हमने कुछ समय के लिये, ऊँचाई पाने के लिये, एक चक्कर लगाया। ये हमारी रीति नहीं थी परन्तु इस मौके पर ये हमारे आदेश थे। धीमे–धीमे, हम पॉच हजार फुट तक, दस हजार फुट तक, ऊँचे उठे। दस हजार फुट हमारी अंतिम सीमा थी। हमने चक्कर लगाना जारी रखा, जबकि तीनों लड़ाकू विमानों ने उड़ान नहीं भरी, और हमारे ऊपर और पीछे की ओर पक्तियाँ नहीं बनाईं। उन तीनों लड़ाकू

विमानों, जो ऊपर लटक रहे थे, के साथ बंधा हुआ मैं, पूरी तरह नंगा महसूस कर रहा था। कभी–कभी, मैं अपनी खिड़की से, एक बगल को देख सकता था और तब धीमे से अपनी नजर को वापिस करना पड़ता था। उनको वहाँ देखना, मुझे सुरक्षा की भावना नहीं देता था। इसके बदले में, हर समय, हर क्षण, मैं जापानी जहाजों से डरा हुआ था।

हम उड़ानें भरते गये, चलते गये, ये अंतहीन महसूस हुआ। हम स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में लटके हुये दिखाई पड़ते थे। वहॉ कुछ हल्की चट्टानें और उभार थे। हवाईजहाज हल्का सा झूला और मेरा मन इसकी एकरसता (monotony) के ऊपर घूमने लगा। मैंने अपने नीचे, जमीन पर, युद्ध के चलते रहने पर विचार किया। मैने अत्याचारों, भयावहताओं का, जिनमें से अनेक को मैं देख चुका था, विचार किया। मैंने अपने प्रिय तिब्बत के बारे में विचार किया और कि ये कितना आनन्ददायक हुआ होता, यदि मैं इस पुरानी ऐबी को वहॉ ले जाकर उड़ा सकता और ल्हासा में, पोटाला के चरणों में उतार पाता। सहसा वहॉ जोरदार धमाके हुये, आकाश चक्कर खाते हुये हवाईजहाजों से भरा दिखाई दिया, हवाईजहाज जिनके पंखों के ऊपर घृणित ''खून के धब्बे'' लगे थे। मैं उन्हें अपने दृष्टिक्षेत्र में आते हुये, और उन्हें फिर से झपटते हुये, देख रहा था। मैं खोजियों को, और तोपों से निकले काले धुऐ को, देख रहा था। पो कू को मेरे संकेत दिये जाने का कोई तात्पर्य नहीं था। यह साफ दिखाई दे रहा था कि, हमारे ऊपर जोरदार गोलियॉ दागी जा रहीं थीं। पुराने ऐबी ने झटका खाया और गोता लगाया फिर ऊपर उठा। उसकी नाक ऊपर उठी और हम आकाश में पंजा मारते हुये से दिखाई दिये। पो कू हमें भयानक प्रयासों में लगा रहा था, मैंने सोचा, और मैंने अपने काम को, (जहाज की) पूंछ में अपनी स्थिति बनाये रखने तक सीमित कर लिया। अचानक सनसनाती हुई गोलियाँ, कपड़े में से होती हुईं, ठीक मेरे सामने आयीं। मेरे बगल से तार झनझना उठा और चटका, और इसके अन्त में, मेरी वायीं आँख को थोड़ा सा चुकाते हुये, मेरे चेहरे को खरोंच डाला। मैंने अपने आप को (सिकोड़ कर) जितना छोटा हो सकता था किया और फिर से वापिस पूंछ में घुसने का प्रयास किया। एक भयानक युद्ध प्रगति पर था, एक युद्ध, जो अब अपने पूरे परिदृश्य में दिखाई दे रहा था क्योंकि, गोलियों ने कपड़े को फाड़कर बिन्दुदार रेखा बना दी थी, और खिड़की खत्म हो गई थी और इसीतरह का सामान कई फुटों तक (बिखर गया था।) मैं बादलों के बीच, एक लकड़ी के ढांचे के ऊपर, बैठा हुआ लगा। युद्ध उतार–चढ़ाव व एकसमान तरीके से चल रहा था और वहॉ बमवारी की आवाजें, हद से ज्यादा हो रही थी। पूरा जहाज हिला और (उसकी) नाक ने गोता खाया। मैने अपनी खिड़की में से एक उन्मत्त दृश्य देखा। जापानी जहाज आकाश को भरते हुये दिखाई दे रहे थे। मैंने देखा कि, एक जापानी और एक चीनी जहाज, आपस में टकरा गये। वहॉ ''धमाके (boom)'' की आवाज हुई और नारंगी–लाल रंग की ज्वालाऐं और उनके पीछे काला धुँआ, और दो जहाज, चक्कर लगाते हुये, मृत्यु के आलिंगन में बद्ध, नीचे की तरफ गये। पायलट उल्टी करने लगे और चक्कर खाकर, पहियों की तरह लगातार लुढ़कते हुये, और हाथ–पैर बाहर की तरफ फैलाये हुये, गिरे। इसने मुझे, तिब्बत में, अपने प्रांरभिक दौर में पंतग उड़ाने की याद दिला दी, जब एक लामा पंतग में से गिर गया था, और तब ठीक वैसे ही तरीके से, चट्टान पर टकराते हुये, चक्कर खाता हुआ, हजारों फीट नीचे गिरा था।

एकबार फिर, पूरा हवाईजहाज पूरी तेजी से हिला और एक गिरती हुई पत्ती की तरह से पंख के ऊपर पंख आ गये। मैंने सोचा कि अंत आ चुका है। अचानक (जहाज की) नाक डूबी, पूंछ उठी, और मैं आतंक के सबसे खतरनाक दृश्य में, सीधा जहाज के कबंध (fuselage) के नीचे, केबिन में, लुढ़क गया। जनरल मरा पड़ा था; केबिन के आसपास, चारों ओर, सहायकों की लाशें थीं। तोप के गोले ने, उसे चीर फाड़कर रख दिया था, और उन्हें लगभग खण्डखण्ड कर दिया था। उसके सभी सहायक और नौकर या तो मर गये थे या मर रहे थे। केबिन पूरी तरह से बूचड़खाना बन गया था। बीमार महसूस करते हुये, मैंने स्वयं को मरोड़कर, पायलट के विभाग के दरवाजे को खोला। अंदर नियंत्रक (control)

के ऊपर, पो कू की सिर रहित लाश धनुषाकार रूप में पड़ी थी। उसका सिर, या जो कुछ भी बचा था, उपकरणों के ऊपर, पैनलों के ऊपर, छितरा गया था। सामने की खिड़की का काँच (windscreen) खून और दिमाग की खूनी–खिचड़ी जैसा था। ये इतना ज्यादा भद्दा था कि, मै इसके बाहर नहीं देख सका। मैने जल्दी से पो कू को उसके कंधो से पकड़ा और उसे अपने बैठने के स्थान से अलग, एक तरफ फेंक दिया। मैं अत्यधिक तेजी के साथ, नीचे बैठा और मैंने नियंत्रणों को पकड़ लिया। वे तेजी से उछलते हुए, भारी हार से तड़क रहे थे। वे खून से लथपथ थे और मैं उन्हें बहुत मुश्किल से पकड़ सका। नाक को ऊपर उठाने के प्रयास में, मैंने नियंत्रण स्तम्भ को पीछे खींचा परन्तु मैं देख नहीं सका। मैंने अपनी टांगों को क्रॉस करके स्तम्भ के ऊपर रखा और अपने खाली हाथों से उन दिमागों और खून को मिटाते हुये और विण्डस्क्रीन पर लगे खूनी धब्बों को हटाते हुये, हिलाया। एक पैबंद लगाने की कोशिश की ताकि, मैं देख सकूँ। जमीन तेजी से टकरा रही थी। मैने इसे पो कू के खून की लाल धुंध से देख लिया था। चीजें बड़ी और बड़ी होती जा रही थी। जहाज काँप रहा था और इंजन चीत्कार कर रहे थे। थ्रोटल का उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। पोर्ट पंख (port wing) की तरफ का वाँया इंजन, सीधा बाहर की ओर, उछलकर निकल गया। उसके बाद दायीं ओर वाले इंजन में विस्फोट हुआ। उन दोनों इंजनों के भार हट जाने के बाद, नाक थोड़ी ऊपर उठी। मैंने कड़ा, और कड़ा, (hader and harder) वापिस खींचा। नाक थोड़ी ऊपर उठी परन्तु अबतक बहुत बिलम्ब हो चुका था, बहुत अधिक विलम्ब। जहाज अपने नियंत्रणों के समुचित उत्तरों (responses) को देने में बहुत अधिक अच्छा नहीं था। मैंने कुछ हदतक, उसको धीमा करने की कोशिश की, परन्तु संतोषजनक उतरना नहीं हो सका। जमीन ऊपर उठती लगी; पहियों ने नाक को छुआ, गिरते हुये ढांचे के चटकने की एक भयंकर आवाज हुई। मैंने महसूस किया मानोकि, पायलट की सीट के साथ–साथ, मेरे आसपास की दुनियाँ टूट रही है। मैं जहाज की तली में से बाहर की तरफ, एक भारी ढेर के ऊपर, गोली की तरह कूदा। मेरी टाँगों में अत्यन्त कष्टदायक तकलीफ हो रही थी और कुछ समय के लिये मुझें कुछ पता नहीं था।

बहुत समय नहीं गुजरा हेागा कि, उससे पहिले, मैंने अपनी चेतन अवस्था को प्राप्त कर लिया, क्योंकि मैं तोप की आवाज के साथ जग गया था। मैंने ऊपर देखा। जापानी जहाज नीचे उड़ रहे थे; तोप के मुँह से लाल आग की चिनगारियॉ निकल रहीं थीं। वे टूटे ऐबी के ऊपर, कचरे के ऊपर, यह सुनिश्चित करने के लिये कि, अंदर कुछ नहीं बचा, निशाना लगा रहे थे। आखिरी इंजन जो नाक में बचा था, उस इंजन पर आग की एक छोटी सी लपट उठी। ये केबिन की तरफ दौड़ी, जहॉ (जहाज का) कपड़ा, पेट्रोल से तरबतर हो चुका था। अचानक वहॉ, सफेद ज्वाला की एक लपट उठी जिसके ऊपर काले रंग का धुँआ था। पेट्रोल जमीन पर फैल रहा था, ऐसा दिख रहा था मानोकि, लपटें उंडेली जा रही हों क्योंकि पेट्रोल फैल रहा था। तब वहॉ एक भड़ाका हुआ और मलवा बरसात की तरह से नीचे बरसा, अब ऐबी नहीं बचा था। अंत में, संतुष्ट होकर, जापानी जहाज वापिस चले गये।

अब मुझे अपनी ओर देखने का, और यह देखने का, समय मिला कि, मैं कहॉ था। मेरे आतंक के लिये मुझे लगा कि, मै एक गहरी नाली में, खन्ती में, या किसी सीवर में हूँ। चीन में काफी सीवर खुले हैं और मैं उनमें से एक में था। गंदगी भयभीत करने वाली थी। मैंने अपने आप को इस विचार से सांत्वना दी कि उस स्थिति, जिसमें मैं स्वयं को पा रहा था, ने मुझे जापानियों की गोलियों से, अथवा आग से बचा लिया है। शीघ्र ही मैंने स्वयं को, पायलट की सीट के मलवे से मुक्त किया। मुझे लगा कि, मेरे दोनों घुटने टूट गये हैं परन्तु कुछ निश्चित प्रयास करने के बाद, मैं अपने हाथ और घुटने के बल रेंग कर आने के लिये, जमीन पर गिरते पड़ते, उस गड्ढे के ऊपर पहुँचने के लिये, और उस चिपकने वाली सीवेज की गंदगी से निकल भागने के लिये, व्यवस्थित हो चुका था।

किनारे की चोटी के ऊपर, पेट्रोल से भीगी जमीन के ऊपर, आग की लपटों में होकर, जो अभी

लपलपा रही थीं, मैं दर्द और थकान से फिर बेहोश हो गया। परन्तु मेरी छाती की पसलियों में मारे गये भारी धक्कों ने मुझे फिर से, चेतनावस्था में वापिस ला दिया। जापानी सैनिकों को इस जगह लगी आग की लपटों ने आश्चर्यचकित किया और उन्हें मैं मिल गया। ''यहॉ एक है, जो जिन्दा है,'' एक आवाज ने कहा। मैंने अपनी ऑखें खोलीं और (देखा) वहॉ एक स्थायी बोनट वाली रायफल को लिये हुये एक जापानी सैनिक (मोजूद) था। मुझे घायल करने वाली चोट मारने को तैयार, बोनट को वापिस खींच लिया गया। ''मुझे उसे वापिस लाना पड़ा ताकि, वह जान सके कि, वह मारा जा रहा है।'' उसने अपने सहयोगी से कहा, और उसने मेरी ओर धक्का मारा। उसी क्षण, एक अधिकारी, जल्दी करता हुआ साथ आया। ''रुको'' वह चिल्लाया। ''उसे शिविर की ओर लेकर चलो। हम उससे उगलवा लेंगे कि, इस जहाज में बैठने वाले कौन थे, और वे इसप्रकार क्यों सुरक्षित किये गये थे। उसे शिविर में ले चलो। हम उससे सवाल पूछेंगे।'' इसलिये उस सैनिक ने, अपनी रायफल को अपने कंधों पर लटका लिया, और मेरा कॉलर पकड़कर, मुझे घसीटना शुरू कर दिया। ''ये भारी है। उसे एक हाथ मारो,'' उसने कहा। उसके साथियों में से एक आया और मुझे बांह से पकड़ लिया। दोनों मिलकर मुझे साथ घसीटने लगे। तब उखड़ी हुई खाल को और अधिक उधेड़ते हुये, मुझे पथरीली जमीन पर खींचा गया। अंत में अधिकारी, जो अपने दैनिक निरीक्षण को कर रहा था, एक शोर–शराबे के साथ, वापस लौटा। वह चिल्लाया, ''उसे ले चलो।'' उसने मेरे खून बहते शरीर, और खून की उस धारी के ऊपर, जो मै पीछे छोड़ रहा था, को देखा। उसने अपने खुले हुये हाथ से दोनों संतरियों के गालों पर चांटा मारा। ''यदि और अधिक खून बहता है तो यह पूछने के लिये नहीं बचेगा, और मैं तुम्हें इस बात के लिये जिम्मेदार ठहराऊँगा।'' उसने कहा। इसलिये कुछ समय के लिये, मुझे जमीन पर आराम करने दिया गया जबकि, सुरक्षाकर्मियों में से एक, किसी सवारी के साधन की तलाश में गया, क्योंकि मैं एक लंबा–तगड़ा आदमी था, लम्बा–चौड़ा, बहुत भारी, और जापानी सुरक्षाकर्मी छोटे और महत्वहीन थे। अंत में मुझे कूड़े–करकट की तरह, एक पहियेवाली गाड़ी के ऊपर, उछालकर फेंक दिया गया, और एक इमारत की ओर ले जाया गया, जिसे जापानी, अपनी एक जेल की तरह उपयोग में ला रहे थे। यहॉ पर मुझे आगाह कर दिया और फिर से मेरा कॉलर पकड़ कर मुझे एक चौकी (post) की ओर घसीटा गया और मुझे अकेला छोड़ दिया गया। दरवाजे को जोर से धक्का देकर बंद कर दिया और ताला डाल दिया और निगरानी करने के लिये बाहर सुरक्षाकर्मी तैनात कर दिये गये। कुछ क्षणों के बाद, मैंने अपने टखनों (anckles) के ऊपर ठीक किया, और उन पर खपच्चियॉ बांधी। ये खपच्चियॉ, लकड़ी के पुराने टुकड़े थे, जो उस प्रकोष्ठ में मोजूद थे, जो स्पष्टरूप से किसी भंडारण के कार्य के लिये, उपयोग में लाये गये थे। इन खपच्चियों के बांधने के लिये, मुझे अपने कपड़ों को फाड़कर, उनमें से, बांधने के लिये, पट्टियॉ बनानी पड़ी। कई दिनों तक मैं जेल में था, उस एकांत प्रकोष्ठ में, जिसमें चूहे और मकड़े ही मेरे साथी थे। दिन में एकबार, चोथाई गैलन पानी मिलता था और जापानी सुरक्षाकर्मियों की मेजों पर से खाने की झूठन, झूठन, जिसे शायद उन्होंने चबाया था, और अंसतुष्ट होकर उसको थूक दिया था। परन्तु यही एकमात्र खाना था, जो मुझे मिलता था। ये एक हफ्ते से ज्यादा का समय हो गया होगा कि, मुझे वहॉ रखा गया, क्योंकि मेरी टूटी हुई हड्डियॉ जुड़ती जा रही थीं। तब आधीरात के बाद, दरवाजा लगभग पूरा सपाट, खोल दिया गया और जापानी सुरक्षाकर्मी, शोर मचाते हुये आये। मुझे अपने पैरों पर घसीटा गया। उन्हें, मुझे सहारा देना पड़ा क्योंकि, मेरे घुटने, अपने वजन को उठाने के लिये, अभीतक काफी मजबूत नहीं हो पाये थे। तब अधिकारी अन्दर आया और मेरे चहेरे पर तमचा मारा। ''तुम्हारा नाम?'' उसने पूछा। ''मैं चीनी सेना का एक अफसर हूँ और मैं युद्धबंदी हूँ। केवल मुझे यही कहना है,'' मैंने जबाव दिया। ''आदमी लोग स्वयं को कभी भी युद्धबंदी के रूप में स्वीकार नहीं करते। कैदी गंदे, बिना अधिकारों के होते हैं। तुम मुझे जबाव दोगे।'' अफसर ने कहा। परन्तु मैंने कोई जबाव नहीं दिया। इसलिये उन्होने अपनी तलवारों की मूठ से मुझे सिर पर ठोका, उन्होंने मुझ में तलवारें चुभाई, ठोकरें

मारीं और मेरे ऊपर थूका। चूंकि मैंने अभी भी कोई जबाव नहीं दिया, उन्होंने मेरे चेहरे और शरीर को जलती हुई सिगरेटों से जलाया, और जलती हुई माचिस की तीलियॉ, मेरी उंगुलियों के बीच रखीं। मेरा प्रशिक्षण बेकार नहीं गया। मेरे पास ऐसा कुछ नहीं था, जिसके लिये वे मुझे बात करने के लिये मजबूर कर सकते। मैंने चुप्पी साधे रखी, और ये जानते हुये कि, चीजों को करने का यही सबसे अच्छा तरीका है, अपने मन को दूसरे विचारों की ओर लगा दिया,। अंत में, एक सुरक्षाकर्मी ने अपने रायफल का बट मेरी पीठ की तरफ किया, उसने मेरी हवा निकाल दी, और घातक मार से मुझे भौंच्चका कर दिया। अधिकारी मेरे सामने से गुजरा, उसने मेरे चेहरे पर थूका, मुझे एक जोर की लात मारी और कहा, ''हम फिर वापस आयेंगे, तब तुम बोलोगे।'' मैं फर्श पर मुर्दे जैसा पड़ा था, आराम करने के लिये कहीं कोई दूसरा स्थान नहीं था, इसलिये मैं यहॉ पड़ा रहा,। कैसे भी करके, मैंने अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त किया। उस रात को और आगे कोई गड़बड़ नहीं हुई, और न मैंने अगले दिन किसी को देखा, और न हीं उसके अगले दिन, और न हीं उसके अगले दिन। तीन दिन और चार रातों के लिये, मुझे बिना खाने, बिना पानी और बिना किसी को देखे हुये, आश्चर्य के साथ, असमंजस की स्थिति में कि, आगे क्या होगा, रखा गया।

चोथे दिन फिर, कोई दूसरा, एक अधिकारी आया, और उसने कहा कि, वे मेरी देखभाल करने वाले हैं, कि वे मेरे साथ अच्छा व्यवहार करने वाले हैं, परन्तु उसके बदले में मुझे उन्हें वह सब बता देना चाहिये, जो मैं चीनियों के बारे में, चीनी फौजों के बारे में, च्यांग–काई–शेख के बारे में, जो कुछ जानता था। उन्होंने यह कहा कि, उन्होंने यह पता लगा लिया है कि, मैं कौन था, कि मैं तिब्बत का एक भद्रपुरूष था, और वे तिब्बत के साथ मित्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहते थे। मैंने स्वयं विचार किया, ''ठीक है, ये लोग निश्चितरूप से, एक विशेष प्रकार की मित्रता प्रदर्शित कर रहे हैं,'' अधिकारी ने झुक कर अभिवादन किया, घूमा और चला गया।

एक हफ्ते के लिये, मेरे साथ ठीक तरह से व्यवहार किया गया, एक दिन में दो बार भोजन, और पानी, और यही सब कुछ था, जो मुझे दिया गया। पर्याप्त पानी नहीं, पर्याप्त भोजन नहीं, परन्तु कम से कम, मुझे अकेला छोड़ दिया, परन्तु उनमें से तीन एक साथ आये, और कहा कि, वे मुझसे प्रश्न पूछने वाले हैं, और मुझे उनके प्रश्नों के उत्तर देने है। वे एक जापानी डॉक्टर को अपने साथ लाये, जिसने मेरी परीक्षा की और कहा कि, मेरी हालत खराब है, परन्तु मैं प्रश्न पूछे जाने के लिये पर्याप्तरूप से ठीक हूॅ। उसने मेरे घुटने को देखा और कहा कि, यह आश्चर्यजनक है कि, मैं इस सबके बाद भी चलने लगा। तब उन्होंने परम्परागतरूप से झुककर मेरा अभिवादन किया और आपस में भी एक दूसरे को अभिवादन किया, और दल बनाकर स्कूल के बच्चों के गिरोह की तरह से चले गये। एक बार फिर, उनके पीछे प्रकोष्ठ का दरवाजा झनझना उठा और मैं जानता था कि, अगले दिन मुझे फिर से एकबार दुबारा प्रश्नों का सामना करना है। मैंने अपने मन को शांत किया, और निश्चय किया कि, कुछ भी बात हो, वे कुछ भी कहें, कुछ भी करें, मैं चीन के साथ धोखा नहीं करूॅगा।

अध्याय आठ

जब विश्व अत्यन्त युवा था

अगले दिन सुबह जल्दी, जब आकाश में भोर की पहली किरण फूटी उससे काफी पहले प्रकोष्ठ का दरवाजा तेजी से झटका मारकर खुला; एक झनझनाहट के साथ, पत्थर की दीवार के विरूद्ध टकराया, गार्ड तेजी से अंदर घुसे। मैं अपने पैरों पर घसीटा गया, और तीन या चार आदमियों के द्वारा, बुरी तरीके से झकझोर दिया गया। तब मुझे हथकड़ी लगाई गई, और मुझे एक कमरे की ओर ले जाया गया, जो दूर, दूर, काफी दूर, महसूस हुआ। संतरी मुझे अपनी रायफल के बट से कोंचते रहे, किसी प्रकार से, परन्तु धीमे से तो नहीं। हरबार उन्होंने ऐसा किया, जो काफी जल्दी–जल्दी (too frequent) था, तब उन्होंने जम्हाई ली, ''जल्दी से सारे सवालों का जवाब दो, तुम शांति के दुश्मन! हम तुमसे सत्य निकाल लेंगे।''

अंत में हम प्रश्नोत्तर कक्ष में पहुँचे। अधिकारियों का एक समूह, तीखा दिखता हुआ, या तीखा दिखता सा प्रतीत होता हुआ, अर्द्धवृताकार में बैठा हुआ था। वास्तव में, उन्होंने मुझे स्कूल के बच्चों के गिरोह का समझा, जो दुखभरी जेवनार (treat) के लिए बाहर निकला हुआ था। जैसे ही मैं अंदर लाया गया, उन्होंने समारोहपूर्वक झुककर अभिवादन किया। तब एक वरिष्ठ अधिकारी ने, एक कर्नल ने, सत्य बता देने का उपदेश दिया। उसने मुझे विश्वास दिलाया कि, जापानी लोग मित्रवत्, और शांतिप्रिय होते हैं परंतु मैं, उसने कहा, जापानियों का एक दुश्मन था क्योंकि, मैं चीन में, उनके शांतिपूर्ण प्रवेश को, रोक रहा था।

चीन, उसने मुझे बताया, जापान की एक कॉलोनी होना चाहिए था, क्योंकि चीन बिना किसी सभ्यता वाला, असभ्य था। उसने जारी रखा, ''हम जापानी, शांति के सच्चे मित्र हैं। तुम हमें सब बता दो। हमें चीनी गतिविधियों के बारे में, उसकी ताकत के बारे में, और चांगकाई शेख के साथ हुई अपनी बातों के बारे में, हमें बताओ, जिससे हम अपने सिपाहियों का नुकसान उठाए बिना, चीन के विद्रोहियों को कुचल सकें।'' मैंने कहा, ''मैं एक युद्धबंदी हूँ, और अपने प्रति, उसीप्रकार व्यवहार किए जाने की माँग करता हूँ। मुझे और अधिक कुछ नहीं कहना है।'' उसने कहा, ''हमें ये देखना है कि, सभी लोग हमारे सम्राट के अधीन शांति से रहें। हम अपने जापानी साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं, तुम हमें सच्चाई बताओगे।'' वे प्रश्न पूछने की अपनी पद्धति में कतई नरम नहीं थे। वे सूचना पाना चाहते थे, और इसे प्राप्त करने के लिए उन्हें कुछ भी करना पड़े, इसकी उन्हें चिंता नहीं थी। मैंने कुछ भी कहने से मना कर दिया, इसलिए उन्होंने मुझे रायफल के बटों की ज्यादती के साथ नीचे गिरा दिया, बुरी तरह से रायफल के बट, मेरी छाती और पीठ में, और घुटनों में ठोके गए। तब मुझे संतरियों के द्वारा, मेरे पैरों पर, दुबारा खींचा गया ताकि, मुझे फिर से गिराया जा सके। कई–कई घण्टों के बाद, मुझे सिगरेट के ठूंठों से जलाया गया, उन्होंने तय किया कि इसकेलिए, अधिक कठोर तरीके अपनाए जाऐं। मेरे हाथ और पैर बांध दिए गए, और मुझे खींचकर एक तहखाने में, कोठरी में, डाल दिया गया। यहाँ पर मुझे कई दिनों तक, हाथ और पैर बांधकर रखा गया। कैदियों को बांधने का ये जापानी तरीका, अत्यंत कष्टकारी, दुखदाई होता है। मेरी कलाइयाँ मेरे हाथों के पीछे, मेरी गर्दन की ओर रुख करती हुईं बांधी गईं। तब मेरे घुटने, मेरी कलाइयों से बांधे गए, और टांगों को घुटनों पर से मोड़ दिया गया, जिससे पैरों के तलवे भी गर्दन के पीछे की तरफ हो गए। तब मेरे बांए घुटने में से एक रस्सा बांधा गया और कलाई में से गर्दन के चारों ओर, और दायीं ओर के घुटने और कलाई के साथ, जिससे यदि मैं अपनी इस स्थिति से आराम पाने का प्रयास करूँ तो मुझे अपने आपका दम घोंटना पड़े। एक मजबूत कमान की तरह से रखना, ये वास्तव में, एक दुखदायी तरीका था। अक्सर, जल्दी–जल्दी, एक संतरी आता और केवल यह देखने के लिए, मुझमें ठोकर मारता, कि क्या हुआ।

कई दिनों तक, मुझे इसप्रकार रखा गया, दिन में केवल आधे घण्टे के लिये खोला जाता; कई दिनों तक उन्होंने मुझे इसतरह रखा, और उन्होंने आना और सूचना को पूछना जारी रखा। सिवाय ये कहने के, कि ''मैं चीनी फौज का एक अधिकारी हूँ, एक असैनिक अधिकारी। मैं एक डॉक्टर और युद्धबंदी हूँ। इससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना,'' मैंने कोई उत्तर या आवाज नहीं निकाली, अंत में वे मुझे प्रश्न पूछते–पूछते थक गए, इसलिए वे एक पाइप (hose) लाए, और उन्होंने मिर्चों का तीखा घोल मेरे नकुओं में उंडेल दिया। मैंने महसूस किया, मानो मेरा पूरा मस्तिष्क आग पर रखा है। ऐसा लगा कि मेरे अंदर, शैतान आग को सोख रहा है, परंतु मैं नहीं बोला, और वे लगातार, और गाढ़ा, मिर्ची का घोल और पानी मिलाते रहे, उसमें सरसों का तेल मिलाते रहे। दर्द बहुत अधिक ज्यादा था। अंत में, मेरे मुँह से चमकीला खून, बाहर निकला। मिर्चों ने मेरे नकुओं के अस्तर को पूरी तरह जला दिया था। मैंने दस दिनों तक इसप्रकार जिन्दा रहने की व्यवस्था की, और मुझे लगता है कि, उन्हें ऐसा लगा कि, इस तरीके से वे मुझसे कुछ भी उगलवा नहीं सकेंगे, इसलिए लाल खून को देखकर वे बाहर चले गए।

दो या तीन दिन बाद, वे दुबारा मेरे पास आए, और मुझे प्रश्नोत्तर कक्ष में ले गए। मुझे ले जाना पड़ा क्योंकि, इसबार मैं अपने प्रयासों के बावजूद भी, अंधाधुंध बंदूकों के बट मारे जाने के बावजूद भी, और बोनटों के चुभा देने के बाद भी, चल नहीं सकता था। मेरे हाथ और पैर बांध दिए गए थे, इसलिए मैं उनका काफी लंबे समय तक उपयोग नहीं कर सका। प्रश्नोत्तरकक्ष में मुझे फर्श पर पटक दिया गया, और संतरी – उनमें से चार,– जो मुझे खींचकर लाए थे, अधिकारियों के सामने जोकि, अर्द्धवृत्ताकाररूप में बैठे थे, सावधान की मुद्रा में खड़े हो गए। इसबार उनके सामने, तमाम अनोखे उपकरण थे जो मैं, अपने अध्ययन से जानता था कि, ये यातना के उपकरण हैं। ''अब तुम हमें सच्चाई बताओगे, और अपना समय बर्बाद करना बंद करोगे,'' कर्नल ने कहा। ''मैं आपको बता चुका हूँ कि, मैं चीनीसेना का एक अधिकारी हूँ।'' और मैंने जवाब में केवल यही कहा।

जापानी गुस्से में लाल हो गए, और उनके एक आदेश पर मुझे एक बोर्ड से बांधा गया। मेरी बांहें फैलाए हुए, मानोकि, मैं एक क्रास के ऊपर था। बाँस की लम्बी खपच्चियाँ, मेरे नाखूनों के नीचे, छोटी उंगली के अंतिम जोड़ों तक, घुसाईं गईं। तब खपच्चियों को घुमाया गया। ये वास्तव में, बहुत कष्टदायी था, परंतु इससे भी (उन्हें) कोई परिणाम प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए तब संतरियों ने जल्दी ही, ये खपच्चियाँ धीमे से निकाल लीं, और एक–एक करके, मेरे नाखून अंदर की ओर फट गए थे।

दुख, वास्तव में शैतानीभरा था। ये बहुत खराब था जबकि, जापानियों ने नमक मिला हुआ पानी खून बहती हुईं उंगलियों के अंदर डाला। मैं जानता था कि, मुझे अपने साथियों को धोखा नहीं देना चाहिए, इसलिए मैंने अपने मन में, अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप की सलाह को याद किया। ''दुख के स्थान पर एकाग्र मत हो, लोबसांग, क्योंकि यदि तुम अपनी ऊर्जाओं को उस स्थान पर केन्द्रित करोगे, तब तुम्हारे द्वारा वह कष्ट झेला नहीं जा सकता। इसके बदले में कोई दूसरी चीज सोचो। अपने मन को नियंत्रित करो और किसी दूसरी चीज के बारे में सोचो, क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे तो, दर्द तो तुम्हारे अंदर अभी भी होगा और उसके दुष्प्रभाव भी होंगे परंतु, तुम उसे झेलने में समर्थ होगे। ये ऐसे लगेगा जैसेकि, पृष्ठभूमि में कुछ हो रहा है।'' इसलिए मैंने अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखने के लिए और, नाम न बताने के लिए और सूचना न देने के लिए, अपने मन को दूसरी चीजों पर (केन्द्रित) रखा। मैंने भूतकाल के ऊपर विचार किया, तिब्बत में अपने घर के ऊपर, और अपने शिक्षक के ऊपर, मैंने चीजों की शुरूआत के बारे में, सोचा जैसेकि, हम उन्हें तिब्बत में जानते थे।

पोटाला के नीचे, छिपी हुई रहस्यमयी सुरंगे थीं, सुरंगें, जो विश्व के इतिहास की कुंजियाँ, अपने पास रखती थीं, जिन्होंने मुझमें दिलचस्पी पैदा की, जिन्होंने मुझे मोहित किया, और जो मैंने देखा और वहाँ सीखा, उसको एकबार दुबारा, फिर से याद करना, दिलचस्प हो सकता था क्योंकि, ये वह ज्ञान है, जो स्पष्टरूप से, पश्चिमी लोगों को नहीं पता।

मैंने उस समय को याद किया, जब मैं प्रशिक्षण में एक नौजवान भिक्षु था। अंतरतम दलाई लामा, पोटाला में, अतीन्द्रियज्ञानी के रूप में, मेरी सेवाओं का उपयोग कर रहे थे, और वह मुझसे इस बात से बहुत प्रसन्न थे, और इनाम के रूप में, उन्होंने उस स्थान का नियंत्रण मुझे, मेरे हाथ में, दे दिया था। मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, ने एक दिन मुझे बुला भेजा, ''लोबसांग, मैं तुम्हारे उन्नयन के विषय में, काफी कुछ सोचता रहा हूँ, और मैं इस निश्चय पर पहुँचा हूँ कि, अब तुम ऐसी आयु में पहुँच गए हो, और तुमने विकास की ऐसी स्थिति को प्राप्तकर लिया है कि, तुम गुप्त गुफाओं के लेखन को पढ़ सकते हो, अध्ययन कर सकते हो। आओ!''

वह अपने पैरों पर उठ खड़े हुए, और उनके साथ–साथ, मैं भी उनके कमरे से बाहर आ गया। भिक्षुओं के समूहों को, जो पोटाला की घरेलू अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होते हुए, रोजमर्रा के अपने–अपने कामों में लगे हुए थे, गुजारते हुए, नीचे की ओर, गलियारे में नीचे, कई–कई सीढ़ियों तक, चले। हम अंतिम रूप से, पर्वत के काफी नीचे, एक छोटे कमरे में आए, जो विभाजित होते गलियारे के दायीं ओर था। यहाँ खिड़कियों में से थोड़ी सी रोशनी आई। बाहर, हवा के कारण, उत्सव के प्रार्थनाध्वज, लहरा रहे थे। ''हम यहॉ प्रवेश करेंगे, लोबसांग, ताकि हम उन क्षेत्रों का अध्ययन कर सकें, जिनके ऊपर, केवल कुछ लामाओं की ही पहुँच है।''हमने छोटे कमरे की अलमारियों से दीपक उठाए, और उन्हें (मक्खन से) भरा। तब हमने, हरेक ने, सावधानी के रूप में, कुछ फालतू (दीपक) भी ले लिए। हमारे मुख्य दीपक जलाए गए, और हम गलियारे के नीचे की तरफ बाहर आए। मेरे शिक्षक, मुझे रास्ता दिखाते हुए, मेरे आगे चले। हम नीचे, गलियारे के नीचे, और भी नीचे गए। अंत में, काफी देर बाद, हम एक कमरे में आए। ये मुझे अपनी यात्रा का अंत प्रतीत हुआ। ये एक भंडार–कक्ष जैसा था। आसपास अनोखी आकृतियाँ थीं, छवियाँ थीं, पवित्र वस्तुऐं थीं, विदेशी देवता थे, पूरे विश्व से आए हुए उपहार थे। ये वह जगह थी, जहाँ दलाई लामा, जरूरत से ज्यादा होने पर, अपने प्राप्त उन उपहारों को रखते थे, जिनका उनके लिए कोई तात्कालिक उपयोग नहीं था।

मैंने उत्सुकता से अपने आसपास देखा। जहॉ तक मैं देख सकता था, हमारे यहाँ होने का कोई तात्पर्य नहीं था। मैंने सोचा था कि, हम कुछ खोजने जा रहे हैं, और ये, मात्र एक भंडार–कक्ष था। ''समझाने वाले शिक्षक,'' मैंने कहा, ''निश्चित रूप से, हमने अपने रास्ते पर, यहाँ आकर, गलती की है ?'' लामा ने मेरी तरफ देखा और शुभेच्छा के साथ मुस्कराए। ''लोबसांग, लोबसांग क्या तुम सोचते हो कि, मैं अपना रास्ता भूल जाऊँगा ?'' जैसे ही वे मुझसे दूर की ओर मुड़े, वे मुस्कुराए, और एक दूर की दीवार की ओर चले। एक क्षण के लिए उन्होंने खुद को देखा, और तब कुछ किया। जहाँ तक मैं देख सका, वे दीवाल पर लगे हुए कुछ प्रादर्शों के साथ छेड़छाड़ कर रहे थे। कुछ अभिमानी प्लास्टर स्पष्टरूप से, कुछ मृत हाथों के द्वारा बनाया गया था। अंत में वहाँ गिरते हुए पत्थरों जैसी एक गड़गड़ाहट हुई और मैं, यह सोचते हुए, कि शायद छत (गिर कर) गुफा में आ रही थी या फर्श टूट रहा था, खतरे में चारों तरफ घूम गया। मेरे शिक्षक हॅसे। ''ओह, नहीं, लोबसांग, हम यहाँ बिलकुल सुरक्षित हैं, बिलकुल सुरक्षित। ये वह जगह है जहाँ हम अपनी यात्रा जारी रखते हैं। ये वह जगह है, जहाँ से हम दूसरी दुनियाँ में अपने कदम रखते हैं। वह विश्व, जिसको केवल कुछ लोगों ने ही देखा है। मेरे पीछे आओ।''

मैंने विस्मय और भय से देखा। एक अंधेरे छिद्र को खोलते हुए, दीवार का एक खंड एक बगल से खिसक गया था। मैं कमरे से उस छिद्र में जाते हुए, और उस नारकीय धुंध में जाकर समाप्त होते हुए, एक धूल भरे रास्ते को देख सकता था। दृश्य ने मुझे आश्चर्य के साथ, उस स्थान पर जमा दिया। ''परंतु स्वामी!'' मैं आश्चर्यचकित होकर बोला, ''यहॉ दरवाजे का बिलकुल कोई निशान नहीं था। ये कैसे खुल गया, ऐसा कैसे हुआ ?'' मेरे शिक्षक मेरे ऊपर हंसे और कहा ''ये एक प्रवेशद्वार है, जिसे शताब्दियों पहले बनाया गया था।'' इसके रहस्य को बहुत अच्छी तरह संजो कर रखा गया है। जब

तक कोई आदमी जानता नहीं हो, इस दरवाजे को खोल नहीं सकता, और कोई मतलब नहीं, कितना भी गहराई से कोई तलाश करे, यहाँ जोड़ का या दरार का कोई निशान नहीं है। परंतु आओ, लोबसांग, हम यहॉ भवन के बनाने की विधि के ऊपर बात नहीं कर रहे हैं। हम यहाँ समय नष्ट कर रहे हैं। तुम इस स्थान को बहुधा देखोगे।'' इसके साथ वे मुड़े और उन्होंने, उस रहस्यमयी सुरंग में काफी दूर आगे पहुँचते हुए, छेद के अंदर मेरी अगुवाई की। मैंने विचारणीय कंपकंपाहट के साथ उनका अनुगमन किया। उन्होंने मुझे अपने पीछे गुजर जाने दिया, तब वे मुड़े और दुबारा किसी चीज के साथ कुशलतापूर्वक, छेड़छाड़ की। दुबारा कुछ टूटने की मनहूस घरघराहट, चरमराहट हुयी और घिसने की सी आवाज आई और जीवित चट्टान का पूरा पैनल, मेरी भौचक्की ऑखों के सामने खिसक गया और उसने पूरे छेद को ढंक लिया। अब हम, अंधेरे में, केवल उन मक्खन के दीपों की कभी–कभी चमकती, सुनहरी ज्वाला की रोशनी में थे, जिन्हें हम लिये हुए थे। मेरे शिक्षक ने मुझे पीछे छोड़ दिया, और आगे चले। उनके कदम दबे हुए थे, यद्यपि उनकी गूंज हुई, चट्टान के बगल से उत्सुकतापूर्ण गूंज हुई, गूंज हुई, फिर गूंज हुई। वह बिना बोले चलते गए। हमें लगा कि, हमने एक मील से ज्यादा पूरा किया, तब अचानक बिना किसी चेतावनी के, इतना अचानक कि आश्चर्य के साथ, मैं उनसे टकरा गया, लामा मेरे आगे रुके। ''यहाँ हम अपने दीपों को फिर से भरते हैं, लोबसांग, और उनमें बड़ी बत्ती लगाते हैं। अब हमें रोशनी की जरूरत पड़ेगी। जैसा मैं करता हूँ वैसा करो, और तब हम अपनी यात्रा जारी रखेंगे।''

अब हमारे पास, जलाने के लिए, रोशनी के लिए, अपने पथ को दिखाने के लिए, पहले से अधिक चमकदार ज्वालायें थीं और हम काफी लंबी दूरी तक चलते रहे, लंबी दूरी तक, इतनी लंबी दूरी तक कि मैं थक गया और व्याकुल हो गया। तब हमने ये ध्यान दिया कि, हमारे गुजरने का रास्ता चौड़ा और ऊँचा होता जा रहा है। ऐसा प्रतीत हुआ मानो कि, हम किसी कीप (funnel) के संकरे सिरे से कीप के अंत की ओर चल रहे हैं, चौड़ी दीवार के सिरे की ओर। हमने गलियारे का भ्रमण किया और मैं आश्चर्य में चीख पड़ा। मैंने अपने सामने एक लंबी चौड़ी गुफा देखी। जिसके छत और बगल से, हमारे दीपों की परावर्तित प्रकाश के द्वारा, सुनहरी रोशनियों के असंख्य बिन्दुमय प्रवाह निकल रहे थे। गुफा काफी गहरी दिखाई दी। हमारा छोटा सा प्रकाश, केवल उसकी विशालता को बढ़ा रहा था और उसके अंधकार को भी।

मेरे शिक्षक, रास्ते के वायीं ओर, एक दरार की ओर गए और एक बड़े धात्विक बेलन जैसे दिखने वाली चीज को घसीटकर खींचा। ये आदमी की ऊँचाई से आधा, और निश्चितरूप से, आदमी की सबसे चौड़े भाग की चौड़ाई के बराबर था। यह गोल था, और इसके ऊपरी भाग में एक यंत्र लगा हुआ था, जिसे मैं समझ नहीं सका। ये एक छोटा सफेद जाल दिखता था। लामा मिंग्यार डोंडुप ने इस चीज के साथ कुशलतापूर्वक कुछ छेड़खानी की, और तब अपने मक्खन के दीप से, इसके ऊपरी सिरे को छुआ। तुरंत ही वहाँ एक पीली–सफेद चमकीली ज्वाला उठी, जिसने मुझे स्पष्टरूप से देखने के लिए सक्षम बना दिया। प्रकाश में से एक हल्की सी घसीटने की आवाज आ रही थी, जैसेकि इसको दबाव के साथ बलपूर्वक बाहर निकाला जा रहा हो। तब हमारे शिक्षक ने हमारे दीपों को बुझा दिया। ''इसके साथ हमें अत्यधिक प्रकाश मिलेगा, लोबसांग, हम इसे अपने साथ ले चलेंगे। मैं तुम्हें बहुत लंबे पुराने समय का कुछ इतिहास पढ़ाऊँगा।'' मैं इस बड़े चमकीले प्रकाश को खींचता हुआ आगे बढ़ा, उसका जलता हुआ पीपा (canister), स्लेज (sledge)[16] जैसी किसी चीज के ऊपर रखा हुआ था। हम एकबार फिर अपने रास्ते पर नीचे की ओर, और नीचे, जबतक कि, मैंने नहीं सोचा कि, हम पृथ्वी के कटोरे के ठीक नीचे आ गए हैं, आसानी से चले। अंततः हम रुक गए। मेरे सामने एक काली दीवार थी, जिसमें सोने की पट्टिकाओं (panel) में सैकड़ों, हजारों की संख्या में सोने के छर्रे (shot) जैसे लगे थे, और उनमें सोने

16 अनुवादक की टिप्पिणी : स्लेज, बर्फ पर फिसलने बाली, बिना पहियों की लकड़ी की गाड़ी होती है, जिसका उपयोग टुंड्रा और साइबेरिया में रहनेवाले ऐस्कीमो लोग करते हैं, वहाँ इसे कुत्तों के द्वारा खींचा जाता है।

के ऊपर कुछ खुदी हुई नक्काशियाँ (engravings) थीं। हमने उनको देखा। तब मैंने दूसरी तरफ को देखा। तब मैं काले पानी की जगमगाहट को देख सका मानो कि, मेरे सामने एक बड़ी झील थी।

''लोबसांग, मेरी तरफ ध्यान दो। तुम उसके बारे में बाद में जान जाओगे। मैं तुम्हें तिब्बत के आदिकारण (origin) के बारे में थोड़ा सा बताना चाहता हूँ। एक प्रारंभ, जिसको बाद के वर्षों में तुम खुद सत्यापित कर सकोगे, जब तुम अभियान पर जाओगे, जिसकी अभी मैं योजना बना रहा हूँ,'' उन्होंने कहा। ''जब तुम हमारे देश से जाओगे, तुम ऐसे लोगों को पाओगे, जानोगे, जो हमें नहीं जानते और ये कहेंगे कि, तिब्बती निरक्षर, जंगली होते हैं, जो शैतानों की पूजा करते हैं और अकथनीय परम्पराओं में शामिल होते हैं। परंतु लोबसांग, पश्चिम की किसी भी संस्कृति की तुलना में, हमारी अपनी संस्कृति अधिक पुरानी है। हमारे पास इसके, सावधानीपूर्वक छिपाए हुए, और संरक्षित किए हुए, युगों में पीछे जाते हुए...सबूत हैं।''

हम खुदे हुए लेखों की ओर बढ़े और अनेक संकेतों को, विभिन्न आकृतियों को देखा। मैंने लोगों के चित्रों को देखा। जानवरों के चित्रों को, – जानवर जिन्हें अभी हम नहीं जानते – और तब उन्होंने आकाश के एक नक्शे की ओर संकेत किया, परंतु एक नक्शा जिसे मैं समझता नहीं था कि, वर्तमान समय का है क्योंकि, उसमें दिखाए गए तारों की स्थितियाँ अलग थीं और गलत स्थानों में थीं। लामा थोड़ी देर के लिए रुके, और मेरी और मुड़े। ''मैं इसे समझता हूँ, लोबसांग, मुझे ये भाषा पढ़ाई गई थी। अब मैं तुम्हारे लिए इसको पढ़ूँगा, इस युगों पुरानी कहानी को पढ़ो, और तब आने वाले दिनों में, मैं और दूसरे लोग, तुम्हें इस गुप्तभाषा को पढ़ाएंगे ताकि, तुम यहाँ आ सको और अपने खुद की टीका (notes) तैयार कर सको, अपना खुद का लेखाजोखा रख सको, और अपना खुद का परिणाम निकाल सको। इसका मतलब होगा, अध्ययन, अध्ययन, अध्ययन। तुम्हें यहाँ आना पड़ेगा और इन गुफाओं को खोजना पड़ेगा क्योंकि, इनमें से कई ऐसी हैं, जो हमारे नीचे मीलों तक जाती हैं।''

एक क्षण के लिए, वे खोदी हुई चीजों को देखते हुए, खड़े हुए। तब उन्होंने भूतकाल के एक अंश को मुझे पढ़कर सुनाया। तब उन्होंने जो बताया और जितना मैंने पढ़ा, उसमें से अधिकांश, उससे बहुत ज्यादा, मात्र इस छोटी सी पुस्तक में नहीं दिया जा सकता। सामान्य पाठक, इसका विश्वास नहीं करेगा, और यदि उसने ऐसा किया, और यदि वह कुछ रहस्यों को जान गया तो, वह दूसरों की भांति, स्वार्थपूर्ति के लिए, दूसरों के ऊपर अपना स्वामित्व जमाने के लिए, और दूसरों को समाप्त करने के लिए यंत्रों का ऐसा उपयोग कर सकता है, जो भूतकाल में, पहले लोग कर चुके हैं; जो मैंने देखा है। जैसे कि राष्ट्र, आजकल एक दूसरे को परमाणु बम से समाप्त करने की धमकी दे रहे हैं। परमाणु बम कोई नया आविष्कार नहीं है। ये हजारों साल पहले आविष्कृत किया गया था और इसने पृथ्वी पर विनाशलीला रच दी थी। यदि मनुष्य ने अपनी इस मूर्खतापूर्ण गलती को नहीं सुधारा तो, ये अब भी ऐसा ही करेगा। विश्व के प्रत्येक धर्म में, प्रत्येक जनजाति के इतिहास में, जलप्लावन की कहानी है। एक दुर्घटना, जिसमें लोग डूब गए थे, जिसमें (कुछ) देश जमीन में समा गए थे और (दूसरे कुछ) देश ऊपर उठे थे, और पृथ्वी अस्थिर थी। ये इंकास[17] के, मिश्री लोगों के, क्रिश्चियन लोगों के, हरेक के इतिहास में वर्णित है, कि इतना हम जानते हैं कि, ये एक बम के द्वारा पैदा हुई थी; परंतु खुदे हुए लेख के आधार पर, मैं तुम्हें यह बता दूँ कि ऐसा कैसे हुआ।

मेरे शिक्षक मेरे सामने, चट्टानों पर लिखे हुए शिलालेख के सामने, पद्मासन की मुद्रा में बैठ गए। सुनहरी आभा के साथ, चमकदार रोशनी, उनके पीछे, उन युगों पुरानी नक्काशी के ऊपर, चमक रही थी। उन्होंने मुझे भी बैठने के लिए प्रस्ताव किया। मैंने उनके बगल में अपना स्थान लिया, ताकि मैं, उन विशेषताओं के ऊपर देख सकूँ, जो उन्होंने मुझे बताईं थीं। जब मैं अपने आप में व्यवस्थित हो गया तो, उन्होंने बात करना शुरू किया, और ये वह सबकुछ था, जो उन्होंने मुझे बताया।

17 अनुवादक की टिप्पिणी : इंकास दक्षिणी अमेरिकन इंडियन जनजाति है, जिसने स्पेन की विजय के पहिले अपना संम्राज्य स्थापित किया था।

''बहुत पुराने दिनों में, जब पृथ्वी किसी दूसरे स्थान पर थी। तब ये सूर्य के अधिक पास और विपरीत दिशा में घूमती थी, और इसके समीप में एक दूसरा ग्रह था, जो पृथ्वी का जुड़वॉ था। दिन छोटे होते थे, और मनुष्य का जीवन लंबा दिखाई देता था। आदमी सैकड़ों सालों तक जीता हुआ लगता था। जलवायु गर्म थी, और वनस्पतियाँ (flora) दोनों प्रकार की थीं, भूमध्यरेखीय (tropical) भी और सुखदायक (luxurious) भी। प्राणी (fauna) बहुत बड़े आकार के और विभिन्न रूपों में होते थे। पृथ्वी के घूमने की दर भिन्न होने के कारण, पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण (gravity) जितना अब है, उससे काफी कम था, और आदमी जितना (लम्बा) अब है शायद उससे दूना होता था, परंतु फिर भी वह, एक दूसरी जाति की तुलना में, जो उनके साथ ही रहती थी बोना ही था, क्योंकि, उस समय विभिन्न तंत्रों (systems) से आए हुए, जो अत्यधिक प्रतिभाशाली लोग थे, वे भी रहते थे। तब वे पृथ्वी की देखभाल करते थे, उसका संरक्षण करते थे, और मनुष्यों को बहुत कुछ सिखाते थे। उस समय मनुष्य एक उपनगर (colony) था, एक ऐसा वर्ग, जो कि उन दयालु शिक्षकों के द्वारा पढ़ाया जा रहा था। इन विशाल दैत्याकार लोगों ने उसे बहुत कुछ पढ़ाया। अक्सर वे आकाश में जाने की, और चमकती हुई धातु की अनोखी कला को जानते थे। मनुष्य, बेचारा अज्ञानी मनुष्य, अभी भी कारणों की देहली पर रेंगता हुआ, इस सब को नहीं समझ सका, क्योंकि (उस समय) उसकी प्रतिभा, मुश्किल से बंदरों से कुछ ही अधिक रही होगी।

''गणनाहीन युगों तक पृथ्वी पर जीवन का पथ, शांति के साथ, अबाधरूप से चलता रहा। तब सभी प्राणियों के बीच सामंजस्य और शांति थी। मनुष्य बिना बोले, दूरानुभूति (telepathy) के द्वारा, एक दूसरे से वार्तालाप कर सकता था। वे केवल स्थानीय बातचीत के लिए ही वाणी का उपयोग करते थे। तब उन अति–प्रतिभाशालियों (super-intellectuals) ने, जो आकार में आदमी से बहुत ज्यादा बड़े थे, (आपस में) झगड़ा किया। उनके बीच, विरोधी स्वर और ताकतें उभरीं। ठीक वैसे ही, जैसे आजकल की जातियाँ सहमत नहीं हो सकतीं, वे कुछ मुद्दों पर सहमत नहीं हो सके। एक समूह, विश्व के दूसरी तरफ चला गया और वहाँ जाकर शासन करने का प्रयत्न करने लगा। उनमें दरार पड़ गई थी। अत्यधिक प्रतिभाशाली लोगों में से कुछ ने, एक–दूसरों को मार दिया और उन्होंने तीखी लड़ाइयों को आमंत्रित किया और एक दूसरे का अत्यधिक विनाश किया। सीखने के लिए उत्सुक मनुष्य ने, युद्ध की कलाओं को, सीख लिया, मनुष्य ने मारना सीख लिया। इसलिये, पृथ्वी जो पहले शांतिमय स्थान होता था, अब दुखभरा स्थान हो गया। कुछ समय के लिए, कुछ वर्षों के लिए, अतिमानव (super-man) ने रहस्यमय तरीके से, छिपाकर, काम करना शुरू किया, जिनमें से आधे, दूसरों के खिलाफ थे। एकदिन, बहुत भयंकर विस्फोट हुआ, और पूरी धरती हिलती हुई लगी, और अपने रास्ते से भटक गई। आकाश में भयंकर ज्वालायें उठीं, और पृथ्वी धुंए से घिर गई। अंततः उपद्रव समाप्त हुआ, परंतु कई महीनों बाद, आकाश में अनोखे चिन्ह देखे गए, ऐसे चिन्ह, जिन्होंने पृथ्वी के मनुष्यों को आतंक से भर दिया। एक ग्रह समीप आ रहा था, और तेजी से बड़ा, और बड़ा, होता जा रहा था। ये स्पष्ट था कि, ये पृथ्वी से टकराने जारहा था। इसके साथ में बड़े–बड़े ज्वारभाटे और हवाऐं उठीं, दिन और रात, अत्यंत गरमागरम प्रकोप की प्रचंडता से भर गए। ग्रह पूरे आकाश को, भरता हुआ दिखाई दिया, ऐसा लगा कि अंततः कुछ चीज, सीधे ही पृथ्वी से टकरानी चाहिए। जैसे–जैसे ग्रह, समीप, और समीप, आता गया, ज्वार की अत्यंत बड़ी–बड़ी लहरें उठीं और संम्पूर्ण भूभाग को डुबा दिया। भूकम्पों ने पृथ्वी की सतह को हिला दिया, और पलक झपकने में ही महाद्वीप निगल लिए गए। अतिप्रतिभाशाली लोगों की जाति ने झगड़ों को भुला दिया और उन्होंने अपनी चमकदार मशीनों की ओर जाने की जल्दी की, और आकाश में उड़ गए, और पृथ्वी पर व्याप्त इस संकट को यहीं छोड़ते हुए, यहाँ से भाग खड़े हुए, परंतु पृथ्वीपर अभी भी भूकम्प जारी रहे; पहाड ऊपर उठे और उनके साथ–साथ, समुद्रतट भी ऊपर उठे; तब जमीन पानी में

डूब गई और जलप्लावित हो गई; उस समय के लोग, आतंक से पगलाकर भाग गये, और जिसे उन्होंने, पृथ्वी का अंत समझा था, उससे बाहर निकले। हवायें हरदम अधिक तीखी होतीं गईं, और उपद्रव, कोलाहल और भय, जिसे झेलना कठिन से कठिनतर, होता गया, उपद्रव और भय, जो नाड़ियों को तोड़ देने वाला और आदमी को पागलपन में धकेलने वाला था।

''अतिक्रमणकारी ग्रह समीप आता गया और बड़ा होता गया, जबतक कि, अंत में ये एक निश्चित दूरी के अंदर नहीं आ गया और एक भयंकर टकराव हुआ, और एक इसमें से जीवंत विद्युतस्फुरण चमका। आकाश लगातार निकल रही लपटों और काले धुंए के बादलों से भर गया और दिन को पूरी तरह से, लगातार भय और आतंक की रात ने, भर दिया। ऐसा लगा कि, इस आकस्मिक दुर्घटना के भय के कारण, सूर्य मानो खुद ही स्थिर हो गया हो, क्योंकि, अभिलेखों के अनुसार, अनेकों–अनेकों दिनों तक, सूर्य का लालगोला, खूनीलाल, उसमें से निकलती हुई ज्वाला की बड़ी–बड़ी जीभों के साथ, शांत खड़ा रहा। तब अंत में कालेबादल समाप्त हुए, और तब पूरी तरह रात्रि छा गई। हवाऐं ठंडी चलीं तब गर्म; तापक्रम में परिवर्तन के कारण, हजारों मर गए और ये परिवर्तन दुबारा हुए। देवताओं का खाना, जिसे कुछलोग मन्ना (manna) कहते हैं, आकाश से गिरा। जिसके बिना पृथ्वी के मनुष्य, और दुनियाँ के जानवर, फसलों के विनाश के माध्यम से, दूसरे सभी प्रकार के खाद्यों से वंचित होने के माध्यम से, अकाल से मर गए होते ।

''आदमी और औरतें, शरण पाने की आशा में, एक स्थान से दूसरे स्थान तक देखते हुए, कहीं भी, जहाँ वे उठक–पटक से आतंकित, तूफानों से टूटे हुए, अपने शरीरों को,; शांति की प्रार्थना करते हुए, जान बचाए जाने की आशा में, आराम कर सकें, घूमते रहे; परंतु पृथ्वी हिली और डगमगाई, बरसात हुई, और बाहरी अंतरिक्ष में से, हरसमय, तीव्र मात्रा में विद्युत विसर्जन हुए। समय के गुजरने के साथ, जैसे–जैसे, भारी काले बादल दूर सिमटते गए, सूर्य छोटा हुआ, और छोटा हुआ, दिखाई दिया। ये दूर जाता हुआ दिखाई दिया। पृथ्वी के लोग डर के मारे चिल्लाते रहे। उन्होंने सूर्य देवता का विचार किया, जीवन का प्रदाता, जो उनसे दूर भाग रहा था। परंतु आश्चर्यजनकरूप से शांत सूर्य, पहले पश्चिम से पूर्व की तुलना में चलने की बजाय, अभी भी, आकाश में, पूर्व से पश्चिम की और चल रहा था।

''मनुष्य के सामने, समय जानने के सारे रास्ते बंद हो गए थे। सूर्य के छिपने के साथ–साथ, वहाँ कोई तरीका नहीं था, जिसकी सहायता से रास्ता ज्ञात हो सके; सबसे अधिक बुद्धिमान लोग भी इस बात को नहीं जान सके कि, कितने युगों पहले, इस सबप्रकार की घटनायें हुईं थीं। उस समय आकाश में, दूसरी अनोखी चीज दिखाई दी; दोनों ग्रहों की उस टक्कर के कचरे से, एक विश्व, एक बहुत बड़ा, पीला, उभरा हुआ विश्व, जो ऐसा लगता था कि, ये अभी जमीन पर गिरने ही वाला है, ये जिसे हम अभी चन्द्रमा के रूप में जानते हैं, इस समय प्रकट हुआ। बाद की जातियॉ, पृथ्वी पर बड़े अवसाद में रहीं, साइबेरिया, एक स्थान, जहाँ से शायद, दूसरे विश्व की, सर्वाधिक नजदीकी होने के कारण, चन्द्रमा को नोंचा गया था, जहाँ शायद पृथ्वी की सतह को नुकसान पहुॅचा था।

''टक्कर से पहले शहर होते थे और उस महान जाति के ज्ञान को धारण करती हुईं ऊँची ऊँची इमारतें। गड़बड़ी में उन्हें औंधा पटक दिया गया था, और वे अब, उस सभी रहस्यमय ज्ञान को छिपाये हुए, केवल कचरे के ढेर थे। उन जातियों के विद्वानलोग जानते थे कि, इन ढेरों के बीच में, कुछ नमूनों और धातुओं पर गढ़कर लिखी किताबों के कनस्तर हैं। वे जानते थे कि, विश्व का सभीज्ञान, इस ढेर में दबा हुआ जमा है, इसलिए उन्होंने ये देखने के लिए कि, इन अभिलेखों में से क्या बचाया जा सकता है, खोदना, और खोदना प्रारंभ किया, ताकि वे उन महान जातियों के ज्ञान का उपयोग करते हुए, अपनी खुद की शक्ति को बढ़ा सकें।

''आने वाले वर्षों में, लगातार, दिन लंबे होते गए और लंबे होते गए, जबतक कि वे इस दुर्घटना से पहले की तुलना में, दूने लंबे नहीं हो गए, और तब पृथ्वी अपने गतिमान चन्द्र के साथ, जो इस

टक्कर का उत्पाद था, अपनी नई परिक्रमण कक्षा में व्यवस्थित हुई। परंतु, अब भी पृथ्वी हिल रही थी और गड़गड़ का शब्द कर रही थी, (तभी) पर्वत उभरे, और (उसने) ज्वालाओं, चट्टानों और विनाश को उगला, तब विनाश की, लावे की, बड़ी–बड़ी नदियाँ, पहाड़ों की तरफ से दौड़ीं। परंतु, अधिकांश स्मारकों और ज्ञान के उन स्रोतों को अपने में समेटे हुए, क्योंकि कड़ा धातु, जिसके ऊपर, इन अभिलेखों में से बहुत से लिखे गए थे, इस लावे के द्वारा नहीं पिघला। मात्र, इसका संरक्षण हुआ, जोकि पत्थरों, छिद्रमय (porous) पत्थरों, जो समय के साथ मिट गये अथवा क्षरित हो गये, की गुफा में संरक्षित हुआ, जिससे कि, उनमें छिपे हुए अभिलेख प्रकट हुए और कुछ लोगों के हाथ में पड़े जो उनका उपयोग कर सकते थे। परंतु, यह भी बहुत अधिक लंबे समय तक नहीं था। धीमे–धीमे, पृथ्वी अपने नए रूप में व्यवस्थित हुई, दुनियाँ पर शीत पसर गया, पशु मर गए अथवा अपेक्षाकृत गरम क्षेत्रों में चले गए। विशालकाय हाथी (mammoth) और विशालकाय शाकाहारी डायनासोर (brontosaurus) मर गए क्योंकि वे नई परिस्थितियों के साथ अपना तालमेल नहीं बिठा सके। आकाश से बर्फ गिरी, और हवायें अधिक कटु होती गईं। अब तमाम बादल थे, जबकि पहले लगभग कुछ भी नहीं थे। अब दुनियाँ बिलकुल दूसरा स्थान थी; समुद्र में ज्वार आ रहे थे; जबकि पहले वे शांत[18] झीलें थीं; शांत, अक्षुब्ध गुजरने वाली हवा के सिवाय। अब (समुद्र की) बड़ी तरंगों ने आकाश के ऊपर कोड़े बरसाना शुरू किया, और बरसों तक ये ज्वार विशाल रहे और जमीन को निगल जाने की और लोगों को डुबा देने की धमकी देते रहे। तब स्वर्ग (आकाश) भी दूसरी तरह का दिखाई दिया[19]। रात को पुराने परिचित नक्षत्रों की तुलना में, नये अजनबी नक्षत्र देखे गए और चन्द्रमा बहुत पास था। अब जैसे ही, उस समय के पुजारियों ने अपनी शक्ति को स्थापित करने का प्रयत्न किया और घटनाओं का ब्यौरा देना शुरू किया, नये धर्म प्रकट हुए। वे उस महान जाति के बारे में बहुत कुछ भूल गए, उन्होंने केवल अपनी शक्तियों के बारे में, अपने खुद के महत्व के बारे में सोचा; परंतु वे यह नहीं बता सके कि ये सब कैसे हुआ, और वह सब कैसे हुआ। उन्होंने उसे देवताओं की नाराजगी के रूप में माना, और ये पढ़ाया कि, सभी आदमी पाप से पैदा हुए थे।

''समय के गुजरने के साथ–साथ, पृथ्वी के अपनी नई कक्षा में व्यवस्थित होने के साथ–साथ, और मौसम के अधिक शांत हो जाने के साथ, लोग छोटे और बौने होते गए। शताब्दियाँ गुजर गईं, और देश अधिक स्थाई हो गए। मानो कि प्रायोगिक रूप से, अनेक जातियाँ प्रकट हुईं, और असफलताओं से संघर्ष करते हुए, दूसरी जातियों से विस्थापित होने के लिए, गुजर गईं, गायब हो गईं। अंत में, एक मजबूत प्रकार की प्रजाति विकसित हुई, और दूसरी प्रकार की सभ्यता का विकास हुआ। सभ्यता, जिसने अपने पहले के दिनों से, जातीयस्मृति के रूप में इस निर्दयी दुर्घटना में से कुछ को याद रखा, और उन उन्नत प्रतिभाशालियों में से कुछ ने, ये शोध करने की और पता लगाने की सोची कि, वास्तव में क्या हुआ था। अबतक हवा और बरसात, अपना काम कर चुके थे। लावा के उन पत्थरों में से, पुराने अभिलेख प्रकट होने शुरू हो गए थे, और अब पृथ्वी पर तत्कालीन मनुष्यों में से उच्च प्रतिभाशाली कुछ लोग, जो उनको एकत्रित करने और उनको अपने विद्वानों, जो अत्यधिक संघर्ष के साथ, काफी बाद में समाप्त हुए, के समक्ष रखने में सक्षम थे, इन लेखों में से कुछ का कूटार्थ निकालने (decipher) में समर्थ हुए। क्योंकि, थोड़े से ही अभिलेख पढ़नेलायक (legible) थे, और जैसेकि, तत्कालीन वैज्ञानिक उन्हें समझने लगे थे, उन्होंने दूसरे अभिलेखों की, जिनके टुकड़ों को जोड़कर रिक्तता को पाटने की ताबड़तोड कोशिश की, ताकि उन्हें पूरा किया जा सके। बड़ी बड़ी खुदाइयाँ चालू की गईं, और बहुत कुछ दिलचस्प चीजें प्रकाश में आईं। तब वास्तव में, नई सभ्यता पैदा हुई, नगर और शहर बसाए गए, और विज्ञान ने विनाश की और दौड़ना शुरू किया। हमेशा विनाश की और दौड़, छोटे से समूह द्वारा

18 अनुवादक की टिप्पिणी :क्योंकि तब चंद्रमा नहीं था। चंद्रमा ही समुद्र में ज्वार–भाटा लाने का एकमात्र कारण है।

19 अनुवादक की टिप्पिणी :क्योंकि तब पृथ्वी सूर्य से काफी दूर चले जाने के कारण, उसके आसपास का पूरा परिदृश्य ही बदल गया था

शक्ति प्राप्त करने की इच्छा। ये पूरी तरह से अनदेखा किया गया कि, मनुष्य शांति से भी रह सकता है, और शांति की कमी ने ही पूर्व में इस प्रकार का विनाश किया था।

''अनेक शताब्दियों के लिए, विज्ञान का साम्राज्य बना रहा। पुजारी, वैज्ञनिकों की तरह से स्थापित हुए, और उन्होंने उन सभी वैज्ञानिकों को जो (साथ–साथ) पुजारी नहीं थे अवैध (कानून के बाहर) घोषित कर दिया। उन्होंने अपनी शक्ति बढ़ाई, उन्होंने विज्ञान की पूजा की, और उन्होंने वह सब कुछ किया जो शक्ति को अपने हाथों में बनाए रखने के लिए, और सामान्य आदमी को कुचलने के लिए, और उसको सोचने से वंचित करने के लिए, वे कर सकते थे। उन्होंने अपने आपको देवताओं के रूप में स्थापित किया; पुजारियों की अनुमति के बिना कोई कार्य नहीं किया जा सकता था। पुजारी जो भी करना चाहते थे, बिना किसी अवरोध के, बिना विरोध के, वे करते थे; और ये भूलते हुए कि, मनुष्यों को शक्ति की सम्पन्नता भ्रष्ट बना देती है, हर समय वे अपनी शक्तियों को बढ़ा रहे थे, जबतक कि, वे इस पृथ्वी पर सर्वशक्तिमान नहीं हो गए।

''बड़े–बड़े हवाई जहाज, बिना पंखों के, बिना ध्वनि के, हवा में उड़ते थे, हवा में खेए जाते हुए जैसे, अथवा ऐसे गतिहीन चलते हुए जैसे कि, पक्षी भी नहीं चल सकते। वैज्ञानिकों ने गुरुत्वाकर्षण पर स्वामित्व करने के रहस्य को खोज लिया था। आदमियों के द्वारा, किसी के भी द्वारा, पत्थर के बड़े–बड़े खण्ड, जहाँ आवश्यक हो, एक स्थान से दूसरे स्थान पर, हटाए जा सके थे और उनको एक अत्यंत छोटे उपकरण के द्वारा, जो एक हाथ की हथेली पर ही रखा जा सकता था, जैसा किसी के द्वारा चाहा जाए, वैसी स्थिति में रखा जा सकता था। कोई काम बहुत अधिक कठिन नहीं था, क्योंकि आदमी मशीनों को बिना किसी विशेष प्रयास के चला सकते थे। बड़े भारी इंजन, पृथ्वी की सतह के ऊपर शोर करते थे, कोलाहल करते थे, परंतु समुद्र की सतह से, आनंद के अलावा, कोई चीज नहीं चलती थी, क्योंकि, समुद्र से यात्रा करना बहुत धीमा था, सिवाय इसके कि, जो केवल आनंद के लिए, हवा के सहयोग के लिए, और तरंगों के साथ खिलवाड़ करना चाहते थे (केवल वे ही समुद्री यात्राऐं करते थे)। हर चीज हवा के द्वारा, और छोटी दूरियों के लिए पृथ्वी के ऊपर होकर, ले जाई जाती थी। लोग विभिन्न देशों में जाते रहते थे, और उन्होंने वहाँ उपनगर बसाए। परंतु, इस टक्कर के बाद, अब उनकी दूरानुभूति की क्षमता, खत्म हो चुकी थी। अब वे आपस में एक समान भाषा नहीं बोलते थे; बोलियाँ, उपबोलियाँ, और छोटी से और छोटी होती चलीं गईं। अंततः वे एक दूसरे से काफी अलग हो गईं, जो एक दूसरे के लिए समझने में भी कठिन थीं।

''संचार के पिछड़ जाने के कारण, एक दूसरे का दृष्टिकोण, एक दूसरे के समझने की क्षमता या सफलता, समाप्त हो गयी। जातियाँ आपस में झगड़ीं और युद्ध शुरू हुए। खतरनाक हथियार आविष्कृत किए गए। हर जगह पर युद्ध खड़े हो गए। आदमी और औरतें आहत होने लगे, और भयानक किरणें, जो उन्होंने पैदा कीं, मनुष्यजाति में कई तरह के बदलाव ला रहीं थीं। वर्ष गुजरते गए और संघर्ष अधिक तीव्र होता गया, और संहार अधिक भयानक। अपने शासकों के द्वारा पोषित, आविष्कारक हर जगह पर पनपे। और अधिक मारक उपकरणों के उत्पादन के लिए आपस में झगड़ने लगे। वैज्ञानिक हमला करने की, और अधिक भयानक युक्तियों के ऊपर, काम कर रहे थे। बीमारी उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं का उत्पादन किया गया, और ऊँचे उड़ने वाले हवाईजहाजों के द्वारा उनको दुश्मनों के ऊपर गिराया गया। बमों ने बहुत नुकसान किया, तोड़फोड़ की और महामारी ने मनुष्यों के बीच, जानवरों पर और पेड़पौधों पर तेजी से आक्रमण किया। पृथ्वी पर विनाश के लिए शुरूआत कर दी गई थी।

''बहुत दूर के जिले में जद्दोजहद से अलग, दूरदर्शी पुजारियों का एक समूह, जो शक्ति की खोज के इस प्रभाव से दूषित नहीं हुआ था, उसने सोने की पतली चादरों को लिया, और उनपर अपने समय के इतिहास को, खोद कर लिखा, उनपर आसमान के उस समय के सितारों, और जमीन का नक्शा खोदा, उनपर उन्होंने अपने विज्ञान के बहुत अधिक गहरे रहस्यों को खोदा, और उन खतरों के बारे में,

उन लोगों के प्रति, जो इस ज्ञान का दुरुपयोग करेंगे, गंभीर चेतावनी दी। वर्ष गुजरते गए, इनके बीच ये प्लेटें तैयार की गईं, और तब, वास्तविक हथियारों के प्रादर्श, औजार, किताबें, और सभी उपयोगी चीजें, उनको पत्थरों के बीच छिपा दिया गया और उनको विभिन्न स्थानों पर छिपा दिया गया ताकि, जो बाद में आऐं वे भूतकाल को जान सकें, और ऐसी आशा की गई थी कि, उनसे लाभ उठाऐं। क्योंकि पुजारी मानवता के पथ को जानते थे; जो होने वाला है उसे जानते थे, और जैसे भविष्यकथन किया गया था और आशा की गई थी, वैसा ही हुआ। एक नया औजार, हथियार बनाया गया था, और काम में लाकर देखा गया। एक जबरदस्त बादल समतापमंडल (stratosphere) में घुमड़ा, और पृथ्वी हिली, फिर से घूम गई, और अपने अक्ष पर नाचती हुई दिखाई दी। पानी की ऊँची–ऊँची दीवारें जमीन पर उठीं, और मनुष्यों की अनेक जातियों को निगल गईं। एकबार फिर, पहाड़ समुद्र के नीचे डूब गए, और दूसरे उनका स्थान लेने के लिए ऊपर उठे। कुछ आदमी, औरतें, और जानवर, जिनको इन पुजारियों के द्वारा पूर्वचेतावनी दे दी गई थी, कुछ तैरते हुए जहाजों में बचा लिए गए। उनको, जहरीले गैसों और जीवाणुओं से सीलबंद करके बचाया गया, जिन्होंने इस पृथ्वी पर विस्थापन किया। चूंकि जिस जमीन पर वे रहते थे, वह बहुत ऊँची उठ गई थी, अतः दूसरे आदमी और औरतें हवा में बहुत ऊँचे ले जाए गए; दूसरे, जो अधिक भाग्यशाली नहीं थे, नीचे ले जाए गए, शायद पानी के नीचे, क्योंकि शायद पहाड़ उनके सिर के नीचे थे।

''बाढ़, लपटों और मारक किरणों ने करोड़ों लोगों को मार दिया, और जमीन पर केवल बहुत थोड़े लोग बचे, जो इस दुर्घटना की अनिश्चितताओं के द्वारा, आपस में एक दूसरे से अलग–थलग थे। ये भयानक शोर और हलचल के कारण, इस दुर्घटना से आधे पागल हो गए थे, उनकी भावनाऐं हिल गईं थीं। कई वर्षों तक, वे गुफाओं और घने जंगलों में छिपे रहे। वे सभी सभ्यताओं को भूल गए, और वे, अपने आपको खालों से ढकते हुए और बेर–बूटियों के रस से, चिड़ियों को अपने हाथों में पकड़े हुए, मानवता के विकास के एकदम पहले दिनों में, अपनी जंगली अवस्थाओं में वापस चले गए।

अंत में, नई जातियाँ पैदा हुईं, और वे पृथ्वी के नए चेहरे के ऊपर घूमने लगीं। उनमें से कुछ जिसे अब मिस्र कहा जाता है, में बस गईं, दूसरी चीन में, परंतु उन्होंने, जो आनंददायक समुद्र की निचली सतहों में थी, जिनको अतिमानव जाति ने समर्थन दिया था, अचानक अपने आपको, तेजी के साथ ठंडे होते देशों में, चिरकालिक पहाड़ों के द्वारा अंगूठी की तरह पहने हुए, समुद्र से हजारों फुट ऊपर पाया। हजारों, इस कटु बिरली हवा में मर गए। कठोर तिब्बती देश के जिसे आजकल तिब्बत कहा जाता है, दूसरेलोग, जो बचे, वे आधुनिक सभ्यता के संस्थापक बने। ये वह स्थान था, जिसमें दूरदर्शी पुजारी अपनी पतली सोने की प्लेटों को लाए थे, रखे थे। उनपर अपने रहस्यों को खोदकर लिखा था। वे प्लेटें, और उनकी कला, और हस्तकला के तमाम नमूने, पर्वतों के बीच, गुफाओं में काफी गहरे छिपा कर रखे गए, जिससे कि, ये पुजारियों की बाद में आने वाली जातियों को प्राप्त हो सकें। दूसरे, बड़े शहर में छिपे हुए थे, जिसे आजकल, तिब्बत का चांगतांग उच्चदेश कहा जाता है।

''यद्यपि मानवजाति, अंधकार के युग में, अपनी प्रारंभ की खराब अवस्था में थी, तथापि, सभी सभ्यतायें नष्ट नहीं हुईं। परंतु दुनियाँ की सतह के ऊपर, कई अलग–थलग स्थान थे, जहाँ पर आदमी और औरतों के छोटे–छोटे समूह, उस ज्ञान को बनाए रखने के लिए, मानवीय प्रतिभा की जलती बुझती मशाल को जलाए रखने का संघर्ष करते रहे। एक छोटा समूह, जो शताब्दियों तक, जो बाद में आईं, अंधे होकर, विनाश के इस अंधकार को देख रहा था। अनेक धर्म पैदा हुए, सत्य, जो हो चुका था, और सभी समय तक तिब्बत में छिपी हुईं, गहरी गुफाओं में जो ज्ञान था, को जानने के अनेक प्रयास किए गए। उनकी प्रतीक्षा करते हुए, जो इन्हें पायेंगे दुबारा और इनका अर्थ निकाल सकेंगे, स्थाई, भ्रष्ट न हो सकने वाला इतिहास, नष्ट नहीं होने वाली, सोने की प्लेटों के ऊपर खोदा गया। धीमे–धीमे करके मनुष्य ने दुबारा, फिर से विकास किया। अज्ञान की चमक धीमी पड़ती गई। असभ्यता धीमे–धीमे,

अर्द्धसभ्यता की और बढ़ी। वास्तव में, यह एक प्रकार का विकास था। फिर से शहर बसाए गए, और मशीनें आकाश में उड़ीं। एक बार फिर, पर्वत कोई प्रतिबंध नहीं रहे, आदमी पूरे विश्व में घूमता फिरा, समुद्रों के आरपार, जमीन के ऊपर। पहले की तरह से, ज्ञान और शक्ति के बढ़ने के साथ–साथ, वे अधिक घमण्डी हो गए, और कमजोर लोगों को दबाने लगे। अशांति हुई, घृणा, उत्पीड़न, और गुप्त शोधकार्य। ताकतवर लोगों ने कमजोरों को दबाया। कमजोर लोगों ने मशीनों का विकास किया, और तब युद्ध हुए, दुबारा से युद्ध, जो बरसों तक चलते रहे। हमेशा, वहाँ नए और अधिक घातक हथियार बनते रहे, पैदा किए जाते रहे। हर पक्ष ने, अधिक से अधिक खतरनाक हथियारों को अपनी तरफ को पाना चाहा, और तिब्बत की गुफाओं में, हर समय ज्ञान पड़ा रहा। चांगतांग के उच्च देशों में, हर समय, एक महान शहर पृथक्कृत, बिना सुरक्षा किए, विश्व के सर्वोच्च अमूल्य ज्ञान को संजोए हुए पड़ा रहा, उन लोगों की प्रतीक्षा करते हुए, जो यहाँ आयेंगे और देखेंगे। प्रतीक्षा करते हुए, रखे हुए....''

बस पड़े रहना। एक जेल के अंदर, उस जमीनी प्रकोष्ठ के अंदर, लाल मेड़ (haze) के ऊपर देखते हुए, मैं अपनी पीठ पर लेटा हुआ था। मेरी नाक से, मुँह से, मेरी उंगलियों के सिरे से, और पैरों की उंगलियों से, खून गिर रहा था। मेरे पूरे शरीर में दर्द हो रहा था। मैं ऐसा महसूस कर रहा था मानो कि, मुझे आग की लपटों के टब में डाल दिया गया हो। मैंने एक जापानी आवाज को धीमे से कहते हुए सुना, ''इससमय, तुम बहुत आगे जा चुके हो। वह जिंदा नहीं रह सकता। शायद, वह जिन्दा नहीं रह सकता।'' परंतु मैं जिन्दा रहा। मैंने तय किया कि, मैं जिंदा रहूँगा, और जापानियों को दिखाऊँगा कि, तिब्बत के एक आदमी ने, अपने आपको, किस तरह संचालित किया। मैं उन्हें यह दिखाऊँगा कि, कितनी भी शैतानी यातनायें, एक तिब्बती को बोलने के लिए बाध्य नहीं कर सकतीं।

एक रायफल के बट के एक क्रोधपूर्ण धक्के से, मेरी नाक टूट गई थी; मेरे चेहरे के चारों तरफ कुचली गई थी। मेरा मुँह कटने पर गहरा घाव हो गया था, मेरे जबड़े की हड्डियॉ टूट गईं थीं, मेरे दांत टूटकर बाहर आ गए थे। परंतु, जापानियों की तमाम यातनायें भी, मुझे बोलने के लिए बाध्य नहीं कर सकीं। कुछ समय बाद उन्होंने फिर प्रयास किया, क्योंकि जब कोई आदमी, यदि वह बोलना नहीं चाहता, तो उसको बुलवाने के प्रयास की व्यर्थता को, जापानी भी जानते थे, महसूस करते थे। कई हफ्तों बाद, मुझे दूसरी लाशों के साथ काम करने के लिए, जो बच नहीं सके थे, काम पर लगा दिया गया। जापानियों ने सोचा कि, ऐसा काम दिए जाने से, वे अंत में, मेरी भावनाओं को तोड़ देंगे और शायद मैं बात करूँगा। सूरज की धूप में, लाशों को ढेर के रूप में जमाना, बदबूदार और बदरंग, फूली हुई लाशें जमाना, कोई आनंददायक कार्य नहीं था। लाशें फूल जातीं, सुई चुभाए हुए गुब्बारों की तरह से फूटतीं। एक दिन, मैंने एक आदमी को मर कर गिरते हुए देखा। मैं जानता था कि, वह मरा क्योंकि, मैंने खुद उसकी जाँच की, लेकिन सुरक्षाकर्मियों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया; उसे अभी दो आदमियों द्वारा उठाकर लाया गया था, और झुलाकर लाशों के ढेर के ऊपर उछाल दिया गया था, और छोड़ दिया गया, ताकि तेज धूप, और चूहे, कूड़े में अपनी उपयोगी चीजों को ढूंढ़ते हुए, अपना काम कर सकें। परंतु, ये कोई अर्थ नहीं रखता था कि, कोई व्यक्ति मरा है या नहीं, क्योंकि, यदि कोई आदमी काम करने के लिए इतना बीमार है कि, वह काम कर ही नहीं सकता तब, या तो उसे उसी समय बोनट से कुचल दिया जाता, अथवा लाशों के ढेर के ऊपर उछाल कर फेंक दिया जाता, अथवा जब वह जिन्दा होता, तब भी उसे उछाल कर फेंक दिया जाता।

मैंने तय किया कि, मैं भी ''मरूँगा,'' और दूसरी लाशों के साथ वहीं रखा जाऊँगा। अंधेरे के समय में, मैं भाग जाऊँगा। इसलिए, मैंने अपनी कुछ योजनायें बनाईं, और अगले तीन–चार दिनों तक, मैंने सावधानीपूर्वक जापानियों की, और उनकी गतिविधियों की, निगरानी की, और तय किया कि, मैं किस प्रकार कार्य करूँगा। इसलिए, एकाध दिन मैं विचलित हुआ, और ऐसा नाटक किया, मानो कि मैं वास्तविक से कुछ ज्यादा, अधिक कमजोर, हूँ और उस दिन, जब मैंने मरने की योजना बनाई, मैं जैसे

चला, मैंने ऐसे संदेह में डाला, संदेह के साथ, मैं भोर की पहली किरण के साथ हाजिरी के लिये उपस्थित हुआ। पूरी सुबह तक, मैंने अपनी अक्षमता के प्रत्येक चिन्ह को प्रदर्शित किया, और तब ठीक दोपहर बाद, मैंने अपने आपको मर जाने दिया। ये बहुत कठिन नहीं था, न ही वास्तव में नाटक था, मैं किसी भी समय, (जीवन के) किन्ही चिन्हों के बिना, मर सकता था। यातनायें, जिनमें से मैं गुजरा, मुझे काफी हद तक कमजोर कर चुकी थीं। बेचारा भोजन, जो मुझे मिलता था, उसने मुझे और कमजोर बना दिया था, और मैं वास्तव में मरने की स्थिति तक, थक गया था। इस समय मैं मरा, और वास्तव में, थकान के माध्यम से, गहरी नींद में चला गया। मैंने अपने शरीर को कठोरता से उठाते हुए, झुलाते हुए, और उछालकर फेंकते हुए, महसूस किया। जब मैं लाशों के ढेर के ऊपर आकर गिरा, तो उस झटके ने मुझे जगा दिया। मैंने महसूस किया कि, वह ढेर हलका सा हिला और फिर स्थिर हो गया। उस गिरने के झटके ने मेरी आँखे खोल दीं; एक संतरी आधे मन से मेरी दिशा में देख रहा था, इसलिए मैंने अपनी ऑखे और ज्यादा खोलीं, जैसे कि, मरे हुए आदमी की ऑखे फैल जाती हैं, और उसने, दूर की तरफ देखा। वह लाशों को देखने का अभ्यस्त हो गया था, और एक अधिक अगली लाश में, उसकी कोई रूचि नहीं थी। दुबारा भूतकाल के ऊपर विचार करते हुए, और भविष्य की योजना बनाते हुए, मैं एकदम शांत रहा, वास्तव में बहुत शांत। मैं दूसरी लाशों के बदले में, जो मेरे आसपास, मेरे ऊपर फेंकी गईं थीं, शांत रहा।

दिन, बर्षों की तरह गुजरता हुआ लगा। मैंने सोचा कि, रोशनी कभी खत्म नहीं होगी। परंतु, बहुत लंबे समय के बाद ये हुई, रात के पहले चिन्ह आने लगे, मेरे आसपास, पुरानी मरी हुई लाशों की की दुर्गंध, लगभग, असहनीय थी। मैं अपने नीचे, चूहों की, उनके लाशों को खाने के कठोर कामों से आती हुई, चिंचिआहट और आवाजें सुन सकता था। यदाकदा, हर बारंबारता से, ढेर नीचे डूबता, दूसरी ऊपर वाली लाशों के वजन के कारण, तली में से एक लाश दब जाती। ढेर नीचे डूबता और हिलता, और मैंने आशा की कि, मैं ऊपर से नीचे लुढ़क नहीं जाऊँगा, जैसा अक्सर होता था, क्योंकि, उस हालत में लाशों का ढेर दुबारा लगाना पड़ेगा, और कौन जानता है कि, इसबार मैं जीवित पाया जाऊँ, या और भी खराब स्थिति में, मैं ढेर में सबसे नीचे तले में पहुँच जाऊँ, तब मेरी प्रतिज्ञा निराशा सहित हो जाएगी।

अंत में मेरे आसपास काम करते हुए कैदी, अपनी–अपनी झोपड़ियों में गए। संतरियों ने दीवार की गश्त करना जारी रखा, और तबतक, रात की हवा की ठंड, एकदम शुरू हो चुकी थी। धीमे से ओह, इतना धीमे से, प्रकाश धीमे–धीमे हलका पड़ने लगा। संतरियों के कमरों में, एक–एक करके, खिड़कियों में पीली रोशनियाँ दिखाई दीं। इतना धीमे से, जिसे कि समझा नहीं जा सकता था, एक रात आई। लम्बे समय के लिए, मैं अभी भी, उस बदबूदार बिस्तर में, लाशों के बीच, शांत पड़ा रहा। शांत रूप से, ध्यान रखते हुए, जितना अच्छी तरह से मैं कर सकता था। और तब, जबकि सुरक्षाकर्मी अपने दायरे के दूसरे सिरे पर थे, तमाम लाशें मेरे ऊपर रहते हुए, एक लाश के बगल से, मैं धीमे से बगल को खिसका, और दूसरी को मैंने दूसरी बगल में खिसका दिया। वह लुढ़की, और ढेर के एक और गिर गई, और एक आवाज के साथ जमीन पर गिर गई। मैंने निराशा के साथ, अपनी सांस रोकी; मैंने सोचा कि, अब निश्चितरूप से संतरी दौड़ते हुए आयेंगे, और मैं मिल जाऊँगा। इस समय में, अंधेरे में बाहर की ओर निकलना, वास्तव में, मौत ही थी, क्योंकि खोजबत्तियॉ (search lights) जला दी जायेंगी, और कोई भी दुर्भाग्यशाली, जो जापानियों द्वारा पकड़ लिया जाएगा, बोनटों से कोंच–कोंच कर मार दिया जाएगा या शायद उसकी आँते निकाल ली जाऐंगीं, और उसे मंदी आग के ऊपर लटका दिया जाएगा, और कोई भी शैतानी मौत, जो जापानियों की चतुरता, युक्तिपूर्वक निकाल सके, और ये सब उन बीमार कैदियों के समूह के सामने, उन्हें ये जताने के लिए कि, स्वर्ग के पुत्रों से भागने की कोशिश न करें, किया जाएगा।

कुछ नहीं हिला। स्पष्टरूप से, ढेर पर से लाशों के गिरने, और उनके चटकने की आवाजों से, जापानी इतने अधिक अभ्यस्त हो चुके थे। प्रयोग के रूप में, मैं हिला। लाशों का पूरा ढेर चिल्लाया, तड़का और हिला। मैं एकसमय में एक फुट चला, और अंत में, रेंगकर, ढेर के एक सिरे तक पहुँच गया, और लाशों को पकड़ते हुए, अपने आपको नीचे गिरा दिया, ताकि मैं, दस या बारह फुट की ऊँचाई से कूद सकूँ, क्योंकि मैं कूदने के लिए काफी कमजोर था, और मोच आने की अथवा हड्डियों के टूट जाने की जोखिम थी। हलकी सी आवाज हुई, जो मैंने की, वह उनके ध्यान को आकर्षित नहीं कर सकी। जापानियों को बिलकुल भी ये विचार नहीं था कि, कोई इस घिनौने स्थान में छिपा हुआ हो सकता है। मैं जमीन पर छिपता हुआ, और धीमे–धीमे पेड़ों की छाया में, बंदी शिविर की दीवार के पास पहुँचा। कुछ समय के लिए मैंने प्रतीक्षा की। साथ–साथ, संतरी मेरे सिर के ऊपर आ गए। कुछ हलकी सी बातें हुई, और आग से एक सिगरेट जलाई गई। तब संतरी चले गए, उनमें से एक दीवार के काफी दूर गया, और दूसरा नीचे, हरेक की मुठ्ठी में सिगरेट छिपी हुई; उनमें से प्रत्येक, उस अंधेरे में माचिस की चमक से, कमोवेश कुछ समय के लिए अंधा हुआ। मैंने इसका फायदा उठाया। धीमे से, और शांति से, मैं दीवार के ऊपर चढ़ गया। ये वह शिविर था, जिसे अस्थाईरूप से बनाया गया था, और जापानियों ने चारदीवारियों के ऊपर बिजली की व्यवस्था नहीं कर पाई थी। मैं ऊपर चढ़ गया, और आलस्य के साथ अपना रास्ता अंधेरे में बनाया। पूरी रात, लगभग शिविर की नजर में रहते हुए, मैं एक पेड़ की शाखा के नीचे लेटा रहा। मैंने सोचा कि, यदि में चूक दिया जाऊँ, यदि मैं देख भी लिया जाऊँ, तो जापानी दौड़ेंगे और वे ये नहीं सोचेंगे कि, कोई जापानी बंदी उनके इतना करीब में भी हो सकता है।

और अधिक चलने से परेशान, अगले पूरे दिन, मैं जहाँ था, वहीं रुका रहा। तब दिन की समाप्ति पर, जब अंधेरा दुबारा, फिर से, घिर आया, मैं पेड़ के तने के समीप आया और मैंने जमीन पर से, जिसे मैं अच्छी तरह जानता था, अपना चलना शुरू किया।

मैं जानता था कि, एक बूढ़ा आदमी, एक बूढ़ा चीनी वहीं कहीं पड़ौस में रहता था। मरने से पहले, मैंने उसकी पत्नी की और उसकी काफी मदद की थी, और अंधेरे में मैंने उसके घर की ओर रुख किया। मैंने उसके दरवाजे पर धीमे से दस्तक दी। भय की, तनाव की एक हवा वहॉ थी। अंत में मैं फुसफुसाया कि, मैं कौन था। अंदर आलस्यपूर्ण हलचलें हुई और तब धीमे से दरवाजा चुपचाप, कुछ इंच खोला गया, और बूढ़े आदमी ने झॉक कर बाहर देखा। ''या,'' उसने कहा, ''जल्दी अंदर आओ।'' उसने दरवाजा और अधिक खोला, और मैं उसकी फैली हुई बाहों के साथ, रेंगकर अंदर गया। उसने दरवाजा बंद कर दिया, और एक हल्की सी आतंक भरी निगाह के साथ उसने मुझे देखा। मेरी वायीं आँख, बुरी तरह खराब हो गई थी। मेरी नाक, चेहरे पर फैल कर सपाट हो गई थी। मेरा मुँह कट गया था और कुचल गया था और सिरे नीचे की ओर झुक गए थे। उसने पानी गर्म किया; और मेरे घावों को धोया, और मुझे खाना दिया। उस रात और अगले दिन, मैंने उसकी झोपड़ी में आराम किया, वह बाहर गया, और इस बात की व्यवस्था की कि, मैं चीनी पंक्तियों (lines) की ओर ले जाया जाऊँ। कई दिन तक मुझे उस जापानी झोंपड़ी में, जापानी अधिकृत क्षेत्र में, वहाँ रहना पड़ा। कई दिनों तक, मुझे बुखार रहा और जहाँ मैं लगभग मर गया।

लगभग दस दिन के बाद, मैं पर्याप्तरूप से खड़ा होने के लायक, चलने के लायक और अपने सोचे–विचारे हुए रास्ते से शंघाई के चीनी मुख्यालय की तरफ चलने के लिए, स्वस्थ हो गया था। उन्होंने भय के साथ मेरी तरफ, मेरे भुरते बने हुए और विकृत चेहरे को देखा, और एक महीने से अधिक समय के लिए मैं अस्पताल में रहा। जबकि, उन्होंने मेरी टॉग में से एक हड्डी, मेरी नाक को दुबारा बनाने के लिए ली। तब मुझे चुंगकिंग के लिए, ठीक होने के लिए, संभलने के लिए, चीनी चिकित्सा सेना में सक्रिय चिकित्सा अधिकारी के रूप में वापसी पर, वापस भेज दिया गया। चुंगकिंग! मैंने सोचा, उन सारे कार्यों से जिनसे मैं गुजर चुका था, सभी साहसी कार्यों को करने के बाद, मुझे ये देखकर

प्रसन्नता होगी। चुंगकिंग, इसलिए मैंने अपने दोस्त के साथ, जो इस युद्ध में पैदा हुई बीमारी से इलाज कराने के लिए, खुद भी वहाँ जा रहा था, यात्रा शुरू की।

अध्याय नौ

जापानियों का बन्दी

हम चुंगकिंग में आये अंतर (difference) के ऊपर आश्चर्यचकित थे। अब यह वह चुंगकिंग नहीं था, जिसे हम जानते थे। नई इमारतें, पुरानी इमारतों के नये चेहरे – हर जगह, सभी प्रकार की दुकानें उग आयीं थीं। चूंगकिंग! स्थान नितान्त भीड़ भरा था! लोग शंघाई से, सभी समुद्रतटीय नगरों से उमड़ पड़े थे। व्यापारी, जिनका जीवनयापन समुद्रतट पर छूट गया था, शायद, कुछ दयापूर्ण अवशेषों, जिनको उन्होंने, जापानियों द्वारा पकड़े जाने से बचा लिया था, के साथ, दोबारा से, फिर से शुरूआत करने के लिये, देहात में काफी अंदर चुंगकिंग तक आ गये थे, परन्तु अधिकांशतः उन्होंने लगभग शून्य से प्रारंभ किया।

विश्वविद्यालयों ने चूंगकिंग में इमारतें पा लीं थीं अथवा उन्होंने अपनी निजी अस्थाई इमारतें बना ली थीं, जिनमें से अधिकांश जर्जर अस्थायी झोंपड़े अथवा सायबान (sheds) थे। परन्तु ये चीन की सभ्यता का पीठ था। ये कोई मतलब नहीं रखता कि इमारतें कैसी थीं, सम्पूर्ण विश्व की सर्वोत्तम प्रतिभाओं में से कुछ प्रतिभाऐं वहॉ थीं।

हमने अपना रास्ता मंदिर की ओर, जिसमें हम पहले रुक चुके थे लिया; ये घर आने जैसा था। यहॉ, मंदिर की शांति में, अपने सिरों के ऊपर सुगंधियों के बादल उड़ते हुये, हमने महसूस किया कि हम शांति में आ गये हैं, हमने महसूस किया कि, पवित्र आकृतियॉ, हमारे प्रयासों के समर्थन में, आशीर्वादसहित, हमारी ओर टकटकी लगा कर देख रहीं थीं, और शायद उस व्यवहार के ऊपर, जो हमें दिया गया, जिससे हम गुजरे थे, थोड़ी सहानुभूतिपूर्ण थीं। हॉ, खूंख्वार दुनियॉं में बाहर जाने से पहले, अपने घावों से उबरते हुये, ताजी पीड़ा और सबसे खराब मुसीबतें झेलने के लिये प्रस्तुत, हम घर में शांति में थे। मंदिर की घण्टियॉ बजी, तुरइयॉं बजाईं गईं। ये दुबारा, फिर से, सुपरिचित, अत्यंत प्रिय प्रार्थना का समय था। हमने वापिसी पर, पूरे आनंद के साथ, दिल से, अपने स्थानों को ग्रहण किया।

उस रात, आराम करने के लिये, हम थोड़े बिलम्बित से हो गये क्योंकि बातचीत के लिये इतना ज्यादा था, बताने के लिये इतना ज्यादा था, वैसे ही इतना ज्यादा सुनने को भी था, क्योंकि चुंगकिंग ने बम गिरते हुये कठिन समय को देखा था, परन्तु हम ''महान विदेश'' से थे, जैसा वे मंदिर में इसको कहते भी थे, और हमारे गले सूखे थे। इससे पहले कि, हमको मंदिर की सीमा में, जमीन के ऊपर, अपने–अपने कम्बलों में घुस जाने के लिये, जाने दिया जाये और अपने पुराने सुपरिचित स्थान पर सोने दिया जाये, अंत में, नींद ने हमें अपने आगोश में ले लिया।

सुबह मुझे अस्पताल जाना था, जिसमें मैं, पहिले निवासी शल्यचिकित्सक के रूप में, और बाद में चिकित्सीय अधिकारी के रूप में, विद्यार्थी रहा चुका था। इसबार मैं, एक मरीज के रूप में जाने वाला था। इस अस्पताल का मरीज होना, वास्तव में, एक अच्छा अनुभव था। मेरी नाक, हॉंलाकि, कष्ट दे रही थी; ये विषाक्त हो गई थी, इसलिये इसे खोलकर मिटा देना ही, इसका एकमात्र इलाज था। ये एक बहुत कष्टदायक विधि थी। हमारे पास कोई निश्चेतक नहीं थे। बुलमान रोड को बंद कर दिया था, हमारे सभी प्रदाय (supplies) बंद कर दिये गये थे, इसके सिवाय, जो मैं कर सकता था, उसे आनंदपूर्वक झेलने, और जिसको छोड़ा भी नहीं जा सकता था, कुछ भी नहीं था। परन्तु जैसे ही ऑपरेशन पूरा हुआ, मैं मंदिर को वापिस लौटा, क्योंकि चुंगकिंग के अस्पताल में पलंग बहुत कम थे। घायल लगातार आते जा रहे थे और केवल अत्यन्त आवश्यक मामलों में ही, केवल उनको ही, जो बिल्कुल चल नहीं सकते थे, अस्पताल में रहने दिये जा रहा था। दिन के बाद दिन, मैंने ऊॅची सड़क पर, छोटे रास्ते के साथ, नीचे की तरफ को, अपनी चुंगकिंग की यात्रा की। काफी अंत में, दो या तीन हफ्ते बाद, शल्यचिकित्सा विभाग के डीन ने मुझे अपने कार्यालय में बुलाया और कहा, ''ठीक है

लोबसांग, मेरे मित्र, हमें कुल मिलाकर तुम्हारे लिये बत्तीस कुली नहीं लगाने पड़ेंगे। हमने सोचा कि हमें कुछ करना चाहिये, तुम जानते हो, ये ''छुओ और जाओ जैसा है।''

वास्तव में, चीन में शवयात्राओं को बहुत गंभीरता से लिया जाता है। निश्चितरूप से, शववाहकों की उचित संख्या, किसी के सामाजिक ओहदे के साथ, विचारणीय थी। मुझे ये मूर्खतापूर्ण लगता था, क्योंकि मैं अच्छीतरह जानता था कि, जब आत्मा ने शरीर को छोड़ ही दिया तब ये कोई अर्थ नहीं रखता कि, उसके शरीर का क्या होगा। हम तिब्बत के लोग, अपने छोड़े हुये शरीरों के बारे में कोई व्यर्थ झमेला नहीं करते थे; हम उन्हें लाश तोडने वाले को दे देते थे, जो उसे तोड़ते थे और उनके टुकड़ों को पक्षियों को खिला देते थे। चीन में ऐसा नहीं था। यहॉ ये लगभग किसी की पारलौकिक पीड़ा की निंदा करने जैसा था। यहॉ, यदि ये प्रथम श्रेणी की शवयात्रा होती तो, उस के कफन को बत्तीस कुलियों के द्वारा भेजा जाना था। यद्यपि, द्वितीय श्रेणी की शवयात्रा में शव वाहकों के संख्या, ठीक आधी, यानी सोलह रहनी थी, मानोकि सोलह आदमी शव को ले जाने वाले थे; तृतीय श्रेणी की शवयात्रा में – लगभग औसत आठ कुली, पॉलिश किये हुये लकड़ी के कफन को ढोते थे, परन्तु चतुर्थ श्रेणी के लिये, जो केवल सामान्य श्रमिकवर्ग के लोग थे, चार कुली होते थे। वास्तव में, यहॉ कफन एक हल्का मामला होता था, एकदम सस्ता। चतुर्थ श्रेणी से नीचे, ढोने के लिये कोई कुली नहीं होता था। कफनों को किसी सुविधाजनक वाहन के द्वारा, भारी कदमों से ले जाया जाता था और वास्तव में, इसमें कुलियों के ऊपर विचार नहीं किया जाता था; शोकसंदेश व्यक्त करने के लिये, औपचारिक संवेदक होते थे, जो रोते थे और ऊॅची आवाज में विलाप करते थें और मुर्दों की सेवा करना और ढोना, उनका पूरे जीवन यही काम था।

शव यात्रा? मृत्यु? ये आश्चर्यजनक है कि किसी के दिमाग में कितने खराब घटनाऐं रह सकती है; इनमें से एक विशेष हमेशा के लिये मेरे दिमाग में थी। ये चुंगकिंग के पास घटी। इसे यहॉ जोड़ना, युद्ध का – और मृत्यु का, थोड़ा चित्रण करने के लिये, कुछ दिलचस्प हो सकता है।

ये बसंत के अन्त के त्यौहार का एक मध्य दिन था ''ऑठवें महीने का पन्द्रहॅवा दिन'' जब कि पतझड़ का चन्द्रमॉ पूरा था। चीन में ये समृद्धि का अवसर माना जाता है। ये वह समय होता है जिसमें दिन के अंत में एक सामूहिकभोज के लिये परिवार साथ–साथ आने की कोशिस करते हैं। इसे मानने के लिये ''चन्द्रकेक'' खाए जाते हैं फसल के लिये चन्द्रमॉ के लिये; ये एक त्याग के रूप में, इसके संकेत के रूप में, इस आशा के साथ कि अगला साल इससे अधिक खुशहाल होगा, खाए जाते हैं।

मेरा मित्र, चीनी भिक्षु हुऑग, भी मंदिर में रुका हुआ था। वह भी घायल हो गया था और इस विशेष दिन हम च्याओटिंग (Chiaoting) गॉव से चुंगकिंग की तरफ चल रहे थे। गाँव एक उपनगर है जो यांगस्ते के बगल से, खतरनाक ऊॅचाइयों पर स्थित है। यहॉ धनीमानी लोग रहते हैं, जो सर्वोत्तम को पाने की सामर्थ्य रखते हैं। जैसे–जैसे हम निचली जमीन पर पेड़ों के बीच, कहीं–कहीं बचे खालीस्थान में से होकर चले, हम नदी को, और उसके ऊपर नावों को भी, देख सकते थे। समीप ही नीचे सीढ़ीनुमा उद्यानों में, नीले कपड़े पहने हुये आदमी और औरतें, झुके हुए काम कर रहे थे, और निराई के लिये कुदालें चला रहे थे। सुबह सुन्दर था। ये गर्म और धूप भरा था; एक विशेषप्रकार का दिन, जबकि हर चीज चमकदार और आनन्दमयी लगती है। हम, बहुधा रुकते हुये और दृश्यों की प्रशंसा करते हुये और उन पेड़ों के बीच से निकलते हुये, टहलते रहे, युद्ध के विचार हमारे दिमागों से दूर निकल गये थे। हमारे समीप ही, एक पास के झुण्ड में, एक चिड़िया, दिन का स्वागत करते हुये गा रही थी। हम चलते रहे और पहाड़ी से टकराये। ''एक मिनट के लिये रुको लोबसांग। मैं हॉफ रहा हूॅ'' हुऑग ने कहा। इसलिये हम पेड़ों की छॉव में, एक बड़े पत्थर के ऊपर बैठ गये। यहाँ पानी के पार, मॉस (moss) से ढका हुआ रास्ता, जो पहाड़ी के नीचे जाता था, और परतों में, चित्तीदार रंगों में, जमीन में से झॉकते हुये, बसंत के छोटे फूल, आनंददायक, सुन्दर, मनोहर दृश्य था। पेड़ भी मुड़ना और

अपना रंग बदलना शुरू कर रहे थे। हमारे ऊपर बादल की छोटी चकतियॉ, आकाश के ऊपर अलसा कर धीमे–धीमे चल रहीं थीं। कुछ दूरी पर हमने, समीप आती हुई लोगों की एक भीड़ को देखा। हल्की हवा के ऊपर, आवाजों की नोंकझोंक। ''हमें खुद को छिपा लेना चाहिये, लोबसांग। ये बूढ़े सांग की, रेशम के व्यापारी की, शवयात्रा है। एक प्रथमश्रेणी की शवयात्रा। मुझे इसमें शामिल होना चाहिये था, परन्तु मैनें कहा कि, मैं बहुत बीमार था, और मेरी नाक कट जायेगी यदि, उन्होंने मुझे यहॉ देखा।'' हुआँग अपने पैरों पर खड़ा हुआ, और मैं भी पत्थरों से उठ खड़ा हुआ। हम दोनों साथ–साथ जंगल में अन्दर गये, जहाँ से हम तो देख सकते थे, परन्तु हमें नहीं देखा जा सकता था। वहॉ एक चट्टानी कगार थी और हम इसके पीछे लेट गये, हुआंग मेरे थोड़ा पीछे, ताकि मैं भले दिख जाऊँ, परन्तु वह नहीं दिख सके। हमने स्वयं को आराम में किया, अपनी पोशाकें उतारकर अपने पास रखीं। पोशाकें जो बसंत के पतझड़ के लाल रंग के साथ मिल गईं।

धीमे–धीमे शवयात्रा समीप आई, चीनीभिक्षु, उनके अपने जंगी–लाल (rust red) दुपट्टे के साथ जो उनके कंधों पर पड़ा था, पीले रेशमी लिवास में थे। बसंत का पीला सूर्य, उनके ताजे गंजे सिरों के ऊपर, दीक्षा के चिन्हों को दिखाते हुए, चमक रहा था, सूर्य चांदी की घंटियों के बीच चमक रहा था, जो वह अपने हाथों में लिये हुये थे। चमक, और चमकते हुये वह लोग, झूल रहे थे। भिक्षु, शवयात्रा की प्रार्थना के छोटे मंत्रों को गा रहे थे, वे चीनी लाख से पुते हुये कफन के आगे चल रहे थे, जो बत्तीस कुलियों द्वारा ढोया जा रहा था। नौकर घड़ियालों को पीट रहे थे और बचे हुये लोग, किन्हीं झॉकते हुये व्यक्तियों को भगाने के लिये, आतिशबाजियों को चला रहे थे, क्योंकि चीनी मान्यताओं के अनुसार, अब मरे हुये की आत्मा को पकड़ने के लिये, दैत्य, एकदम तैयार थे, और उनको पटाखों आतिशबाजियों और शोर के द्वारा डराया जाना आवश्यक था। शोक व्यक्त करने वाले, अपने सिर पर लपेटे हुए दुःख के सफेद कपड़ों में, उनके पीछे चल रहे थे। एक औरत, जिसका प्रसवकाल बहुत ही समीप था और स्पष्ट रूप से वह नजदीकी रिश्तेदार थी, ज्योंही दूसरे लोगों ने मदद करनी चाही, बुरी तरह रो रही थी। व्यावसायिक शोक मानने वाले, जोर से चीख कर, ऊॅची आवाज में रो रहे थे और उन सबको जो सुनें, गुजरी हुई आत्मा के मूल्यों को सुना रहे थे। उसके बाद, कागजीमुद्रा को, और उन सब चीजों को, जो मृतक के अपने जीवन में उसके पास थीं, तथा वे सब, जिनकी उसको अगले जीवन में आवश्यकता होगी, उन सबके कागजी नमूने, लिये हुए, नौकर आये। यहॉ से, चट्टान के किनारों से छिपे रहकर और काफी बड़े पेड़ों की झाड़ियों के बीच में से हमने देखा। हम सुगंधियों और कुचले हुए ताजी फूलों, वे जो शवयात्रा में चलते हुये पैरों के द्वारा कुचले जा रहे थे, से बन गये इत्रों की गंध को सूंघ सकते थे। वास्तव में, ये बहुत ही बड़ी शवयात्रा थी। सांग, रेशम का व्यापारी, प्रमुख व्यापारियों में से एक रहा होगा, क्योंकि उसकी सम्पत्ति अथाह थी।

ऊँची–ऊँची चीख पुकारों के साथ, मंजीरों की झनझनाहट के साथ, और उपकरणों के शोरगुल और घंटियों के बजने की आवाज के बीच, दल धीमे–धीमे, हमारे समीप आया। अचानक ही धूप में छाया उत्पन्न हुई और इस शोकयात्रा के बीच, हमने उच्चशक्ति वाले हवाई इंजनों की दहाड़ सुनी, दहाड़ ऊँची होती गई और अधिक ऊँची होती गई और अधिक से अधिकतर, अनिष्टसूचक थी। पेड़ों के ऊपर, सूर्य और हमारे बीच में, अपराधी जैसे दिखने वाले, तीन जापानी जहाज, हमारी निगाह में आये। उन्होंने गोल चक्कर लगाये। एक ने, अपने आप को अलग कर लिया और नीचे आया, और ठीक शवयात्रा के ऊपर से होकर गुजरा। हम परेशान नहीं हुये। हमने सोचा था कि, जापानी भी शायद मृत्यु की गरिमा को सम्मान देते होंगे। जैसे ही यह जहाज, वापिस घूमते हुये दूसरे दो के साथ में सम्मिलित हो गया, हमारे दिल धड़क उठे; और वे जहाज साथ–साथ, दूर चले गये। हमारा आनंद केवल थोड़े ही समय तक रहा; जहाजों ने चक्कर लगाये, और फिर हमारी तरफ आये। उनके पंखों के नीचे से, छोटे–छोटे कालेधब्बों जैसे, चीखते हुये बम, जैसे–जैसे नीचे गिरे, और बड़े होते गये, और बड़े होते गये, नीचे

जमीन पर, सीधे शवयात्रा के ऊपर गिरे।

हमारे सामने के पेड़ हिले और नाचे, पूरी पृथ्वी इस गड़बड़ में दिखाई दी, उचटती हुई गिट्टियॉ चीख के साथ उठीं, हम इतना समीप में थे, परन्तु फिर भी हमने विस्फोट को नहीं सुना। धुंआ और धूल, और टूटे हुये साइप्रस के पेड़, हवा में थे। बीमार जैसे गोलियों की आवाज करते हुये, रास्ते की हर चीज पर पड़ने वाले, लाल ढेले चूर–चूर हो गये थे। एक क्षण के लिये, सबकुछ काले और पीले धुंऐ के बीच छिप गया। तब, उसके बाद, ये हवा के द्वारा झाड़ू लगाकर साफ कर दिया गया, और हम, इस भयानक नरसंहार को देखने के लिये, और उसका मुकाबला देखने के लिये, बचे रह गये।

जमीन पर कफन काफी दूर तक बिखर गया और खाली हो गया। बेचारी लाश, जो उसके अन्दर थी, एक बिखरी हुई, त्यागी हुई, टूटी हुई गुड़िया की तरह से, चारों तरफ बिखेर दी गई। इस विनाश के द्वारा, विस्फोट की हिंसा के द्वारा, कांपते और आधे भोंचक्के हुए, और इतने नजदीक होने के बावजूद बच जाने के बाद, हमने अपने आप को उठाया। हम खड़े हुए और अपने पीछे के पेड़ों से हमने एक लम्बी धातु की छड़ी ली, जिससे मैं बाल–बाल बच गया था, चूंकि इसने मेरे सिर के ऊपर घूमते हुये चक्कर लगाये थे। इसका नुकीला सिरा खून गिरा रहा था, और ये गरम थी, इतनी गरम कि मैं एक दुखभरी एक आह के साथ गिर गया। मैंने अफसोस के साथ, अपनी उंगली के झुलसे हुये पोरों को देखा।

उखड़े हुये पेड़ों के ऊपर, खून से सने, मांस के साथ चिपके हुये, कपड़ों के टुकड़े, हवा में हिल रहे थे। अपने कंधे के साथ पूरी एक भुजा, फटी हुयी शाखा के साथ, लगभग पचास फुट दूर अभी भी, हिल रही थी। ये डगमगायी, फिसली, एक क्षण के लिये दुबारा, निचली शाखा पर अटक गयी और तब अंत में, बीमार सी जमीन के ऊपर गिर गयी। कहीं से, एक लाल विकृत सिर, मुस्कान, आश्चर्य और भय के साथ, टूटे हुए पेड़ों की शाखाओं के बीच में से होकर गिरा और लुढ़क कर मेरी ओर आया, और अंत में मेरे पैरों में गिर कर रुका, मानोकि, ये उन जापानी आक्रामकों की अमानवीयता पर, आश्चर्य से, मेरी ओर टकटकी लगाकर देख रहा हो।

ये एक क्षण ही प्रतीत हुआ, जबकि समय स्वयं में भी, भय के कारण रूका हुआ प्रतीत हुआ। हवा में उच्चस्तरीय विस्फोटकों की गंध, और खून के साथ फटी हुयी ऑतों की दुर्गंध आयी। वहॉ मात्र, अकथनीय चीजें आकाश से अथवा पेड़ों से गिरने की, सरसराने की, और झपाक की ही आवाजें थीं। हम, इस आशा में कि, किसी की सहायता की जा सकती है, ये निश्चित करते हुये कि, वहॉ कुछ लोग इस दुखांत घटना से बच गये होंगे, टूटी–फूटी चीजों की ओर, तेजी से आगे बढ़े। वहॉ एक कटी–फटी लाश थी, जिसकी ऑतें निकली हुई थीं; इतनी कटीफटी, इतनी अस्तव्यस्त कि हम ये नहीं कह सकते थे कि, यह आदमी था या औरत; इतनी कटीफटी कि हम ये मुश्किल से कह सके कि यह एक मानव था। इसके पास, इसके दूसरी तरफ, एक छोटा लड़का था, जिसकी टॉगें जांघ पर से उड़ गयीं थीं। वह डर के मारे रिरिया रहा था। जैसे ही मैंने उसके बगल से घुटने टेके, उसमें से खून की एक धारा फूट पड़ी, और उसका जीवन एक खॉसी के साथ ही समाप्त हो गया। दुख के साथ, हमने ने सब देखा और अपने तलाश के क्षेत्र को और अधिक विस्तृत कर दिया। एक गिरे हुये पेड़ के नीचे, हमने एक गर्भवती महिला को पाया। पेड़, उसके अन्दर घुस गया था, उसने, उसके पेट को फाड़ दिया था। गर्भाशय में से, उसका अजन्मा बच्चा, मर करके बाहर निकल आया था। इसके आगे, एक कटा हुआ हाथ था, जो अभी भी, एक चॉदी की घण्टी को कस के पकड़े हुए था। हमने तलाश की, और तलाश की, परन्तु कोई जीवन नहीं मिला।

आकाश से हवाईजहाजों के इंजनों की आवाज आई। आक्रामक, अपने भयानक कार्यो का जायजा लेने के लिये वापिस लोट रहे थे। जैसेही, जापानी जहाज, नुकसान का निरीक्षण करने के लिये, नीचे, और नीचे, ये निश्चित करते हुये कि, इस कहानी को बताने वाला कोई शेष नहीं रहा है, चक्कर

लगाने लगे, खून से भरे हुये हम, उस जमीन पर, पीठ के बल लेट गये। ये लेखाजोखा, आलस्यपूर्ण तरीके से हुआ, जैसेकि, बाज अपनी सीधी उड़ान में वापस, नीचे और नीचे, शिकार के लिये घूमता है। मशीनगन की कर्कश गोलियों की सरसराहट और पेड़ों के ऊपर गोलियों की कोड़ों जेसी मार। मेरी पोशाक के घेरे के ऊपर कुछ चीज टकराई और मैंने एक चीख सुनी। मैंने महसूस किया मानो कि मेरी टॉग झुलसी हुई है। ''गरीब हुऑग'' मैंने सोचा, ''उसके चोट लगी है और उसको मेरी आवश्यकता है।'' हमारे ऊपर जहाज अलसाये हुये से, चक्कर लगाते हुए उड़े, मानोकि पायलट झुककर जितना ज्यादा संभव हो, जमीन के दृश्य को देख सकें। उसने अपने (जहाज की) नाक नीचे रखी और असंगतरूप से बार–बार गोलीबारी की, और एकबार, फिर से, चक्कर लगाया। स्पष्टरूप से वह संतुष्ट था, क्योंकि, उसने अपने पंखों को हिलाया डुलाया और दूर चला गया। थोड़े समय बाद, मैं हुआँग को मदद करने के लिये उठा, परन्तु वह, बिना घायल हुये, अभी भी जमीन में आधा दबा हुआ, कई फुट दूर था। मैंने अपनी पोशाक को खींचा और अपनी वांयी टॉग के ऊपर एक खरोंच का निशान देखा, जहॉ से होकर वह (गोली) मांस में घुसी थी। मुझसे कुछ इंच दूर, मुस्कराती हुई खोपड़ियों में, सीधे कनपटी में होकर और दूसरी तरफ आर–पार, गोलियों के ताजे सुराख हो गये थे; (गोली के) बाहर निकलने वाला छेद काफी बड़ा था और उसने मस्तिष्क को पूरी तरह से उड़ा दिया था।

एक बार फिर हमने नीचे और पेड़ों के बीच में तलाश की, परन्तु वहॉ जीवन का कोई चिन्ह नहीं था। पचास से सौ लोगों तक, शायद इससे भी अधिक, केवल कुछ मिनट पहले ही, मृतकों को श्रृद्धाजंलि देने के लिये यहॉ थे, अब वह खुद भी मर गये थे। अब वहॉ केवल, आकृतिहीन ढेरों के, लाल अवशेष थे। हम असहाय होकर लौटे। हमारे करने के लिये, बचाने के लिये, कुछ भी नहीं था। केवल समय ही, इन निशानों को मिटा सकता है।

ये ''ऑठवें महीने का पन्द्रहवॉ दिन'' था। दिन की समाप्ति के बाद, जब परिवार परस्पर एक साथ आते हैं, जब वे प्रसन्नता के साथ, अपने दिलों में इस जुड़ाव के साथ, साथ–साथ आते हैं। यहॉ कम से कम, जापानियों के इस कार्य के कारण, परिवार अपने दिन के अंतिम समय में, ''साथ–साथ आये।'' हम अपने रास्ते पर आगे चलने के लिये मुड़े, जैसेही, हमने टूटे–फूटे क्षेत्र को छोड़ा, एक चिड़िया ने अपने अधूरे छोड़े हुये गाने को, फिर गाना शुरू कर दिया, मानोकि, कुछ भी न हुआ हो। चुंगकिंग में जीवन, वास्तव में, बहुत कठोर था। अनेक जेबकतरे अंदर आ गये थे, जो गरीब लोगों की मजबूरियों का फायदा उठा रहे थे, जो इस युद्ध को अपनी पूंजी बनाने का प्रयास कर रहे थे। कीमतें उछल रहीं थीं, हालात मुश्किल थे। जब हमें, फिर से, अपनी नौकरी पर जाने के लिये आदेश मिले, हम वास्तव में, प्रसन्न थे। समुद्रतट के पास, आकस्मिकताऐं वास्तव में अत्यधिक थीं। चिकित्सीय व्यक्तियों की, हताशापूर्ण आवश्यकता थी। इसलिये एकबार फिर, हमने चुंगकिंग को छोड़ दिया, और नीचे समुद्रतट की ओर का रास्ता पकड़ा जहॉ, जनरल यो (Yo), हमें अपने आदेश देने के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ दिनों के बाद, मुझे चिकित्सकीय अधिकारी के रूप में, एक अस्पताल, वास्तव में हास्यापद, का प्रभार दे दिया गया। अस्पताल, धान के खेतों को मिलाकर बनाया गया था, जिसमें भाग्यहीन बीमार, जमीन के ऊपर रुके हुये पानी के ऊपर, लेटाये गये थे, क्योंकि, कहीं भी दूसरी जगह, लेटाने का स्थान नहीं था, कोई पलंग नहीं, कुछ नहीं। हमारे औजार? कागज की पट्टियॉ। शल्यचिकित्सा के पुराने उपकरण, और कोई भी दूसरी चीज, जो हम बना सकें, परन्तु कम से कम, ज्ञान हमारे पास था और यह इच्छा भी कि, उन बुरीतरह घायल व्यक्तियों की, और उन लोगों की, जो बहुत ज्यादा अतिरेक में हैं, हम मदद कर सकें। जापानी हर जगह जीतते जा रहे थे, मौतें भयानक थीं।

एक दिन, हवाईहमले, सामान्य से अधिक तेज दिखाई दिये। हर जगह बमबारी हो रही थी। पूरा क्षेत्र बमों के गिरने के गड्ढों से भर गया था। सेनाऐं वापिस जा रही थीं। तब उस दिन शाम को, एक जापानी टुकड़ी, हमें अपने बोनटों का निशाना बनाती हुई, पहले को चुभाते हुये, फिर दूसरे को

केवल यह दिखाने के लिये कि, वह हमारे मालिक है, हमारी ओर दौड़ी। हमने कोई प्रतिरोध नहीं किया, हमारे पास बिल्कुल हथियार नहीं थे, अपने आप को बचाने के लिये कुछ भी नहीं था। जापानियों ने मुझे, एक प्रभारी के रूप में, रूखेपन से पूछा और तब वे, क्षेत्र में बीमारों का परीक्षण करने के लिये गये। सभी मरीजों को खड़े होने के आदेश दिये गये। दूसरे जो इतने बीमार थे कि, चल नहीं सकते थे, उनको दुश्मन के द्वारा, तत्काल वहीं, वजन उठाने के लिये बन्दूकों के बोनटों से कोंचा गया। हम में से बचे हुओं को, एक युद्धबंदी शिविर में जाने के लिये, काफी आंतरिक भाग में, काफी दूर, आगे जाने के लिये कहा गया। हम प्रतिदिन मीलों–मील चलते गये। मर जाने पर, मरीज, सड़क के किनारे छोड़ दिये जाते थे। दो जापानी संतरी, उनको ये देखने के लिये दौड़ते कि, कहीं कोई चीज, किसी भी कीमत की, बची तो नहीं है। मौत में भिंचे हुए जबड़े, जिज्ञासा में बोनट के साथ खोले गये और दांतों में भरा हुआ सोना, निर्दयता के साथ, खींचकर बाहर निकाल लिया गया। मृतक के ऊपर कुछ भी नहीं छोड़ा।

एक दिन, जब हम तेजी से चल रहे थे, मैंने देखा कि, मेरे सामने वाले संतरी के पास, उसके बोनट के सिरे पर, कुछ अजीब सा है। वे इसे हिला रहे थे। मैंने समझा कि, ये किसीप्रकार का उत्सव मना रहे हैं। ऐसा लगा मानोकि, उन्होंने अपनी बन्दूकों के सिरे पर गुब्बारे बांध लिये हों। तब हँसी और शोर के साथ, संतरी, बंदियों की लाइन के पास, पंक्तियों के पास, दौड़ते हुये आये, और हमने अपने पेट में बीमार खलबली के साथ देखा कि, उन्होंने सिरों को अपनी बन्दूकों के बोनटों के ऊपर, अटका रखा था। खुली हुई ऑखों वाले सिर, खुले हुये मुँह भी, टूटे हुये जबड़े। जापानी, प्रतीक के रूप में, कि वे मालिक थे, उनके सिर काटते हुये और फिर उनकी गर्दनों में बर्छी और भाले चुभाते हुये, बंदियों को ले जा रहे थे।

अपने अस्पताल में, हम सभी राष्ट्रों के बीमारों का इलाज कर रहे थे। अब हम मार्च कर रहे थे तो सभी राष्ट्रों की लाशें, सड़क के किनारे पड़ी थीं। अब ये सब, केवल एक ही राष्ट्रीयता की थीं, मृत्यु के राष्ट्र की। जापानियों ने उनसे हर चीज को ले लिया। घटते घटते, थकते हुये, और ज्यादा थकते हुये, हम कई दिनों तक चलते रहे, जब तक कि, हम में से कुछ, जो नये शिविर तक पहुँचे, दुख और थकान की लालबाड़ के सामने, लडखड़ा कर गिर रहे थे। हमारे चिथड़े लपेटे हुए पैरों से, हमारे पीछे एक पगडंडी जैसा बनाते हुये, खून रिस रहा था। अंत में, हम शिविर में पहुँचे और ये भी बहुत ही खराब शिविर था। यहॉ फिर से प्रश्न पूछना शुरू हुआ। मैं कौन था? मैं क्या था? मैं तिब्बत के लामा के रूप में चीन की तरफ से क्यों लड़ रहा था? इस सब के जबाव में मेरा जबाव था कि, मैं लड़ नहीं रहा था, बल्कि टूटे हुये शरीरों को रफू कर रहा था, और उन लोगों की जो बीमार हैं, जिन्हें घाव या विस्फोट लगे हैं उनकी मदद कर रहा था। ''हॉ'' उन्होंने कहा, ''हॉ, उन शरीरों की मरम्मत कर रहे थे ताकि, वे दुबारा हमारे विरूद्ध लड़ सकें।''

अंत में मुझे काम पर लगा दिया गया। उन लोगों की देखभाल करने के लिये, जो कि गुलाम के रूप में, जापानियों की सेवा करने का प्रयास कर रहे थे। लगभग चार महिने बाद, हमें पता लगा कि, उस कैंप का एक बड़ा निरीक्षण होने वाला है। कुछ उच्च अधिकारी यह देखने के लिये आ रहे हैं कि, ये बंदीशिविर किस प्रकार चल रहे थे, और क्या उनमें कोई इस लायक है जिसको कि, जापानियों के उपयोग में लाया जा सके। हम सभी भोर सबेरे, जल्दी ही, पंक्तिबद्ध कर दिये गये, और घंटों–घंटों तक हमें खड़ा रखा गया। शाम को, देर शाम तक, और हम तबतक एक दुखी भीड़ की तरह दिखाई दिये। जो थकान के कारण गिर गये, उनको बोनट मारे गये और उनको मुर्दों के ढेर के ऊपर घसीट कर फेंक दिया गया। जैसे ही उच्चशक्ति की कारें आवाजें करती हुईं, हमारी ओर आईं और पदकहीन व्यक्ति उसमें से कूदकर बाहर निकले, हमने अपनी पंक्तियों को सीधा खड़ा किया। निरीक्षण करने वाले जापानी मेजर ने, बंदियों को देखते हुए, आकस्मिकरूप से, उन पंक्तियों की ओर टहलकर देखा। उसने मेरी ओर नजर मारी, उसने मुझे सावधानीपूर्वक देखा। उसने मुझे घूरा और मुझे कुछ कहा, जिसे मैं

समझ नहीं सका तथा चूक में, उत्तर नहीं दिया। तब अपनी तलवार की म्यान को, उसने मेरे चेहरे के ऊपर मारा। मेजर ने उससे कुछ कहा। अरदली रिकॉर्ड दफ्तर की ओर दौड़ा और बहुत जल्दी ही मेरे रिकॉर्ड के साथ वह वापिस आया। मेजर ने उसे झपट्टा मारकर छीन लिया और जोर से पढ़ा। तब उसने मुझे गाली दी और अपने साथ के संतरियों को कुछ आदेश दिया। एकबार फिर, मैं उनकी बन्दूकों के बट की मार से गिराकर नीचे डाल दिया गया। एकबार फिर, – फिर से दुबारा सुधारी गई और बनाई गई – मेरी नाक कुचल दी गई, और मुझे घसीट कर संतरियों के कमरे में लाया गया। यहॉ पर मेरे हाथ और पैर, पीठ के पीछे बांध दिये गये और उनको मेरी गर्दन से खींचकर बांध दिया गया, ताकि हरबार जब मैं आराम करना चाहूँ मेरी भुजाऐं लगभग मुझसे दबी रहें। लम्बे समय तक, मुझे ठोकरें मारी गईं और पम्प किया गया और सिगरेट के ठूठों से जलाया गया। जब मेरे ऊपर प्रश्नों की बौछार हुई, तब, इस आशा में कि ये दुख मुझे उत्तर देने के लिये मजबूर कर देगा, मुझे घुटनों पर चलने के लिये मजबूर किया गया और संतरी मेरी एड़ियों के ऊपर उछलकर कूदे। धनुष के रूप में, तनाव के कारण, मेरे जोड़ टूट गये।

प्रश्न जो उन्होने पूछे ! मैं कैसे भागा? जब मैं दूर था, तब किन–किन लोगों से बात की ? क्या मैं यह जानता था कि, भागना उनके सम्राट के प्रति अपमान है ? उन्होंने सेनाओं की हलचलों की विस्तार से जानकारी मांगी, क्योंकि उनका ऐसा सोचना था कि, मैं तिब्बत के लामा के रूप में तिब्बत की प्रवृति के संबंध में बहुत कुछ जानता हूँ। वास्तव में, मैंने उत्तर नहीं दिया, और उन्होंने मुझे अपने यातानाओं के सामान्य तरीकों से, जलती हुई सिगरेटों से जलाना जारी रखा और अंत में, उन्होंने मुझे एक टूटे हुये से पट्टे के ऊपर फेंक दिया, और ड्रम को कसकर खींचा ताकि, वह गिरे मानोकि, मेरी भुजाऐं और टॉगें उसके सॉकेट से खीचीं जा रही हैं। मैं बेहोश हो गया और हरबार ठंडे पानी की बाल्टी डालकर, और बोनट की नोकों को चुभाते हुए, पुर्नजीवित किया गया। अंत में, उस केम्प के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी ने हस्तक्षेप किया। उसने कहा कि, यदि मुझे और अधिक यातनाऐं दी गईं तो मैं निश्चितरूप से मर जाऊँगा और तब वे अपने प्रश्नों के कोई भी उत्तर पाये जाने के लायक नहीं रहेंगे। वे मुझे मारना नहीं चाहते थे, क्योंकि मुझे मार देना, मुझे उनके प्रश्नों से भगा देने के समान था। मुझे गर्दन से घसीटकर खींचा गया, और सीमेन्ट से बने हुए एक गहरे तलघर के प्रकोष्ठ में, जिसकी आकृति बोतल के समान थी, फेंक दिया गया। यहॉ मैं कई दिनों के लिये रखा गया, ये कुछ हफ्ते भी हो सकते हैं। मैं समय का गिनना भूल गया। समय का कोई ज्ञान नहीं था। प्रकोष्ठ पूरी तरह से अंधेरा था। खाना, हर दिन में दो बार, फेंक दिया जाता था और एक डिब्बे में पानी भरकर नीचे पहुँचा दिया जाता था, अक्सर ये फैल जाया करता था और इस प्रयत्न में, अपने हाथों को घसीटते हुये, उसे पाने के प्रयत्न में, और गीली जमीन से कुछ भी चीज पाने के प्रयास में, मुझे अंधेरे में गिड़गिड़ाना पड़ता था। इतने गहरे अंधेरे के कारण, मेरा दिमाग इस तनाव से टूट गया होता, परन्तु मेरे प्रशिक्षण ने मुझे बचाया। मैंने फिर से भूतकाल पर विचार किया।

अंधेरा? मैंने तिब्बत में साधुओं का विचार किया, उनके सुरक्षित आश्रमों में, जो बादलों के बीच ऊँची–ऊँची पहाड़ियों की चोटियों के ऊपर, नहीं पहुँचे जा सकते। साधु, जो अपने मन को शरीर से अलग करने के लिये, अपनी आत्माओं को अपने मन से अलग करने के लिये, अपने प्रकोष्ठों में कैद रहते, और वर्षो तक वहॉ रूके रहते, ताकि वे उन्नत आत्मिकस्वतंत्रता को अनुभव कर सकें। मैंने वर्तमान के लिये नहीं परन्तु भूतकाल के लिये सोचा, परन्तु अपने अपरिहार्य सपनों के लिये, मैं उन अत्यधिक आश्चर्यचकित करने वाले अनुभवों के ऊपर, अपनी उच्चदेशीय चांगताग यात्रा के ऊपर वापिस आया।

हम, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, और थोड़े से साथी और मैं, विरली जड़ीबूटियों की तलाश में, ल्हासा में, सुनहरी छतों वाले पोटाला से यात्रा के लिये चले। हमने हफ्तों तक, ऊपर, हमेशा ऊपर की तरफ, चांगतांग के उच्चस्थानों में, जमेहुये उत्तर में, अथवा जैसे कुछलोग इसे शम्बाला कहते हैं

की यात्रा की। एक दिन हम अपने लक्ष्य की समीप पहुॅच रहे थे, ये दिन, वास्तव में, अत्यंत कटु था, तमाम जमेहुये दिनों की तुलना में कटुतम। चीखते हुये तूफान ने, वर्फ को हमारी तरफ उछाल दिया। जमे हुये गोले, हमारी उड़ती हुई पोशाकों से टकराये, और त्वचा की किसी भी सतह पर, जो खुली रह गई थी, उस पर रगड़ दिया। यहॉ समुद्रतल से लगभग पच्चीस हजार फुट ऊपर, आकाश जीवंत नीला–बैंगनी सा था, तुलना में दौड़ते हुए बादलों के कुछ पैबंद, सफेद लग रहे थे। ये देवाताओं के सफेद अश्वों की भांति दिखाई दे रहे थे, जो अपने सवारों को, तिब्बत के आर–पार ले जा रहे थे।

हम ऊपर, और ऊपर चढ़े, इलाका हर कदम के साथ, कठिन से कठिनतर, होता जा रहा था। हमारे फेफड़े गले में मानो अटक गये थे। अस्थिर, खतरनाक, कठोर, भूमि में, हमें पैर टिकाने की जगह मिल पायी। उस जमी हुई चट्टान की दरारों में, कहीं भी, पैर टिकाने की जगह पर, अपनी उंगलियों को जमी हुई चट्टानों में घुसाते हुये, अपने पैर टिकाये। अंत में, हम कुहरे की उस रहस्यमय पट्टी में दुबारा पहुंच गये ''देखें तीसरी ऑख'' और अपने पैरों के नीचे की जमीन से होकर, जो लगातार गरम और गरमतर हो रही थी, गर्म और गर्मतर होते हुये, अपना रास्ता बनाया। हमारे आसपास की हवा अधिक और अधिक, शांतिदायक और सुखदायक हो रही थी। धीमे–धीमे, हमें कोहरे में से आलीशान स्वर्ग में से, जो एक सुन्दर अभयारण्य था, निकले। फिर, हमारे सामने बीते हुये समय का, वह देश था।

उस रात हमने उस उच्चदेश के आराम में और गर्मी में विश्राम किया। मॉस (moss) के मुलायम बिस्तर के ऊपर सोना और फूलों की मधुर सुगंध को सांस में लेना, एक आश्चर्यजनक अनुभव था। यहॉ इस देश में फल थे, जो हमने इससे पहले नहीं चखे थे; फल जिनका हमने नमूना लिया और दुबारा प्रयास किया। गर्म पानी में नहाने के योग्य होना, और एक सुनहरे तट के ऊपर आसानी से सुस्ताना, आराम करना, ये भव्य भी था।

अगले दिन, ऊॅचे और ऊॅचे जाते हुये, हमने आगे की यात्रा की लेकिन अभी हम बिल्कुल कष्ट में नहीं थे। हम सदाबहार के झुंडो में होकर, अखरोट और दूसरे के पेड़ों के बीच, जिनके नाम हम नहीं जानते, गुजरते हुये आगे बढ़े। हमने स्वयं को, अनुचितरूप से नहीं दबाया। एकबार फिर, रात हमारे ऊपर गिरी, परन्तु इसबार हम ठंड में नहीं थे। हम आराम थे आसानी से थे। शीघ्र ही, हम पेड़ों के नीचे बैठे, और आग जलाई, और अपना शाम का खाना तैयार किया। इसके पूरा होने के साथ–साथ हमने अपनी पोशाकें अपने आसपास लपेट लीं, लेटे, और बातें कीं। एक–एक करके हम नींद में डूबते गये।

फिर अगले दिन, हमने अपनी यात्रा जारी रखी, लेकिन हमने दो या तीन मील ही चला होगा कि, अचानक अप्रत्याशितरूप से एक खुले हुए सपाट स्थान में आ गये, हमारे सामने एक स्थान, जहॉ पेड़ समाप्त हो गये – हम लगभग लकवा खाये हुये की तरह से आश्चर्य में रूक गये, उस ज्ञान से सराबोर, जो पूर्णतः हमारी समझ के बाहर, कहीं से आया था। हमने देखा, हमारे आसपास, लम्बा–चौड़ा सपाट स्थान था। हमारे सामने, पॉच मील से ज्यादा दूर तक, समतल भूमि थी। दूर के इस स्थान पर, एक बहुत ही तीव्र, बर्फ की गहरी चादर थी, जो स्वर्ग की तरफ पहुँचती हुई, कॉच की चादर की तरह से, ऊपर की तरफ फैली हुई थी, मानो यह, वास्तव में, स्वर्ग की एक खिड़की थी, भूतकाल की एक खिड़की, क्योंकि इस चादर के दूसरी तरफ की वर्फ हम देख सकते थे, मानोकि, शुद्धतम पानी में होकर, एक सही–सलामत नगर, एक अनजान नगर, उस जैसा, जैसे हमने इससे पहले कभी नहीं देखा था। किताबों के, जो हमारे पास पोटाला में थीं, चित्र के रूप में भी नहीं।

हिमनदों में से प्रक्षिप्त होते, उनमें से अधिकांश ऐसे, इतनी अच्छी हालत में सुरक्षित, संरक्षित, कुछ भवन थे, क्योंकि, इस गर्म हवा के कारण, धीमे से, वहॉ से वर्फ गल गई थी। इस छिपी हुई घाटी की बर्फ, इस गर्म हवा में, इतने धीमे से गली, इतने धीमे से ढीली पड़ी, कि कोई भी पत्थर अथवा ढॉचे का कोई भी अंश, विकृत नहीं हुआ था। वास्तव में, उनमें से कुछ, एकदम ठीक, सही सलामत थीं। अगण्य शताब्दियों में होकर संजोई गई, तिब्बत की आश्चर्यजनक शुष्कहवा के द्वारा, इनमें से कुछ भवन,

वास्तव में, शायद कुछ हफ्ते पहले ही बनाये गये हों, ऐसे नये दिखते थे। मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने, हमारे विस्मय की चुप्पी को यह कहते हुए तोड़ा, ''मेरे भाइयो, पॉच लाख वर्ष पहले, ये देवाताओं का देश हुआ करता था। पॉच लाख वर्ष पहले, ये समुद्रतटीय आनंददायक विश्राम का स्थान था, जिसमें किसी दूसरी प्रजाति के, दूसरे प्रकार के, वैज्ञानिक रहते थे। वे एक साथ, दूसरे स्थान से आये थे, मैं किसी और दिन, तुमको उनका इतिहास बताऊॅगा; परन्तु अपने प्रयोगों के द्वारा, उन्होंने पृथ्वी के ऊपर आफत ला दी, और वे अपने गडबड़ी के क्षेत्र से, सामान्य व्यक्तियों को पृथ्वी पर पीछे छोड़ते हुये, भाग खड़े उठे। उन्होंने आफत पैदा की, उनके प्रयोगों के फलस्वरूप समुद्र ऊॅचा उठा और जम गया, और यहॉ हम अपने सामने, उस समय की जमी हुई वर्फ से संरक्षित, जब जमीन ऊपर उठी और उसके साथ, उसका पानी भी ऊपर उठा और उछल कर जम गया, उस समय की जमी हुई वर्फ से संरक्षित, एक नगर देखते हैं, एक शहर, जो जल में डूबा हुआ था[20]।''

हमने मोहित करती हुई शांति में, जैसे–जैसे ये सुना। मेरे शिक्षक, उन प्राचीन अभिलेखों, जो पोटाला के नीचे, काफी नीचे, सोने की चादरों में, ठीक वैसे ही, जैसेकि, आजकल पश्चिमी विश्व, अभिलेखों को, बाद में आने वाले समय के लिये, संभाल कर रखता है, जिसे वे ''टाइम कैप्सूल[21]'' कहते हैं, खोदे गये थे, भूतकाल के ऊपर बात करते हुये, अपनी बात को आगे बढ़ा रहे थे।

सामान्य आवेग से हिले हुये हम, अपने पैरों पर खड़े हुए और तब हम, अपनी पहुॅच में स्थित, भवनों का अवलोकन करने के लिये, चले। जैसे जैसे हम नजदीक पहुॅचते गये, हम अधिक, और अधिक, हक्के–बक्के होते गये। ये बहुत बहुत अजनबी था। एक क्षण के लिये हम, ये नहीं समझ सके कि, हमें किस प्रकार का अनुभव हुआ। हमने अनुमान लगाया कि, हम अचानक ही बौने हो गये हैं। तब एक हल हमारे दिमाग में आया। भवन बहुत बहुत बड़े थे मानोकि, वह हमने दूने लम्बे लोगों के लिये बने हों। हॉ, ऐसा ही था। वे लोग, वे हमने अच्छे लोग, पृथ्वी के सामान्य लोगों की अपेक्षा दूने लम्बे थे। हम उन भवनों में से कुछ में, प्रविष्ट हुये और उन्हें देखा। उनमें से एक विशेष, हमें किसी प्रकार की प्रयोगशाला लगी, और वहॉ तमाम तरह की अजनबी युक्तियॉ थी, उपकरण थे, उनमें से अनेक अभी भी काम कर रहे थे।

बर्फ से ठंडे पानी की धारा की बौछारों ने, मुझे सहसा ही निराशामय हतप्रभता के साथ, दुर्गति और उस पत्थर के छोटे से तहखाने के अंदर मेरे अस्तित्व के दुख की, वास्तविकता की ओर, वापस ठेल दिया। जापानी यह निश्चय कर चुके थे, कि मैं काफी लंबे समय तक वहॉं रह चुका हूँ, और अभी तक भी मैं ''नरम'' नहीं पड़ा हूॅ। उन्होंने सोचा कि, मुझे बाहर करने का सबसे आसान तरीका, उस कालकोठरी को पानी से भर देना है, ताकि मैं पानी की सतह पर तैर जाऊँ, जैसेकि, पानी भरी हुई बोतल में, पानी के ऊपर कार्क तैरता हैं। जैसे ही मैं, कालकोठरी की तंग गर्दन की ओर, सबसे ऊपर तक पहुॅचा, पहुॅचते ही मुझे खुरदरे हाथों ने जकड लिया और खींचकर बाहर कर दिया। मुझे दूसरे प्रकोष्ठ की ओर ले जाया गया, इसबार वह जमीन के ऊपर था, और मेरे साथ छींटाकशी की गयी, मजाक उड़ाया गया।

अगले दिन, मुझे बीमारों का इलाज करने के काम पर दुबारा, लगाया गया। बाद में, सप्ताह में

---

20 अनुवादक की टिप्पिणी : अनुमानतः यह अत्यधिक क्षमता वाला, जमीन के नीचे किया गया, किसी प्रकार का विस्फोट, अथवा जमीन के नीचे की सीस्मिक प्लेटों की स्वाभाविक टकराहट अथवा अंतरिक्ष से आये हुए किसी बड़े पिंड की टक्कर रही होगी। थियोसोफां प्रोफेसी में इसका संकेत मिलता है।

21 अनुवादक की टिप्पिणी : टाईम केप्सूल किन्हीं सामानों का अथवा जानकारियों का गुप्त भंडार होता है जो भविष्य के लोगों के साथ बांटने अथवा बताने के लिए संभाल कर रखा जाता है, ताकि भविष्य के पुरातत्ववेत्ता, नरविज्ञानी, अथवा इतिहासवेत्ताओं को उनके भूतकाल को जानने में सुविधा हो। विशेष तौर से विश्वमेला अथवा ऐसे ही वैश्विक महत्वपूर्ण अवसरों पर, इनको कई बार जमीन में काफी नीचे गाढ़ा जाता है, ताकि इनकी जानकारी वर्तमान में अधिकतम लोगों को रहे और जनश्रुति से हजारों साल बाद भी इनको निकाला जा सके। अंतरर्राष्ट्रीय टाईम केप्सूल सोसायटी के अनुमान के अनुसार वर्तमान में विश्व में विभिन्न स्थानों पर लगभग 15000 टाईम केप्सूल गाढ़े गए हैं भारत में भी सैकड़ों की संख्या में टाईम केप्सूल गाढ़े गए हैं, इनमें से एक महत्वपूर्ण टाईम केप्सूल भारत के इतिहास को और वर्तमान स्थिति को बताते हुए, कांग्रेस सरकार ने लालकिले की प्राचीर के नीचे गाढ़ा था ।

उच्च जापानियों के द्वारा दूसरा निरीक्षण था। इस संबंध में, काफी भाग–दौड थी। निरीक्षण को बिना किसी पूर्वचेतावनी के किया जाना था, इसलिए संतरी भगदड़ में थे। मैंने एकसमय, खुद को प्रवेशद्वार के काफी नजदीक पाया। मेरे ऊपर कोई ध्यान नहीं दे रहा था। इसलिए मैंने टहलते रहने का मौका देखा, बहुत तेजी से नहीं, क्योंकि मैं ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहता था, परंतु बहुत अधिक धीमे भी नहीं, वहाँ पर देर करना अच्छा नही था। मैं चलता रहा, और चलता रहा, मानो मुझे बाहर जाने का पूरा अधिकार मिल गया हो। एक संतरी मेरे पास आया, और मैं उसकी तरफ मुडा और मैंने अपने हाथ ऊँचे कर दिए, मानो मैंने अभिवादन किया हो। किसी कारण से, उसने भी मेरा अभिवादन वापस किया, और अपने साधारण कार्य की ओर मुड गया। मैंने अपना टहलना जारी रखा। जब मैं, झाडियों से छिपा, जेल के दृश्यक्षेत्र के बाहर हो गया, मैं इतना तेज भागा, जितना कि मेरा कमजोर ढाँचा, मुझे इसयोग्य बना सकता था।

कुछ मील दूर और आगे, मुझे याद आया। एक घर था, जो किसी पश्चिमी आदमी का था, जिसे मैं जानता था। वास्तव में, पूर्व में मैंने उसकी कुछ सेवा की थी। इसलिए, रात होते–होते, सावधानी पूर्वक, मैंने उनके घर की ओर का रास्ता लिया। उन्होंने मुझे गर्मजोशी के साथ, सहानुभूति के साथ, स्वीकार किया। उन्होंने मेरे कई घावों के ऊपर पट्टियाँ बाँधीं, खाने को दिया और ये वायदा करते हुए कि, वे मुझे जापानी पंक्तियों से बाहर निकालने के लिए, वे सभी प्रयास, जो वह कर सकते थे, करेंगे। मुझे बिस्तर पर सुलाया। इस विचार से शांति पाते हुए कि, मैं मित्रों के हाथों में था, मुझे नींद आ गई। तीखी आवाजों और मुक्कों की मार ने मुझे वापस वास्तविकता की ओर ला दिया और उन्होंने झटके देकर, मुझे नींद से वापस ला दिया। मुझे बिस्तर में से खींचते हुए, फिर से अपने बोनटों से कोंचते हुए, जापानी संतरी मेरे ऊपर खडे हुए थे। मेरे मेजवान, अपनी सहानुभूति की सभी आपत्तियों को दरकिनार करते हुए, तबतक प्रतीक्षा करते रहे, जबतक कि मैं सो नही गया, और जापानी संतरियों ने ये नहीं लिख दिया कि, वे एक भगोडे कैदी को पकडे हुए हैं। जापानी संतरियों ने मुझे पाने के लिए कोई समय नहीं गंवाया। बाहर ले जाये जाने के पहले, मैं पश्चिमी लोगों से ये पूछने की व्यवस्था कर पाया कि, उन्होंने मुझे धोखेबाजी से, विश्वासघात करके क्यों पकड़वाया। उनका हतप्रभ कर देने वाला जबाब था, तुम हम में से नहीं हो, हमें अपने लोगों को देखना हैं। यदि हम तुम्हें रखते तो जापानियों से दुश्मनी मोल लेते और अपने काम को खतरे में डालते।

बंदी शिविर में वापिस आने के बाद, मुझे वास्तव में, बहुत बुरा तरह व्यवहार दिया गया। घंटों तक मुझे पेड की डालियों से लटकाया गया। मुझे अपने दोनों अँगूंठों को आपस में बांधकर, लटकाया गया। तब उसके बाद, शिविर के कमांडेट के सामने, मेरी एक प्रकार की नकली सुनवाई हुई। मुझे कहा गया, कि ये आदमी एक स्थाई भगोडा है, ये हमारे लिए बहुत अधिक कार्य पैदा करता है। इसलिए उसने मुझे सजा सुनाई। मुझे ठोकरें मारीं गईं और जमीन पर बाहर लिटा दिया गया। मेरी टांगों के नीचे, खंडे (blocks) रख दिए गए जिससे मेरी टांगें जमीन से सहारा न ले सकें। दो जापानी संतरी, मेरी हर टांग पर खडे हुए, और उछले कूदे, जिससे मेरी हडडी चटक गई। मैं इस पीड़ा से बेहाश हो गया। जब मुझमें चेतना पुन वापस आई, मैं वापस ठंडे, नम प्रकोष्ठ में, चूहों के जमघट के बीच था।

भोर सबेरे की हाजिरी में न पहुँचना, मत्यु के समान था, और मैं इसे जानता था। एक साथी बंदी ने मुझे कुछ बांस लाकर दिए, और टूटी हुई हडिडयों को सहारा देने के लिए, उनको हर टांग से बांधा। मैंने दूसरे दो बांसों को बैसा,खी के रूप में प्रयोग किया। मेरे पास तीसरा बांस भी था, जिसे मैंने संतुलन बनाने के लिए, तीसरी टांग के लिए प्रयोग किया। इसप्रकार मैंने हाजिरी में जाने की व्यवस्था की, और अपने को बोनटों से कोंच–कोंच कर, अथवा ऑतें बाहर निकालने से अथवा फांसी से, अथवा किसी दूसरे सामान्य तरीकों से, जिसमें जापानी सिद्धहस्त हों, मृत्यु से बचने की व्यवस्था की।

जैसे ही मेरी टांगे ठीक हुईं और मेरी हडिडयाँ जुड़ीं, य़द्यपि बहुत अच्छी तरह नहीं, क्योंकि मैंने

स्वंय ही उनको जोडा था, कमांडेंट ने मुझे बुलाया और कहा कि, मुझे और किसी अंदरूनी स्थानवाले दूसरे कैंप मै भेजा जा रहा था, जहाँ पर, मुझे औरतों के शिविर में चिकित्सीय अधिकारी होना था। इसलिए, एकबार मुझे फिर से विस्थापित होना था। इसबार लारियों का एक काफिला, शिविर की ओर जा रहा था और मैं अकेला बंदी था, जो वहाँ के लिए हटाया जा रहा था। इसलिए एक लारी पर पूंछ के समीप कुत्ते की तरह से, मुझे जंजीर से बाँधकर, लारी पर ले जाया गया। अंत में, कई दिनों बाद, हम इस कैंप में पहुँचे जहाँ पर मुझे कमाडेंट के पास ले जाया गया।

यहाँ हमारे पास, किसी तरह के कोई चिकित्सा–उपकरण नहीं थे और न हीं कोई दवा। हमने पत्थरों पर धार लगाए गये, पुराने टीन के टुकड़ों से, आग से तपाये हुये बाँस से, और तार–तार फटे हुए कपडों को उधेड़कर उनके धागे से, जो कुछ बना सकते थे, बनाया। कुछ औरतों के पास पहनने के लिए कपड़े नहीं थे, या बहुत अधिक फटे हुए थे। चेतन अवस्था में मरीजों के ऑपरेशन किए जाते थे और उधेड़े हुए शरीरों को, सूतीधागे से सिला जाता था। अक्सर, रात को जापानी आते और सभी औरतों का निरीक्षण करने का आदेश देते और किसी को भी, जो उन्हें पसंद होती, स्थाई अधिकारियों और किन्हीं आगंतुकों का मनोरंजन करने के लिए, अधिकारियों की पार्टी पर ले जाते। औरतें, शर्मनाक चेहरों के देखते हुए, बीमार, वापस सुबह लौटाईं जातीं और मैं, बंदियों के डॉक्टर के रूप में, उनके बदसलूकी किए गए शरीरों पर, पैबन्द लगाता था।

अध्याय दस
श्वसन कैसे करें

जापानी संतरी फिर से अपनी खराब मनोदशा में थे। अधिकारी और आदमी, लंबे–लंबे डग भरते हुए, त्योरियाँ चढ़ाकर, किसी भी भाग्यहीन को, जो उनकी नजर के सामने आ पड़ता, ठुकराते हुए, उस स्थान में चल रहे थे। जैसे ही हमने आतंक के दूसरे दिन, खाने की तंगी के एक और दिन, एवं बेकार के कामों पर विचार किया, हम वास्तव में, उदास हो गये। कुछ घण्टों पहले, यहाँ धूल का एक गुबार उठा था, क्योंकि एक हथियाई गयी, बड़ी अमरीकन कार, एक झटके के साथ खिंची थी, जिसने अपने निर्माताओं के दिलों को चीर दिया होगा। वहाँ हुल्लड़ और चीखें मच रहीं थीं, और दौड़ते हुए आदमी अपनी फटी–टूटी पोशाकों को पहनकर, उनके बटन लगा रहे थे। संतरी, ये दिखाने के लिए, कि वे कार्यकुशल थे, किसी भी प्रकार का हथियार, जो भी वे अपने हाथों में पकड़ सकें, लेकर दौड़ रहे थे और अपने कामों को कर रहे थे।

ये उस क्षेत्र के जनरल कमांडिंग का, एक अप्रत्याशित निरीक्षण था। एकदम निश्चयपूर्वक, ये एक औचक निरीक्षण था। इससे पहले, किसी ने भी, ऐसे दूसरे निरीक्षण की अपेक्षा नहीं की थी क्योंकि, इससे पहले वाला, दो दिन पहले ही हुआ था। ऐसा लगता था कि, जापानी कैम्पों का निरीक्षण, कईबार केवल औरतों को देखने के लिए, और पार्टियाँ करने के लिए ही होता था। वे औरतों को लाइन में खड़ा करते और उनकी जॉच करते, और जिनको वे चाहते उनको चुन लेते, और उनको सशस्त्र संतरियों के पहरे के अंदर ले जाया जाता, और थोड़ी देर बाद, हम दुख और आतंक के डर से भरी चीखें सुनते। इसबार, यद्यपि, ये एक सच्ची बात थी, यह एक वास्तविक निरीक्षण था, निरीक्षण, जो उच्चपदस्थ जनरल ने, सीधे ही, जापान से किया था। वह ये देखने के लिए आया था, कि वास्तव में, शिविरों में क्या चल रहा है। उसे बाद में यह पता चला कि जापानियों को कुछ धक्के लगे हैं, और किसी को ऐसा लगा कि, यदि ऐसे अत्याचार बहुत अधिक हुए, तो कुछ अधिकारियों को, बाद में, इसके प्रतिशोध झेलने पड़ेंगे।

अंत में संतरी निरीक्षण के लिए तैयार, कमोवेश पंक्तिबद्ध, सीधे खड़े थे। वहाँ, डरे हुए आदमियों के पैरों, और उनके पैर घसीटकर चलने से उठते हुए, धूल के काफी बादल थे। हमने अपने रुचिपूर्ण तरीके से, (कंटीले) तारों के पीछे से देखा, क्योंकि इसबार संतरियों का निरीक्षण किया जारहा था, न कि कैदियों का। लंबे समय के लिए आदमियों को कतार में खड़ा किया गया, और तब अंत में, तनाव का प्रभाव प्रतीत हुआ, और ये दिखा कि कुछ होने वाला है। हमने देखा कि, संतरियों के निवास में कुछ हलचलें हो रही हैं, आदमी हथियारों को दे रहे हैं। तब जनरल, अपनी लंबी जापानी सैनिक तलवार के साथ, अकड़कर चलते हुए, बड़बड़ाते, ढींग हॉकते हुए, अपने पीछे आदमियों की पंक्तियों के नीचे बाहर आया। प्रतीक्षा में रखे जाने के क्रोध के कारण, उसका चेहरा बिगड़ा हुआ था और उसके सहायक विषादयुक्त, बीमार और अलसाये हुए दिखाई दे रहे थे। जिसको भी उसने गलत पाया, एक यहाँ से और दूसरा वहाँ से उठाते हुए, धीमे–धीमे, वह आदमियों की पंक्तियों के नीचे की ओर गया। उस दिन कुछ भी हल्का–फुल्का नहीं दिखाई दिया। चीजें काली और अधिक काली दिख रहीं थीं।

''स्वर्ग के पुत्र'' वास्तव में, दुखी दिखने वाला बेड़ा (crew) था। जल्दी–जल्दी में, उन्होंने हर उपलब्ध उपकरण को उठा लिया, भले ही वह उनके लिए अनुपयुक्त ही क्यों न हो। उनका दिमाग पूरी तरह गुम गया था। उन्हें केवल ये दिखाना था कि, सुस्ताकर समय व्यर्थ गंवाने की बजाय, वे कुछ कर रहे थे। जनरल आगे चले, और तब गुस्से भरी चीख के साथ, अचानक रुक गए। एक आदमी के पास उसकी रायफल के बदले में, कैदियों की नाली साफ करने का डण्डा और उसके सिरे पर लगा हुआ एक डिब्बा (tin) था। कुछ समय पहले, कैदियों में से एक, हमारे कैम्प की नालियों को साफ करने

के लिए, इस लट्ठे का उपयोग कर रहा था। जनरल ने उस आदमी को, और उसके लट्ठे को देखा, और उस लट्ठे के सिरे के ऊपर लगे डिब्बे को देखने के लिए, अपने सिर को और ऊँचा उठाया। वह ज्यादा से ज्यादा गुस्सा हुआ। गुस्से के कारण, क्षणभर के लिए, वह कुछ भी कहने में असमर्थ हो गया। पहले से ही वह, अपने पैरों के पंजों के ऊपर उठा हुआ था (क्रोध में था), और वह कई लोगों को, जो उसकी नाराजगी लाने वाली इस घटना में सम्मिलित हुए थे, दायें–वायें गालों पर तमाचे जड़ चुका था। अब इस नाली साफ करने के लट्ठे पर, वह बुरीतरह से आपे से बाहर हो गया। अंत में, फिर से उसमें चलने की शक्ति पैदा हुई, और वह गुस्से के साथ उछला और उसने आसपास किसी ऐसी चीज को तलाशा, जिससे कि वह उस आदमी को मार सके। उसे एक विचार आया। उसने नीचे की तरफ देखा और म्यान में से अपनी तलवार को बाहर निकाला और उस सजावटी तलवार को, उसने भाग्यहीन संतरी के सिर पर, तेजी के साथ, जोर से मारा। गरीब बेचारा, घुटनों पर गिर गया और उसका डण्डा नीचे जमीन पर गिर पड़ा। उसके नकुओं और कानों में से खून निकला। जनरल ने तिरस्कारपूर्वक उसको ठोकर मारी और संतरियों को इशारा किया। बेचारा भाग्यहीन आदमी, पैरों से उठाया गया और उसके सिर को जमीन पर उछालते–उछालते, घसीटकर खींचा गया। अंत में, वह आँखों से ओझल हो गया, और दुबारा हमारे शिविर में दिखाई नहीं पड़ा।

निरीक्षण में कोई भी चीज, ठीक चलती हुई नहीं दिखाई दी। जनरल और उसके साथी अधिकारियों ने हर जगह पर गलतियाँ पाईं। वे गुस्से में एक खास रंग के, बैंगनी–जैसे हो रहे थे। उन्होंने एक निरीक्षण किया और उसके बाद में दूसरा किया। हमने इस तरह की कोई बात कभी नहीं देखी थी, परंतु हमारी दृष्टि से यह एक चमकदार बिन्दु था। जनरल संतरियों से इतना अधिक क्रोधित था कि, वह कैदियों का निरीक्षण करना भूल गया। अंत में उच्चपदस्थ अधिकारी दुबारा संतरियों के कमरे में गायब हो गए। वहाँ से गुस्से से चीखने की, और एक, दो गोली चलने की तीखी आवाजें आईं। तब वे फिर से बाहर आए, अपनी–अपनी कारों पर चढ़े, और हमारी ऑखों से ओझल हो गए। संतरियों को पंक्तियाँ तोड़ देने (fall out) के लिए कहा गया और वे डरते, काँपते हुए चले गए।

इसलिए – जापानी संतरी, बहुत खराब मानसिक स्थिति में थे। उन्होंने अभी–अभी एक डच (Dutch) औरत को पीटा था, क्योंकि वह लंबी–चौड़ी थी और उनके ऊपर भारी पड़ रही थी, जिससे उनको हीनता अनुभव हो रही थी। जैसा उन्होंने कहा, वह उनसे ज्यादा लंबी थी, और ये उनके सम्राट के प्रति, अपमान था! उसे रायफल के बट से ठोक–ठोक कर नीचे गिरा दिया गया और पैरों से ठुकराया और कोंचा गया, जिससे उसे अंदरूनी चोटें आईं और उनसे खून बह रहा था। सूर्यास्त होने तक, एक या दो घण्टे के लिए, उसे मुख्य प्रवेशद्वार के पास, संतरियों के कक्ष के सामने, जमीन पर बाहर ही रहना था। उसमें से खून टपकते हुए, उसे घुटनों के बल झुके रहना था। कोई बात नहीं, कुछ भी बात नहीं, कितने भी बीमार हों, संतरी इजाजत दें उससे पहले कहीं हिल नहीं सकते। यदि कोई बंदी मर जाता, ठीक है, खाना खिलाने के लिए एक कम हुआ। निश्चय ही, कम से कम संतरी तो इसका ख्याल नहीं करते थे और इसप्रकार वह मर गई। सूर्यास्त से ठीक पहले वह लुढ़क गई। कोई उसकी मदद के लिए नहीं जा सका। अंत में, एक संतरी ने, दो कैदियों को वहाँ आने और लाश को वहाँ से उठाकर ले जाने के लिए इशारा किया। वे उसे मेरे पास लाए, परंतु ये बेकार था। वह मर चुकी थी। उसमें से मरते दम तक खून का रिसाव हुआ था। वास्तव में, शिविर के हालातों में बीमारों का इलाज करना, बहुत मुश्किल था। हमार पास कोई साधन नहीं थे। अब हमारी बॉधने की पट्टियाँ भी खत्म हो गई थीं। उनको बार–बार धोया जा रहा था और तबतक उनका उपयोग किया जा रहा था, जबतक कि वे पूरी तरह से खत्म न हो जायें, जबतक कि अंतिम कुछ धागे भी, लटकने से मना न कर दें। हम कपड़ों में से भी काटकर और नहीं बना सकते थे, क्योंकि, किसी के पास भी फालतू कपड़ा नहीं था। बंदियों में से कुछ के पास, वास्तव में, कोई कपड़ा नहीं था। मामला काफी गंभीर होता जा

रहा था। हमें तमाम घाव थे, तमाम घाव, और उनका इलाज करने का कोई तरीका नहीं था। शिविर की सीमाओं के बाहर, मुझे एक स्थानीय पौधा मिला था, जो मुझे काफी परिचित लगा। तिब्बत में, हमारे अभियानों में से एक पर, मैंने उसका अध्ययन किया था और उसके ऊपर काम किया था। ये मोटी पत्तियों के साथ चौड़ी आकृति का था, और ये बहुत उपयोगी स्तंभक (astringent) था, वह चीज जिसकी हमको अत्यधिक आवश्यकता थी। समस्या, इन पत्तों को शिविर में लाने की थी। हमारे समूह में, रात में काफी देर तक, इसके ऊपर बातचीत हुई। अंत में यह तय किया गया कि, काम करने वाले दल, किसी भी तरह से इसको इकट्ठा करें, और जब वे शिविर की तरफ वापस लौट रहे हों, इसे किसी बिना बताए तरीके से, छिपाकर रखें। हमने आपस में बात की कि, उन्हें कैसे छिपाया जा सकता है। अंत में, कुछ वास्तव में विद्वान व्यक्तियों ने सुझाव दिया कि, एक कार्यकारीदल बड़े–बड़े बांसों को इकट्ठा कर रहा है, इन पत्तियों को उनके तनों के बीच में छिपाया जा सकता है।

औरतें या ''लड़कियाँ'' जैसा वे उन्हें कहते थे, भले ही उनकी उम्र कुछ भी क्यों न हो। उन्होंने इन मोटे पत्तों को काफी मात्रा में इकठ्ठा किया। मैं उन्हें देखकर खुश हुआ। ये पुराने मित्रों को अभिवादन करने जैसा था। हमने सभी पत्तियों को, झोंपड़ियों के पीछे, जमीन पर फैला दिया। जापानी संतरियों ने देखा, मगर इसकी बिलकुल चिंता नहीं की, कि हमलोग क्या कर रहे थे। उन्होंने सोचा कि, हम लोग पागल हो गए हैं, और कुछ ऐसा ही, परंतु हमको पत्तियों को फैला देना पड़ा, ताकि उन्हें सावधानीपूर्वक, छाँटा जा सके, क्योंकि औरतों के द्वारा, जिन्हें एक विशेषप्रकार की, विशेष पौधे की, पत्तियों को चुनने का अभ्यास नहीं था, सभीप्रकार की पत्तियाँ लाई गईं थीं, और इनमें से केवल एक प्रकार की पत्तियों को ही काम में लाया जा सकता था। हमने पत्तियों को चुना, और उनमें से एक को छाँटा, जिसकी हमें आवश्यकता थी। बची हुईं – ठीक, हमें इनसे ठीक से छुटकारा पाना था, और हमने इनको अपने प्रांगण (compound) के सिरे पर, लाशों के ढेर के ऊपर, फैला दिया।

बची हुई पत्तियॉ, छोटे और बड़े समूहों में छॉटी गईं, और उनके ऊपर से धूल को सावधानीपूर्वक साफ किया गया। हमारे पास उनको धोने के लिए पानी नहीं था, क्योंकि पानी एक अत्यंत कमी वाली वस्तु थी। अब हमें एक सही बर्तन की आवश्यकता थी, जिसमें इन पत्तियों को पीसा या कुचला जा सके। हमारे पास उपलब्ध, सबसे बड़ा बर्तन, शिविर का चावल का कटोरा था, इसलिए हमने उसे लिया और चुनी गई पत्तियॉ, सावधानीपूर्वक उसमें डालीं। अगली समस्या, एक ठीक से पत्थर की थी, जिसके सिरे पर तीखे निशान हों, जिससे इन पत्तियों को पीसा जा सके और उनको एक बढ़िया लुग्दी के रूप में बनाया जा सके। अंत में, हमें जैसा चाहिए था, वैसा पत्थर मिल गया। इस पत्थर को उठाने के लिए दो हाथ चाहिए थे, औरतें जो मेरी सहायता कर रही थीं, उन्होंने उन पत्तियों को पीसने और रगड़ने के लिए, जबतक कि वे अच्छी मोटी लुग्दी के रूप में नहीं आ गईं, इसको अदल–बदल कर के, काम में लिया।

हमारी अगली समस्या, ऐसा कुछ पाने की थी, जो खून और मवाद को, जबतक कि ये कसैला पदार्थ अपना कार्य करे, अवशोषित कर सके और कोई ऐसी चीज, जो इससब को बांध करके एक साथ रख सके। बांस का पेड़ अनेक प्रकार से उपयोगी होता है; हमने इस पौधे का दूसरा उपयोग करने का निश्चय किया। हमने पुरानी टंकियों और रद्दी लकड़ी के पदार्थों से इसके सारांश (pith) को खींचा, और कनस्तरों में रखकर आग के ऊपर सुखाया, और जब ये सूखकर एकदम महीन आटे जैसा हो गया और कपड़े की, ऊन की तरह से ये अधिक अवशोषण करने वाला हो गया। आधी बांस की लुगदी और आधी पत्तियाँ मिलाकर काफी उच्चश्रेणी का संतोषजनक मिश्रण बन गया। दुर्भाग्य से ये बहुत नाजुक था, और एक मशाल के ऊपर गिरकर चूर–चूर हो गया।

उस आधार को, जिसके ऊपर ये मिश्रण रखा जा सके, बनाना इतना आसान नहीं था। हमको नए हरे बांसों की कोंपलों में से बाहरी तंतुओं को हटाकर बाहर निकाल देना था, और उनको सावधानी

से हटा देना था, ताकि हम, उनमें से लंबे से लंबे धागे प्राप्त कर सकें। इनको धातु की चादरों के ऊपर फैलाया गया, जो धरातल को आग से बचाते थे। हमने इनको लंबे–लंबे और आड़े–तिरछे करके फैला दिया, मानोकि हम बुनाई कर रहे हों, मानोकि हम एक लम्बा तंग गलीचा बुन रहे हों। अंत में काफी मशक्कत के बाद, हमें मैला, अव्यवस्थित प्रकार का दिखने वाला, लगभग आठ फुट लंबा और दो फुट चौड़ा एक जाल मिला।

बड़े व्यास वाले बांस के टुकड़ों से, एक लपेटने वाली पिन (rolling pin) तैयार की गई। हमने पत्तियों और गूदे के मिश्रण को, अन्दर दबाते हुए, ठूसठूस कर तबतक उसके जाल में भरा, जब तक कि हमें इस मिलाए हुए मिश्रण की, लगभग एक साथ भरती नहीं मिली, जिससे कि बांस के सभी रेशे बदल गये। तब हमने इसको उलट दिया और ऐसा ही दूसरी तरफ को भी किया। जब हमने समाप्त किया, तो हमें एक पीले–हरे रंग का बांधने वाला पट्टा मिल गया, जिससे खून के बहने को रोका जा सकता था और उसके घाव भरने की प्रक्रिया को तेज किया जा सकता था। हमने कागज बनाने जैसा कुछ काम किया था, और तैयारशुदा पदार्थ, कार्डबोर्ड जैसा मोटा हरे रंग का था, जो आसानी से मोड़ा नहीं जा सकता था, मुलायम था, और इसको उन भोंथरे हथियारों से, जो उस समय हमें उपलब्ध थे, काटना, वास्तव में, आसान नहीं था। परंतु अंत में, हमने कैसे भी, इस पदार्थ को लगभग चार इंच चौड़ी पट्टियों के रूप में, टुकड़ों में काटने का प्रबंध किया और तब हमने इनको उन धातु की चादरों से ऊपर उठाया, जिनके ऊपर ये चिपकी हुई थीं। इस वर्तमान अवस्था में, उनको हफ्तों तक लचीला (flexible) बनाए रखा जा सकता था। हमें वास्तव में, एक प्रकार से वरदान मिल गया।

एक दिन एक औरत ने, जो जापानी केंटीन में काम कर रही थी, बहाना किया कि, वह बीमार थी। वह काफी उत्तेजित (excited) अवस्था में मेरे पास आई। वह एक भंडारकक्ष की सफाई कर रही थी, जिसमें अमेरिकी सेनाओं से छीने हुए, तमाम उपकरण थे। किसी प्रकार भी, उसे एक टिन का डिब्बा हाथ लग गया, जिसके ऊपर से लेबल फट कर निकल गया था, और कुछ लाल–भूरे रंग के रवे बाहर निकल कर गिर गए थे। चारों तरफ से उसको कुरेदने के चक्कर में, गलती से, उसने अपनी उंगलियाँ, यह आश्चर्य करते हुए, कि ये क्या था, उसके अंदर घुसा दी थीं। बाद में, अपने हाथ पानी में डालने पर और उसको रगड़ कर साफ करने के फेर में, उसे लगा कि, उसके हाथों के ऊपर अदरक जैसे भूरे धब्बे पड़ गए। क्या उसे जहर दिया गया! क्या ये जापानियों की एक चाल थी! उसने यह तय किया कि, जल्दी से मेरे पास आना ही अधिक अच्छा होगा। मैंने उसके हाथों को देखा, सूंघा, और तब में एकदम, मानो भावुक हो गया, और मैं आनंद से उछल पड़ा। मुझे स्पष्ट हो चुका था कि, ये धब्बे किस कारण से बने। (कुओं में डालने वाली लाल दवा) पोटाश के परमैगनेट (permagnet of potash) रवों के कारण, जिसकी हमें कई भूमध्यरेखीय (tropical) घावों के मामलों में आवश्यकता थी। मैंने कहा, ''नीना, उस टिन को किसी भी तरह से तुम यहाँ ले आओ। ढक्कन को उसके ऊपर ठीक से लगाना और डिब्बे को एक बाल्टी में रखना, उसे यहाँ ले आना और उसे सूखा रखना।'' वह एकदम प्रसन्न होती हुई, प्रसन्नता के साथ यह सोचती हुई कि, उसने कोई चीज ऐसी ढूँढ़ ली है, जो इन परेशानियों से, कुछ हद तक बचा सकती है, दिन के किसी वक्त, बाद में, वह लौटी और उसने उन रवों का वह डिब्बा मेरे सामने प्रस्तुत किया, और कुछ दिन बाद उसने दूसरा लाकर दिया, और उसके बाद एक और। हमने उसदिन, वास्तव में, अमरीकियों को आशीर्वाद दिया और हमने उन अमरीकी पदार्थों को पकड़ लेने के लिए, जापानियों का भी, वास्तव में, धन्यवाद किया !

भूमध्यरेखीय घाव (tropical ulcer), बहुत घातक चीज होते हैं। पर्याप्त मात्रा में भोजन की कमी और उपेक्षा इनके मुख्य कारण होते हैं। ये भी हो सकता है कि, अच्छी साफसफाई न कर पाना भी, इसमें अपना योगदान देता हो। शुरू में, इसमें हल्की सी खुजली होती है और शिकार व्यक्ति बेसुध

होकर इनको खुजलाता रहता है। तब एक, लाल रंग का आलपिन के सिरे की तरह का छोटा दाना, उभरता है, और यदि इसको खीज या चिड़ के कारण, खरोंच दिया जाए या नोंच दिया जाए, तो नाखूनों में होने वाले संक्रमण, इस घाव में चले जाते हैं। धीमे–धीमे पूरा क्षेत्र, लाल हो जाता है, एकदम लाल। थोड़ी पीली गुत्थियाँ (nodules) खाल के नीचे से निकलकर, औरअधिक झुंझलाहट पैदा करती हैं, औरअधिक खुजली पैदा करती हैं। घाव बाहर की और, औरबाहर की ओर फैलता जाता है। दुर्गन्धयुक्त पदार्थ, मवाद दिखाई देता है। कुछ समय में, शरीर के स्रोत औरअधिक जर्जर हो जाते हैं, और स्वास्थ्य औरज्यादा गिरता जाता है। नरम हड्डियों में होकर, घाव, मांस को खाता जाता है, और अंत में हड्डियों में होकर, उनकी मांसपेशियों और मज्जा (marrow) को समाप्त करता हुआ, नीचे, औरनीचे बढ़ता जाता है और यदि कुछ नहीं किया गया तो, अंत में मरीज मर जाता है।

परंतु, कुछ तो किया ही जाना था। घाव, संक्रमण के स्रोत, किसी भी प्रकार से, जितना जल्दी संभव हो सके, हटाने ही थे। वास्तव में, सभी चिकित्सीय उपकरणों के अभाव में, हमें अत्यंत निराशापूर्ण व्यवस्थायें करनी पड़ीं। मरीज की जान बचाने के लिए, इन घावों को हटाना, आवश्यक था, सारी चीज को निकाल कर बाहर करना, आवश्यक था। इसलिए केवल एक ही चीज यहॉ थी। हमने टिन को मोड़कर एक चम्मच बनाई, और उसके सिरों को अच्छी तरह से धारदार बनाया, उस टिन को आग की लपटों के ऊपर रख कर, कीटाणुरहित बनाया। साथी बंदी, उस पीड़ित की प्रभावित भुजा को पकड़ लेते थे, और तब मैं इस धारदार टिन से, मरे हुए मांस और मवाद को, तबतक, बाहर निकालता था, जब तक कि, केवल स्वस्थ तंतु, और साफ मांस न बचा रह जाए। हमें ये अच्छीतरह सुनिश्चित करना पड़ता था कि, संक्रमण की कोई भी चीज, निगाह से छूट न जाए अथवा पीछे न छोड़ दी जाए, नहीं तो अनचाहे खरपतवार की तरह से, घाव फिर से भर जाएगा। इस घाव के विध्वंस से साफ की गई मांसपेशियाँ, बड़ीगुहा को, जड़ीबूटियों के पेस्ट से भर दिया जाता था, और अनंत सावधानी के साथ, मरीज की देखभाल करके, वापस स्वस्थ किया जाता था। स्वास्थ्य, जो हमारे शिविरों के मानकों के अनुरूप ठीक था! और किसी अन्य स्थान पर, ये मानक लगभग मृत्यु ही होते। पोटाश का यह परमैगनेट, इन घावों के भरने के कार्य में मदद करता था और मवाद के बढ़ने को और दूसरे संक्रमण के स्रोतों को रोकता था। हमने इसे सोने के कणों की भॉति संभाल कर रखा।

तो आपको हमारा इलाज मारक लगा ? ये था! परंतु हमारे इन मारक तरीकों ने अनेक लोगों के प्राण बचाए, और अनेक लोगों की भुजाऐं भी। इस इलाज के बिना घाव बढ़ता, और तंत्र (system) को विषाक्त कर देता, जिससे कि, अंत में, उस पीड़ित के जीवन को बचाने के लिए, भुजा को अथवा टांग को काटना ही पड़ता (वह भी बिना निश्चेतक के)। हमारे शिविरों में स्वास्थ्य, वास्तव में, एक समस्या थी। जापानियों ने हमें किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं दी, इसलिए अंत में मैंने अपना ध्यान श्वसन के ज्ञान के ऊपर लगाया, और शिविर के अनेक लोगों को, विशेष उद्देश्यों के लिए विशेष श्वसन की प्रणाली सिखाई, क्योंकि उचित श्वसन, कुछ निश्चित लयों (rhythm) के साथ में श्वसन, इससे कोई व्यक्ति, मानसिक रूप से और शारीरिक रूप से, अपने स्वास्थ्य को बहुत अच्छा कर सकता है।

श्वसन के इस विज्ञान को, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझे पढ़ाया, जब उन्होंने मुझे, एक पहाड़ी पर चढ़ते समय, हाँफते हुए, और लगभग हाँफकर गिरने की अवस्था में पकड़ लिया। ''लोबसांग, लोबसांग,'' उन्होंने कहा, ''तुम क्या कर रहे थे'' उस भयानक अवस्था में, तुम अपने लिए क्या कर रहे थे ? ''आदरणीय स्वामी'' मैंने हाँफते हुए जवाब दिया, ''मैं ऊँची बैसाखियों (stilts) के ऊपर, पहाड़ी पर ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहा था।'' उन्होंने मुझे दुःख के साथ देखा, और दुःखी होकर त्याग देने की स्थिति में, अपने सिर को हिलाया। उन्होंने लंबी आह भरी और मुझे बैठ जाने का इशारा किया। थोड़े समय की लिए यहाँ शांति थी, हम दोनों के बीच में शांति, अर्थात् केवल मेरे सांस लेने की कर्कश आवाज थी, जबतक कि, मैं फिर से अपनी सामान्य अवस्था में न आ जाऊँ।

मैं लिंगखोर रोड पर, तीर्थयात्रियों को दिखाते हुए – ये दिखावा करते हुए कि, ल्हासा में चाकपोरी के भिक्षुक, किसी भी दूसरे की तुलना में, किस प्रकार आगे और तेजी से, भलीभँति चल सकते हैं, नीचे की और बैसाखियों के ऊपर, चल रहा था। मैं इस बात को और अधिक तरीके से, निश्चयात्मक ढंग से सिद्ध करने के लिए, मुड़ा और बैसाखियों के ऊपर, दौड़कर पहाड़ी पर चढ़ने लगा। जैसे ही मैंने पहले मोड़ पर घूमने की कोशिश की, मैं तीर्थयात्रियों की निगाह के बाहर हो गया, और बहुत थकान के कारण गिर गया, और उसके ठीक बाद, मेरे शिक्षक मेरे पास आए और उन्होंने मुझे, उस दुखपूर्ण स्थिति में देख लिया।

''लोबसांग, वास्तव में ये समय है कि तुम कुछ और सीखो। खेल काफी हो गया, खेल काफी हो चुका। अब तुम जिस अच्छे तरीके से प्रदर्शित कर चुके हो, तुमको वास्तव में, सांस लेने के सही विज्ञान की शिक्षा पाने की आवश्यकता है। मेरे साथ आओ। हम ये देखेंगे कि, इस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए क्या इलाज किया जा सकता है।'' वह अपने पैरों पर खड़े हुए, और पहाड़ी पर मेरे आगे–आगे चले। मैं अनिच्छापूर्वक उठा, अपनी बैसाखियों को उठाया, जो आड़ी तिरछी पड़ी थीं, और उनके पीछे चला। वे आसानी से लंबे डग भरते हुए, ऊपर चढ़े, वे तैरते हुए से लगे। उनकी चाल में बिलकुल किसी प्रकार का प्रयास नहीं था, और मैं उनसे कई वर्ष छोटा, उनके पीछे हाँफते हुए, संघर्ष कर रहा था, जैसे कि एक कुत्ता गर्मियों के दिनों में हाँफता है।

पहाड़ी की चोटी पर, हम अपने लामामठ के एक प्रकोष्ठ में गए, और मैंने अपने शिक्षक का उनके कमरे तक अनुगमन किया। हम अंदर जमीन पर सामान्य तरीके से बैठे, और लामा ने अपरिहार्य चाय के लिए घण्टी बजाई, जिसके बिना कोई भी तिब्बती, किसी प्रकार का गंभीर वार्तालाप प्रारंभ नहीं कर सकता! हमने तबतक शांति रखी जबतक कि, सेवादार भिक्षुक चाय और त्सम्पा के साथ में नहीं आया, और जैसे ही वह बाहर गया, लामा ने चाय को उड़ेला और श्वसन की कला के संबंध में मुझे पहला शिक्षण दिया, निर्देश जो मेरे लिए, इस बंदी शिविर में, अमूल्य थे ।

''तुम हाँफ रहे हो और एक बूढ़े आदमी की तरह से हाँफ रहे हो, लोबसांग'' उन्होंने कहा। ''मैं तुम्हें शीघ्र ही, इसका मुकाबला करने का तरीका बताऊँगा, क्योंकि किसी को भी इतना कठोर परिश्रम नहीं करना चाहिए, जो कि किसी भी सामान्य प्राकृतिक दैनिक की तुलना में अधिक हो। बहुत सारे लोग श्वसन की उपेक्षा करते हैं। वे सोचते हैं कि, वे हवा की एक मात्रा लेते हैं, और हवा की उस मात्रा को बाहर निकाल देते हैं, और फिर दूसरी ले लेते हैं।'' ''परंतु आदरणीय स्वामी,'' मैंने जवाब दिया, ''मैं नौ या अधिक सालों से, लगातार बहुत अच्छी तरह से, सांस लेने में सक्षम हूँ। जैसा मैंने हमेशा व्यवस्था की है, उससे दूसरी तरह मैं कैसे सांस ले सकता हूँ ?'' ''लोबसांग, तुम्हें ये याद रखना चाहिए कि, श्वसन, वास्तव में, जीवन का स्रोत है। तुम चल सकते हो, तुम दौड़ सकते हो, परंतु सांस के बिना तुम दोनों में से कुछ नहीं कर सकते। तुम्हें नया तरीका सीखना चाहिए, और सबसे पहले तुम्हें समय का एक मानक बनाना चाहिए, जिसमें सांस लेनी है, क्योंकि जबतक तुम ये नहीं जानते हो, कि ये मानक समय, किसी भी तरीके से, तुम्हारी सांस के समय को विभिन्न अनुपातों में, टुकड़ों में बांट सकता है। हम अलग–अलग उद्देश्यों के लिए, अलग–अलग दर से सांस लेते हैं'' उन्होंने मेरी बांई कलाई को हाथ में लिया और एक स्थान ये कहते हुए इंगित किया, ''अपने दिल को देखो, अपनी नब्ज को देखो। तुम्हारी नब्ज एक लय में चलती है एक, दो, तीन, चार, पांच, छः। अपने आप अपनी उंगली को अपनी नब्ज पर रखो, और महसूस करो, और तब तुम ये समझोगे कि, मैं किसके बारे में कह रहा हूँ।'' मैंने ऐसा किया; मैंने अपनी उंगली को अपनी वायीं कलाई के ऊपर रखा और अपनी नब्ज की दर को, जैसा उन्होंने कहा अनुभव किया, एक, दो, तीन, चार, पांच, छः। मैंने अपने शिक्षक की ओर देखा, जैसे–जैसे उन्होंने कहना जारी रखा, ''यदि तुम इसके बारे में सोचोगे तो तुम पाओगे कि, तुम एक सांस को जितनी देर में लेते हो, तुम्हारा दिल उतनी देर में छः बार धड़कता है, परंतु ये काफी नहीं है। तुमको ये

सांस लेने की दर बदलने के लिए पूरी तरह सक्षम होना चाहिए, और हम कुछ क्षणों में इसको विस्तार से बतायेंगे,'' वह थोड़ी देर के लिए रुके, मेरी ओर देखा और कहा, ''क्या तुम जानते हो लोबसांग, तुम लड़के लोग – मैं तुम्हें खेलते समय देखता रहा हूँ – बड़ी जल्दी अपने आपको थका लेते हो, क्योंकि, सांस लेने के बारे में तुम ये पहली बात ही नहीं जानते। तुम सोचते हो कि, जबतक तुम इस हवा को अंदर लेते रहोगे और बाहर करते रहोगे, तबतक पूरा मामला यही है। तुमको और गलत नहीं होना चाहिए। मुख्यरूप से सांस लेने के चार तरीके हैं, इसलिए हम उनका परीक्षण करें और ये देखें कि वे हमें क्या दे सकते हैं, देखें कि वे क्या हैं। पहला तरीका, वास्तव में, एक बहुत खराब तरीका है। इसे ऊपरी श्वसन कहा जाता है, क्योंकि इस तरीके से छाती और फेफड़ों के केवल ऊपरी भाग ही उपयोग में लाये जाते हैं और जैसा तुम जानना चाहिये, यह तुम्हारी श्वसन की गुहा का एक छोटा सा, सबसे छोटा भाग है, इसलिए जब तुम ये ऊपरी सांस लेते हो तो, बहुत कम मात्रा में सांस को, हवा को, अपने फेफड़ों में ले जाते हो, परंतु खराब हवा का एक बहुत बड़ा हिस्सा, काफी अंदर, गहरे में ही रुका रहता है। देखो, तुम इस अवस्था में, अपनी छाती के केवल ऊपरी हिस्से को ही हिलने देते हो। तुम्हारी छाती का निचला हिस्सा और तुम्हारा पेट अभी स्थिर रहते हैं, जो वास्तव में एक बहुत बुरी चीज है, बहुत बुरी बात है। इस उथली सांस लेने को भूल जाओ लोबसांग, क्योंकि ये एकदम बेकार है। ये सांस लेने का सबसे खराब तरीका है, जो कोई भी कर सकता है, इसलिए हमें दूसरें तरीकों की ओर मुड़ना चाहिए।

वे रुके, और ये कहते हुए, मेरी ओर देखने के लिए मुड़े, ''देखो ये उथली सांस है। इसे तनाव की स्थिति में देखो, मैं इसका अनुकूलन करता हूँ। परंतु ये जैसा तुम बाद में समझोगे, ये उस प्रकार का श्वसन है, जो अधिकांश पश्चिमी लोगों के द्वारा, तिब्बत के बाहर के अधिकांश लोगों के द्वारा, और भारत में की जाती है। ये उन्हें ऊन के समान सोचने के लिए भ्रमित करती है, और उन्हें दिमागी रूप से आलसी बनाती है।'' मैंने आश्चर्य में खुले हुए मुँह से, उनकी ओर देखा। मैं निश्चितरूप से, ये नहीं कल्पना कर सकता था कि, श्वसन भी इतना अलग प्रकार का मामला है। मैंने सोचा कि, मैं आवश्यकरूप से, ठीक तरीके से, व्यवस्थित हूँ, और अब मैं यह सीख रहा था कि, मैं गलत था। ''लोबसांग, तुम मेरी तरफ अधिक ध्यान नहीं दे रहे हो। अब हम श्वसन के दूसरे तरीके की तरफ को ध्यान देंगे। इसे मध्य श्वसन कहा जाता है। ये भी बहुत अच्छी प्रकार का श्वसन नहीं है। इसको अधिक विस्तार से बताने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि, तुम इसका उपयोग करो, परंतु, जब तुम पश्चिम को जाओगे, तब तुम लोगों को इसके बारे में कहता हुआ सुनोगे कि, ये पसलियों का श्वसन है, या उस तरह का श्वसन, जिसमें परदे को स्थिर रखा जाता है। तीसरी प्रकार का श्वसन निम्न श्वसन कहलाता है, और ये संभवतः पूर्वोक्त दोनों प्रकार के श्वसनों से अच्छा है, यद्यपि फिर भी, ये ठीक नहीं है। कुछ लोग इसे निम्नश्वसन या पेट से सॉस लेना कहते हैं। इस विधि में फेफड़ों में पूरी हवा नहीं भर पाती है। फेफड़ों की हवा पूरी तरह से विस्थापित भी नहीं होती है, इसलिए इसमें फिर से हवा का बासीपन बना रहता है, गंदी सांस, बीमारी। पर इसलिए इन प्रकार के श्वसनों के तरीकों के संबंध में कुछ मत करो, परंतु वैसा करो जैसा मैं करता हूँ, वैसा करो, जैसा यहाँ के दूसरे लामा लोग करते हैं, पूर्ण श्वसन, और इसको इस तरीके से किया जाना चाहिए।'' आह! ''मैंने सोचा,'' हम इस पर नीचे आते जा रहे हैं, अब मैं कुछ सीखने वाला हूँ, उन्होंने ये सारी चीजें मुझे पहले क्यों नहीं बताई और वे कहते हैं कि मुझको करना चाहिए ?'' ''क्योंकि लोबसांग,'' मेरे विचारों को स्पष्टरूप से पढ़ते हुए, मेरे शिक्षक ने कहा – ''क्योंकि तुमको कमियों और उसके साथ–साथ मूल्यों को जानना चाहिए। चूंकि तुम यहाँ चाकपोरी में रहे हो,'' मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, ''तुमने निस्संदेह ध्यान दिया होगा कि, हम किसी के मुँह को बंद रखने के महत्व पर जोर देते हैं और दुबारा फिर जोर देते हैं। केवल मात्र इतना ही नहीं है कि, हम गलत बयान दे सकते हैं, कि एक आदमी केवल नकुओं से सांस ले सकता है। यदि तुम मुँह से सांस लोगे, तो तुम नकुओं में लगे हुए हवा छानने

वालें स्वाभाविक छन्नकों का और ताप के नियंत्रण की उस प्रक्रिया का, जो मानवशरीर में है, लाभ नहीं उठा सकोगे। और फिर से, यदि तुम मुँह से सांस लेने की क्रिया में चलते रहे तो तुम्हारे नकुए बंद हो जाऐंगे, इससे किसी को जुकाम (catarrh), सर्दी (cold) हो सकती है और सिर में दर्द हो सकता है, और दूसरी तमाम शिकायतों का गठ्ठा इकट्ठा हो सकता है।'' मैं खुद को दोषी मानता हुआ, सावधान हुआ कि मैं अपने शिक्षक की ओर, खुले मुँह से आश्चर्यजनकरूप से, उनको देख रहा था। अब मैंने अपने मुँह को, एकदम इतनी तेजी के साथ कि, मेरी ऑखे आश्चर्य से चमक उठीं, बंद किया परंतु उन्होंने इसके बारे में कुछ नहीं कहा; बदले में उन्होंने कहना जारी रखा, नकुए वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण चीज हैं, और उनको साफ रखा जाना चाहिए। यदि तुम्हारे नकुए कभी गंदे हो जाऐं, तो उनमें थोड़ा सा पानी ऊपर सूंतो, और उसे मुँह में चला जाने दो, जिससे तुम इसको मुँह से होकर बाहर निकाल सको। तुम कुछ भी करो लेकिन मुँह से सांस मत लो, केवल नकुओं से लो। यदि तुम गुनगुना पानी उपयोग में लाओ, ये कैसे भी मदद कर सकता है। ठंडा पानी, तुम्हें छींकने के लिए बाध्यकर सकता है।'' वे घूमे और उन्होंने अपने बगल की घंटी को बजाया। एक नौकर प्रविष्ट हुआ और उसने चाय के जग को पूरा भर दिया और दुबारा से ताजा त्सम्पा लाया। वह झुका, और बाहर चला गया। कुछ क्षणों के बाद, लामा मिंग्यार डोंडुप ने मेरे प्रति अपने आख्यान को दुबारा से जारी रखा। ''अब लोबसांग, हम तुम्हें श्वसन के सही तरीके को बतायेंगे, वह तरीका जिससे तिब्बत के कुछ लामाओं ने अपनी जीवनावधि को महत्वपूर्ण लंबाई तक बढ़ा दिया है। अब हम पूर्णश्वसन की बात करें। जैसा इसका नाम बताता है, ये बाकी के तीनों तरीकों को अपने आप में समेट लेता है, निम्न श्वसन, मध्यम श्वसन, उथला श्वसन, जिससे कि फेफड़े, वास्तविक रूप से, हवा से पूरे भर जाते हैं, और इसलिए खून अच्छी तरह साफ हो जाता है और जीवनशक्ति से भर जाता है। ये सांस लेने का बहुत आसान तरीका है। तुम्हें बैठना पड़ेगा या एक सुविधाजनक स्थिति में खड़े हो और नकुओं से सांस लो। लोबसांग, कुछ क्षण पहले मैंने तुम्हें, नाक रगड़ते हुए, पूरी तरह से आगे झुके (slouching) हुए देखा था, और जब तुम आगे की तरफ झुके हुए हो, तुम ठीक तरीके से सांस नहीं ले सकते थे। तुमको अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी रखनी चाहिए। सही सांस लेने का ये पूरा रहस्य है।'' उन्होंने मेरी ओर देखा, और आह भरी, परंतु उनकी ऑखों की चमक ने उनके आह की गहराई को झुठला दिया! तब वह उठे, और चल कर मेरी तरफ आए, मेरी कोहनियों के नीचे अपने हाथ रखे और मुझको उठा दिया, ताकि मैं एकदम सीधा बैठ सकूँ। ''अब लोबसांग, तुमको इस तरीके से बैठना चाहिए, इस तरीके से, अपनी रीढ़ की हड्डी को एकदम सीधे रखते हुए, अपने पेट को अपने नियंत्रण में रखते हुए, भुजाओं को अपनी बगल में रखते हुए। अब इस प्रकार बैठो। अपनी छाती को फुलाओ। अपनी पसलियों को बाहर की ओर धकेलो, और तब अपने (फेंफड़ों के) परदे को खींचो, ताकि पेट का निचला भाग भी अंदर को खिंचे। इस तरह से तुम पूरा श्वसन करोगे। इसमें जानने के लिए, जादू जैसा, कुछ भी नहीं है, तुम्हें मालुम है लोबसांग। ये सामान्य समझदारी वाला श्वसन है। तुमको जितनी ज्यादा संभव हो सके, उतनी ज्यादा हवा अंदर सांस में लेनी चाहिए, और तब तुम इस पूरी हवा को बाहर निकाल पाओगे और इसे विस्थापित कर पाओगे। एक क्षण के लिए, तुम यह अनुभव कर सकते हो कि, ये सप्रयास है अथवा तुम इसे उलझा हुआ महसूस कर सकते हो और ये भी कि ये बहुत ज्यादा कठिन है, इतना प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है, परंतु वास्तव में इतना ही प्रयास करने की आवश्यकता है। तुम महसूस करते हो कि ऐसा नहीं है, क्योंकि तुम आलसी हो, क्योंकि तुम बाद वाले, एक लापरवाह तरीके के श्वसन में पड़ गए हो, और अब तुमको अपने श्वसन को अनुशासित करना होगा।'' मैंने वैसे सांस ली जैसा कहा गया था, और मेरे विचारणीय आश्चर्य के साथ मैंने पाया कि, यह बहुत आसान थी। मैंने पाया कि मेरा सिर, कुछ समय के लिए थोड़ा घूमता हुआ सा प्रतीत हुआ, परंतु ये अभी भी पहले से आसान था। मैं रंगों को अधिक स्पष्ट रूप से देख सकता था और कुछ मिनटों में मैंने अच्छा अनुभव किया।

''मैं तुम्हें रोजमर्रा के कुछ श्वसन अभ्यास देने वाला हूँ, लोबसांग, और मैं चाहता हूँ कि तुम इन को जारी रखो। यह लाभप्रद है। तुम्हें सांस टूटने की परेशानी और अधिक नहीं होगी। पहाड़ी पर थोड़ा सा घूमना ही तुमको भारी पड़ गया, परंतु मैं जो तुमसे उम्र में कई गुना बड़ा हूँ बिना किसी परेशानी के ऊपर आ सकता हूँ।'' जब मैं, जैसा उन्होंने सिखाया, उस प्रकार से सांस ले रहा था, वह पीछे बैठे, और मुझे देखा। निश्चित रूप से, इस प्रारंभिक अवस्था में ही मैं उनके ज्ञान की प्रशंसा करूँगा। वह स्वयं फिर से व्यवस्थित हुए और उन्होंने कहना जारी रखा : ''तुम भले कोई सी भी विधि उपयोग में लाओ, श्वसन का एकमात्र उद्देश्य, ज्यादा से ज्यादा हवा अपने अंदर लेना, और इसे भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में, जिसे हम प्राण कहते हैं, पूरे शरीर में वितरित करना है। यह स्वयं जीवनीशक्ति है। प्राण वह बल है, जो मनुष्य को संचालित करता है, यह हर सजीव चीज को सक्रिय बनाता है, पौधों को, जानवरों को, आदमियों को, यहॉ तक कि, मछलियाँ भी पानी में से निकालकर, आक्सीजन शोषित करतीं हैं, और इसको प्राण में परिवर्तित करती हैं तथापि, हम तुम्हारे श्वसन के संबंध में बात कर रहे हैं, लोबसांग। धीमे से सांस अंदर भरो, उसे कुछ सेकण्डों के लिए रोको। तब उसे धीमे से बाहर निकालो। तुम्हें मालुम होगा कि सांस को अंदर लेने के, रोकने के, बाहर निकालने के विभिन्न अनुपात हैं, जो विभिन्न प्रकार के प्रभाव उत्पन्न करते हैं, जैसे कि सफाई, जीवनदायिनीशक्ति, इत्यादि। शायद, सांस लेने की सबसे अधिक सामान्य महत्वपूर्ण विधि है, जिसे हम सफाई करने वाली सांस कहते हैं। अब हम इसके बारे में बात करेंगे, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि, तुम इसे शुरूआत से अंत तक हर दिन करो, और दिन के शुरू में और अंत में, कुछ विशेष प्रकार के अभ्यास करो। मैं बहुत सावधानी से उनको समझ रहा था। मैं अच्छी तरह जानता था कि, इन उच्चश्रेणी के लामाओं के पास जो शक्ति है, कैसे वे जमीन पर एक आदमी की तुलना में अधिक तेजी से फिसल सकते हैं, और एक दौड़ते हुए घोड़े की तुलना में तेज, और कैसे वे इन स्थानों पर बिना किसी परेशानी के, शांत और नियंत्रित, आ सकते हैं, और मैंने निश्चय किया कि, मैं लामा बनूँ उससे काफी पहले, – क्योंकि इस स्थिति में अभी मैं केवल बेदीसेवक (acolyte) था, – मुझे श्वसन के विज्ञान पर स्वामित्व प्राप्त कर लेना चाहिए।

मेरे गुरू, लामा मिंग्यार डोंडुप ने (कहना) जारी रखा, ''अब, लोबसांग, इस सफाई करने वाली सांस के, तीन पूरी सांसों को अंदर खींचों। उथली छोटी चीजें नहीं, इस तरह की। गहरी सांस, वास्तव में गहरी, अधिकतम गहरी, जितनी तुम ले सकते हो, से अपने फेफड़ों को भरो, अपने आपको खींचों और अपने आपको पूरी तरह से हवा से भर जाने दो। यह ठीक है,'' उन्होंने कहा। ''अब तीसरी सांस के साथ, इस हवा को लगभग चार सेकिंड तक रोको, अपने होठों को घुमाओ, मानो कि तुम सीटी बजा रहे हो, परंतु अपने गालों को मत फूलने दो। अपने होठों के खुले हुए भाग से थोड़ी सी हवा को पूरी शक्ति के साथ, जितना तुम कर सकते हो, बाहर फूँको। इसे तेजी से बाहर फैंको, इसे मुक्त हो जाने दो। तब बची हुई हवा को रोकते हुए, एक सेकिंड के लिए रुको। अब पूरी ताकत के साथ, जितनी तुम इकट्ठी कर सकते हो, थोड़ा सा और अधिक फूंको। एक और सेकिंड के लिए रुको, और बची हुई पूरी सांस को बाहर निकाल दो, जिससे कि तुम्हारे फेफड़ों के अंदर हवा का लेशमात्र भी बचा न रहे। इसे इतना गहराई के साथ बाहर निकालो, जितना तुम निकाल सकते हो। याद रखो कि, इस अवस्था में तुमको पूरी–पूरी ताकत के साथ, अपने खुले हुए होठों से सांस को बाहर निकाल देना चाहिए। क्या अब तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि, ये खासतौर से ताजा करने वाला है ?'' आश्चर्य के साथ, मुझे सहमत होना पड़ा। सांस को फुलाना करना और बाहर निकालना, यह मुझे थोड़ा मूर्खतापूर्ण लगा था परंतु अब मैंने कई बार इसका अभ्यास किया है और मैंने वास्तव में पाया कि मैं ऊर्जा के साथ भर गया महसूस करते हुए शायद इससे पहले कभी मैं इतना अच्छा नहीं महसूस किया। इसलिए मैंने हवा भरी (puffed), और फिर हवा भरी, और मैंने अपने आपका विस्तार किया, और मैंने अपने गालों को फुलाया। तब अचानक मुझे महसूस हुआ कि, मेरा सिर घूम रहा है। मुझे ऐसा लगा कि, मैं हलका हो गया हूँ, और हलका हो

गया हूँ। धुंध में से मैंने अपने शिक्षक को कहते सुना, ''लोबसांग, लोबसांग रूको, तुम्हें इसप्रकार सांस नहीं लेनी चाहिए। जैसे मैं तुम्हें बताता हूँ वैसे सांस लो। प्रयोग मत करो, क्योंकि ऐसा करना घातक है। अब तुम गलत श्वसन के कारण, जल्दी–जल्दी सांस लेन के कारण, अपने आपको मदमस्त (intoxicate) कर लिया है। केवल वैसे अभ्यास करो, जैसे मैं तुम्हें अभ्यास करने के लिए कहता हूँ, क्योंकि मुझे अनुभव है। बाद में तुम अपने साथ स्वयँ प्रयोग कर सकते हो। परंतु, लोबसांग, हमेशा ध्यान रखो कि, जिनको तुम पढ़ा रहे हो, उनको सावधानी से, इस अभ्यास को समझने की और प्रयोग न करने की हिदायत दो। उन्हें विभिन्न अनुपातों के साथ, सांस के प्रयोग करने की मत कहो, जबतक कि, उनके साथ कोई सुयोग्य शिक्षक न हो, क्योंकि श्वसन के साथ प्रयोग करना, वास्तव में, खतरनाक है। सुनिश्चित अभ्यास का प्रयोग करना सुरक्षित है, यह स्वास्थ्यकर है, और जो लोग बताए अनुसार श्वसन करते हैं उन्हें इससे कोई नुकसान नहीं हो सकता।''

लामा उठकर खड़े हो गए, और उन्होंने कहा, ''अब, लोबसांग, ये एक महान विचार होगा यदि हम तुम्हारी नाड़ियों के बल को बढ़ायें। जैसा मैं खड़ा हूँ, वैसे सीधे खड़े हो। सांस अंदर भरो, ज्यादा से ज्यादा, जितनी तुम भर सकते हो, और जब तुमको लगता है कि तुम्हारे फेफड़े पूरी तरह भर गए हैं, तो थोड़ी और सांस लो। धीमे–धीमे बाहर निकालो। धीमे से। अपने फेफड़ों को दुबारा, फिर से पूरा भरो, और उस सांस को रोको। बिना किसी प्रयास के, अपनी बाहों को अपने सामने सीधा फैलाओ, तुम पर्याप्त शक्ति के साथ, अपनी बाहों को अपने ठीक सामने रखना और उनको क्षेतिज बनाए रखना, जानते हो, परंतु इसके लिए, तुम थोड़ा सा प्रयास करो, जो तुम कर सकते हो। अब देखो, ध्यान से मुझे देखो। मांसपेशियों को धीमे–धीमे सिकोड़ते हुए और उन्हें कड़ा बनाते हुए, अपने हाथों को पीछे कंधे की तरफ खींचो, ताकि जिस समय तक तुम्हारे हाथ तुम्हारे कंधों को छुऐं, तुम्हारी मांसपेशियाँ पूरी तरह तन कर कसी हुई, चिपकी हुई, और मुठ्ठियॉ कसकर बंधी हुई हों। मुझे ध्यान से देखो। मैं अपने मुठ्ठियों को भींच रहा हूँ। अपने हाथों को इतनी कड़ाई के साथ भींचो कि वे प्रयास से जकड़ जाऐं। अपनी मांसपेशियों को वैसा ही रखते हुए, अपनी मुठ्ठियों को धीमे–धीमे खोलो, तब उन्हें तेजी से पीछे खींचो कई बार, शायद आधीदर्जन बार। सांस को ताकत के साथ बाहर निकालो, वास्तव में ताकत के साथ, जैसा मैंने तुमसे पहले कहा था, मुँह से होठों से सिकोड़े हुए, और उनके बीच में, मात्र एक छेद बनाते हुए, जिससे सांस को जितना तेजी से तुम बाहर निकाल सकते हो, निकालो। जब तुम इसे कई बार कर चुको, उसके बाद, सफाई करने वाली सांस का एक बार अभ्यास करने के बाद, इसे समाप्त करो।'' मैंने इसका प्रयत्न किया, और पाया कि ये मेरे लिए पहले के समान ही हितकारी थी। इसके अतिरिक्त ये मेरे लिए मौज थी, और मैं हमेशा मौज के लिए तैयार रहता हूँ। मेरे शिक्षक ने मेरे विचारों को तोड़ दिया। ''लोबसांग, मैं ये जोर देकर कहना चाहता हूँ, और फिर जोर देना चाहता हूँ कि, मुठ्ठियों को पीछे खींचने की गति और तब मांसपेशियों का तनाव, ये बताता है कि, तुम इससे कितना लाभ प्राप्त कर सकते हो। स्वाभाविकरूप से तुम ये पूरी तरह निश्चित कर चुके होगे कि, तुम्हारे फेफड़े इस अभ्यास को करने के पहले, पूरी तरह भरे हुए हैं। ये एक प्रकार से, अमूल्य अभ्यास है, और ये तुम्हें बाद के वर्षों में, बहुत अधिक सीमा तक सहायता करेगा।''

वह नीचे बैठे और मुझे इस विधि से गुजरते हुए हुए देखा, आसानी से मेरी गलतियों को सुधार करते हुए, और जब मैंने ठीक किया तो मेरी प्रशंसा करते हुए, और जब वह पूरी तरह संतुष्ट हो गए, ये निश्चित करने के लिए कि, अब मैं बिना उनके निर्देशों के, स्वयं ही आगे इन्हें कर सकता हूँ, उन्होंने ये सभी अभ्यास, मुझसे दुबारा कराये। अंत में उन्होंने मुझे अपने बगल में बैठने का इशारा किया। तब उन्होंने बताया कि, उन पुराने अभिलेखों को पढ़ लेने के बाद, जो पोटाला की गहरी गुफाओं में, काफी नीचे थे, तिब्बती श्वसन का तरीका किस प्रकार बना था।

मेरे बाद के अध्ययन में, मुझे श्वसन के विभिन्न तरीकों के बारे में बताया गया, विभिन्न चीजों के

बारे में, क्योंकि हम तिब्बती केवल जड़ीबूटियों से ही इलाज नहीं करते हैं, बल्कि मरीज की सांस से भी इलाज करते है। श्वसन, वास्तव में, जीवन का एक स्रोत है, और उन लोगों को, जिनको शायद, लंबे समय से चलने वाली कुछ बीमारियॉ हैं, उनको समाप्त करने के लिए या उनके कष्टों को हलका करने के लिए, यहाँ कुछ बिन्दु बताना दिलचस्प हो सकता है। ये उचित श्वसन के द्वारा ठीक की जा सकतीं हैं। तुम जानते हो, परंतु याद रखो – ठीक वैसे ही श्वसन करो, जैसे इन पेजों में सलाह दी गई है, क्योंकि प्रयोग करना घातक है, जबतक कि एक सक्षम शिक्षक सामने न हो, अंधेपन से प्रयोग करना वास्तव में नादानी होगी।

पेट की, यकृत की, खून की बीमारियॉ, जिसे हम ''रोकी गई सांस कहते हैं'' से ठीक की जा सकती हैं। इसमें परिणामों को छोड़कर, कुछ भी जादुई नहीं है, ध्यान रखो, परिणाम वास्तव में अत्यधिक जादुई दिख सकते हैं, जिनका कोई सानी नहीं है। परंतु – पहले तुमको सीधे खड़ा होना चाहिए, या यदि तुम बिस्तर में हो, तो सीधे लेटो। हम मान लें, यद्यपि, कि तुम बिस्तर पर नहीं हो और सीधे खड़े हो सकते हो। अपनी एड़ियों को मिलाकर, अपने कंधों को पीछे करते हुए और छाती को बाहर निकालते हुए, सीधे खड़े हो। तुम्हारा निचला पेट, कठोररूप से नियंत्रित हो जाएगा। जितनी ज्यादा से ज्यादा हवा तुम अंदर ले सकते हो, पूरी तरह से अंदर सांस भरो, और इसे तबतक अंदर बनाकर रखो, जब तक कि, तुम अपनी दायीं और बायीं कनपटियों में एक हल्की सी– बहुत हल्की सी, धमक महसूस न करो। जैसे ही तुम ये अनुभव करो, सांस को खुले हुए मुॅह से, ताकत के साथ, वास्तव में ताकत के साथ, तुम जानते हो, इसे धीमे से नहीं बहने देना है, बल्कि मुॅह से, अपने नियंत्रण में, पूरे बल के साथ, तेजी से फैंकते हुए, बाहर निकाल दो। तब तुमको सफाई करने वाली सांस लेनी चाहिए। इसको दुबारा कहने की कोई तुक नहीं है, क्योंकि इसके बारे में, मैं तुम्हें बता चुका हूँ, जैसेकि मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझे बताया। मैं यहाँ इसे दोहराऊॅगा कि, सफाई करने वाली सांस, वास्तव में, अमूल्य है और तुम्हारे स्वास्थ्य को सुधार करने के लिए सक्षम है।

इससे पहले कि हम श्वसन के बारे में कुछ कर सकते हैं हमें एक लय बनानी चाहिए, समय का एक मानक, जो सामान्य श्वसन को निरूपित करता है। मैं पहले ही बता चुका हूॅ कि जैसा मुझे पढ़ाया गया था, परंतु शायद इस मामले में दोहराना लाभदायक होगा, ताकि इसे किसी के दिमाग में स्थाईरूप से टिकाया जा सके। किसी व्यक्ति के हृदय की धड़कन, लय का ठीक मानक है, क्योंकि उस व्यक्ति के लिए जो सांस ले रहा है। मुश्किल से कोई इसी प्रकार का स्टेंडर्ड वास्तव में बना सकेगा, परंतु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम अपनी सामान्य श्वसन की लय को प्राप्त कर सकते हो अपनी उँगलियों को अपनी नब्ज के ऊपर रखकर के और उन्हें गिनकर के। अपने सीधे हाथ की उंगलियों को बांए हाथ की कलाई के ऊपर रखो और नब्ज को अनुभव करो। हम मान लें कि ये एक औसत है एक, दो, तीन, चार, पांच, छः। इस लय को अपने अवचेतन में अच्छी तरह से जमा लो, ताकि इसे तुम अचेतनरूप से जान सको, ताकि तुम्हें इसके संबंध में विचार नहीं करना पड़े। इससे कोई प्रभाव नहीं पड़ता – इसको दोहराना – कि तुम्हारी लय कितनी लंबी है जिसे तुम जानते हो, जिसे तुम्हारा अवचेतन जानता है, परंतु हम कल्पना कर रहे हैं कि, तुम्हारी लय एक औसत है, जिसमें सांस का अंदर भरना, तुम्हारी हृदय की छैः धड़कनों में पूरा होता है। ये एक रोजमर्रा जिन्दगी का सामान्य काम है। विभिन्न उद्देश्यों के लिए, तुम उसे, श्वसन की दर को, बदल सकते हो। इसमें कोई कठिनाई नहीं है। वास्तव में, ये बहुत आसान चीज है, जो स्वस्थ अवस्था में परिणामित होती है। तिब्बत के उच्चश्रेणी के सभी बेदीसेवकों (acolytes) को श्वसन सिखाया जाता था। हमारे पास कुछ निश्चित अभ्यास हैं, जिनको हमें कुछ भी पढ़ने से पहले करना चाहिए, और ये सभी मामलों में प्राथमिक प्रक्रिया है। क्या तुम इसे जाँच कर देखोगे ? तब सबसे पहले सीधे तनकर बैठो, यदि तुम चाहो, तुम खड़े हो सकते हो, परंतु यदि तुम बैठ सकते हो, तो खड़े होने की कोई तुक नहीं है । पूरे श्वसन तंत्र से धीमे–धीमे सांस लो,

अर्थात् छाती और पेट, जितनी देर में नब्ज के छैः मानकों को गिनें। तुम जानते हो, ये बहुत आसान है। तुम्हें केवल अपनी नब्ज के ऊपर, अपनी कलाई पर उँगली रखनी है और हृदय को खून बाहर निकाल देने दो। एक बार, दो बार, तीन बार, चार बार, पांच बार, छैः बार। जब अंदर सांस भरने का छैः नब्जों के बाद तुम्हारा समय पूरा हो जाए, तो तुम इसे तीन धड़कनों के लिए, दिल में रोको। इसके बाद, दिल की छैः धड़कनों के लिए, नकुओं के माध्यम से उसे बाहर निकालो अर्थात् उतने ही समय के लिए जितने में तुमने सांस अंदर ली थी। जब तुम सांस को बाहर निकाल चुके हो, तो अपने फेफड़ों को तीन नब्ज मानकों के लिए, खाली रखो, और तब फिर से शुरूआत करो। इसे जितनी बार तुम कर सकते हो करो, परंतु अपने आपको थकाओ नहीं। जैसे ही तुम थकान महसूस करो, रुक जाओ। तुमको व्यायाम से अपने आपको कभी थकाना नहीं चाहिए, क्योंकि यदि तुम ऐसा करते हो, तो इन पूरे अभ्यासों के पूरे उद्देश्य को ही मात दे देते हो। ये तुममें स्फूर्ति लाने के लिए हैं और किसी को अस्वस्थ अनुभव करने के लिए, किसी को थका देने के लिए या स्थिर बना देने के लिए नहीं।

हमने सदैव ही सफाई वाली सांस के अभ्यास से शुरूआत की है, और इसको बहुत अक्सर नहीं किया जा सकता। ये पूरी तरह सुरक्षित और हानिरहित है, और बहुत अधिक लाभदायक है। ये फेफड़ों को बासी हवा से बचाकर रखती है, उनको अशुद्धियों से बचाती है, और इसलिए तिब्बत में क्षयरोग बिलकुल नहीं होता। इसलिए जब कभी आप ऐसा करना चाहें, आप सफाई वाली सांस का अभ्यास कर सकते हैं, और आपको इससे बड़े से बड़े लाभ मिलेंगे।

मानसिक नियंत्रण प्राप्त करने का एक बहुत अधिक अच्छा तरीका है, एकदम सीधा बैठना, और एक पूरी सांस को अंदर खींचना। तब फिर एक सफाई वाली सांस को लेना। इसके बाद एक, दो, चार की दर से सांस को अंदर भरना। उदाहरण के लिए (थोड़े परिवर्तन की दृष्टि से इन्हें सेकंड मान लें) पॉच सेकंड के लिए सांस अंदर लो, तब पाँच सेकंड का चार गुना यानि बीस सेकंड तक रोको। तब उसे दस सेकंड के अंदर बाहर निकालो। तुम्हारे काफी कष्ट ठीक श्वसन से स्वयं ठीक हो सकते हैं, और ये बहुत अच्छा तरीका है; यदि तुम्हें थोड़ा दर्द हो तो लेट जाओ, या सीधे बैठो इससे कैसे भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तब, ये विचार अपने मन में रखते हुए कि, हर सांस के साथ दर्द घट रहा है, हर बाहर निकलती हुई सांस के साथ, दर्द भी बाहर धकेला जा रहा है, लय के साथ सांस लो। कल्पना करो कि, हरबार जब तुम सांस लेते हो जीवनशक्ति अंदर आती है, जो कष्ट को दूर भगाती है, और कल्पना करो कि, हरबार जब तुम सांस को बाहर फैंकते हो, तुम कष्ट को बाहर फैंकते हो। अपने हाथ को प्रभावित अंग के ऊपर रखो, और कल्पना करो कि, तुम्हारा हाथ हर सांस के साथ तुम्हारे कष्ट के पथ को पोंछ रहा है। इसे सात पूरी सांसों के लिए दोहराओ। तब सफाई वाली सांस लो, अब उसके बाद, धीमे–धीमे और सामान्य सांस लेते हुए, कुछ सेंकंड के लिए आराम करो। शायद तुम पाओगे कि, दर्द पूरी तरह गायब हो गया है, या कम से कम, इतना कम हो गया है कि, वह तुम्हें परेशान नहीं करता। परंतु यदि किसी कारण से तुम्हें अभी भी दर्द बचा रहे, तो दुबारा फिर इसी तरीके से, एक या दो बार इसे फिर से तबतक दोहराओ, जबतक कि अंततक आराम नहीं मिल जाए। तुम वास्तव में, अच्छी तरह समझ जाओगे, कि ये एक अप्रत्याशित दर्द था, और यदि ये दुबारा होता है, तब तुम्हें अपने डॉक्टर को इसके संबंध में पूछना पड़ेगा, क्योंकि दर्द, प्रकृति की तरफ से चेतावनी होती है कि, कुछ गलत हो रहा है, और जबकि ये पूरी तरह सही है, और दर्द को घटाना अनुमत है, जबकि कोई इसके बारे में जानता हो, फिर भी ये आवश्यक है कि, कोई इसको जानने का प्रयास करे कि, ये किस कारण से हुआ, कारण का इलाज करना आवश्यक है। दर्द को कभी भी उपेक्षित नहीं रहने देना चाहिए।

यदि तुम थके हुए महसूस कर रहे हो, या तुम्हें ऊर्जा की सहसा आवश्यकता है, तो इसे संभालने का एक सबसे शीघ्रतम तरीका है। एकबार फिर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि, आप खड़े हैं या बैठें हैं परंतु अपने पैरों को मिलाकर रखें, अँगूठे और एड़ियाँ परस्पर मिली हुईं। अपने हाथों को बंद

करें ताकि दोनों हाथों की उँगलियाँ आपस में एक दूसरे में फंस जायें, और तुम्हारे हाथ और पैर एक प्रकार का बंद वृत्त बना लें। कुछ बार के लिए, लय के साथ सांस लें, गोया लंबी सांसे, और सांस निकालते समय धीमे रहें, तब तीन धड़कनों के मानक के लिए रुकें और फिर सफाई वाली सांस लें। तुम्हें लगेगा कि तुम्हारी थकान मिट गई है।

कई लोग, जब साक्षात्कार के लिए जाते हैं, वास्तव में, बहुत–बहुत अवसादग्रस्त होते हैं। उनकी हथेलियॉ लसलसी हो जाती हैं और शायद घुटने काँपने लगते हैं। किसी को भी ऐसा होने देने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसपर पार पाना इतना ही आसान है, और ये तरीका है, जब तुम शायद प्रतीक्षा कक्ष में हो, शायद किसी दाँतों के डॉक्टर के यहाँ। नकुओं से वास्तव में, एक लंबी सांस लो, अब उसे दस सेकंड के लिए रोको, तब उस पर पूरे समय तक अपना नियंत्रण रखते हुए, उसे धीमे से बाहर निकालो। दो या तीन सामान्य सांस लेने के लिए, अपने आपको तैयार करो, और तब फिर अपने फफड़ों को भरने के लिए दुबारा दस सेकिंड तक, गहरी सांस अंदर लो। फिर से सांस को रोको, और दस सेकंड लगाते हुए उसे धीमे से बाहर निकालो। बिना किसी के ध्यान में लाए हुए, इसे तीन बार करो, और तुम पाओगे कि तुम पूरी तरह सुनिश्चित हो, आश्वासित हो। तुम्हारे दिल की कुटाई रुक गई होगी और तुम अपने आपको आत्मविश्वास से भरा हुआ और मजबूत पाओगे। जब तुम उस प्रतीक्षाकक्ष को छोड़ो और अपने साक्षात्कार के स्थान पर पहुँचो तो तुम अपने आपको स्वयं के नियंत्रण में पाओगे। यदि तुम्हें धड़कन जैसी या अत्यधिक अवसाद लगे, तो तुम एक लंबी सांस लो और जब दूसरे लोग बात कर रहे हों उसे एक सेकंड के लिए रोको, ऐसा तुम आसानी से कर सकते हो। ये तुम्हारे अंदर बहुत अच्छा आत्मविश्वास भर देगा। सभी तिब्बती इस पद्धति का उपयोग करते हैं। हम भार उठाते समय, श्वास नियंत्रण का उपयोग करते हैं क्योंकि ये भार उठाने का सबसे आसान तरीका है, ये फर्नीचर हो सकता है या किसी भारी बंडल को उठाना। सबसे आसान तरीका है, गहरी सांस लेना और उसे तब तक रोकना, जबतक कि आप वजन उठाए हुए हैं। जब भार उठाने का काम पूरी तरह समाप्त हो जाए, तब तुम धीमे से अपनी सांस को छोड़ सकते हो और अपनी सामान्य सांस को जारी रख सकते हो। लंबी गहरी सांस को रोके हुए भार उठाना आसान होता है। ये स्वयं कोशिश करके देखने की चीज है। ये वास्तविकरूप में भारी किसी चीज को उठाने की कोशिश करने लायक है जब तुम्हारे फेंफड़े हवा से पूरी तरह भरे हों और अंतर को देखो।

क्रोध, भी गहरी सांस के द्वारा, और सांस को रोककर उसे धीमे–धीमे छोड़ने से, नियंत्रित किया जाता है। तुम वास्तव में, किसी भी कारण से, क्रोधित महसूस करते हो – न्यायसंगत या दूसरी तरह से – एक गहरी सांस लो। इसे कुछ सेकिंड के लिए रोको, और उसे धीमे–धीमे बाहर निकालो। तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारी भावनायें तुम्हारे नियंत्रण में हैं, और तुम इसके, इस स्थिति के, स्वामी हो। क्रोध और चिड़चिड़ाहट (irritation) के सामने खुद को समर्पित कर देना, नुकसानदायक है, क्योंकि इससे तुम्हें पेट के अंदर घाव हो सकते हैं। इसलिए, लंबी सांस लेने का, उसको रोकने का, और उसे धीमे से छोड़ने का यह अभ्यास याद रखो।

तुम इन सभी अभ्यासों को, अपने पूरे आत्मविश्वास के साथ कर सकते हो, यह जानते हुए कि इनसे तुम्हें किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होगा, परंतु चेतावनी के कुछ शब्द – इन अभ्यासों को जारी रखो, और किसी भी अगली चीज को काम में मत लाओ जबतक कि एक सक्षम शिक्षक न हो,

क्योंकि गलत तरह से सांस लेने की दी गई सलाह, एक बड़ा नुकसान कर सकती है। हमारे बंदी शिविरों में हमने बंदियों को इस प्रकार से श्वसन कराया। हम इस संबंध में और गहराई तक गए, और उनको सांस लेना सिखाया, ताकि वे कष्ट को अनुभव न करें, और तब उनको सम्मोहन के साथ गहरे पेट संबंधी ऑपरेशनों में और उनके हाथ और पैरों को काटने में, मदद की। हमारे पास कोई निश्चेतक नहीं थे, इसलिए उनके दर्द को कम करने का हमारे पास कोई दूसरा इलाज नहीं था – सम्मोहन और श्वसन नियंत्रण। ये प्रकृति का तरीका है, प्राकृतिक ढंग से।

अध्याय ग्यारह

बम

आत्मा को झुलसाने वाले उदासीपनके साथ, दिन, सप्ताहों में बढ़ते हुए, महीनों मे फैलते हुए, वर्षों तक, खिसकते रहे। अंत में, उन लोगों का इलाज करते हुए, जो व्यथित थे, हर दिन की एकरसता (monotony) में, एक बदलाव आया। एकदिन, संतरी, कागजों के पुलिंदों को अपने हाथों में लिये हुए, एक बंदी को यहॉ, दूसरे को वहाँ, इशारा करते हुए, जल्दी मचाते हुए, आए। मैं भी उस सूची में था। हम, बाहर ऑगन में, अपनी झौंपड़ियों की ओर सामना रखते हुए, इकट्ठे हुए। हमें कुछ घंटों तक, केवल बेकार खड़ा रखा गया, और तब, जबकि दिन लगभग समाप्त हो गया था, कमान अधिकारी (commandant) हमारे सामने आया और उसने कहा, ''तुम मुसीबत पैदा करने वाले लोग, जिन्होंने हमारे सम्राट का अपमान किया हैं, तुमलोग अगले इलाज के लिए, दूसरी जगह जा रहे हो। तुमलोग दस मिनट में यहाँ से जाओगे।'' वह सहसा मुड़ा, और आगे चला। हम कमोवेश हतप्रभ रह गए। दस मिनट में तैयार हो जाओ? ठीक हैं, कम से कम हमारे पासपल्ले में, कब्जे में, कुछ नहीं था। जो कुछ हमें करना था, वह था जल्दी में कुछ लोगों को अलबिदा कहना, और वापस मैदान में आकर लौटना।

इसप्रकार, हमलोग दूसरे शिविर को ले जाए जा रहे थे ? हमने शिविर के प्रकार के बारे में अनुमान लगाया, ये कहाँ होगा। परंतु जैसाकि, इन मामलों में अपरिहार्य हैं, किसी के पास कोई सकारात्मक विचार नहीं था। दस मिनट के अंत में, सीटियाँ बजाईं गईं, संतरी फिर जल्दी करते हुए आसपास आये और हमको, हममें से तीन सौ को, चलता कर दिया गया। हम दरवाजों से बाहर निकले; हम पूरे आश्चर्य के साथ, अनुमान में, सुन रहे थे, यह किसप्रकार का शिविर होगा ? हमको गड़बड़ी पैदा करने वालों के रूप में मान्य किया गया था। हम कभी जापानियों की चल्लोचप्पो में नहीं फंसे, हम उन्हें जानते थे, कि वे क्या थे। हम जानते थे कि, यद्यपि हम कही भी जा रहे हों, ये कोई सुखद शिविर नहीं होगा।

हम दूसरी ओर जाने वाले सैनिकों को पीछे छोड़ते हुए आगे चले। वे मजाक की अच्छी मानसिक अवस्था में दिखाई दिए। कोई आश्चर्य नहीं, हमने सोचा, क्योंकि, हमारे पास पहुँचने वाली जानकारियों के अनुसार, जापानी हर जगह जीत रहे थे। हमें कहा गया कि, जल्दी ही वे पूरे विश्व को अपने नियंत्रण में कर लेंगे। वे कितनी गलतफहमी में थे ! यद्यपि उस समय पर, हम केवल उस पर विश्वास कर सकते थे, जो जापानी हमें बता रहे थे। हमारे पास सूचना पाने का कोई दूसरा स्रोत नहीं था। जब भी ये सैनिक समीप से गुजरते, तो यह बहुत ही आक्रामक होते थे, और हम पर भारी भरकम मुक्का लगाने का, धक्का लगाने का, अथवा बेमतलब, मात्र मजे के लिए, हमारे सिकुड़े हुए मांस पर, अपनी राइफलों के वटों की मार की आवाज को सुनने के आनन्द के लिए, कोई अवसर नहीं छोड़ते थे। हम संतरियों की गालियाँ खाते हुए, चलते गए। उन्होंने भी, अपनी राइफलों के बटों का मुक्तरूप से उपयोग किया। रास्ते के किनारे गिरे–पड़े बीमार, इन संतरियों के द्वारा, यदि वे दुबारा अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सके और शायद दूसरों के समर्थन के द्वारा अंधे होकर लड़खड़ाये, जल्दी–जल्दी, बुरी तरह पीटे गए। तब संतरी आगे बढ़ते और एक बोनट का धक्का, उनके संघर्ष को खत्म कर देता। कई बार यद्यपि, संतरी किसी मोहरे का सिर काट देते और उसके कटे हुए सिर को अपने बोनट के सिरे पर लगा लेते। तब वे, हमारे आतंक भरे चेहरों के ऊपर, नीचता की हद तक मुस्कराते हुए, कड़ी मेहनत के साथ, बंदियों की पंक्तियों के ऊपर–नीचे दौड़ लगाते।

अंत में, थकान भरे कई दिनों के बाद, बहुत ही कम खाने के साथ चलते–चलते, हम एक छोटे बंदरगाह पर पहुॅचे, और एक रद्दी से शिविर में ले जाए गए, जो बंदरगाह के समीप बनाया गया था। यहॉ सभी राष्ट्रों के, हमारे जैसे मुश्किलें पैदा करने वाले, काफी आदमी थे। ये थकावट और खराब

व्यवहार से इतने अधिक उदासीन थे, कि जब हम प्रविष्ट हुए तो वे मुश्किल से ही दिखाई दिए। दुखमयरूप से, हमारी संख्या अब काफी घट गई थी। तीन सौ या करीब ऐसे ही कुछ लोगों में से, जिन्होंने वहाँ से शुरू किया था, लगभग केवल पिचहत्तर ही यहाँ पहुँचे थे। हम उस रात को, कटींले तारों के पीछे बने हुए, उस शिविर की चारदीवारी के बीच में, जमीन पर पसरकर लेट गए।

वहाँ पर हमारे लिए कोई शरणगाह नहीं था, कोई निजिता (privacy) नहीं परंतु अबतक हम इसके अभ्यस्त हो चुके थे। आदमी और औरतें जमीन पर लेटे अथवा जापानी संतरियों की आँखों के सामने, पूरी लंबी रात, उन्होंने वह किया, जो उन्हें करना पड़ा।

सुबह हमारी हाजिरी हुई, और हमें टूटी–फूटी खराब लाइनों में दो–तीन घंटों तक, खड़ा रखा गया। अंत में संतरी, एहसान जताते हुए आये, हमें बंदरगाह के बाहर निकाला, और आगे, नीचे बंदरगाह के तट तक चलाया, जहाँ जंग खाया हुआ, एक पुराना परित्यक्त जहाज, वास्तव में लावारिस, तट पर लगा हुआ था। मैं वास्तव में, किसी भी प्रकार से जहाजरानी विशेषज्ञ नहीं था, वास्तव में, बंदियों में से लगभग प्रत्येक समुद्री मामलों में, मेरी तुलना में अधिक जानता था, परंतु फिर भी, मुझे ऐसा लगा कि, ये जहाज किसी भी समय, किसी भी क्षण, अपने लंगरों पर डूब जायेगा। एक चटकते हुए, सड़े–गले पेड़ के ठूंठ के साथ, जो किसी भी समय गिरने की धमकी दे रहा था, हमको उस झागदार समुद्र में फेंक दिया गया, जो तैरते हुए डिब्बों से, खाली टीन के डिब्बों से, बोतलों से, लाशों से और कूड़े–करकट से भरा हुआ था।

हम जहाज पर उसके अगले भाग में चढ़े और हमको थमाकर जबदस्ती रोक दिया गया। हम लगभग तीन सौ लोग, वहाँ थे। वहाँ सबके बैठने लायक जगह भी नहीं थी, निश्चितरूप से, हिलने के लिए भी पर्याप्त स्थान नहीं था। दल के आखिरी लोगों को, जापानी संतरियों की गालियों के साथ, राइफल के बटों से धक्के मारकर जबदस्ती घुसाया गया। तब एक झंझनाहट सी हुई, मानोकि नरक के दरबाजे हमारे लिए बंद हो गए हों। हम पर बदबूदार धूल के बादल फेंकते हुए, खोल (hatch) का आवरण जोर से बन्द किया गया। हमने मोंगरी से लकड़ी की पच्चड़ों को ठोकने की, आवाजें सुनी और सभी रोशनी बंद कर दी गई। उसके बाद, जो हमें भयानकरूप से लंबा समय लगा, जहाज ने हिलना शुरू किया। वहाँ पुराने कबाड़ा इंजनों की आवाजें सुनाई दीं। वास्तव में हमें ऐसा लगा मानोकि, पूरा ढाँचा हिलकर टुकड़ों में टूट जायेगा और जहाज हमको अपनी तली में होकर बाहर फेंक देगा। जहाज की छत (deck) पर से हम दबी हुई चीखें, और निर्देशों का, जो जापानी भाषा में दिए जा रहे थे, शोर सुन सकते थे। धीमी विस्फोटक आवाजें (chugging) जारी रहीं। शीघ्र ही वहॉ लुढ़कने और गिरने की भयानक आवाज हुई, जिसने हमें बताया कि हम बंदरगाह के परे चले गए हैं, और खुले समुद्र में पहुँच गए हैं। यात्रा, वास्तव में, बहुत खराब थी। समुद्र उग्र रहा होगा। हम लगातार एक दूसरे की ओर फेंके जा रहे थे, कुचले हुए दूसरों के ऊपर लुढक कर गिर रहे थे। हम उस मालवाही नौका में घेरकर बंद कर दिए गए और हमको अंधेरे के घंटो के मध्य, केवल एकबार, डेक पर आने की इजाजत दी गई। शुरू के दो दिनों में, हमें खाना बिल्कुल नहीं दिया गया। हम जानते थे क्यों। यह इस बात को निश्चित करने के लिए था कि, हमारी आत्मा टूट जाए परंतु इसका हमारे ऊपर कम ही प्रभाव पड़ा। दो दिन बाद हमको एक कप भरकर चावल, प्रतिदिन प्रत्येक को दिया गया।

कमजोर बंदियों में से बहुत से, दम घुटने वाली दुर्गंध में जल्दी ही मर गये, उस बदबूदार जमाबड़े में कैद हो गये। वहॉ जिंदा रखने के लिये पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं थी। अनेक मर गये, और हमारे नीचे स्टील के फर्श पर, टूटी गुड़िया की तरह से लुढ़क गये। हम, मुश्किल से भाग्यवश जीवित रहने वाले, परन्तु हमारे पास, केवल सड़ती हुई लाशों के ऊपर, मुर्दो के ऊपर, खड़े रहने के अतिरिक्त

कोई विकल्प नहीं था। संतरियों ने हमें बाहर नहीं जाने दिया। संतरियों के लिये, हम सभी बंदी थे, और इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि, हम जिन्दा है या मरे हुये, हमें उनके कागज–पत्रों के हिसाब से संख्या में सही होना था। इसलिये सड़ते हुये मुर्दो को भी, दुखी जिन्दा लोगों के साथ, तबतक संभाल कर रखा जाता था, जबतक कि, हम पहुँचने वाले बन्दरगाह पर न पहुँच जायें, जहॉ जिन्दा या मुर्दा सभी शरीरों की गिनती की जानी थी।

हम दिनों का हिसाब रखना भूल गये, परन्तु अंत में, एक अनिश्चित समय के बाद, इंजन की आवाज में फर्क आया। फेंकने और उछालने वाली आवाज कम हुई। कम्पन बदले और हमने ठीक ही अनुमान लगाया कि, हम बन्दरगाह पर पहुॅच रहे थे। बहुत शोर और फसाद के बाद और अनन्त दिखने वाले समय के बाद, जंजीरों की आवाजें आयीं और लंगर डाल दिये गये। कपाटों को खोल दिया गया और एक जापानी बन्दरगाह चिकित्सा अधिकारी के साथ, जापानी संतरियों ने उतरना शुरू किया। आधी दूरी पर वे उकता कर रुक गये। चिकित्सा अधिकारी को दुर्गन्धयुक्त उल्टी हुई और उसने हमारे ऊपर, जो नीचे पड़े थे, उल्टी कर दी, और तब गरिमा (diginity) को धता बताते हुये, वे तेजी से डेक की ओर भागे।

अगली चीज जिसे हम जानते थे, यह थी कि मोटे–मोटे पाइप लाये गये और हमारे ऊपर पानी की वर्षा की गई। हम आधे डूब गये। पानी हमारी कमर से ऊपर, हमारी छातियों पर, हमारी ठोड़ियों पर, मुर्दो के तैरते हुये छिछड़ों पर, सड़ेगले मुर्दों पर, हमारे मुँहों तक चढ़ रहा था। तब जापानी भाषा में आनन्द और विस्मय की जोर की आवाजें हुईं और पानी का बहाव रोक दिया गया। डेक के अधिकारियों में से एक, हमारे पास आया और उसने हमें तीखी निगाह से देखा। तब वहॉ काफी बातचीत और इशारे बाजी की गई। उसने कहा कि, यदि और ज्यादा पानी डाला गया तो नाव डूब जायेगी। इसलिये एक बड़ा पाइप उसमें डाला गया और सारा पानी फिर से बाहर निकाल दिया गया।

उस पूरे दिन और पूरी रात, हमें अपने गीले चिथड़ों में ठिठुरते हुये, सड़ती हुई लाशों की बदबू से परेशान, वहीं रखा गया। अगले दिन हमें, दो या तीन, एक साथ ऊपर डेक पर जाने की इजाजत मिली। अंत में मेरी बारी आयी, और मैं बन्दरगाह पर गया। मुझसे मोटे–मोटे सवाल पूछे गये, मेरी पहचान की चकती (identity disc) कहॉ थी? मेरा नाम एक लिस्ट में चैक किया गया, और मुझे जिन्दा कंगाल के रूप में, मानवता के ठिठुरते हुये समूह के रूप में, जो लेशमात्र कपड़ों में लपेटे हुये, अंतिम बचे हुये थे, एक मालवाही नाव में, जो पहले से ही भीड़ भरी थी, बहुत अधिक भीड़ भरी, लगभग एक और को, धकेल दिया गया। कुछ वास्तव में, बिल्कुल लपेटे हुये नहीं थे। अंत में, ऊपरी पट्टी पानी में डूबी। नौका डूबने की चेतावनी दे रही थी, यदि उसके ऊपर कोई दूसरा व्यक्ति और भेजा गया। जापानी संतरियों ने ये तय किया कि, अब इस भरी हुई नौका में, अतिरिक्त कोई, सुरक्षितरूप से नहीं आ सकता। मोटर नाव पानी में डूबी और एक रस्सा कस कर बांध दिया गया। हमें पुरानी नौका पर पीछे छोड़ते हुये, मोटरवोट समुद्रतट की ओर शुरू हुई।

मुझे जापान को देखने का पहला मौका था। हम जापानियों के मुख्यदेश को पहुॅच गये थे और समुद्रतट पर एक पुलिस शिविर में डाल दिये गये, एक फालतू पड़ी जमीन के ऊपर बनाया गया शिविर, जिसे कटीलेतारों द्वारा घेरा गया था। जबतक संतरियों ने हर आदमी और औरत को प्रश्न पूछे, कुछ दिनों के लिये हमें वहॉ रखा गया, और तब अंत में, हम में से कई अलग कर दिये गये और अन्दरूनी हिस्सों में मीलों तक चलाये गये, जहॉ हमारे आने की प्रतीक्षा में एक जेल खाली रखी गई थी।

बंदियों में से एक गोरा आदमी, प्रताड़ना में टूट गया और उसने बताया कि, मैं बंदियों को भागने में मदद कर रहा था, कि मेरे पास, मरे हुये बंदियों द्वारा दी गईं, सैनिक सूचनाऐं हैं। इसलिये एकबार

फिर मुझे पूछताछ के लिये बुलाया गया। जापानी मुझे बुलवाने के प्रयास करने के लिये अत्यन्त प्रयत्नशील थे। उन्होंने मेरे अभिलेखों से देखा कि, पिछले सभी प्रयास असफल हो चुके थे, इसलिये इसबार उन्होने वास्तव में ही हद कर दी। मेरे नाखून, जो दुबारा उग आये थे, उन्हें पीछे की ओर फाड़ दिया गया और उधड़े हुये स्थानों की तरफ, नमक मला गया। चूंकि यह भी मुझे बुलवा नहीं सका अतः मुझे दोनों अगूंठों से बांधकर, एक दण्ड पर लटकाया गया, और पूरे दिन के लिये, ऐसे ही छोड़ दिया गया। इसने मुझे वास्तव में बहुत बीमार कर दिया, परन्तु जापानी अभी भी संतुष्ट नहीं थे। मुझे लटकाने वाला रस्सा, थोड़ा ढीला किया गया और मैं हड्डी तोडने वाले धक्के के साथ, मैदान के कठोर फर्श पर गिर गया। मेरी छाती में एक रायफल का बट अटका दिया गया। संतरी मेरे पेट के ऊपर घुटनों के बल बैठे, मेरी बांहों को बाहर की ओर खींचा गया और मुझे खूँटी से बांधा गया। स्पष्टरूप से वे इसप्रकार के व्यवहार के लिये, पहले से ही प्रशिक्षित किये गये थे। एक मोटा नल, मेरे गले के नीचे उतारा गया और पानी को चालू कर दिया। मुझे लगा कि मैं, हवा की कमी के कारण, या तो दम घुटने वाला हूँ अथवा अत्यधिक पानी होने के कारण, डूबने वाला हूँ, अथवा अत्यधिक दबाब के कारण, फटने वाला हूँ। ऐसा लगा कि मेरे शरीर का हर रोंआ पानी को फुहारों के रूप में बाहर निकाल रहा हो, ऐसा लगा कि मैं गुब्बारे की तरह फूल रहा हूँ। दर्द बहुत अधिक था। मुझे चमकीली रोशनियॉ दिखाई दी। मेरे मस्तिष्क के ऊपर अत्यधिक दबाब महसूस हुआ और अंत में, मैं बेहोश हो गया। मुझे पुष्टिकर दवाईयॉ दी गईं, जो दुबारा से मुझे चेतना के समीप ले आईं। अबतक मैं अत्यधिक कमजोर और बीमार हो चुका था। अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता था, इसलिये तीन जापानी संतरियों ने मुझे सहारा दिया – मैं एक बहुत भारी व्यक्ति था – और मुझे खींचकर उस दण्ड की ओर लाये, जहॉ से मुझे पहले लटकाया गया था। एक जापानी अधिकारी आया और उसने कहा, ''तुम बहुत भीगे हुये लगते हो। मैं सोचता हूँ कि, यह समय है कि तुम्हे सुखा दिया जाये। तब यह तुम्हें ज्यादा बातें करने के लिये सहायक होगा। रस्सी को ऊपर खींचो,'' दो जापानी संतरी अचानक ही झुके और उन्होंने मेरे टखने को जमीन से ऊपर उठा लिया, इतने अचानकरूप से खरोंचा, कि मैं गिर गया और मेरा सिर कंक्रीट (concrete) के साथ टकराया। एक रस्सा मेरे टखनों से गुजरते हुये बांधा गया और दण्ड के ऊपर फेंका गया, और जब मैं कड़ी मेहनत करने वाले आदमियों की तरह से कांप रहा था, मुझे जमीन से एक गज या उससे अधिक ऊँचाई पर लटका दिया गया। तब धीमे से, मानो वे इसके प्रत्येक क्षण का आनन्द ले रहे हों, जापानी संतरियों ने मेरे नीचे कागज फैलाये और उसके ऊपर कुछ काड़ियॉ डाल दीं। बदनीयती से खुलकर हंसते हुये, एक ने माचिस रगड़ कर कागज को जला दिया। धीमे–धीमे आग की लहरें, मुझ तक आयीं, लकड़ी जली, और मैंने गर्मी में, अपने सिर की खाल को मुरझाते हुये, झुर्रियॉ पड़ते हुये, महसूस किया। मैंने एक आवाज को कहते हुये सुना, ''यह मर रहा है। इसे मरने मतं दो अथवा मैं तुम्हें इसके लिये जिम्मेदार ठहराऊँगा, इसे बोलने के लिये रहना ही चाहिये।'' तब चूंकि रस्से को छोड़ दिया गया था, दुबारा एक हतप्रभ करने वाला झटका लगा, और पहले सिर टकराते हुये, मैं जलते हुये अंगारों में गिर गया। एक बार मैं फिर बेहोश हुआ।

जब मैंने दुबारा चेतना प्राप्त की, मैनें पाया गया कि मैं फर्श पर, अपनी पीठ के बल लेटे हुये पानी के तालाब में डूबे हुये, एक आधे तलघर वाले प्रकोष्ठ में हूँ। चूहे चारों तरफ नाच रहे थे। खतरे में चरमराते हुये, पहली बार मेरे हिलने डुलने के साथ, वे कूदकर मुझसे अलग हुये। घंटोबाद, संतरी अंदर आये और उन्होंने मुझे और मेरे पैरो को धुलवाया, क्योंकि मैं अभी भी खड़ा नहीं हो सकता था। वे मुझे एक लोहे की छड़े लगी हुई खिड़की में से जो बाहर की जमीन से ठीक समतल में थी, उकसाते और चिढ़ाते हुए साथ ले गये और वहॉ मेरी कलाई, लोहे के जंगलों से, हथकड़ी लगाकर बांध दी गई, जिससे मेरा मुँह, उस छड़ों के विरूद्ध दब गया। एक अफसर ने मुझे ठोकर मारी और कहा कि ''अब अब जो होने जा रहा है, तुम देखोगे। यदि तुम लौटे पलटे, या तुमने अपनी ऑखें बंद की तो तुम्हारी

ऑखों में बोनट घुसा दिया जायेगा।'' मैं देखता रहा, परन्तु ऑख। इस समतल फैली हुयी जमीन के अतिरिक्त कुछ भी वहाँ नहीं था – मेरी नाक के तल के ठीक ऊपर, जमीन। जल्दी ही वहाँ, सिरेपर पदचाप की आवाज हुयी और संतरियों, जो उनके साथ अत्यधिक पाशविकता के साथ व्यवहार कर रहे थे, के द्वारा धकेले जाते हुये, काफी संख्या में बंदी मेरी निगाह में आये। जब समूह, पास और पास आता गया, बंदियों को ठीक मेरी खिड़कियों के सामने, घुटनों के बल झुकने के लिये, मजबूर किया गया। उनके हाथ पहले से ही उनके पीछे बंधे हुये थे। अब उन्हें पीछे की ओर धनुष की तरह मोड़ा गया, और तब उनकी कलाईयॉ उनके टखनों से बाँध दीं गईं। चूँकि मेरे पूरे शरीर में, गोली की तरह से तेजदर्द हुआ, मैंने अनिश्चितरूप से, अपनी आँखे बंद कीं, परन्तु शीध्र ही, मुझे उन्हें खोलने के लिये बाध्य किया गया। एक जापानी संतरी ने बोनट घुसा दिया था, और मैं अपनी टांगों में से, धीमे–धीमे रिसते हुये खून को अनुभव कर सकता था।

मैंने बाहर की तरफ देखा ये सामूहिक फांसी थी। बंदियों में से कुछ को बोनट मारे गये, दूसरों के सिर कलम किये गये। एक बेचारे, गरीब ने, स्पष्टरूप से जापानी संतरियों के मानकों के अनुसार, कुछ भयानक किया था, इसके लिये उसकी आँतें निकाल लीं गईं और उसे खून बहते हुए, मरने के लिये छोड़ दिया गया। ये कई दिनों तक चलता रहा। बंदी मेरे सामने लाये जाते और उनको बोनट छेदते हुये, सिर कलम करते हुए, गोलियों से उड़ा दिया जाता था। उनका खून मेरे प्रकोष्ठ में बहकर आता था और बाद में, काफी चूहे उसमें उछल कूद मचाते थे।

रात के बाद रात, मुझे जापानियों ने प्रश्न पूछे। सूचना के प्राप्त करने के लिये प्रश्न, जिनकी वे मुझसे पा जाने की आशा करते थे, परन्तु मैं अब दुख की लाल बाढ़ में था, लगातार दुख, रात और दिन, और मैं आशा करता था कि, वे मुझे मार ही डालेंगे और सब समाप्त हो जायेगा। तब दस दिनों के बाद, जो सौ दिनों जैसे लगे। मुझे कहा गया, जबतक कि मैं जापानियों द्वारा चाही गई पूरी सूचना उन्हें न दे दूँ, मुझे गोली मारी जाने वाली है। अधिकारियों ने मुझसे कहा कि, वे मुझसे बहुत परेशान थे, और मेरा रवैय्या सम्राट के प्रति अपमानजनक था। फिर भी, मैंने कुछ भी कहने से मना किया। इसलिये मुझे, दरवाजे से धक्का देकर टकराने के लिये, और मेरे उस कांक्रीट के बिस्तर पर औंधा गिर जाने के लिये, वापिस अपने प्रकोष्ठ में ले जाया गया। संतरी दरवाजे पर लौटा और उसने कहा, ''अब तुम्हें आगे खाना नहीं मिलेगा। कल के बाद, तुम्हें इसके लिये आवश्यकता नहीं होगी।''

आकाश में से प्रकाश की पहली हल्की किरणों के फूटने के साथ, अगले दिन सुबह, प्रकोष्ठ का दरवाजा एक झटके के साथ खुला, और एक जापानी अधिकारी, और बंदूकधारी आदमियों की एक टुकड़ी, अन्दर आयी। मुझे कत्ल करने वाले स्थान पर, जहॉ मैंने अनेकों को मारे जाते हुये देखा था, ले जाया गया। अधिकारी ने खून से रंगी हुयी जमीन की ओर इशारा किया और कहा, ''तुम जल्दी ही यहॉ होगे। परन्तु, तुम्हें अपनी कब्र खुद ही खोदनी पडेगी'' वे एक कुदाल लाये और बोनट चुभाकर लाये गये मुझे, अपनी उथली कब्र खुद ही से खोदनी पड़ी। और तब मुझे एक खंबे से बांधा गया, ताकि जब मुझे गोली मारी जाये, तो रस्सा ठीक कट जाये और मैं अपना सिर पहिले उस कब्र में गिराते हुये, गिरूँ, जिसको मैंने खुद ही खोदा था। अधिकारी ने एक नाटकीय मुद्रा बनायी, मानों वह एक वाक्य को पढ़ रहा हो, जिसमें कहा गया हो कि, मुझे स्वर्ग के पुत्रों को सहयोग न करने के कारण, गोली मारी जानी है। उसने कहा, ''ये तुम्हारा अंतिम अवसर है। तुम वे सूचनाऐं हमें दे दो जो हम चाहते हैं, अन्यथा तुमको अपने निरादरित पूर्वजों के पास भेज दिया जावेगा।'' मैंने कोई जबाव नहीं दिया – कुछ भी चीज बताने लायक नहीं दिखती थी – इसलिये उसने अपने कथन को दोहराया। मैं फिर भी शांत रहा। उसके आदेश पर टुकड़ी ने अपने रायफलें उठाईं। अधिकारी एकबार फिर, मेरे पास आया और मेरे चहेरे को दांये बांये घुमाते हुये, उसने हर शब्द के ऊपर जोर दिया, उसने कहा कि, यह वास्तव में मेरा अंतिम

अवसर है। मैंने फिर कोई जबाव नहीं दिया, इसलिये उसने बन्दुकधारियों को दिखाने के लिये, मेरे दिल के ऊपर निशान बनाया, और तब उसने अच्छे मेजर के रूप में, अपनी तलवार के सपाट सिरे से, मेरे गाल पर तमाचा मारा और उसने अपने आदमियों के साथ जुड़ने की निराशा में, घूमने से पहिले, मेरे ऊपर थूका।

मेरे और उनके बीच की आधी दूरी पर, – परन्तु उसने, गोली की सीध में खड़े न होकर, बड़ी सावधानी से, उनकी ओर देखा, और उन्हें अपना निशाना लेने के लिये आदेश दिया। आदमियों ने अपनी रायफलें उठाईं। उनकी (बंदूकों की) नलियॉ मेरी तरफ घूम गईं। मुझे ऐसा लगा कि, पूरी दुनियाँ बड़े बड़े काले छेदों से भर गई है; ये काले छेद, रायफलों की मक्खियॉ (muzzles) थे। वे बड़े, और बड़े बढ़ते हुये, अमंगल दिखाई दिये, मैं जानता था कि वे किसी भी समय, किसी भी क्षण, मौत थूक देंगे। धीमे से, अधिकारी ने अपनी तलवार उठाई, और उसे तेजी के साथ यह आदेश देते हुये नीचे लाया कि, फायर।''

दुनियॉ दुखों, लपटों और दम घोटने वाले बादलों में, घिरती हुई लगी। मुझे लगा, मानो मुझे दैत्याकार घोड़े ने अपने लाल तपते हुये नालों से ठोकरें मारीं। हर चीज चारों और घूमने लगी। दुनियॉ पागल दिखाई दी। तब अंतिम चीज, जो मैं देख सका, वह, कालेपन की, खून उड़ेलते हुये कालेपन की, एक गजरती हुई, लाल बाढ़ थी। तब मैं अपने बंधनों के ऊपर डूब गया – रिक्तिता के ऊपर।

बाद में, कुछ आश्चर्य के साथ, मैंने चेतना पुनः प्राप्त की कि, यह स्वर्ग अथवा कोई दूसरा स्थान था, जो इतना परिचित दिखाई देता था। परन्तु तब हर चीज मेरे लिये बिगड़ गई थी। मैं कब्र में ओंधे मुॅह पड़ा हुआ था, अचानक ही मुझे बोनट से कोंचा गया। अपने ऑख के कोने से, मैंने उस जापानी अधिकारी को देखा। उसने कहा कि, कत्ल करने वाली टुकड़ी को दी गईं गोलियॉ खासतौर से तैयार की गईं थीं। हम इनका प्रयोग दो सौ से अधिक कैदियों पर कर चुके हैं।'' उसने कहा। उसने कुछ चार्ज को वापिस ले लिया, और शीशे की गोलियों को हटा दिया और किसी दूसरे से बदल दिया, ताकि मैं घायल तो होऊॅ परन्तु मरूँ नहीं – वे अभी भी, उस सूचना को पाना चाहते थे। ''और हम उसे पा लेंगे,'' अधिकारी ने कहा, ''हमें दूसरी युक्तियॉ निकालनी पड़ेंगीं, अंत में हम उसे पा लेंगे और तुम जितनी ज्यादा देर तक चुप रहोगे उतने अधिक कष्ट झेलोगे।''

मेरा जीवन वास्तव में कठोर जीवन रहा था, एक कठोर प्रशिक्षण, आत्म अनुशासन से भरा हुआ और विशेष प्रशिक्षण, जो मैंने लामामठ में प्राप्त किया। एकमात्र वही चीज थी, जो मुझे अभीतक, पागलपन के साथ, चलने में योग्य बना रही थी। संदेहजनक है कि, पराकाष्ठा (extreme) में, उस प्रशिक्षण के बिना, कोई भी व्यक्ति, सहने में सक्षम होता।

(सामूहिक) नरसंहार के समय, जो बुरे जख्म मैंने पाये, वे मेरे दोहरे निमोनिया (pneumonia) का कारण बने। कुछ समय के लिये, मैं मृत्यु के कगार पर झूलते हुये, निराशाजनक रूप से बीमार था। मैंने किसी भी प्रकार चिकित्सीय सहायता लेने से मना कर दिया, किसी भी आराम को लेने से, पूरी तरह से मना कर दिया। मैं अपने प्रकोष्ठ में, सीमेंट के फर्श पर, बिना कम्बल के, बिना किसी चीज के, कांपता और उछलता हुआ, मौत के लिये कूदता हुआ, लेटा रहा।

धीमे–धीमे मैं कुछ स्वस्थ हुआ, और हवाईजहाजों के इंजनों की गड़गड़ाहट से, कुछ समय के लिये चेतन हुआ, वे मुझे अपरिचित भी लगे। वे जापानी नहीं थे, जिन्हें मैं बहुत अच्छी तरह जान गया था, और जो वास्तव में, हो रहा था, मुझे उस पर आश्चर्य हुआ। जेल हिरोशिमा के पास के एक गॉव में थी, और मैंने अनुमान किया कि जापानी विजेता, – जापानी, हर जगह जीत रहे थे – पकड़े हुये हवाई जहाजों के ऊपर वापिस लौट रहे थे। एकदिन जब मैं अभी भी, वास्तव में, बीमार था दुबारा फिर से

हवाई जहाजों की आवाज हुई। अचानक ही जमीन हिली और वहॉ जोरदार भयंकर आवाजें हुईं, धूल के बादल, आकाश में से गिरे, और मूत्र जैसी दुर्गन्ध पैदा हुई, धूल भरी गंध। हवा तनावपूर्ण, विद्युतआवेशित लगी। एक क्षण के लिये कुछ भी चलता हुआ नहीं दिखा। तब संतरी डरकर चींखते हुये, सम्राट से उस चीज से, जिसे वह जानते नहीं थे कि वह क्या है, उन्हें बचाने की गुहार लगाते हुये, भयाकुल होकर दौड़े। ये हिरोशिमा पर 06 अगस्त 1945 को गिराया गया परमाणुबम था। कुछ समय के लिये, मैं आश्चर्य करता हुआ, कि क्या किया जाये, लेटा रहा। तब यह स्पष्टरूप से दिखाई दिया कि जापानी, मुझे देखने के लिये, हद से ज्यादा व्यस्त थे। इसलिये मैं काँपता हुआ, अपने पैरों पर उठा और दरवाजे को खोलने का प्रयास किया। इसपर ताला नहीं लगा था। मैं इतना गंभीर बीमार था कि, यह सोचा गया था कि, मेरे लिये भाग जाना असंभव है। इसके अतिरिक्त, सामान्यतः वहॉ संतरी रहते थे परन्तु, वे संतरी अब गायब हो गये थे। हर जगह भगदड़ थी। जापानियों ने सोचा कि, उनके सूर्य देवता ने उन्हें त्याग दिया है, और वे चींटियों के द्वारा छोड़ी गई कोलोनियों की तरह से, पीछे जा रहे थे। दुख की, भगदड़ की, अंतिम सीमा तक चारों और, पीसे जा रहे थे। रायफलें छुड़ा लीं गईं थीं। वर्दियॉ, खाना – हर चीज थोड़ी थी। हवाई हमलों की दिशा में उनके शरणस्थल, वहॉ दिग्भ्रमित (confuse) हो गये। शोर और चीखें, चूँकि वे सभी, एक ही समय में, वहॉ घुसने की कोशिश कर रहे थे।

मैं कमजोर हो गया था। मैं इतना कमजोर था कि, खड़ा भी नहीं हो सकता था। मैं एक जापानी ट्यूनिक (tunic) और टोपी लेने के लिये झुका, और चूंकि बेहोशी ने मुझे जकड़ लिया था, मैं लगभग गिर गया। मैं अपने हाथों और घुटनों पर गिर गया और मैंने ट्यूनिक में सघर्ष किया और टोपी को लगा लिया। ठीक पड़ोस में, भारी सेंडलों का एक जोड़ा था। मैंने इन्हें भी पहन लिया क्योंकि मैं नंगे पैर था। तब धीमे से मैं झाड़ियों में रेंग गया और दुख के साथ रेंगना जारी रखा। वहॉ तमाम धमाके और प्रहार (thuds and thumps) हो रहे थे और हवाईजहाजों को गिराने वाली तोपें, गोलन्दाजी कर रही थीं। आकाश लाल था, जिसमें काले झण्डे और पीला धुँआ था। ऐसा लगा कि पूरी दुनियॉ टूट रही है और ऐसे समय पर आश्चर्य हुआ कि, मैं भाग जाने का ऐसा प्रयास क्यों कर रहा हूँ, क्योंकि, स्पष्टरूप से ये हर चीज का अंत था।

मैंने पूरी रात अपनी समुद्रतट, जिसे मैं अच्छी तरह जानता था, जो जेल से केवल कुछ ही मील दूर था, की ओर की धीमी कष्टदायी यात्रा की। मैं वास्तव में बीमार था। सांस मेरे गले में अटकी थी और मेरा शरीर हिल और कॉप रहा था। इसमें आत्मनियंत्रण का वह प्रत्येक प्रयास हुआ, जिससे मैं अपने आपको, शरीर में बलपूर्वक घुसा सकता था। अंत में भोर के प्रकाश में, थकान और बीमारी के कारण आधा मरा हुआ, डरा हुआ, मैं नाले के पास, समुद्र के तट पर पहुँचा। मैंने झाड़ियों के बाहर झॉककर देखा। मेरे सामने मछुआरों की एक छोटी नौका अपने लंगर पर नाच रही थी। ये त्यागी हुई थी। स्पष्टतः इसका मालिक, भगदड़ में समुद्रतट से अन्दर की ओर, दौड़ गया था। चोरी–छिपे मैंने अपना रास्ता इसकी तरफ बनाया, और दुख के साथ, अपने आप को सीधा खड़ा करके, नाव को खींचने में और ऊपरी पट्टी को देखने में लगाया। नाव खाली थी। मैंने अपना एक पैर लंगर के रस्से के ऊपर रखने की व्यवस्था की और काफी गहरे प्रयत्न के बाद, मैं अपने आप को ऊपर उठा पाया। तब मेरी ताकत ने साथ छोड़ दिया और मेरा सिर पहले नाव की तली में गिरते हुए, उस उछलते हुये पानी में नाव के अन्दर तली में लुढ़क गया और सड़ी हुई मछलियों के कुछ थोड़े टुकड़े, जो स्पष्टरूप से चारे के रूप में ऊपर रखे गये थे। लंगर के रस्से को काटने में लगनेवाली ताकत को इकट्ठा करने में मुझे काफी समय लगा, तब मैं दुबारा से तली में गिर गया, क्योंकि, नाव नाले के बाहर की तरफ और ज्वार की तरफ खिसक गई थी। मैं पूरी तरह से परेशान होकर थका हुआ वहॉ पड़ा रहा। चूंकि बहती हुई हवा मुझे अपने पक्ष में लगी, घण्टों बाद मैं उस पतवार को पहिनाने में समर्थ हो पाया। प्रयास मेरे लिये

बहुत ज्यादा भारी था और मैं नाव की तली में बेहोश मुर्दा, वापिस डूब गया।

मेरे पीछे जापान के मध्य भाग में, निर्णयात्मक कदम उठाया गया था। परमाणु बम गिराया जा चुका था और उसने युद्ध को जापानियों के काबू के बाहर फेंक दिया था। युद्ध समाप्त हो गया था और उसने युद्ध को जापानियों के बूते के बाहर कर दिया था। मैं इसे नहीं जानता था। मेरे लिये भी युद्ध समाप्त हो गया था, या मैंने ऐसा सोचा, क्योंकि, यहाँ मैं जापान के समुद्र के ऊपर, सिवाय नाव की तली में पड़ी हुई थोड़ी सी सड़ी हुई मछलियों के, बिना किसी खाने के और बिना पानी के, इधरउधर बहता हुआ पड़ा था। मैं खड़ा हुआ और सहारे के लिये, अपनी भुजाओं को उसपर चिपकाते हुये, अपनी ठोड़ी को उसके विरूद्ध रखे हुये, और अपने आप को पकड़े हुये, जितना अच्छा मैं कर सकता था, मस्तूल से चिपक गया। जैसे ही मैंने, अपना सिर नाव के पीछे की ओर घुमाया, मैं जापान के समुद्रतट को दूर होते हुए देख रहा था। एक धुंधली सी बाड़ ने इसे पूरी तरह लपेट लिया। मैं नाव के आगे की ओर मुड़ा। उसके आगे कुछ और नहीं था।

मैंने उस सबके ऊपर विचार किया, जिससे मैं गुजर चुका था। मैंने भविष्यकथन का विचार किया। मानो मैं बहुत दूर से अपने शिक्षक, लामा मिग्यार डोंडुप की आवाज को सुनता हुआ लगा –''मेरे लोबसांग तुमने ठीक किया है। दिल मत तोड़ो, क्योंकि यह अंत नहीं है।'' दिन में एक क्षण के लिये, प्रतिज्ञाओं के ऊपर धूप की एक किरण चमकी और ताजी हवा चली, और तंरगों की छोटी–छोटी लहरें रेंगने की एक सुखद आवाज करते हुये, नाव से बाहर की ओर फैल गईं। और मैं? मैं आगे जा रहा था – कहॉ? मैं जो जानता था, वह एक क्षण के लिये यह था कि, मैं स्वतंत्र था, प्रताड़ना से स्वतंत्र, जेल के बंदी होने से स्वतंत्र, शिविरजीवन के जीवंत नरक से स्वतंत्र। शायद, मैं मरने के लिये भी स्वतंत्र था परन्तु नहीं, यद्यपि मैं मृत्यु की, शांति की, चाह रखता था, परंतु मैं जानता था कि मैं अभी नहीं मर सकता। क्योंकि मेरा भाग्य कहता था कि, मैं लाल लोगों के देश अमरीका में मरूॅगा, और मैं यहाँ अकेला, भूखा मरता हुआ, जापान के समुद्र के ऊपर एक खुली नाव में, तैर रहा था। दुखों की लहरों ने मुझे घेर लिया। एकबार मैंने फिर अनुभव किया कि, मुझे एकबार फिर से प्रताड़ित किया जा रहा है। सांस मेरे गले में अटक गयी, और मेरी ऑखें बंद हो गईं। मैंने सोचा कि, शायद, अंतिम क्षण में जापानियों ने मेरे भागने को पता कर लिया है, और मुझे पकड़ने के लिये, एक तेज नाव भेज रहे हैं। ये विचार मेरे लिये अत्यधिक भारी था। मस्तूल के ऊपर मेरी पकड़ फिसल गई। मैं गिरा, डूबा और लुढ़क गया, और एकबार फिर मुझे कालेपन का, गुमनामी के कालेपन का ज्ञान हुआ, और नाव अज्ञात स्थान को खेई जाती रही।